प्रशस्ति-संग्रह

(आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर के संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, एवं हिन्दी भाषा के ग्रन्थों की ग्रन्थ तथा लेखक-प्रशस्तियों का अपूर्व संग्रह)

★

सम्पादक:—

श्री कस्तूरचन्द कासलीवाल एम. ए., शास्त्री

प्रकाशक:—

बधीचन्द गंगवाल

मंत्री—

प्रबन्ध कारिणी कमेटी

श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र महावीरजी

महावीर पार्क रोड

जयपुर

प्रथमावृत्ति
४०० प्रति

श्रावण वीर निर्वाण सं० २४७६
वि० सं० २००७
अगस्त १६५०

मूल्य
छह रुपया



पुस्तक—प्राप्ति स्थान

१—मंत्री कार्यालय

श्री दि. जैन अ. क्षेत्र श्री महावीरजी

महावीर पार्क रोड जयपुर (राजस्थान)

२—क्षेत्र कार्यालय

श्री दि. जैन अ. क्षेत्र श्री महावीरजी

श्री महावीरजी [जिला जयपुर]





मुद्रक—

भंवरलाल जैन न्यायतीर्थ,

श्री वीर प्रेस,

मनिहारों का रास्ता, जयपुर।



दो शब्द

—:o:—

यह लिखते हुये अत्यधिक दुःख एवं वेदना होती है कि आज भा० रामचन्द्रजी खिन्दूका मन्त्री अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी इस संसार में नहीं रहे। यदि वे होते तो वे ही इस पुस्तक के प्रकाशक बनते। इस प्रशस्ति-संग्रह को शीघ्र प्रकाशित देखने की उनकी अतिशय उत्कंठा थी। लेकिन काल के सामने किसी की भी नहीं चली, यही सोच कर सन्तोष कर लेना पडता है। श्री खिन्दूकाजी के हृदय में साहित्य प्रकाशन की कितनी प्रबल इच्छा थी-यह उनके प्रकाशकीय वक्तव्य से अच्छी तरह जाना जा सकता है। राजस्थान के जैन भण्डारों की विस्तृत सूची बनाने के वृहद् कार्य को प्रारम्भ तो वे कर गये; लेकिन दुःख है कि वे इसे पूर्ण नहीं देख सके। अब हमें साहित्य प्रकाशन के इस पवित्र कार्य को और भी तेजी के साथ करना है जिससे उनकी स्वर्गीय आत्मा को भी शान्ति मिल सके। मैं आशा करता हूं मुझे समाज का अधिक से अधिक सहयोग मिलेगा जिससे राजस्थान के अज्ञात अवस्था में पडे हुये साहित्य को प्रकाश में लाया जा सके।

बधीचन्द गंगवाल

मंत्री—प्रबन्ध कारिणी कमेटी

दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

जयपुर

ता० ३१-७-५०

प्रकाशकीय

राजस्थान और विशेषत: जयपुर प्रान्त में दि० जैन मन्दिरों में बहुत सा प्राचीन साहित्य अज्ञात अवस्था में पड़ा हुआ है, किन्तु किस किस मन्दिर एवं ग्रन्थ भण्डार में कितनी संख्या में कौन कौन से शास्त्र विराजमान हैं, हमारे पास इतनी भी सूचना का संकलन नहीं है। इन ग्रन्थ भण्डारों में जो अमूल्य साहित्य बिखरा पड़ा है वह अपने उद्धार की बाट देख रहा है। राजस्थान में उपलब्ध जैन साहित्य के प्रकाशन एवं शोध की नितान्त आवश्यकता को ध्यान में रखकर दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी की प्रबन्ध कारिणि कमेटी ने अनुसंधान विभाग खोलने का विचार किया। सबसे पहिले प्रबन्ध समिति ने राजस्थान के नहीं, तो कम से कम जयपुर के जैन भण्डारों की एक संक्षिप्त सूची बनवाने तथा उनमें उपलब्ध उपयोगी साहित्य का प्रकाशन कराने का कार्य आरंभ किया। इसी के फलस्वरूप आमेर शास्त्र भण्डार जो भारत के प्रसिद्ध शास्त्र भण्डारों में गिना जाता है उसकी एक विस्तृत सूची प्रकाशित की गयी।

यह प्रशस्ति संग्रह भी इसी विभाग द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें केवल आमेर शास्त्र भण्डार के ही संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दी भाषा के उपलब्ध ग्रन्थों की प्रशस्तियों का ही संकलन है। ग्रन्थ प्रशस्तियों के साथ २ लेखक प्रशस्ति भी जोड़ दी गयी हैं जिससे ग्रन्थ के समय आदि के निर्णय में काफी सहायता मिलेगी। अपभ्रंश साहित्य की ४० से अधिक ग्रन्थों की प्रशस्तियां इस संग्रह में मिलेंगी जो इस साहित्य के महत्त्व को प्रकट करने में काफी सहायता देगी। इस संग्रह के प्रकाशन से जैन साहित्य की खोज में कितनी सहायता प्राप्त होगी इसका अनुमान तो विद्वानगण ही कर सकेंगे।

इस प्रकाशन के अतिरिक्त प० अखयराज कृत 'चतुर्दश गुणस्थान चर्चा' शीघ्र ही पाठकों के सामने आने वाली है। अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध महाकवि नयनन्दि कृत 'सुदर्शन चरित्र' का भी सम्पादन हो रहा है और उसके प्रकाशन का कार्य शुरू होने वाला है। जयपुर और राजस्थान के दि० जैन शास्त्र भण्डारों की विस्तृत सूची का कार्य भी प्रारम्भ होने वाला है जिससे कम से कम उपलब्ध ग्रन्थों का साधारण परिचय तो प्राप्त हो सकेगा। प्रबन्ध कारिणि के सामने साहित्य प्रकाशन की बहुत बड़ी योजना है। तामिल, तेलगू और कन्नड भाषा में जो महत्त्वपूर्ण साहित्य अप्रकाशित अवस्था में है उसे भी प्रकाशित करवा कर जन साधारण के लिये सुलभ बना देने की हार्दिक इच्छा है। इस दिशा में श्री० सी० एस० मल्लिनाथजी, भूतपूर्व सम्पादक अंग्रेजी जैनगजट द्वारा भी कार्य शुरू कर दिया है। इधर जैन समाज के प्रसिद्ध साहित्य सेवी बाबू जुगलकिशोरजी साहब मुख्तार देवबंद वालों से उनका श्री वीर सेवा मन्दिर श्री महावीरजी में लाने तथा वहीं बैठकर साहित्योद्धार का कार्य करने की बातचीत चल रही है। यदि वह बातचीत सफल हो गयी तो यह कार्य और भी तेजी से हो सकेगा—ऐसी आशा है।

साहित्योद्धार का कार्य कितना उपयोगी एवं आवश्यक है यह सब कुछ जानते हुये भी जैन समाज की इस सम्बन्ध में घोर उदासीनता बड़े दुःख की बात है। जो समाज देव शास्त्र गुरु का बराबर का दरजा

मानती है, नित नये मन्दिर तथा नयी प्रतिमाओं का निर्माण कराती है और लाखों रुपया मेले प्रतिष्ठादि कार्यों में प्रतिवर्ष व्यय करती है, उस समाज के लिये किसी एक ग्रंथ की १००० कापी भी नहीं खरीद सकना कितनी लज्जा की बात है। इस तरफ समाज का लक्ष्य होना ही चाहिये। यदि नये प्रकाशित ग्रन्होने वाले थों की १००० प्रतियों में से ५०० भी ग्रन्थ के छपते ही बिक जावें तो भी बहुत से ग्रन्थों का उद्धार हो सकता है इसलिये समाज से मेरी नम्र प्रार्थना है कि जो भी ग्रन्थ प्रकाशित हों उसकी एक एक कापी हर एक शास्त्र भण्डार तथा पंचायती मन्दिरों में अवश्य विराजमान करें — जैन धर्म की स्थिरता एवं उन्नति का यह सबसे बड़ा साधन है। आशा है कि हमारी धर्मप्राण समाज इस तरफ अवश्य ध्यान देगी और साहित्य प्रचार के पवित्र कार्य में सहयोग देकर साहित्य सेवियों का उत्साह बढ़ावेगी

विनीत

जयपुर
ता० १-६-५०

रामचन्द्र खिन्दूका
मंत्री प्र० का० कमेटी
दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

प्रस्तावना

प्राचीन काल में मुद्रण यन्त्र (छापाखाना) के आविष्कार के पहिले मनुष्य ने पत्रों (ताम्रपत्र व ताडपत्र) तथा कागजों पर हाथ से लिख लिख कर ही अपने साहित्य एवं ज्ञान की वृद्धि की थी। उस समय भी भारत में सैकड़ों एवं हजारों विद्वानों ने जन्म लिया और अपनी लेखनी से भारतीय साहित्य के सभी अंगों को पूर्ण किया। हाथ से लिखने के इस युग में शास्त्र भण्डारों एवं पुस्तकालयों की संख्या पर्याप्त थी। प्रत्येक नगर एवं गांव में मन्दिरों तथा अन्य धर्मस्थानों में शास्त्र भण्डार होते थे जिनका प्रत्येक मनुष्य पठन पाठन के लिये उपयोग कर सकता था।

जैनाचार्यों ने दान के चार भेदों में शास्त्रदान को सम्मिलित किया और इसी के सहारे ज्ञान के विशिष्ट साधन पुस्तकों के लिखने लिखवाने को श्रावकों के दैनिक जीवन में उतारा। जिस तरह मन्दिरों को बनवाने एवं प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा करवाने में पुण्यलाभ बतलाया उसी प्रकार शास्त्रों को लिखकर अथवा लिखवा कर शास्त्रभण्डारों को भेंट करने में भी कम पुण्यलाभ नहीं बतलाया। यही नहीं, किन्तु जितनी भक्ति व श्रद्धा उपास्य देवताओं में रखने के लिये उपदेश दिया उतनी ही श्रद्धा व भक्ति शास्त्रों के प्रति भी प्रदर्शित करने को कहा। जैनाचार्यों के इस उच्चतम उपदेश के कारण ही आज हमें प्रत्येक मन्दिर में शास्त्रभण्डार के दर्शन होते हैं अन्यथा हजारों वर्षों से राज्याश्रयहीन जैन धर्म का साहित्य आज इस विशाल मात्रा में नजर नहीं आता। श्रद्धालु श्रावकों ने आचार्यों के इस उपदेश को अक्षरशः पालन किया और अपने जीवन अथवा द्रव्य का बहुत भाग इस पुण्य कार्य में भी व्यतीत किया।

शास्त्र लिखने और लिखवाने में साधुओं और गृहस्थों का समान हाथ रहा है। साधुओं ने हजारों शास्त्र लिखकर जैन वाङ्मय की वृद्धि की तथा श्रावकों ने शास्त्रों की प्रतिलिपियां करवाकर उसका अत्याधिक प्रचार किया और साधुओं से अनुरोध करके नवीन साहित्य का निर्माण भी करवाया। जैनों का अधिकांश अपभ्रंश एव हिन्दी साहित्य का निर्माण इन्हीं श्रावकों के अनुरोध एवं भक्ति का परिणाम है।

दो प्रकार की प्रशस्तियां इस संग्रह में दी गई हैं। एक तो वे जो स्वयं कवि अथवा ग्रन्थकर्त्ता द्वारा लिखी गयी हैं तथा दूसरी वे जो लिपिकारों ने लिखी हैं। पहिली का नाम ग्रन्थ प्रशस्ति तथा दूसरी का नाम लेखक प्रशस्ति है। ग्रन्थ प्रशस्ति में कवि का परिचय, भट्टारक परम्परा का उल्लेख, तत्कालीन भट्टारक का नाम; देश व स्थान व समय का निर्देश तथा वहां के शासक का परिचय आदि दिये हुये होते हैं। लेखक प्रशस्ति में सबसे पहिले समय, फिर ग्राम व नगर का नाम, वहां के शासक का नाम, उसके पश्चात् भट्टारक परम्परा का उल्लेख तथा तत्कालीन भट्टारक का नाम, इसके पश्चात् लिपि करवाने वाले का विस्तृत वंश परिचय, लिपि किस निमित्त से करायी गयी और अन्त में लिपि का नाम दिया हुआ मिलता है। किसी प्रशस्ति में निर्दिष्ट बातों से कम अथवा ज्यादा का भी वर्णन मिल जाता है।

ग्रन्थ कर्त्ता जब साधु अथवा भट्टारक होते हैं तो वे अपना वंश परिचय नहीं लिखते किन्तु जिस आचार्य अथवा भट्टारक के शिष्य होते हैं उसका ही परिचय लिखते हैं। संस्कृत ग्रन्थों की अधिकांश ग्रन्थ प्रशस्तियां इसी

प्रकार की हैं। यही नहीं किन्तु इनके लेखकों ने श्रावकों के अनुरोध का भी बहुत कम उल्लेख किया है। इस दिशा में अपभ्रंश ग्रन्थों की प्रशस्तियां बड़े महत्त्व की हैं। इन ग्रन्थ प्रशस्तियों में कवियों अथवा ग्रन्थकर्त्ताओं ने अपने परिचय से भी अधिक उन श्रावकों का परिचय लिखा है जिनके अनुरोध से उन्होंने ग्रन्थ का निर्माण किया था। उदाहरणार्थ महाकवि श्रीधर ने अपने पार्श्वनाथ चरित्र में श्रावक नट्टल साह का जो सुन्दर वर्णन लिखा है वह पठनीय है। श्रीधर ने ही नहीं किन्तु महाकवि पुष्पदंत, वीर, नयनन्दि, श्रीचन्द, यशःकीर्ति, धनपाल, रइधू, माणिक्कराज आदि सभी ने श्रावकों का बड़ा ही सुन्दर परिचय लिखा है। इस प्रकार हिन्दी ग्रन्थों की प्रशस्तियां भी कम महत्त्व की नहीं है। अधिकांश प्रशस्तियो में कवियों और लेखकों ने अपना अच्छा परिचय लिखा है। हिन्दी और अपभ्रंश भाषा में ग्रन्थ समाप्ति का भी समय प्रायः सभी लेखकों ने दिया है।

इस सबके अतिरिक्त ग्रन्थ प्रशस्तियों में ग्रन्थकारों ने अपने पूर्ववर्त्ती आचार्यों, लेखकों का भी नामोल्लेख किया है जो बड़े महत्त्व का है। इन पूर्ववर्त्ती आचार्य-लेखकों का उल्लेख संस्कृत ग्रन्थ में कम एवं अपभ्रंश साहित्य में अधिक हुआ है। संस्कृत ग्रन्थों में पूर्ववर्त्ती आचार्यों का उल्लेख करने वालों में ज्ञानभूषण, नेमिदत्त एवं श्रुतसागर आदि प्रमुख है तथा अपभ्रंश साहित्य में नयनन्दि, श्रीचन्द, हरिषेण, कनकामर तथा धनपाल आदि प्रमुख हैं। महाकवि धनपाल ने तो नामोल्लेख के अतिरिक्त उन आचार्यों की कृतियों का भी उल्लेख किया है। महाकवि नयनन्दि ने अपने सकलविधि निधान काव्य में जैनेतर विद्वानों के नामों का भी उल्लेख किया है जो इतिहास की दृष्टि से बड़े महत्त्व की वस्तु है। जैनेतर विद्वानों के नामों में वररुचि, वामन, कालिदास, मयूर, श्रीहर्ष, शेखर, पतंजलि आदि प्रमुख हैं। संस्कृत भाषा के ग्रन्थों में किसी किसी ग्रन्थकर्त्ता ने अपनी अन्य २ कृतियों का भी उल्लेख किया है और इस दिशा में भट्टारक शुभचन्द्र प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

इस संग्रह में केवल आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर में उपलब्ध शास्त्रों की प्रशस्तियों का ही संग्रह है। भण्डार में सभी प्रतियां कागज पर ही लिखी हुई हैं। संवत् १३९१ में लिखित प्रति भण्डार में सबसे प्राचीन हस्तलिखित प्रति है। इस भन्डार के शास्त्रों की प्रतिलिपियां भारत के प्रायः सभी ग्राम व नगरों में लिखी गयी हैं और फिर वहां से इस भण्डार को भेंट स्वरूप दी गयी हैं। दक्षिण में बीजवाडा तथा सिकन्दराबाद, उत्तर में लाहोर तथा मुल्तान, पूर्व में ढाका और पश्चिम में गुजरात आदि प्रान्त एवं नगरों में लिखित प्रतियों का भण्डार में संग्रह है। इससे इस भण्डार की महत्ता को काफी अच्छी तरह से समझा जा सकता है। साधारण रूप से दिल्ली, आगरा, नागपुर, ग्वालियर तथा जयपुर प्रान्त में लिपिबद्ध प्रतियों का संग्रह है। बैलगाड़ियों के उस युग में तथा मुगलों के कठोर शासन में भी श्रद्धालु श्रावकों ने जैन साहित्य की कितनी वृद्धि की तथा उसे सुरक्षित रखा यह हमारे लिये कितने गौरव की बात है।

भाषा के अनुसार प्रशस्तियों को तीन भागों में बांटा गया है: प्रारम्भ में संस्कृत ग्रन्थों की प्रशस्तियां दी गयी हैं, तत्पश्चात् प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा की प्रशस्तियां आती हैं तथा अन्त में हिन्दी ग्रन्थों की प्रशस्तियों का संग्रह है। ग्रन्थ प्रशस्ति के साथ लेखक प्रशस्ति भी लगा दी गयी है जिससे ग्रन्थ की कितनी प्रतियां कब और कहां कहां हुई इस परिचय के साथ २ ग्रन्थ निर्माण के समय का भी अनुमान लगाया जा

सकता है। अब तीनों भागों का संक्षिप्त परिचय पाठकों के सामने उपस्थित किया जाता है—

संस्कृत विभाग—

इसमें ५९ ग्रन्थ-प्रशस्तियों एवं ५० लेखक-प्रशस्तियों का संग्रह है। इन प्रशस्तियों में जिनसेन, अमितिगति एवं आशाधर आदि प्राचीन आचार्यों को छोड़ कर शेष १५वीं शताब्दी से लेकर १८वीं शताब्दी तक के विद्वानों द्वारा निर्मित ग्रन्थों की प्रशस्तियों का ही संकलन है। इन विद्वानों में सकलकीर्ति, शुभचन्द्र, सकलभूषण, ज्ञानभूषण, धर्मकीर्ति, मेधावी, सोमकीर्ति, रायमल्ल, नेमिदत्त, जिनदास, ज्ञानकीर्ति आदि प्रमुख हैं। इन विद्वानों का बहुत कुछ परिचय इन प्रशस्तियों के आधार पर एकत्रित किया जा सकता है। अधिकांश विद्वानों ने साधु अवस्था धारण करने के पश्चात् ग्रन्थ निर्माण किया था इसलिये अपनी गृहस्थ अवस्था का परिचय कुछ भी नहीं लिखा। गत ५०० वर्षों में इन विद्वानों ने संस्कृत साहित्य की अत्यधिक सेवा की है। हिन्दी के लगातार जनप्रिय बनते रहने पर भी इन विद्वानों ने संस्कृत साहित्य का निर्माण करके संस्कृत पठन पाठन के प्रति प्रेम ही प्रदर्शित नहीं किया किन्तु अपनी विद्वत्ता का भी परिचय दिया। इस युग में पुराण एवं कथा साहित्य ही अधिक लिखा गया। इससे ऐसा मालूम होता है कि उस युग में भी साधारण जनता सिद्धान्त ग्रन्थों के स्वाध्याय में उतनी दिलचस्पी नहीं लेती थी जितनी पुराण एव कथा साहित्य के पठन पाठन में लेती थी। इसी से विद्वानों ने भी इस प्रकार साहित्य के द्वारा ही सिद्धान्त एवं पौराणिक ज्ञान को जीवित रखने का एकमात्र उपाय समझा।

प्राकृत अपभ्रंश- विभाग—

हिन्दी भाषा के पूर्व अपभ्रंश बोलचाल की भाषा होने के कारण जैनाचार्यों ने श्रावकों के अनुरोध से इस भाषा में अपरिमित साहित्य का निर्माण किया। इसलिये जितना अपभ्रंश साहित्य जैनाचार्यों द्वारा लिखा गया है उसका एकांश भी अन्य विद्वानों द्वारा लिखा हुआ नहीं मिलता। इस संग्रह में अपभ्रंश के ४९ ग्रन्थों की प्रशस्तियां दी गयी हैं। इन ग्रन्थ प्रशस्तियों में अपभ्रंश भाषा के प्राय: सभी विद्वानों का परिचय मिल सकता है। अपभ्रंश भाषा के इन आचार्यों में स्वयंभु, पुष्पदंत, पद्मकीर्ति, वीर, नयनन्दि, श्रीधर, श्रीचन्द, हरिषेण, अमरकीर्ति, यशःकीर्ति, धनपाल, श्रुतकीर्ति, रइधू, माणिक्यराज आदि प्रमुख हैं। अपभ्रंश भाषा के साहित्य का अधिकांश निर्माण १३वीं शताब्दी तक ही हुआ है यद्यपि इसके पश्चात् भी रइधू, यशःकीर्ति, धनपाल, श्रुत कीर्ति, और माणिक्यराज ने १६वीं शताब्दी तक इस भाषा में खूब साहित्य लिखा है। भण्डार में अपभ्रंश ग्रन्थों की जितनी प्रतियां हैं वे प्राय: सभी १७वीं शताब्दी तक की हैं। अधिकांश प्रतियां १६वीं और १७वीं शताब्दी की हैं। यह उस समय भी अपभ्रंश का जनप्रिय बना रहना सिद्ध करता है। ग्रन्थ प्रशस्तियां प्राय: सभी विषद एवं विस्तृत हैं। सभी कवियों ने अपने आश्रयदाता श्रावकों का विशद एवं सुन्दर परिचय लिखा है। अपभ्रंश भाषा के अधिकतर विद्वान गृहस्थ थे-इसलिये इन्होंने अपने कुल एवं जाति का भी अच्छा परिचय लिखा है। आमेरशास्त्र भण्डार अपभ्रंश-साहित्य-संग्रह के लिये भारत में सबसे आगे है। इस भण्डार में किसी ग्रन्थ की तो दस दस प्रतियां तक मिलती हैं। कुछ ऐसी भी प्रतियां हैं जो भारत के अन्य

भण्डारों में अभी तक नहीं मिली हैं अथवा जिनकी भारत में एक दो प्रतियां ही हैं। इनमें सकलविधि विधान (नयनंदि), वाहुबलि चरित्र (धनपाल) तथा परमेष्टि प्रकाशसार (श्रुतकीर्त्ति) आदि उल्लेखनीय हैं। भण्डार में प्राकृत साहित्य तो काफी मात्रा में है किन्तु प्राकृत ग्रन्थों की प्रशस्तियां बहुत ही कम हैं—इसीलिये इनका अधिक संग्रह नहीं दिया जा सका।

हिन्दी विभाग—

हिन्दी भाषा की ८८ पुस्तकों की प्रशस्तियों का संग्रह दिया गया है। १५वीं शताब्दी से पूर्व की भण्डार में कोई रचना नहीं है। भट्टारक सकलकीर्त्ति द्वारा निर्मित 'आराधनासार प्रतिवोध' प्रशस्ति संग्रह में हिन्दी की सबसे पुरानी रचना है। १६वीं शताब्दी के प्रमुख कवियों में जिनदास, भट्टारक ज्ञानभूषण, धर्मदास, चतुरुमल एवं ठक्कुरसी की रचनायें उल्लेखनीय हैं। इन रचनाओं में धर्मोपदेश श्रावकाचार (धर्मदास) तथा पंचेन्द्रिय वोल (ठक्कुरसी) दो रचनायें भाषा और शैली की दृष्टि से भी उत्तम हैं। १७वीं शताब्दी में पद्य के साथ साथ गद्य के भी दर्शन होते हैं। पांडे राजमल्ल कृत समयसार भाषा की रचना संवत् १६०० के आस पास हुई थी। इस रचना में हमें आज से ४०० वर्ष पूर्व की हिन्दी गद्यशैली के दर्शन होते हैं। अखयराज कृत चतुर्दशगुणस्थानचर्चा आदि कृतियां भी इसी शताब्दी की रचनायें हैं। १७वीं शताब्दी के प्रमुख कवियों में ब्रह्म रायमल्ल, वनारसीदास, रूपचन्द, त्रिभुवनदास, कुमुदचन्द्र आदि उल्लेखनीय हैं। इन सभी कवियों की कृतियां सभी दृष्टियों से उत्तम हैं। १८वीं शताब्दी में गद्य साहित्य खूब लिखा गया। ऐसा मालूम पड़ता है कि जन साधारण में गद्य की ओर रुचि बढ़ रही थी। गद्य लेखकों में पांडे रूपचन्द, हेमराज, दीपचन्द कासलीवाल आदि हैं। इन लेखकों ने हिन्दी गद्य में अनेक ग्रन्थों का अनुवाद ही नहीं किया; किन्तु दीपचन्दजी ने तो स्वतन्त्र रचनायें भी लिखीं। इसी प्रकार इस शताब्दी में पद्य साहित्य में भी उत्कृष्ट रचनायें मिलती हैं। इनमें भैय्या भगवतीदास एवं भूधरदास आदि की रचनायें उल्लेखनीय हैं। इसके आगे की रचनायें भण्डार में बहुत ही कम हैं तथा उनमें कोई विशेष उल्लेखनीय नहीं हैं।

भट्टारक इतिहास—

जैन साहित्य के निर्माण में भट्टारकों का प्रमुख हाथ रहा है। प्राचीन काल में इनका अधिकांश समय साहित्य निर्माण में ही व्यतीत होता था। एक एक भट्टारक की अधीनता में बहुत से शिष्य रहा करते थे। इनका कार्य पठन पाठन के अतिरिक्त ग्रन्थों की प्रतिलिपियां करना भी होता था। भट्टारक गण श्रावकों को उत्साहित एवं प्रेरित किया करते थे जिससे श्रावकगण प्रायः व्रतविधान समाप्त करने पर अथवा अन्य समय पर ग्रन्थों की प्रतिलिपियां करवा कर शास्त्र भण्डारों को भेंट करते थे। जब कोई भट्टारक नवीन रचना का निर्माण करते तब तो उसमें अपने से पूर्व के प्रायः सभी प्रमुख भट्टारकों का परिचय लिखते थे। यही नहीं; किन्तु जब उनके शिष्य भी किसी ग्रन्थ की प्रतिलिपि करते तब भी अपने गुरु भट्टारक की परम्परा का उल्लेख करते थे। प्रशस्ति-संग्रह में इस सम्बन्ध में काफी साहित्य मिलता

है। संग्रह में अधिकांश प्रशस्तियां एवं लेखक-प्रशस्तियां आचार्य कुन्दकुन्द, भट्टारक पद्मनन्दि तथा शुभचन्द्र आम्नाय में होने वाले भट्टारकों द्वारा लिखी हुई मिलती हैं। यद्यपि इनमें भी आगे चलकर कितनी ही नवीन भट्टारक परम्पराओं का जन्म होता है, उदाहरणार्थ भट्टारक सकलकीर्त्ति ने आचार्य कुन्दकुन्द एवं भट्टारक पद्मनन्दि को ही आदि मान कर एक नवीन परम्परा को जन्म दिया तथा इसके पश्चात् होने वाले सकलकीर्त्ति के सभी पट्टधर शिष्यों ने उसी प्रकार भट्टारक परम्परा का उल्लेख किया। इसके अतिरिक्त सेनगण, पुष्करगण एवं विद्यागण में होने वाले भट्टारकों का भी काफी अच्छा परिचय उपलब्ध होता है।

जैन समाज की प्रमुख जातियां—

उत्तर भारत में खण्डेलवाल और अग्रवाल इन्हीं दो जातियों का जैन साहित्य की रक्षा एवं वृद्धि में विशेष हाथ रहा है। राजस्थान में प्रारम्भ से ही खण्डेलवाल जाति का प्रभुत्व रहा इसलिये यहां के साहित्य निर्माण एवं प्रचार का अधिकांश श्रेय इसी जाति को है। अग्रवाल जाति का दिल्ली, आगरा, ग्वालियर आदि स्थानों में व्यापक प्रभाव रहा है। अपभ्रंश साहित्य के निर्माण का अधिकांश श्रेय इसी जाति को दिया जा सकता है। अपभ्रंश ग्रन्थों के बहुत से लेखक भी इसी जाति में उत्पन्न हुये थे। प्राचीन काल में अग्रवाल जाति के लोगों का सारे भारत पर प्रभाव था। इस जाति का एक हजार वर्ष का इतिहास तो प्रशस्तियों के आधार पर तैयार किया जा सकता है। श्रीधर ने १२वीं शताब्दी की रचना में जिस नट्टल साह की प्रशंसा की है उसने भी इस जाति को सुशोभित किया था। कवि के अनुसार नट्टल साह का प्रभाव कलिंग, द्राविड़, कर्नाटक, महाराष्ट्र, पंचाल, सिंधु, गौड़ आदि सभी देशों में व्याप्त था। महा पंडित रइधू ने अपनी अधिकांश रचनायें इसी जाति में उत्पन्न होने वाले श्रावकों के अनुरोध से की थीं। इन दोनों जातियों के अतिरिक्त बघेरवाल, श्रीमाल, पुरवाल, लमेचू, जैसवाल आदि जातियों में उत्पन्न श्रावकों द्वारा भेंट दिया हुआ साहित्य भी काफी संख्या में मिलता है। इसी प्रकार इक्ष्वाकु, तोमर, चालुक्य, राठौर आदि क्षत्रिय वंश के एवं कायस्थ, माथुर आदि अन्य जातियों के महानुभावों ने भी साहित्य प्रचार में काफी सहयोग दिया है।

पाठकों की साधारण जानकारी के लिये प्रशस्ति-संग्रह में आये हुये आचार्य-लेखकों एवं कवियों का अति संक्षिप्त परिचय भी उपस्थित किया जारहा है—

संस्कृत भाषा के विद्वान्

१. भट्टाकलंकदेव—जैनधर्म के सुविख्यात सैद्धान्तिक एवं दार्शनिक आचार्यों में आप अग्रगण्य हैं। आपके जीवन के सम्बन्ध में अनेक कहानियां प्रचलित हैं। बौद्ध दर्शन के उत्कर्ष काल में आपने जैन दर्शन को जीवित ही नहीं रखा किन्तु उसे अजेय एवं उत्कर्षमय बना दिया। आपने संस्कृत में अनेक ग्रन्थों की रचना की है। इनकी राजवार्तिक, अष्टशती, न्यायविनिश्चयालंकार आदि प्रसिद्ध रचनायें मिलती हैं।

आप ९वीं शताब्दी के महा विद्वान् थे।

२. अमितिगति—परमारवंश के राजाओं से सम्मानित विद्वानों में इनका विशेष स्थान माना जाता है। ये माथुरसंघ के आंचार्य थे तथा माधवसेन के शिष्य थे। इन्होंने सुभाषितरत्नसंदोह (१०५०), धर्मपरीक्षा (१०७०), पंचसंग्रह (१०७३), उपासकाचार, सामायिकपाठ, भावनाद्वात्रिंशिका एवं योगसार प्राकृत आदि ग्रन्थों की रचना की है। इनकी भाषा काफी प्रौढ़ एवं उच्चकोटि की है।

३. आशाधर—ये मूल निवासी मांडलगढ़ थे लेकिन शहाबुद्दीन गौरी के आक्रमणों से त्रस्त होकर धारा नगरी में आकर रहने लगे थे। ये बघेरवाल जाति में उत्पन्न हुये थे। इनके पिता का नाम सल्लक्षण, माता का नाम श्री रत्नी, पत्नी का नाम सरस्वती एव पुत्र का नाम छाहड था। आशाधर जीवन भर गृहस्थ रहे और इसी अवस्था में रह कर उन्होंने अपरिमित साहित्य का निर्माण किया। इनका काव्य, न्याय, सिद्धान्त, अलंकार, योगशास्त्र एवं वैद्यक आदि सभी विषयों पर अधिकार था। इन्होंने २० से भी अधिक ग्रन्थों की रचना की। आशाधर ने जैन साहित्य पर ही कलम नहीं चलायी किन्तु जैनेतर साहित्य पर भी अपने पांडित्य की अमिट छाप छोड़ी और अष्टांगहृदय, काव्यालंकार, अमरकोष जैसे ग्रन्थों पर टीका लिखी। जैन ग्रन्थों में जिनयज्ञकल्प, सागार और अनगारधर्मामृत, त्रिषष्टिस्मृतिशास्त्र आदि ग्रन्थ ही उपलब्ध हैं, शेष प्रमेयरत्नाकर, भरतेश्वराभ्युदय, ज्ञानदीपिका, राजमतीविप्रलंभ, आध्यात्मरहस्य, काव्यालंकार टीका, अष्टांगहृदय द्योतिनी टीका अभी तक अप्राप्त ही हैं। आप १३वीं शताब्दी के उत्कृष्ट विद्वान माने जाते हैं।

४. श्री कृष्णदास—कवि लाहौर के निवासी थे। लेकिन ग्रन्थ को काल्पवल्ली नगर में समाप्त किया था। इनके पिता का नाम हर्ष था जो तत्कालीन व्यापारियों में बड़े प्रसिद्ध थे। काष्ठासंघ से इनका सम्बन्ध था और रत्नभूषण इनके गुरु थे। श्री पूरमल्ल के आग्रह से इन्होंने मुनिसुव्रत पुराण की रचना की थी। इनके छोटे भाई का नाम मंगलदास था।

५. गुणसुन्दर—इन्होंने संवत् १४२६ में भक्तामर स्तोत्र की वृत्ति लिखी थी। ये आचार्य गुणचन्द्रसूरि के प्रमुख शिष्य थे। इनका सम्बन्ध रुद्रपल्लीय गच्छ से था।

६. गुणाकर सूरि—इन्होंने संवत् १५०४ सम्यक्त्व कौमुदी की रचना की थी। कवि ने अपने आपको चैत्रगच्छ से सम्बन्धित बतलाया है।

७. गुणभद्राचार्य—भगवज्जिनसेनाचार्य के समान गुणभद्र भी प्रतिभा सम्पन्न विद्वान थे। इन्होंने आदिपुराण को ही पूरा नहीं किया किन्तु उत्तरपुराण, आत्मानुशासन और जिनदत्तचरित्र की भी रचना की। इनका समय विद्वानों ने शक संवत् ७४० से ८२० से पूर्व तक निश्चित किया है।

८. चन्द्रकीर्ति—सारस्वत व्याकरण के टीकाकार हैं। नागपुरीय तपोगच्छ के आप अधिनायक आचार्य रहे थे। संवत् ११७४ के पश्चात् होने वाले सभी आचार्यों का आपने स्मरण किया है। इस गच्छ के

प्रतिष्ठाता पद्मप्रभसूरि थे। टीका का नाम सुबोधिका टीका है।

९. **चन्द्रकीर्त्ति**—काष्ठासंघ में होने वाले भट्टारक रामसेन की परम्परा में ये श्री विद्याभूषण के शिष्य थे। इन्होंने पद्मपुराण की रचना इन्हीं के पास रह कर की थी। चन्द्रकीर्ति मुनि थे।

१० **चारित्रसुन्दरगणि**—कवि ने सर्वप्रथम विजयेन्द्र सूरि को स्मरण किया है उनके पश्चात् होने वाले शिष्यों का उल्लेख करते हुये इन्होंने अपने को रत्नसिंह सूरि का शिष्य लिखा है। महीपाल चरित्र को कवि ने १५२५ के आस पास समाप्त किया था। यह काव्य जामनगर से प्रकाशित हो चुका है।

११. **जिनसेनाचार्य**—हरिवंश पुराण के कर्त्ता आचार्य जिनसेन पुन्नाट संघ के आचार्य थे। इनके गुरू का नाम कीर्त्तिषेण एवं दादा गुरू का नाम जिनसेन था। इन्होंने हरिवंश पुराण को वर्द्धमानपुर में शके संवत् ७०५ में समाप्त किया था। हरिवंश पुराण की गणना जैन पुराणों में सर्वोपरि है। इसका ग्रन्थ परिमाण बारह हजार श्लोक प्रमाण है। पूरा पुराण ६६ सर्गों में समाप्त होता है। जिनसेनाचार्य ने अपनी रचना के ६६वें सर्ग में भगवान महावीर से लेकर लोहाचार्य तक की आचार्य परम्पर का उल्लेख किया है।

१२. **ज्ञानकीर्ति**—यशोधर चरित्र के रचयिता श्री ज्ञानकीर्त्ति यति वादिभूषण के शिष्य थे। इन्होंने उक्त काव्य की रचना श्री नानू के आग्रह से की थी। नानू उस समय बंगाल के गवर्नर (राजपाल) महाराजा मानसिंह के प्रधान अमात्य थे। जब प्रधान अमात्य सम्मेद शिखर की यात्रा पर गये तो वहां इन्होंने जीर्णोद्धार भी कराया था। कवि स्वयं बंगाल प्रान्त के अकब्बरपुर नामक नगर के रहने वाले थे। इन्होंने ग्रन्थ को संवत् १६५९ में समाप्त करके प्रधान मंत्री को भेंट किया था।

१३. **ज्ञानभूषण**—भट्टारक सकलकीर्त्ति के प्रशिष्य एवं भुवनकीर्त्ति के शिष्य थे। ज्ञानभूषण संस्कृत, हिन्दी और गुजराती के अच्छे विद्वान थे। इनका मूल निवास स्थान गुजरात था। इन्होंने भट्टारक बनने के पश्चात् अहीर, बागड़, तौलव, तैलंग द्राविड़, एवं महाराष्ट्र आदि दक्षिण के प्रान्तों और गांवों में ही विहार नहीं किया किन्तु उत्तरी भारत में भी घूम २ कर जैनधर्म का प्रचार किया। इनके द्वारा रचित तत्त्वज्ञान-तरंगिनी सुन्दर एवं सरस रचना है। आपने सिद्धान्तसारभाष्य एवं कर्मकाण्ड टीका भी लिखी है। हिन्दी भाषा में भी आपकी कई रचनायें मिलती हैं इनमें आदीश्वरफाग उल्लेखनीय है। आपका समय १५२५ से १५७५ तक अनुमानित किया गया है। तत्त्वज्ञान तरंगिणी का रचना काल संवत् १५६० है।

१४. **धर्मकीर्ति**—इन्होंने पद्मपुराण की रचना सरोजपुरी (मालवा) में की थी। भट्टारक ललितकीर्ति इनके गुरु थे। धर्मकीर्ति का नामोल्लेख अनेकप्रशस्तियों में हुआ है। इन्होंने उक्त ग्रन्थ को संवत् १६६९ में समाप्त किया था। संवत् १६७० की प्रति में लिपिकार ने इनको भट्टारक नाम से सम्बोधित किया है इससे यह ज्ञात होता है कि पद्मपुराण की रचना के पश्चात् ये भट्टारक बने थे।

१५. **आचार्य नरेन्द्रसेन**—इन्होंने सिद्धान्तसारसंग्रह की रचना की है। आप वीरसेन के प्रशिष्य एवं गुणसेन के शिष्य थे।

१६. प्रभाचन्द्र—परमार नरेश भोजदेव के उत्तराधिकारी महाराजा जयसिंहदेव के शासन काल में इन्होंने साहित्य निर्माण किया था। इन्होंने प्रमेयकमलमार्त्तण्ड एवं न्यायकुमुदचन्द्र जैसे उच्चकोटि के ग्रन्थों की रचना की है। महाकवि पुष्पदंत के आदिपुराण और उत्तरपुराण पर टिप्पणी लिखी है। इनके अतिरिक्त जैनेन्द्र व्याकरण, शब्दाम्भोजभास्कर, रत्नकरण्डटीका, क्रियाकलापटीका समाधितंत्रटीका, आत्मानुशासनतिलक, द्रव्यसंग्रह पंजिका, प्रवचनसरोजभास्कर, सर्वार्थसिद्धि टिप्पण आदि रचनायें भी इन्हीं की लिखी हुई हैं।

१७. कायस्थ पद्मनाभ—कायस्थ जाति में होने वाले जैन कवियों में आपका नाम उल्लेखनीय है। आपने महामुनि गुणकीर्ति के उपदेश से तोमर वंश में उत्पन्न राजा वीरमेन्द्र के शासन काल में रचनायें की थीं। वीरमदेव के महामात्य श्री कुशराज थे और इन्होंने ही पद्मनाभ को यशोधर की रचना करने के लिये उत्साहित किया। ग्रन्थ तैयार होने के पश्चात् संतोष नाम के जैसवाल ने उसकी बहुत प्रशंसा की तथा विजयसिंह जैसवाल के पुत्र पृथ्वीराज ने उक्त ग्रन्थ की अनुमोदना की थी। पद्मनाभ ने कुशराज के वंश का विस्तृत परिचय दिया है। कवि ने यशोधरचरित्र को १५ वीं शताब्दी के प्रथम काल में लिखा था।

१८. भगवज्जिनसेनाचार्य—ये हरिवंशपुराण के कर्त्ता आचार्य जिनसेन से भिन्न आचार्य हैं। इनके गुरु का नाम आचार्य वीरसेन था। जिनसेन अपने समय के महान विद्वान् एवं सिद्धान्त के प्रकाण्ड ज्ञाता थे। इन्होंने धवला और जय धवला की टीका को पूर्ण करके जैन समाज का महान उपकार किया है। इन टीकाओं के अतिरिक्त आदिपुराण एवं पार्श्वाभ्युदय की भी रचना की। आचार्य महोदय ने आदिपुराण को पूर्ण करने से पहिले ही संसार से विदा ले ली किन्तु आपके महान् कार्य को योग्य एवं प्रतिभाशाली शिष्य आचार्य गुणभद्र ने पूरा किया। आदिपुराण उच्च श्रेणी का प्रथमानुयोग महाकाव्य है।

१९ पं० मेधावी—श्री जिनचन्द्रसूरि के शिष्य थे। धर्मसंग्रहश्रावकाचार को हिसार नगर में प्रारम्भ करके नागपुर में संवत् १५४१ में समाप्त किया था। उस समय नागपुर पर फिरोजशाह का शासन था। मेधावी ने श्रावकाचार की समन्तभद्र, वसुनन्दि एवं आशाधर कृत श्रावकाचारों के अध्ययन के पश्चात् रचना की थी।

२०. रामचन्द्र मुमुक्षु—पुण्याश्रवकथाकोष के कर्त्ता श्री रामचन्द्र मुमुक्षु मुनि केशवनन्दि के शिष्य थे। पुण्याश्रवकथाकोष का जैन समाज में बहुत अधिक प्रचार है। इनके वंश परम्परा के सम्बन्ध में अधिक परिचय नहीं मिलता है।

२१. रत्नमन्दिरगणि—— भोजप्रबन्ध के कवि श्री रत्नमन्दिर गणि तपोगच्छ के साधु थे। इनके गुरु का नाम सोमसुन्दरगणि था। इन्होंने अपनी रचना को संवत् १५१७ में समाप्त किया था।

२२. वादिचन्द्र— ज्ञानसूर्योदय नाटक के कारण वादिचन्द्र जैनसमाज में बहुत प्रसिद्ध हैं। उक्त नाटक की रचना प्रबोधचन्द्रोदय के आधार पर की गई है। ज्ञान सूर्योदय को इन्होंने संवत् १६४८ में समाप्त किया था तथा इसके पश्चात् यशोधरचरित्र को संवत् १६५७ में रचा। इनका पवनदूत नामक एक खण्ड

काव्य भी है जिसकी पद्य संख्या १०१ है । इन्होंने अपने को प्रभाचन्द्र का शिष्य लिखा है ।

२३. विवेकनन्दि— इनका जन्म वघेरवाल जाति में हुआ था। इनके नाना श्री नारायण तथा माता विजोणी थीं। त्रिभंगीसार की टीका पहिले श्रुतमुनि ने कर्णाटक भाषा में लिखी उसके पश्चात् सोमदेव ने उसका लाटी भाषा में परिवर्तन किया उसी के आधार पर इन्होंने संस्कृत में टीका का निर्माण किया था ।

२४. ब्रह्म कामराज— इनके गुरु का नाम पद्मनन्दि था और इन्हीं के उपदेश से इन्होंने जयकुमार पुराण की रचना की। कवि ने सकलकीर्ति की भट्टारक परम्परा में होने वाले भट्टारकों की अच्छी नामावली दी है। प्रशस्ति में इन्होंने अपने को भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति का भी शिष्य लिखा है। पण्डित जीवराज ने उक्त ग्रन्थ को कवि से अनुरोध करके लिखवाया और फिर मन्दिर में स्थापित किया।

२५. ब्रह्मजिनदास— भट्टारक सकलकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे। अपने गुरु के समान इन्होंने भी हिन्दी संस्कृत, गुजराती आदि भाषाओं में रचनायें लिखी हैं। संस्कृत में इन्होंने १२ से अधिक ग्रन्थ रचना की है जिनमें हरिवंश पुराण, पद्मपुराण, जम्बूस्वामी चरित्र, हनुमच्चरित्र, व्रतकथा कोष आदि उल्लेखनीय हैं। हिन्दी में आदिनाथपुराण, श्रेणिक चरित्र, सम्यक्त्वरास, यशोधररास, धनपालरास, व्रतकथाकोष आदि रचनायें उल्लेखनीय हैं। इन पर गुजराती का अत्यधिक प्रभाव झलकता है।

२६. ब्रह्म नेमिदत्त— ये अग्रवाल जाति के थे। गोयल इनका गोत्र था। मालव देश में आशानगर के रहने वाले थे। भट्टारक मल्लिभूषण इनके गुरु थे। संवत् १५८५ में इन्होंने श्रीपाल चरित्र की श्री शांतिदास के अनुरोध से रचना की थी। इसके अतिरिक्त सुदर्शनचरित्र एवं नेमिनाथपुराण आदि ग्रंथों की भी आपने रचना की है। सुदर्शनचरित्र में इन्होंने ग्रंथ समाप्ति के समय 'मल्लिभूषण शिष्याचार्य श्री सिंहनन्दि' यह विशेषण नहीं लगाया है और शेष दो में यह विशेषण मिलता है इससे यह मालूम पड़ता है कि सुदर्शनचरित्र इनकी सबसे पहिले की रचना थी।

२७. ब्रह्मरायमल्ल — हूंबड़ जाति में इनका जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम महीय एवं माता का नाम चंपा था। समुद्र तट पर स्थित ग्रीवापुर में इन्होंने भक्तामर स्तोत्र की वृत्ति को समाप्त किया था। संवत् १६६७ में रचित इस रचना के अतिरिक्त लेखक की अन्य रचना उपलब्ध नहीं है।

२८. ब्रह्मजित— सुरेन्द्रकीर्त्ति के प्रशिष्य एवं विद्यानंदि के शिष्य थे। आपका जन्म गोलश्रृंगार जाति में हुआ था। इनके पिता का नाम वीरसिंह तथा माता का नाम पीथा था। हनुमच्चरित्र इनकी उल्लेखनीय रचना है।

२९. भट्टारक सोमसेन— ये सेनगण के आचार्य गुणभद्र के शिष्य थे। इन्होंने पद्मपुराण की रचना वैराठ (जयपुर) प्रान्त के जितुरनगर में की थी। उक्त ग्रन्थ को इन्होंने शक संवत् १६५६ में निर्माण किया ऐसा वर्णन मिलता है। लेकिन इसी की एक लेखक प्रशस्ति में शक संवत् १६१६ दे रखा है।

३०. सकलकीर्त्ति—१५ वीं शताब्दी के बड़े भारी विद्वान् एवं साहित्य सेवी थे। इन्होंने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, गुजराती आदि भाषाओं का गहरा अध्ययन किया था। इन्होंने अपने आपको भट्टारक

पद्मनन्दि का शिष्य लिखा है। अपने जबरदस्त प्रभाव के कारण इन्होंने एक नयी भट्टारक परम्परा की स्थापना की। इनकी परम्परा में ब्रह्मजिनदास, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र आदि उच्च कोटि के साहित्य निर्माता हुये। इन्होंने सभी भाषाओं में साहित्य सर्जना की। आदिपुराण, धन्यकुमार चरित्र, पुराणसारसंग्रह, यशोधर चरित्र, वर्द्धमानपुराण, आदि रचनायें संस्कृत में णमोकारमन्त्रफलगीत, आराधनासार आदि रचनायें हिन्दी में लिखीं।

३१. सकलभूषण—भट्टारक शुभचन्द्र के समय के विद्वान् थे। इन्होंने भट्टारक शुभचन्द्र के पास ही अध्ययन किया और उन्हीं की देख रेख में ग्रन्थ रचना की। शुभचन्द्र ने करकण्डुचरित्र के निर्माण में इनसे काफी सहायता ली थी। सकलभूषण भट्टारक वादीभसिंह के शिष्य एवं सुमतिकीर्ति के बड़े भाई थे। सन् १६२७ में इन्होंने स्वतन्त्र रूप से उपदेशरत्नमाला नामक ग्रंथ का निर्माण किया। रचना सुन्दर एवं सरस है।

३२. सोमकीर्त्ति — भट्टारक रामसेन की शिष्य परम्परा में से भट्टारक भीमसेन के शिष्य थे। इन्होंने संवत् १५३० में प्रद्युम्नचरित्र को समाप्त किया था।

३३. सोमप्रभसूरि— सिन्दूर प्रकरण कवि की रचना है। इसमें अच्छी २ सूक्तियां हैं। इसका हिन्दी अनुवाद महाकवि बनारसीदास एवं कौरपाल ने मिलकर किया था। इसी से इस रचना का महत्त्व जाना जा सकता है। इसका दूसरा नाम सूक्तमुक्तावली भी है। कवि ने विजयसिंहाचार्य के चरण कमलों में बैठ कर इसकी रचना की थी।

३४. श्रुतसागर— ये १६ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। इनके गुरु का नाम विद्यानंदि था। श्रुतसागर ने अपने को कलिकालसर्वज्ञ, कलिकालगौतम, उभयभाषाकविचक्रवर्ति, व्याकरणकमलमार्तण्ड आदि अनेक विशेषणों से अलंकृत किया है। इन्होंने अधिकांश ग्रन्थों की टीका लिखी है उनमें से यशस्तिलकचन्द्रिका, तत्त्वार्थवृत्ति जिनसहस्रनामटीका औदार्यचिन्तामणि, महाभिषेकटीका, व्रतकथाकोष आदि रचनायें उल्लेखनीय हैं।

३५. शुभचन्द्र—भट्टारक शुभचन्द्र १६-१७ वीं शताब्दी के महान् साहित्य सेवी थे। भट्टारक सकलकीर्त्ति की परम्परा में आपका स्थान सर्वश्रेष्ठ है। षटभाषाकविचक्रवर्ति, त्रिविधविद्याधर आदि विशेषणों से आप जनता द्वारा विभूषित किये गये थे। आपने सिद्धान्त एव पुराण साहित्य का गम्भीर अध्ययन किया था। इन्होंने संस्कृत में ४० से भी अधिक ग्रन्थों की रचना की है। इनमें से चन्द्रप्रभचरित्र, जीवंधर चरित्र, पाण्डवपुराण श्रेणिकचरित्र, स्वामीकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा की टीका आदि उल्लेखनीय हैं।

३६. हर्षकीर्त्ति— इन्होंने योगचिन्तामणि ग्रन्थ का संग्रह किया था। यह आयुर्वेद का प्रसिद्ध ग्रन्थ माना जाता है। इनका सम्बन्ध नागपुर के तपोगच्छ से था तथा चन्द्रकीर्त्ति इनके गुरु थे।

प्राकृत-अपभ्रंश ग्रन्थों के लेखक

३७. स्वयंभु—अपभ्रंश भाषा के आचार्यों में आप सबसे प्राचीन आचार्य हैं। इनके पिता का नाम

मारुतदेव तथा माता का नाम पद्मिनि था। इनका सबसे छोटा पुत्र त्रिभुवन स्वयंभु था। स्वयंभु ने गृहस्थावस्था में ही साहित्य निर्माण किया। इन्होंने तथा त्रिभुवन स्वयंभु ने मिलकर तीन ग्रन्थों की रचना की – पउमचरिय, रिट्ठणेमिचरिउ या हरिवशपुराण, पंचमिचरिउ। तीसरा ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं हो सका है। अपभ्रंश भाषा के उपलब्ध साहित्य में स्वयम्भु की रचनायें सबसे प्राचीन हैं। रचनायें साहित्य की सभी दृष्टियों से परिपूर्ण मानी जाती हैं। ये कवि रविषेणाचार्य के पीछे हुये हैं। विद्वानों ने इनको ९वीं शताब्दी का कवि माना है।

३८. पद्मकीर्ति --माधवसेन के प्रशिष्य एवं जिनसेन के शिष्य थे। ये मुनि थे। संवत् ९९९ में इन्होंने पार्श्वनाथ-चरित्र की रचना समाप्त की थी। अपभ्रंश भाषा का यह बहुत पुराना काव्य है। इसमें १८ संधियां हैं। संवत् १४६६ की लिखित उसकी एक प्रति भण्डार में है।

३९. पुष्पदंत---अपभ्रंश भाषा के सर्व श्रेष्ठ महाकवि माने जाते हैं। ये काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम केशवभट्ट और माता का नाम मुग्धा देवी था। राष्ट्रकूटों की राजधानी मान्यखेट में रहकर इन्होंने साहित्य निर्माण का पवित्र कार्य किया था। कवि के आश्रयदाता महामात्य भरत और नन्न थे। ये दोनों पिता पुत्र थे और महाराजा कृष्णराज (तृतीय) के महामात्य थे। अभिमानमेरु, अभिमानचिन्ह, काव्यरत्नाकर, कविकुलतिलक सरस्वतीनिलय आदि इनकी पदवियाँ थीं। महाकवि की तीन रचनायें मिलती हैं। महापुराण के दो खंड हैं एक आदिपुराण और दूसरा उत्तरपुराण। नागकुमार चरित्र एक खण्ड काव्य है और यशोधर चरित्र भी इसी तरह एक खन्ड काव्य है। विद्वानों ने इनको ११वीं शताब्दी का विद्वान् माना है।

४०. हरिषेण---इन्होंने अमितिगति के २२ वर्ष पहिले संवत् १०४४ में धर्मपरीक्षा को समाप्त किया था। ये मेवाड़ देश में श्रीउजपुर ग्राम के रहने वाले थे। इनके पितामह का नाम कुसलु, पिता का नाम गोवर्द्धन एवं माता का नाम धनवती था। सिद्धसेन इनके गुरु थे। इन्होंने मंगलाचरण में चतुर्मुख, स्वयंभु, तथा पुष्पदंत का भी स्मरण किया है। धर्मपरीक्षा में कुल ११ सधियां हैं तथा यह अपभ्रंश भाषा की उत्तम रचना है।

४१ महाकवि वीर---कवि वीर के पिता गुडखेड देश के निवासी थे। इनका वंश अथवा गोत्र लाड वागड था। यह काष्ठा संघ की एक शाखा है। इनके पिता का नाम देवदत्त था। कविवर का बहुत समय राज्यकार्य, धर्म और अर्थ की चर्चा में समाप्त होता था। इसलिये कवि को जम्बूस्वामी चरित्र लिखने में एक वर्ष लगा था। कवि ने इसको संवत्त १०७६ माघ शुक्ला दशमी के दिन समाप्त किया था। कवि भक्ति रस के प्रेमी भी थे। इन्होंने मेघबन में पत्थर का एक विशाल जिनमन्दिर बनवाया था। इनके ४ स्त्रियां जिनवती, ओमावती, लीलावती, और जपादेवी और नेमिचन्द्र नामका एक पुत्र भी था।

४२ श्रीचन्द---ये १२वीं शताब्दी के कवि थे। इन्होंने रत्नकरण्ड को संवत् ११२० में समाप्त किया था। ये मुनी थे और इसी अवस्था में इन्होंने अपने ग्रन्थ को समाप्त किया था। श्रीवालपुर के शासक कर्ण

नरेन्द्र के अध्ययन के लिये ग्रन्थ रचना की थी। कर्ण नरेन्द्र का उल्लेख मुनी कनकामर ने भी किया है। कवि ने अपने पूर्ववर्ति आचार्यों—वीरनन्दि, समंतभद्र, विद्यानन्दि, वीरसेन, जिनसेन, गुणभद्र, सोमदेव, स्वयंभु, पुष्पदंत, श्रीधर आदि का उल्लेख किया है। कवि श्रुतकीर्ति के शिष्य थे।

४३. नयनन्दि—महाकवि स्वयम्भु एवं पुष्पदंत के पश्चात् इनका नाम अपभ्रंश के श्रेष्ठ कवियों में गिना जाता है। इनके दो महाकाव्य मिलते हैं, सुदर्शन चरित्र और सकलविधिविधान और ये दोनों ही सभी दृष्टियों से उच्च श्रेणी के काव्य हैं। सुदर्शन चरित्र की रचना इन्होंने संवत् ११०० में भोजदेव के राज्य में की थी। सकलविधिविधानकाव्य को इन्होंने आचार्य हरिसिंह के अनुरोध से बनाया था। इस काव्य में आपने वररुचि, वामन, कालिदास, बाण, मयूर, जिनसेन. श्रीहर्ष, राजशेखर, पाणिनी, प्रवरसेन, वीरसेन, अकलंक रुद्र गोविंद, भामह, भारवि, चउमुह स्वयंभु, पुष्पदंत, श्रीचन्द, प्रभाचन्द्र आदि आचार्यों का स्मरण किया है। नयनंदि आचार्य माणिक्यनन्दि के शिष्य थे। कवि ने धारा नगरी एवं राजा भोज का बड़ा ऐतिहासिक वर्णन किया है। इन दोनों काव्यों के आधार पर कितने ही ऐतिहासिक तथ्यों की खोज की जा सकती है।

४४—श्रीधर — अपभ्रंश भाषा के महाकवि पं० श्रीधर १२ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। इनके द्वारा लिखित ३ रचनायें उपलब्ध हैं, पार्श्वनाथचरित्र, भविष्यदत्तचरित्र तथा सुकुमालचरित्र। पार्श्वनाथचरित्र को संवत् ११८९ में भविष्यदत्त को १२३० में तथा सुकुमालचरित्र को संवत् १२०८ में समाप्त किया था। इनके अतिरिक्त अन्य कितनी रचनायें अपभ्रंश में लिखीं, इसका कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिला है। ये कायस्थ जाति के थे और माथुर कुल में पैदा हुये थे। इनके पिता का नाम नारायण एवं माता का नाम रूपिणी था। ये देहली के रहने वाले थे। इन्होंने दिल्ली को 'ढिल्ली' नाम से सम्बोधित किया है। अपने प्रथम महाकाव्य को इन्होंने नट्टल साह के आग्रह से लिखा था। उस समय नट्टल साह सारे भारत में प्रख्यात थे। कवि ने लिखा है कि अंग वंग कलिंग आदि सभी देश में आपकी कीर्त्ति व्याप्त थी।

४५—महाकवि अमरकीर्त्ति — इन्होंने संवत् १२७४ में षट्कर्मोपदेशरत्नमाला को समाप्त किया था। रचना बहुत ही सुन्दर एव प्रिय है। इनकी रचना के आधार पर ही पीछे के संस्कृत कवियों ने अनेक रचनायें लिखीं। इनकी माता का नाम चच्चिणी एवं पिता का नाम गुणपाल था।

४६—कनकामर — ये मुनि थे। इन्होंने अपने गुरु का नाम पं० मंगलदेव लिखा है। ये ब्राह्मण वंश के चन्द्र ऋषि गोत्र में उत्पन्न हुये थे और वैराग्य लेकर दिगम्बर मुनि बन गये थे। करकण्डु चरित्र को इन्होंने 'आसाइय' नगरी में लिखा था। कवि ने अपनी रचना में सिद्धसेन, समंतभद्र, अकलंक, जयदेव, स्वयंभु और पुष्पदंत का उल्लेख किया है। कनकामर ने अपनी रचना में कर्ण नरेन्द्र का उल्लेख किया है। इन्हीं के आश्रित श्रीचन्द कवि भी थे जिन्होंने रत्नकरण्ड को ११२० में समाप्त किया था। इसी के आधार पर इनका समय १२वीं शताब्दी निश्चित होता है।

४७—यशःकीर्त्ति — अपभ्रंश साहित्य में यशःकीर्त्ति द्वारा लिखित दो काव्य मिलते हैं—पाण्डवपुराण तथा चन्द्रप्रभचरित्र। यशःकीर्ति मुनि थे और इसी अवस्था में इन्होंने दोनों काव्यों की रचना की थी।

पाण्डवपुराण को इन्होंने संवत् ११७६ कार्तिक शुक्ला अष्टमी के दिन समाप्त किया था। इस काव्य को अग्रवाल वंश में उत्पन्न साधु पील्हा के सुपुत्र श्री हेमराज ने नवगात्रपुर में लिखवाया था। चन्द्रप्रभचरित्र गुज्जरदेश के निवासी सिद्धपाल के अनुरोध से लिखा गया था। ये गुणकीर्त्ति के शिष्य थे। चन्द्रप्रभचरित्र में इन्होंने 'महाकवि' विशेषण से अपने आपको अलंकृत किया है।

४८—पं० लाखू — इन्होंने संवत् १२७५ में जिनदत्त चरित्र को समाप्त किया था। ये जैसवाल जाति में उत्पन्न हुये थे। इनके पिता का नाम साहु साहुल था। इनका दूसरा नाम लक्खण भी था। आपका सन्मान करने वालों में श्रीधर श्रावक उल्लेखनीय हैं और इन्हीं के अनुरोध के कारण पं० लाखू ने जिनदत्त चरित्र की रचना की थी। श्रीधर उस समय काफी प्रसिद्ध थे।

४९—गणिदेवसेन — अपभ्रंश भाषा में इन्होंने सुलोचना चरित्र लिखा है। ये विमलसेन के शिष्य थे। सुलोचना चरित्र अपभ्रंश की प्राचीन रचना है।

५०—जयमित्रहल — इन्होंने अपभ्रंश में वर्द्धमान चरित्र लिखा है। इनके पिता का नाम सहदेव था। कवि ने अल्लाउद्दीन खिलजी के शासन का उल्लेख किया है। इस आधार पर कवि का समय १३ वीं शताब्दी होता है। इनके गुरु मुनि पद्मनन्दि थे।

५१—धर्मदासगणि — प्राकृत भाषा में इनके द्वारा रचित उपदेशमाला श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों सम्प्रदायों में ही बहुत प्रिय रही है। उक्त रचना पर २२ से अधिक टीकायें मिलती हैं इससे ही कृति की प्रियता जानी जा सकती है। धर्मदासगणि का समय १० वीं शताब्दी या इससे भी पूर्व का माना जाता है।

५२—नरसेन — वर्द्धमान कथा और श्रीपालचरित्र इन दो काव्यों की इनने रचना की है। कवि ने रचनाओं में नाम के अतिरिक्त अपना अधिक परिचय नहीं दिया। नरसेन स्वयं पंडित थे और गृहस्थावस्था में ही रहकर काव्य रचना की थी। ये १४ वीं अथवा १५ वीं शताब्दी या इससे पूर्व के कवि होंगे, क्योंकि संग्रह में १५१२ में लिखी हुई श्रीपाल चरित्र की एक प्रति मिलती है।

५३—महाकवि सिंह या सिद्ध— इनके पिता का नाम रल्हण था। कवि गुज्जर कुल के सूर्य थे। प्रद्युम्न चरित्र को इन्होंने अपनी माता के अनुरोध से बनाया था। कवि अमृतचन्द्र (अमियचन्द्) के शिष्य थे।

५४—महाकवि धनपाल— ये १५वीं शताब्दी के कवि थे। इनके द्वारा लिखित बाहुबलिचरित्र तथा भविष्यदत्तचरित्र १५वीं शताब्दी की रचनायें हैं। महाकवि ने बाहुबलिचरित्र काव्य के प्रारम्भ तथा अन्त में बहुत सुन्दर प्रशस्ति लिखी है। ये गुर्ज्जर देश के रहने वाले थे। पिल्हणपुर इनका निवास स्थान था। उस समय वहां बीसलदेव राजा राज्य करते थे। इनके पिता का नाम सुहडेव तथा माता का नाम सुहदा था। ये पोखर जाति में उत्पन्न हुये थे। इन्होंने दिल्ली को योगिनीपुर लिखा है तथा वहां

के शासक का नाम महम्मदसाह लिखा है। ग्रंथ को लिखाने वाले श्रावक का कवि ने विस्तृत परिचय दिया है। इन सब के अतिरिक्त कवि ने अपने पूर्ववर्ती महाकवियों का नामोल्लेख उनकी कृतियों के साथ साथ किया है।

५५—धनपाल (द्वितीय)—महाकवि धनपाल से ये भिन्न कवि हैं। इनका जन्म धक्कडवाण वश में हुआ था। इनके पिता का नाम माएसर तथा माता का नाम धनश्री था। इनके द्वारा लिखित भविष्यदत्त चरित्र अपभ्रंश भाषा के प्रकाशित होने वाले काव्यों में सर्व प्रथम है।

५६—पंडित रइधू— अपभ्रंश भाषा में सबसे अधिक रचनायें लिखने वालों में पं० रइधू का नाम सर्व प्रथम आता है। इनके काव्यों में उच्च साहित्य के दर्शन होते हैं। इनके गुरु का नाम गुणकीर्त्ति था। ये ग्वालियर के निवासी थे और अधिकांश साहित्य का निर्माण उक्त स्थान पर ही किया था। इन्होंने आत्मसंबोधन काव्य, धनकुमारचरित्र, पद्मपुराण, मेघेश्वरचरित्र, श्रीपाल चरित्र, सन्मतिजिनचरित्र, नेमिनाथचरित्र, आदि-पुराण, यशोधरचरित्र, जीवंधरचरित्र, पार्श्वनाथपुराण, सुकौशलचरित्र आदि २५ से अधिक की रचना की हैं। इन्होंने प्रत्येक ग्रन्थ के अन्त में अपने संक्षिप्त परिचय के अतिरिक्त ग्रन्थ लिखाने वाले का विस्तृत परिचय दिया है और इसके साथ साथ वहां के राज्य शासन का भी इतिहास लिखा है। इनके समय में ग्वालियर पर तोमर वश के मणि श्रीडूंगरेन्द्र सिंहजी का शासन था तथा वहां के राजकुमार का नाम कीर्तिपाल था। इनका समय १५ वीं शताब्दी का अनुमानित किया गया है।

५७—श्रुतकीर्त्ति—ये १६ वीं शताब्दी के विद्वान थे। ये देवेन्द्रकीर्तिके प्रशिष्य एवं त्रिभुवनकीर्ति के शिष्य थे। मालवा प्रान्त में मंडवगढ इनका निवास स्थान था। इन्होंने हरिवंश पुराण की रचना संवत् १५५२ में समाप्त की थी तथा परमेष्ठिप्रकाशसार को संवत् १५५३ में समाप्त किया था। दोनों ही काव्य भाषा की दृष्टि से उत्तम हैं।

५८—माणिक्कराज— ये जैसवाल जाति में उत्पन्न हुये थे। इनकी माता का नाम वसुधरा था। माणिक्क राज के गुरु पद्मनन्दि थे इनके पहिले पांच आचार्य हो गये थे। इन्होंने दो चरित्र काव्यों की रचना की है अमरसेन चरित्र को सं० १५७६ चैत सुदी ५ के दिन रोहतक में देवराज चौधरी से आग्रह से समाप्त किया था तथा नागकुमार चरित्र को संवत् १५७६ फाल्गुण सुदी ६ के दिन संपूर्ण किया था। इसमें जगसी के पुत्र साहु टोडरमल्ल का विस्तृत परिचय एवं प्रशंसा की गयी है। श्री टोडर मल्ल के पढने के लिये ही उक्त चरित्र का निर्माण करना पडा था। दोनों ही काव्य अपभ्रंश की सुन्दर रचनायें हैं।

५९—भगवतीदास— ये देहली के भट्टारक गुणचन्द्र के प्रशिष्य तथा भट्टारक महेन्द्रसेन के शिष्य थे। हिसार, सहिजादपुरा, संकिसा, कपिस्थल आदि स्थानों में रहने के पश्चात् ये दिल्ली में आकर रहने लगे थे। इनके पूर्वज अम्बाला जिले के बूढिया नामक ग्राम के निवासी थे। ये अग्रवाल दि० जैन थे। अपभ्रंश भाषा में

इन्होंने मृगांकलेखा चरित्र लिखा है। जिसको संवत् १७०० में समाप्त किया था। यह अपभ्रंश भाषा का अन्तिम काव्य है। ये हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। हिन्दी में इनकी २० से अधिक रचनायें मिलती हैं।

हिन्दी साहित्य के कवि एवं लेखक

६०—**किशनसिंह** — कवि रामपुर के निवासी संगही कल्याण के पौत्र तथा आनन्दसिंह के पुत्र थे। ये खण्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा पाटनी इनका गोत्र था। कवि रामपुर को छोड़ कर सांगानेर आकर रहने लगे थे और यहीं पर त्रेपनक्रियाकोश को संवत् १७८४ में समाप्त किया था। इस रचना के अतिरिक्त भद्रबाहुचरित्र एवं रात्रिभोजनकथा भी इन्हीं के द्वारा लिखी हुई है।

६१—**कुमुदचन्द्र** — ये भट्टारक रत्नकीर्ति के शिष्य थे। इन्होंने भी त्रेपनक्रियाविनती, ऋषभविवाहलो, भरतबाहुबलिछन्द आदि रचनायें लिखी हैं। भरतबाहुबलिछन्द कवि की सुन्दर रचना है इसको इन्होंने संवत् १६०७ में समाप्त किया था।

६२—**कुशललाभगणि** — संवत १६१६ में जैसलमेर में इन्होंने 'माधवानलचौपाई' को पूर्ण की थी। ये श्वेताम्बर सम्प्रदाय के साधु थे।

६३—**खडगसेन**— ये लाभपुर (लाहोर) के निवासी थे। लाहोर में उस समय अच्छे२ विद्वान् रहते थे। उन्हीं की संगति से इनको लिखने की इच्छा उत्पन्न हुई। इनके पिता का नाम लूणराज था। कवि के पूर्वज पहले नारनोल में रहा करते थे। यहीं से लाहौर जाकर रहने लगे थे। नारनोल में चतुर्भुज बैरागी के पास शिक्षा प्राप्त कर तथा अनेक ग्रन्थों का अध्ययन करके त्रिलोकदर्पण को संवत् १७१३ में सम्पूर्ण किया था।

६४—**खुशालचन्द काला**— भट्टारक लक्ष्मीदास के पास इन्होंने विद्याध्ययन किया था। इनका मूल निवास स्थान देहली था। लेकिन सांगानेर भी कभी२ आकर रहा करते थे। इनके पिता का नाम सुन्दर एवं माता का नाम अभिधा था। इन्होंने हरिवंशपुराण (१७८०), पद्मपुराण (१७८३), धन्यकुमारचरित्र, जम्बूचरित्र, व्रतकथाकोश आदि ग्रन्थों की रचना की है।

६५—**चतुरूमल**— ये ग्वालियर के निवासी थे। इनके पिता का नाम जसवंत था। इन्होंने संवत १५७१ में 'नेमीश्वर गीत' को समाप्त किया था। इनके समय में ग्वालियर के शासक महाराजा मानसिंह थे। नेमीश्वर गीत एक साधारण रचना है।

६६. **छीतर ठोलिया**— ये मोजमाबाद के रहने वाले थे। इन्होंने होली की कथा को संवत् १६६० में समाप्त की थी। उस समय जयपुर के राजा मानसिंह का वहां राज्य था। रचना साधारण है।

६७. **जयसागर**—ये भट्टारक महीचन्द्र के शिष्य थे। गंधार नगर के भट्टारक श्री मल्लिभूषण की शिष्य-

परम्परा से इनका सम्बन्ध था। हूंबड जाति में उत्पन्न श्री रामा तथा उसके पुत्र के पढ़ने के लिये संवत् १७३२ में इन्होंने 'सीताहरण' नामक काव्य की रचना की थी।

६८. जोधराज गोदीका—ये सांगानेर के निवासी थे। इनके पिता का नाम अमरराज था। हरिनाभ मिश्र के पास रह कर इन्होंने प्रीतिंकर चरित्र, कथाकोष, धर्मसरोवर, सम्यक्त्वकौमुदी, प्रवचनसार, भावदीपिका आदि रचनायें लिखी थीं।

६९. जगतराय—ये आगरे के निवासी थे। इनके पिता का नाम नंदलाल था। सिंघल इनका गोत्र था। संवत् १७२२ में इन्होंने पद्मनंदिपंचविंशिका को समाप्त किया था। इसके अतिरिक्त आगम विलास एवं सम्यक्त्वकौमुदी आदि भी इन्हीं की लिखी हुई हैं।

७०. टीकम—इन्होंने संवत् १७१२ में चतुर्दशीचौपई नामक रचना समाप्त की थी। ये 'कालख' (जयपुर) के रहने वाले थे। आप धार्मिक चर्चाओं के अच्छे जानकार थे।

७१. ठकुरसी—इन्होंने 'कृपणचरित्र' तथा 'पंचेंद्रिय वेल' ये दो रचनायें लिखी हैं। दोनों ही भाषा और भावों की दृष्टि से उत्तम रचनायें हैं। पंचेंद्रिय वोल को कवि ने संवत् १५८५ में समाप्त किया था। इनके पिता का नाम घेल्ह था और ये भी अच्छे कवि थे।

७२. त्रिभुवनचन्द्र—ये महाकवि बनारसीदास एवं रूपचन्द के समकालीन कवि थे। इन्होंने अनित्यपंचाशत, प्रस्ताविकदोहे, षट्द्रव्यवर्णन, फुटकरकवित्त आदि रचनायें लिखी हैं। सभी रचनायें उच्चकोटि की हैं।

७३. दीपचन्द कासलीवाल—ये सांगानेर के रहने वाले थे लेकिन फिर आमेर आकर रहने लगे थे। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों ही प्रकार का साहित्य लिखा है। चिद्विलास, गुणस्थानभेद, अनुभवप्रकाश आदि गद्य में तथा अध्यात्म पच्चीसी, द्वादशानुप्रेक्षा, परमात्मपुराण आदि पद्य में इनकी रचनायें मिलती हैं। चिद्विलास को इन्होंने संवत् १७७९ में समाप्त किया था।

७४. पं० दौलतरामजी—ये मूल निवासी बसवा के थे। जयपुर के महाराजा का इन पर विशेष प्रेम था। ये उदयपुर में महाराजा की ओर से राज्य कार्य करते थे। श्रावकों की संगति से इनको जैन ग्रन्थों के अध्ययन की रुचि हुई। धीरे धीरे इनकी रुचि बढ़ती गई और ये अपना अधिकांश समय साहित्य-सर्जना में ही लगाने लगे। इन्होंने पुण्याश्रवकथाकोश, क्रियाकोश, अध्यात्मबारहखड़ी, वसुनन्दिश्रावकाचार की टीका तथा पद्मपुराण की भाषा लिखी है। वसुनन्दिश्रावकाचार की टब्बा टीका इन्होंने उदयपुर में वेलजी सेठ के अनुरोध से की थी। ये श्री आनन्दराम के पुत्र थे। संवत् १८०० के पूर्व ही इन्होंने

रचनायें लिखी हैं।

७६—देवेन्द्रकीर्त्ति— ये भट्टारक सकलकीर्त्ति की शिष्य परम्परा में होने वाले भट्टारक प्रज्ञनन्दि के शिष्य थे। इन्होंने सूरत निवासी संघपति श्री खेमजी के अनुरोध से महेश्वरनगर में प्रद्युम्नप्रवन्ध को संवत् १७२२ में समाप्त किया था। प्रवन्ध की भाषा साधारण है।

७७—दिलाराम—इनके पूर्वज खंडेले के रहने वाले थे। वहां से बूंदी नरेश के अनुरोध से बूंदी आकर रहने लगे थे। इनका गोत्र पाटणी था। कवि ने बूंदी नगर तथा वहां के राजवंश की खूब प्रशंसा लिखी है। इसके अतिरिक्त अपने वंश का भी अच्छा परिचय लिखा है। इन्होंने दिलारामविलास और आत्मद्वादशी ये दो रचनायें लिखी हैं। कवि ने दिलारामविलास को संवत् १७६८ में समाप्त किया था। इनकी वर्णन शैली अच्छी है।

७८—धर्मदास— कवि बारहसैनी (द्वादशश्रेणी) जाति में उत्पन्न हुये थे। इनके पूर्वज अपने प्रान्त में बहुत ही प्रतिष्ठित थे। इनके पिता का नाम राम और माता का नाम शिवी था। कवि ने धर्मोपदेशश्रावकाचार को १५७८ में समाप्त किया था। रचना की भाषा बड़ी सुन्दर है। इसमें जैन धर्म के मुख्य २ सिद्धान्तों को बड़ी ही अच्छी तरह से समझाया गया है।

७८. नथमल बिलाला— ये मूल निवासी आगरे के थे किन्तु बाद में भरतपुर में और अन्त में हीरापुर आकर रहने लगे थे। इनके पिता के नाम शोभाचन्द था। इनने सिद्धान्तसारदीपक की रचना भरतपुर में सुखराम की सहायता से की थी और भक्तामर की भाषा हीरापुर में पं० लालचन्द जी की सहायता से की थी। इनके अतिरिक्त जिनगुणविलास, नागकुमारचरित्र, जीवंधरचरित्र, जम्बूस्वामीचरित्र आदि भी आपकी ही कृतियां हैं।

७९. नरेन्द्रकीर्त्ति— भट्टारक शुभचन्द्र के प्रशिष्य एवं सुमतिकीर्ति के शिष्य थे। इन्होंने नेमीश्वर चन्द्रायण लिखा है जो एक साधारण कृति है।

८०. नेमिचन्द— ये भट्टारक जगत्कीर्त्ति के शिष्य थे। आमेर इनका निवास स्थान था। संवत १७९३ में इन्होंने हरिवंशपुराण की रचना की थी। कवि ने आमेर का बहुत सुन्दर वर्णन किया है। कवि के छोटे भाई का नाम झगड़ू था। इनका गोत्र सेठी था। कवि के रूपचन्द, डूंगरसी, लक्ष्मीदास, दोदराज आदि शिष्य थे।

८१. प्रभाचन्द्र मुनि— इन्होंने अपने को मुनि धर्मचन्द्र का शिष्य लिखा है। प्रभाचन्द्र ने तत्त्वार्थसूत्र की हिन्दी टीका लिखी है। इनके समय के सम्बन्ध में विशेष ज्ञात नहीं हो सका है। तत्त्वार्थसूत्र भाषा की एक प्रति संवत् १८०३ की लिखी हुई शास्त्र भण्डार में है।

८३. पांडे जिनदास— ब्रह्म शांतिदास के पास इन्होंने शिक्षा प्राप्त की थी। ये मथुरा के रहने वाले थे। यहीं रहते हुए संवत् १६४२ में जम्बूस्वामी चरित्र को समाप्त किया था। आपकी एक अन्य रचना जोगी रासो भी है जिसकी भाषा एवं शैली उत्तम है।

८४. पांडे रूपचंद— इन्होंने सोनगिरि में संवत् १७२१ में महाकवि बनारसीदास कृत समयसार की गद्य टीका लिखी थी। सोनगिरि में श्री जगन्नाथ श्रावक रहते थे और उन्हीं के अध्ययन के लिये कवि को पद्य से गद्य में अनुवाद करना पड़ा। ग्रन्थ की भाषा सुन्दर एवं प्रौढ है।

८५. परिमल्ल— इनके पितामह का नाम रामदास एवं पिता का नाम आस्तिमल्ल था। ये विरहिया जाति के थे। इनके पूर्वज ग्वालियर के रहने वाले थे। स्वयं परिमल्ल आगरे में रहते थे। इन्होंने अकबर के शासन काल में श्रीपालचरित्र की रचना की थी।

८६— बनारसीदास — जैन हिन्दी साहित्य के सूर्य महाकवि बनारसीदास १७वीं शताब्दी के विद्वान् थे। ये आगरे के निवासी थे। माता पिता की एक मात्र सन्तान होने के कारण इनका विवाह बचपन में ही हो गया था। ये प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। प्रारम्भ से ही इनको कविता करने का शौक था। यौवनावस्था में ये संसारिक झगड़ों में फंसे रहे। इसी अवस्था में इन्होंने नवरस पद्यावली नामक पुस्तक की रचना की लेकिन जब उसकी असत्यता मालूम हुई तो इन्होंने उसे गोमती नदी में बहा दिया। इसके पश्चात् इनका झुकाव आध्यात्मिकता की ओर हुआ और फिर नाममाला, नाटक समयसार, बनारसीविलास, एवं अर्द्ध कथानक का निर्माण किया। कवि की सभी कृतियां उच्च कोटि की हैं।

८७— भैय्या भगवतीदास — ये आगरे के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम लालजी था। ये ओसवाल जैन थे तथा कटारिया इनका गोत्र था। महाकवि बनारसीदास के समान ये भी प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। कवि हिन्दी, संस्कृत, फारसी, गुजराती आदि सभी भाषाओं के विद्वान् थे। हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में भी इनकी कवितायें मिलती हैं। आपकी कविता अलंकार एवं प्रसाद गुण से ओत प्रोत रहती है।

८८. भूधरदास — ये आगरे के रहने वाले थे। खण्डेलवाल जाति में इनका जन्म हुआ था। इनकी ३ रचनायें उपलब्ध हैं—पार्श्वपुराण, जैनशतक तथा पद संग्रह। ये कवि ही नहीं थे, किन्तु जैन सिद्धान्त के अच्छे विद्वान् भी थे। पार्श्वनाथपुराण इनका बहुत ही सुन्दर काव्य ग्रन्थ है। इनके बनाये हुये पद जैन समाज के अत्यधिक प्रिय हैं।

८९. मनोहरदास — ये धामपुर के निवासी थे। आसू साह के यहां इनका आश्रय था। सेठ के सम्बन्ध में इन्होंने बडी मनोरंजक घटना लिखी है। सेठ की दरिद्रता आने के कारण वह बनारस से अयोध्या चले गये किन्तु वहां के सेठ ने उन्हें खूब सम्मान तथा अतुल सम्पत्ति देकर वापिस ही विदा कर दिया।

कवि ने हीरामणि के उपदेश से धर्मपरीक्षा की रचना की थी। आगरा निवासी सालिवाहण, हिसार के जगदत्तमिश्र तथा उसी नगर में रहने वाले गंगराज के अनुरोध से धर्म परीक्षा की रचना की गयी थी।

९०. **राजमल्ल** —— उपलब्ध हिन्दी जैन गद्य के सबसे प्राचीन लेखक हैं। इन्होंने संवत १६०० के आस पास समयसार की हिन्दी टीका लिखी थी। समयसार के पठन पाठन को इन्होंने ही टीका लिख कर सुगम बनाया था। महाकवि बनारसीदास ने भी इन्हीं की टीका के आधार पर समयसार नाटक की रचना की थी।

९१. **रूपचंद** —— कविवर रुपचंद पांडे रुपचन्दजी से भिन्न हैं। इनको महाकवि बनारसीदास नें गुरु के समान माना है। आप एक उच्च कोटि के कवि थे। कविता की भाषा और शैली बहुत ही उत्कृष्ट है। कवि की अभी तक परमार्थ दोहा शतक, परमार्थगीत, पदसंग्रह, गीतपरमार्थी, पंचमंगल एवं नेमिनाथरासो आदि रचनायें उपलब्ध हुई हैं। आप भी आगरे के ही रहने वाले थे।

९२. **लब्धरुचि** —— ये विद्यारुचि के शिष्य थे। इन्होंने चन्दनृपरास नामक एक रचना लिखी है जिसको इन्होंने संवत् १७१३ में समाप्त की थी। इनकी भाषा पर गुजराती का अत्यधिक प्रभाव है। इन्होंने प्रशस्ति में भट्टारक परम्परा एवं अपनी गुरू परम्परा का अच्छा उल्लेख किया है।

९३. **लोहट** —— इनका जन्म बघेरवाल वंश में हुआ था। इनके पिता का नाम धर्मा था। ये तीन भाई थे। हींग और सुन्दर दोनों इनसे बडे थे। पहिले ये सांभर रहते थे और फिर बूंदी आकर रहने लगे थे। कवि ने बूंदी का सुन्दर वर्णन किया है। बूंदी के राजवंश का भी वर्णन पठनीय है। कवि के समय में राव भावसिंहजी का राज्य था। संस्कृत भाषा में श्री पद्मनाभ द्वारा रचित यशोधरचरित का हिन्दी पद्य अनुवाद इन्होंने संवत् १७२१ में समाप्त किया था।

९४. **लक्ष्मीदास** —— पंडित लक्ष्मीदास भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। ये सांगानेर के रहने वाले थे। इस समय महाराजा जयसिंह जी राज्य करते थे। पंडितजी ने यशोधरचरित्र की रचना भट्टारक सकलकीर्ति और पद्मनाभ की रचना के आधार पर की है। यशोधरचरित्र संवत् १७८१ की रचना है। कविता साधारण है।

९५. **ब्रह्म रायमल** — ये जयपुर राज्य के निवासी थे इन्होंने अपनी रचनाओं को भिन्न २ स्थानों पर लिखी थी। इनमें हरसोर गढ, रणथम्भोर एवं सांगानेर प्रसिद्ध है। रायमल्ल अन्त में आकर सांगानेर ही रहने लगे थे। ये मुनि अनन्तकीर्ति के शिष्य थे। इन्होंने हिन्दी में अनेक रचनायें लिखी हैं इनमें नेमीश्वर रास, हनुमंतकथा, प्रद्युम्नचरित्र, सुदर्शनरास, श्रीपालरास, भविष्यदत्त कथा आदि उल्लेखनीय है। प्रचार की ओर प्रमुख ध्यान होने से इन्होंने सरल एवं साधारण भाषा में साहित्य लिखा है।

९६. **ब्रह्म गुलाल** —— ये ग्वालियर के रहने वाले थे। भट्टारक जगभूषण के शिष्य थे। इन्हीं की अधीनता में रह कर कविता किया करते थे। त्रेपनक्रिया को इन्होंने संवत् १६९५ में समाप्त की थी। ग्वालियर पर उस समय सलीम (जहांगीर) का राज्य था।

९७ सुरचंद— ये इन्द्रभूषण के प्रशिष्य एवं ब्रह्म श्रीपति के शिष्य थे। कवि ने गृहस्थावस्था में रह कर रत्नपाल रासो की रचना की थी। कविता साधारण है। कविता पर गुजराती का प्रभाव है। रासो की रचना संवत् १७३२ में हुई थी।

९८ समयसुन्दरगणि— सकलचन्द्र इनके गुरु थे। ये खरतरगच्छ के मुनि थे। संवत् १६९८ में इन्होंने मृगावति चरित्र को समाप्त किया था।

अन्त में मैं श्री महावीर अतिशय क्षेत्रकमेटी के सभी सदस्यों तथा विशेषतः श्रीमान् मन्त्री महोदय को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने राजस्थान के जैन साहित्य के प्रकाशन का दृढ़ संकल्प किया है। श्रद्धेय गुरुवर्य पं० चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ को धन्यवाद देना छोटे मुंह बड़ी बात करना है क्योंकि यह सब उनकी कृपा का फल है। मा० भंवरलाल जी न्यायतीर्थ प्रो० वीरप्रेस भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने प्रशस्ति संग्रह को सुन्दर बनाने में बहुत योग दिया है। इसके अतिरिक्त सम्माननीय पं० जुगलकिशोर जी मुख्तार तथा प्रो० रामसिंह जी तोमर एम. ए. भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने समय समय पर अपनी बहुमूल्य सम्मति देकर मुझे उत्साहित किया है।

प्रशस्ति संग्रह को सुन्दर बनाने का काफी प्रयत्न किया गया है किन्तु फिर कुछ खटकने योग्य कमियां रह सकती हैं। आशा है विद्वानगण इस ओर उदारता से ध्यान देंगे।

जयपुर
१—८—५०

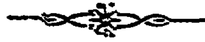
कस्तूरचन्द कासलीवाल

शुद्धाशुद्धिपत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ गाथा पंक्ति
ससारभीमुखे	संसारभीमुपे	१ × ५
भयेंडु	भयेंदु	२ × ८
प्राकृत	अपभ्रंश	२ × १३
प्रार्थना ते	प्रार्थनातो	२ × ३०
प्रणित	प्रीणित	३ × ५
चंचद्र्‌च:	चंचद्रुच:	५ × १५
पव्वाधिक :	पव्ट्यधिका:	८ × ७
वह्नयग्नि	वह्न्यग्नि	८ × २५
राद्रस्यो तत्पुराणं	रास्द्रस्यै तत्पुराणं	१३ × ६
मंद	मंद्	१३ × ६
त्रिभंगसार	त्रिभगीसार	१८ × ३
सयौरजन:	सपौरजन:	२१ × २
वर्णतां	वर्णनां	२६ × २
सर्व्वकर्मारसंतान	सवकर्मारिसंतानं	४१ × २
प्रख्यातननपां	प्रख्यातमनीषां	४२ × २०
वीरनार्थं	वीरनाथ	४६ × २१
अकच्छरपुर	अफक्वरपुर	४६ × २१
भव्यौघनिस्तारक:	भव्यौघनिस्तारक:	६० × २
घातद्रामा	या तद्रामा	६१ × २
जैसवालान्यये	जैसवालान्ये	६५ × १०
अभपद	अभयद्	६७ × १
यूमजित	धूम्र अजिन	६९ × २०
तदीय	नदीय	७० × ५
भमिगि	भानिगि	८१ × ३
घवते	मयचंते	९१ × २
मुण दाण इट्ठ	मुणिदाणइट्ठ	[illegible]
णरवण	गुरवयणा	[illegible]
पावसु	परवसु	[illegible]

सतावहारि	संतावहारि	११४ × ७
सिरिकमरमसोहु	सिरिकरमसोहु	११७ × १८
माहवसेगु	माहवसेणु	१२८ × १
राकइत्तु	कइत्तु	१२८ × ५
छंदु	छंदु	१५५ × १३
नथू	णाथू	१५७ × २३
१६७४	१६२४	१८७ × ६
काल षमा	कालख माहैं	२०८ × २८
वि···	विवुध	२२० × १६
पहन	पट्टन	२२३ × १२
कवही	कहीं	२३३ × २३
ले	लेस	२३३ × १३
सत्तार	सतरह	३३६ × २३
आल	आलि	२४४ × १३
मुंदिगयाल	मुंगिदयाल	२५१ × ४
बधाहोई	वधावा होई	२५१ × २०
किनसिंह	किशनसिंह	२५४ × २३
असह	रिसह	२६३ × ४
निरगंध	निरगथ	२६३ × ४
सहरु	सेहरु	२८७ × ५
जसइतु	जसइंधु	२८८ × १६
पिगलु	पिंगलु	२८७ × १६

विषय—अनुक्रम



आमेर शास्त्र भंडार, जयपुर के

ग्रन्थों का

प्रशस्ति-संग्रह

१. आदिपुराण ।

रचयिता श्री जिनसेनाचार्य तथा गुणभद्राचार्य । भाषा संस्कृत । साइज १२×४॥ इञ्च । पत्र संख्या ३६६. लिपि संवत् १८०३ माघ सुदी १५. प्रति में ४२वें सर्ग तक आचार्य जिनसेन का नाम दे रखा है तथा अन्तिम पांच सर्गों में आचार्य गुणभद्र का नाम दे रखा है । प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट है ।

मंगलाचरण—

श्रीमते सकलज्ञानसाम्राज्यपदमीयुषे ।
धर्म्मचक्रभृते भर्त्रे नमः संसारभीमुखे ॥१॥

अन्तिम पाठ—

यो नाभेस्तनयोपि विश्वविदुषां पूज्यः स्वयंभूरिति,
त्यक्ताशेषपरिग्रहोपि सुधियां स्वामीति यः शब्द्यते ।
मध्यस्थोऽपि विनेयसत्वसमितेरेवोपकारीमतो,
निर्दानोपिवुधैरुपास्यचरणो यः सोस्तुवः शांतये ॥

इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते त्रिषष्ठिलक्षणमहापुराणसंग्रहे प्रथमतीर्थंकरचक्रधरपुराण-परिसमाप्तं सप्तचत्वारिंशत्तमपर्व्वं समाप्तः ।

संवत् १८०३ वर्षे माघ सुदी १५ गुरौ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीविश्वभूषण तच्छिष्य ब्रह्मश्रीविनयसारजी तच्छिष्य ब्रह्म श्रीहर्षसागरजी तद्गुरुभ्राता पंडित हरिकृष्णजी तच्छिष्य पं० जीवनरामजी तदनुचर पं० हेमराजस्येदं पुस्तकं पठनार्थं पंडित हरिकृष्णेन दत्तं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४३७. साइज ११॥×५ इञ्च ।

संवत् १५८७ वर्षे मार्ग वुदि २ सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नंद्याम्नाये कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवांस्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा

स्तत्पट्टे भट्टारकप्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य धर्मचन्द्रदेवाः इदं आर्षं महापुराणं श्रीरत्नकीर्ति-शिष्येन ब्र० रत्नेन लिखापितं ।

२. आदिनाथपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६६. साइज १५×५ इञ्च । प्रति पृष्ठ १० पंक्ति तथा अक्षर प्रति पंक्ति ४२-४६. संवत् १८०० में यह प्रति जयपुर के दीवान बालचन्दजी छाबड़ा के पढने के लिपिबद्ध हुई थी ।

इति श्री वृषभनाथचरित्रे श्रीसकलकीर्त्ति विरचिते निर्वाणगमनवर्णनो नाम विंशांतिसर्गाः ।

संवत्सरे मुनिवाणभयेंदुमते आश्विनमासे कृष्णपक्षे पंचम्यां तिथौ बुधवासरे श्रीढाकानगरमध्ये श्री धनराज साह सास्त्रकीयपुस्तकं । लेखकः श्रीकालीचरणचक्रवर्त्तिनः ढाकासहर अंते पूर्वदिगे श्रीराजनाग्राम निवासिनः ।

संवत् १८३३ भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे सवाईजयपुरे भट्टारक श्री १०८ श्रीसुरेंद्रकीर्त्तये दीवानजी श्री बालचदजी छाबड़ा गोत्रस्तद्विधः दशलक्षणव्रतोद्यापनार्थं इदं पुस्तकं घटापितं ।

३. उत्तरपुराण सटीक ।

टीकाकार श्री प्रभाचन्द्राचार्य । भाषा ~~प्राकृत~~ अपभ्रंश संस्कृत । पत्र संख्या ५६. साइज १०×४॥ इञ्च । टीका संवत् १०८०. टीका ३८ वें अध्याय से आरम्भ होती है । प्रति के बीच के पत्रों की स्याही उड गयी है ।

श्री विक्रमादित्यसंवत्सरे वर्षाणामशीत्यधिकसहस्रे महापुराणविषमपदविवरणं सागरसेनसैद्धांतान् परिज्ञाय मूलटिप्पणकं चावलोक्य कृतमिदं समुच्चयटिप्पणं । अज्ञातपातभीतेन श्री संघाचार्यसत्कविशिष्येण श्रीचन्द्रमुनिना निजदोर्दंडाभिभूतरिपुराज्यविजयिनः श्रीभोजदेवस्य । इति उत्तरपुराणटिप्पणकं प्रभाचन्द्राचार्यविरचितं समाप्तं ।

संवत् १५७७ वर्षे अषाढ वुदी २ रविवारे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्रीप्रभाचन्द्रदेवाः तत् शिष्यमुनिधर्मचन्द्रस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये पाटणी गोत्रे नागपुरवास्तव्ये संघभारधुरंधरसाह लूणा तद्भार्या लूणाश्री तयोः पुत्र चतुर्विधदानवितरणकल्पवृक्षः साधु अर्हदास तद्भार्या अल्हसिरि तत्पुत्र साधु पहराज द्वितीय धनराज पहराज भार्या पाटमदे एतै इदं शास्त्रं लिखाप्य मुनि श्री धर्मचद्राय दत्तं ।

४. उपदेशरत्नमाला ।

रचयिता आचार्य श्री सकलभूषण । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १३७. साइज ११॥×५ इञ्च ।

पंक्ति प्रति पृष्ठ १० तथा अक्षर प्रति पंक्ति ३६-४२. अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थ षट्कर्मोपदेशरत्नमाला के आधार पर उक्त ग्रंथ की रचना हुई है। प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है। रचना संवत् १६२७, लिपि संवत् १८२६.

मंगलाचरण—

वंदे श्रीवृषभं देवं दिव्यलक्षणलक्षितं।
प्रणितप्राणिसद्वर्गं युगादिपुरुषोत्तमं ॥१॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

श्रीमूलसंघतिलके वरनन्दिगच्छे
गच्छे सरस्वतिसुनाम्नि जगत्प्रसिद्धे।
श्रीकुंदकुंदगुरुपट्टपरंपरायां
श्रीपद्मनन्दिमुनियः समभूज्जिताक्षः ॥१॥
तत्पट्टधारी जनचित्तहारी पुराणमुख्योत्तमशास्त्रकारी।
भट्टारकः श्रीसकलादिकीर्त्तिः प्रसिद्धनामाजनिपुण्यमूर्त्तिः ॥२॥
भुवनकीर्त्तिगुरुस्तत ऊर्जितो, भुवनभासनशासनमंडनः।
अजनि तीव्रतपश्चरणक्षमो, विविधधर्मसमृद्धिसुदेशकः ॥३॥
श्रीज्ञानभूपापरिभूषितांगः, प्रसिद्धषड्विंश्यकलानिधानः।
श्रीज्ञानभूषाख्यगुरुस्तदीयपट्टोदयाद्राविव भानुरासीत् ॥४॥
भट्टारकश्रीविजयादिकीर्त्तिस्तदीयपट्टे वरलब्धकीर्त्तिः।
महामना मोक्षसुखाभिलाषी बभूव जैनावनियाच्यपादः ॥५॥
भट्टारकश्रीशुभचंद्रसूरिस्तत्पट्टपंकेरुहतिग्मरश्मिः।
त्रैविद्यवंद्यः सकलप्रसिद्धो वादीभसिंहो जयताद्धरित्र्यां ॥६॥
पट्टे तस्य प्रीणितप्राणिवर्गः
शांतोदांतः शीलशालीसुधीमान्।
जीयात्सूरिः श्री सुमत्यादिकीर्त्तिः
गच्छाधीशः कम्रकांतिकलावान् ॥७॥
तस्याभूच्च गुरुभ्राता नाम्ना सकलभूषणः।
सूरिर्जिनमते लीनमनाः संतोषपोषकः ॥ ८ ॥
तेनोपदेशसद्रत्नमालासंज्ञो मनोहरः।
कृतः कृतिजनानंदनिमित्तं ग्रंथ एषकः ॥ ९ ॥
श्रीनेमिचंद्राचार्यादियतीनामाग्रहात्कृतः।
सद्वर्द्धमानांचेलादिं प्रार्थना ते मयैषकः ॥ १० ॥

सप्तादिशत्यधिके षोडशशतवत्सरेसुविक्रमतः ।
श्रावणमासे शुक्ले पक्षे पृष्ठ्यां कृतोऽयं ग्रंथः ॥ ११ ॥
न मया ख्यातिनिमित्तं न चाभिमानेन विरचितो ग्रंथः ।
धर्मरतानां गृहिणां हिताय च स्वस्य पुण्याय ॥ १२ ॥
यावत्सिद्धाः सिद्धधामप्रपन्नामेर्वाद्या वै भूधराः भूरि संख्याः ।
चंद्रादित्याद्याश्च खे सख्यसंख्याः संतिष्ठंते तावदास्तां ममायं ॥ १३
श्रीवीरगौतमाद्यैश्च श्रेणिकस्य पुरः पुरा ।
यदुक्तं तच्च संक्षिप्य मयापीह विलंपितं ॥ १४ ॥
सिद्धांतशब्दयुक्त्यादिविरुद्धं यन्मयोदितं ।
क्षमितव्यं मुनीशैस्तत्सर्वशास्त्राब्धिपारगैः ॥ १५ ॥
न्यूनमक्षरमात्राद्यैरज्ञानान्मयकात्रयत् ।
प्रोक्तं क्षमस्व तद्देवि सारदे श्रीजिनास्यजे ॥ १६ ॥
जिनसिद्धसूरिपाठकसाधुमुनींद्राश्चतुर्विधस्य संघस्य ।
विदधतु मंगलमतुलं भुक्तिं मुक्तिं च यच्छंतु ॥ १७ ॥
सहस्रं त्रितयं चैव त्रिशतत्र्यशीतिसंयुतं ।
३३८३ अनुष्टुपछंदसा चास्य प्रमाणं निश्चितं बुधैः ॥ १८ ॥

इति भट्टारक श्रीशुभचन्द्रशिष्याचार्य श्रीसकलभूषणविरचितायां उपदेशरत्नमालायां पुण्यषट्कर्मप्रकाशिकायां तपोदानमाहात्म्यवर्णनो न म अष्टादशपरिच्छेदः ।

संवत् १८२६ मिती मार्गशिर सुदी २ बृहस्पतिवारे सवाईजयपुरनगरे चंद्रप्रभचैत्यालये पंडितोत्तमपंडितजी श्री रायचंदजी तत् शिष्य सेवक सवाई रामेण इदं पुस्तकं लिपिकृतं ॥

प्रति नं० २. पत्र संख्या १३६. साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७४५. प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है।

संवत्सरे वाणाब्धि मुनींदुमिते १७४५ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे चतुर्दशीतिथौ गुरुवारे शतभिषा नक्षत्रे शुभनामयोगे श्रीमद्वणापथे श्रीमच्चन्द्रप्रभचैत्यागारे पातिसाह श्री अवरंगसाहि तत्सामंत महाराजा श्री राइसिंहजी राज्ये श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति स्तत्पट्टे भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्तिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टोदयाद्रिदिनमणिनिभा गांभीर्य धैर्यौदार्यपांडित्यसौजन्यप्रमुखगुणगणमणि रोहणोक्षितिभृतः भट्टारकश्रीजगत्कीर्त्तितदाम्नाये खंडेलवालान्वये छावडा गोत्रे साह श्री गंगाराम; वजगोत्रे साह श्री अनदराम, साह श्री खेतसी साह श्री माधो; पहाड्या गोत्रे साह श्री वनमालीदास तत्पुत्र नंदरामः साह श्री तेजसिंह, सेठी गोत्रे साह श्री मनराम साह श्री पूरा, साह मेघा तिलोकचंद; पांड्या गोत्रे साह श्री वेणा, साह श्री ढोला, साह घडसीजी, पाटणी

गोत्रे साह श्री माधो, साह श्री टोडर. सोनी गोत्रे साह श्री जंमा, अजमेरा गोत्रे साह श्री पूरा एते सर्वाः भट्टारक श्री जगत्कीर्त्तिदेवातच्छात्र ब्रह्मचारि नाथूराम संज्ञाय तद्भ्रातानुज सुधी मगडू संज्ञाय एताभ्यामिदं पुस्तकं नामषट्कर्मोपदेशरत्नमालाग्रंथं सर्वे श्रावकाः लिखाप्य ब्रह्म श्री नाथूरामाय घटापितं ।

५. करकण्डुचरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री शुभचन्द्र तथा मुनि श्री सकल भूषण । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०६ । साइज १०½×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२-३६ अक्षर । रचना संवत् १६११. लिपि संवत् १८६१. प्रारम्भ के ४ पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघे जनि पद्मनंदी तत्पट्टधारी सकलादिकीर्तिः
कीर्तिः कृता येन च समर्त्यलोके शास्त्रार्थचक्री सकला पवित्र ॥ १ ॥
भुवनकीर्तिरभूद्भवनाधिपो भवनभासनभूरिमतिस्तुतः ।
दुरतपश्चरणोद्यतमानसो भवनयाद्दि खगेट् क्षितिभूत्तमः ॥ २ ॥

× × × × × × × ×

पट्टे तस्य गुणांबुधिप्र तधरो धीमान् गरीयान्वरः
श्रीमच्छ्री शुभचन्द्रएष विदितो वादीभसिंहो महान् ।
तेनेदं चरितं विचारुरुचिरं चाकारि चंचद्रूवः
श्रीमच्छ्री करकंडुनामनृपतेः नीत्यानरस्तंद्विषं ॥ ३ ॥
चन्द्रनाथचरितं चरितार्थं प्रद्मनाभ चरितं शुभचन्द्रः ।
मन्मथस्य चरितं च सुचारं जीवकस्य चरितं चकार ॥ ४ ॥
चंदनायाः कथा येन दृष्ट्वा नांदीश्वरी तथा ।
आशाधरकृतार्च्चायां वृत्तिः सद्वृत्तशालिनी ॥ ५ ॥
त्रिंशच्चतुर्विंशतिपूजनंयः वृद्धं च सिद्धार्चनं माविधत्तं ।
सारस्वतीयार्चनमत्रचित्रं चिंतामणीयार्च्चनमुच्चरिष्णुः ॥ ६ ॥
श्रीकर्मदाह विधिबंधुरसिद्धसेवां
नानागुणौघगणनाथसगर्व्वनं च ।
श्रीपार्श्वनाथव काव्यसुपंजिगां च
यः सचकार शुभचन्द्रयतीचंद्रः ॥ ७ ॥
उद्यापनमदीपिष्टा पल्योपमविधिश्च यः ।
चारित्रशुद्धि तपसश्च शुस्त्रिंशद्वादशात्मनः ॥ ८ ॥

शंसयिवदनविदारण मपशब्दसुखंडनं परं ।
तर्कं स तत्त्वनिर्णयवरस्वरूपसंबोधिनीवृत्ति ॥ ९ ॥
अध्यात्मपद्यवृत्तिसर्वार्थापूर्व्वतोभद्रं ।
यो कृत् सद्व्याकरणं चिंतामणिनामधेयं च ॥ १० ॥
युग्मं कृता येनांगप्रज्ञप्तिः सर्व्वांगार्थ प्ररूपिका ।
स्तोत्राणि च पवित्राणि पट्पदाः श्रीजिनेशिनां ॥ ११

× × × × × × × ×

करकंडुनरेंद्रस्य चरितं तेन निर्म्मम ।
जिनेशपूजनेप्रीत्येत्येदं समुद्धृत्य शास्त्रतः ॥ १२ ॥
शिष्यस्तस्य समृद्धिबुद्धिविशदो यस्तर्कवादीवरो
वैराग्यादिविशुद्धिवृंद्धजनकः सर्व्वार्थमुक्तोमहान् ।
संप्रीत्यासकलादिभूषणमुनिः संशोध्य चेदं शुभं,
तेनालेखिसुपुस्तकं नरपतेराद्यसुचंयेशिनः ॥ १३ ॥

× × × × × × × × ×

द्वष्टो विक्रमतः शातसमुद्रातचेकादशाव्दधिका
भाद्रे मासिसमुज्वलयुगतिथोखङ्गे जावादेपुरे ।
श्रीमच्छ्रीवृषभेश्वरस्य सदने चक्रो चरित्रंत्विदं,
राज्ञः श्रीशुभचद्रंसूरि यतियश्चंपाधिपस्याद्भुवं ॥ १४ ॥

इति श्री शुभचन्द्रविरचितमुनीश्रीसकलभूषणसहाय्यसापेक्षे भव्यजनजेगीयमानयशोराशि श्री करकंडुमहाराजचरिते करकंडु दीक्षाग्रहणसर्वार्थसिद्धिगमनो नाम पंचदश सर्गः ।

६. कर्म्मकांडसटीक ।

टीकाकार श्री ज्ञानभूषण तथा श्री सुमतिकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४४ । साइज १२×५॥ इञ्च । टीका काल १६ वीं शताब्दी । लिपि संवत् १७७७ । प्रतिपूर्ण तथा सुन्दर है ।

मंगलाचरण—

महावीरं प्रणम्यादौ विश्वतत्त्वप्रकाशकं ।
भाष्यं हि कर्मकांडस्य वक्ष्ये भव्यहितंकरं ॥
विद्यानंदिसमल्ल्यादि भूपलक्ष्मींदु सद्गुरून् ।
वीरेंदुज्ञानभूषं हि वंदे सुमतिकीर्त्तिकं ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघमहासाधुर्लक्ष्मीचंद्रोयतीश्वरः ।
तस्य पट्टे च वीरेंदुर्विबुधो विश्ववंदितः ॥ १ ॥
तदन्वये दयांभोधिर्ज्ञानभूषोगुणाकरः ।
टीकां हि कर्मकांडस्य चक्रे सुमतिकीर्तियुक् ॥ २ ॥

इति भट्टारक श्री ज्ञानभूषणनामांकिता सूरी श्रीसुमतिकीर्ति विरचिता कर्मकांडस्य टीका समाप्तः।

संवत् १७७७ वर्षे द्वितीय अषाढ सुदी ६ भौमदिने श्रीमद्भट्टारक श्री १०८ देवेंद्रकीर्ति तच्छिष्य पंडितकिशनदासस्य वाचनार्थे लिखितं महात्मा धनराजेन श्री अंबावतीमध्ये श्री सवाईजयसिंहजी विजयराज्ये।

७. चन्द्रप्रभचरित्र ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७२ । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में, ३८—४२ अक्षर । विषय—आठवें तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभु का जीवन चरित्र । प्रति पूर्ण तथा नवीन है ।

मंगलाचरण—

श्रीवृषं वृषभं वंदे वृषादं वृषभांकितं ।
वृषभादिसभाश्लिष्ट पादद्वितयपंकजं ॥ १ ॥
चन्द्रप्रभं जिनं स्तौमि चन्द्रकांत सुचंद्रकं ।
चंद्रांकं चेडितं चंद्रैश्चंद्रिकाहततामसं ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

त्रैलोक्यसारादिसुलोकग्रंथान्, सद्गोम्मटादीन् वरदीवहेतून् ।
सत्तर्कशास्त्राष्टसहस्र्यधीशान्नो वेद्म्यहं मोहवशी कृतांतः ॥ १ ॥
तथाविधोपि प्रगुणैर्जिनेशं, स्तुवश्च सद्भिः सकलैः परैश्च ।
क्षाम्यः सदा कोपगणं विहाय, बाल्ये जने को हि शुभं न दद्यात् ॥ २ ॥
श्रीमूलसंघे जनि पद्मनन्दी, तत्पट्टधारी सकलादिकीर्त्तिः ।
तत्पट्टधारी भुवनादिकीर्ति, जीयाच्चिरं धर्मधुरीणदक्षः ॥ ३ ॥
तत्पट्टे जनिबोधबुद्धनिखलन्यायादिशास्त्रार्थ—
कश्चिद्रूपामृतपानलालसमतिः श्रीज्ञानभूषोजयी ।
जीयात् पंचमकालकल्पशिखरी तत्पट्टधारो चिरं,
श्रीमच्छ्री विजयादिकीर्तिमुनियो भूयाच्छशास्त्रार्थवित् ॥ ४ ॥

सोम प्रभः सोमसमानतेजाः श्रीसोमसल्लांछनइद्धकीर्तिः ।
सोमः सुमूर्त्तिश्च करोतु साम्यं श्री शौभचद्रस्य सुयोगिनः सः ॥ ५ ॥
यः संश्रृणोति भजते निखिलं चरित्रं,
यः कायतिप्रथयंतींदुनिभस्यभावात् ।
यः पाठयन् पठयति जिनभक्तिरागात्,
स सिद्धिभीरुमुखपंकजमश्नुतेहि ॥ ६ ॥
पन्चधिकाः सर्व्वे शतपंचदशामलाः
प्रमाणमस्य विज्ञेयं लेखकैः पाठकैः सदा ॥ ७ ॥

इति श्रीचन्द्रप्रभचरिते भट्टारक श्रीशुभचन्द्रविरचिते भगवतो निर्वाणगमनो नाम दशमः सर्गः।

संवत्सरे मदनविक्रमवसुरूपमिते मासोत्तममासे श्री चन्द्रप्रभुतीर्थंकरजन्मनि पवित्रते चैत्रमासे कृष्णपक्षे लालसोटशुभस्थानमध्ये वनोपवननदीर्घिकाकासारसमाकुले महाराजाधिराज श्री सवाई प्रतापसिंहराज्य-प्रवर्त्तमाने श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये पंडित श्री परसराम जी तत् शिष्य अणंदराम चि० तदन्तेवासी भगवानदास पठनार्थं लिखापितं ॥

८. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति संग्रह ।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८७, साइज १३x५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४० अक्षर रचना संवत् १८३३.

मंगलाचरण—

श्री वीरं प्रणिपत्योच्चै विघ्नसंदोहनाशकं ।
प्रारब्ध कार्यकर्त्तारं वक्ष्ये द्वीपप्रज्ञप्तिकं ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

एवं श्रीपद्मनन्दिगुणगणकलितो मानसे मे पदं स्वं,
कृत्वाप्यस्थाः सुकृतकृतं श्रीसुरेंद्रादिकीर्त्तेः ।
श्रीमत्क्षेमेन्द्रकीर्त्तिप्रवरमुनिवरप्रेष्टशिष्यस्य नित्यं,
जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिप्रवररचनाटिप्पणीवद्विधातुः ॥ १ ॥
अब्दे वह्नियग्निवस्विंदुमित अमले पौष शुक्लस्य षष्ट्यां,
श्रीमन्नाभेयगेहे वितनुमतिना प्राकृतात्संस्कृतेन ।
श्रीमूलाख्ये सुसंघे तनुमतिविदां बोधनायार्थमेषा,
वंद्ये नोच्चैः प्रक्लृप्ता सकलजनशुभामंगलं मे करोतु ॥ २ ॥

श्रीमद्बलात्कारगणे सुरम्ये सरस्वतीगच्छमुनींद्रपूज्ये।
श्रीकुन्दकुन्दान्वयके सरोजे देवेंद्रकीर्त्तिः प्रबभूव भानुः ॥ ३ ॥
भट्टारकानां च शिरोमणिर्यस्तत्पट्टके भूत्थमहींद्रकीर्त्तिः।
देवेंद्रकीर्तिर्मम वै गुरुर्या भूम्यां ततोऽभूत्तरसा सुधीरः ॥ ४ ॥

× × × × × × × × × ×

इति जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसंग्रहे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्तिविरचिते प्रमाणपरिच्छेदो नाम त्रयोदशपरिच्छेदः समाप्तः।

६. जम्बूस्वामिचरित्र।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०५. साइज १०||×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३१ अक्षर। विषय-अन्तिम केवली श्री जम्बूस्वामि का जीवनचरित्र। लिपि संवत् १६६३.

मंगलाचरण—

श्रीवर्द्धमानतीर्थेशं वंदे मुक्तिवधूवरं।
कारुण्यजलधिं देवं देवाधिपनमस्कृतं ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्रीकुन्दकुन्दान्वयमौलिरत्नं, श्रीपद्मनन्दिविदितः पृथिव्यां।
सरस्वतीगच्छविभूषणं च, बभूव भव्यालिसरोजहंसः ॥ १ ॥
ततोऽभवत्तस्य जगत्प्रसिद्धः, पट्टे मनोज्ञे सकलादिकीर्त्तिः।
महाकविः शुद्धचरित्रधारी, निर्ग्रंथराजा जगति प्रतापी ॥ २ ॥
जयति सकलकीर्त्तिः पट्टपंकेजभानुः,
जयति भुवनकीर्त्तिः विश्वविख्यातकीर्त्तिः।
बहुयतिजनयुक्तो मुक्तिमार्गप्रणेता,
कुसुमशरविजेता भव्यसन्मार्गनेता ॥ ३ ॥
विबुधजननिषेव्यः सत्कृतानेककाव्यः,
परमगुणनिवासः सद्वृतालीविलासः।
विजितकरणमारः प्राप्तसंसारपारः,
स भवतु गतदोषः शर्म्मणे वः सतोषः ॥ ४ ॥
पट्टाष्टमादेस्तपसो विधाता,
क्षमाभिधः श्रीनिलयं धरित्र्यां।

जीयाज्जितानेकपरीषहारिः

संबोधयन् भव्यगणं चिरं सः ॥ ५ ॥

भ्रातास्ति तस्य प्रथितः पृथिव्यां सद्ब्रह्मचारी जिनदासनामा ।

तनोति तेन चरितं पवित्रं, जंबूदिनाम्नो मुनिसत्तमस्य ॥ ६ ॥

देशे विदेशे सततं विहारं, वितन्वता येन कृताः सुलोकाः ।

विशुद्धसर्वज्ञमतप्रवीणाः परोपकारत्वनतत्परेण ॥ ७ ॥

सद्ब्रह्मचारी किल धर्मदासस्तस्यास्ति शिष्यः कविबद्धसख्यः ।

सौजन्यवल्ली जलदः कृतोयं, तद्योगतो व्याकरणप्रवीणः ॥ ८ ॥

कविर्महादेव इति प्रसिद्धस्तन्मित्रमास्ते द्विजवंशरत्नं ।

महीतले नूनमसौ कृतश्च, साहाय्यतस्तस्य सुधर्महेतोः ॥ ९ ॥

ग्रंथः कृतोऽयं जिननाथभक्त्या, गुणानुरागाच्चमहामुनीनां ।

पूजाभिमानाद्रहितेन नूनं मया प्रशस्तः परमार्थ वुद्धया ॥ १० ॥

ये शृण्वन्ति चरित्रमुत्तममिदं श्री जंबुनाम्नो मुने,

नानाचित्रकथाविभूषितमतिप्रवीण्यसंबोधनं ।

तेषां स्याद्बहुपुण्यकर्मनिपुणा वुद्धिः शुभं भूरिच,

त्यक्तशेषभवप्रसूतसुखसार्थेभ्यासुधर्मास्पदं ॥ ११ ॥

पठनीयपाठनीयशास्त्रमेतन्मुनीश्वरैः ।

जंबूस्वामिचरित्राख्यं रोमांचजननं नृणां ॥ १२ ॥

क्षंतव्यं शारदे देवि यदत्रस्खलितं मया ।

मोहप्रमादवशतः श्रुताब्धौ को न मुह्यति ॥ १३ ॥

जंबूस्वामिजिनाधीशो भूयान्मांगल्यसिद्धये ।

भवतां भुवि भो भव्याः श्री वीरांतिम केवली ॥ १४ ॥

एकविंशतिसंख्यानि शतान्यत्र चरित्रके ।

त्रिंशद् युतानि श्लोकानां, शुभानां संति निश्चितं ॥ १५ ॥

इति श्री जम्बूस्वामिचरित्रे भट्टारक श्रीसकलकीर्तिशिष्य ब्रह्मचारी श्रीजिनदास विरचिते विद्युच्चर महामुनिसर्वार्थसिद्धि गमनं नामैकादशः सर्गः ।

१०. जयकुमार पुराण ।

रचयिता ब्रह्म कामराज । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७६ । साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ९ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४४ अक्षर । प्रतिपूर्ण है तथा प्राचीन है । लिपि सम्वत् १७१६ ।

मंगलाचरण—

श्रीमंतं त्रिजगन्नाथं वृषभं नृसुरार्च्चितं।
भवभीतिनिहंतारं वंदे नित्यं शिवाप्तये॥ १॥
नमः श्री शांतिनाथाय शांतिकर्मारये निशं।
पंचभ्यस्सद्गुरूभ्योस्तु प्रणामोभीष्टसाधकः॥ २॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

इति पूर्णं जयाख्यस्य पुराणं योगिनो वरं।
पठनपाठनश्रोतृशीलानां जयपुण्यदं॥ १॥
प्राप्तशिवो जयीदेयाज्जयोस्माभिः स्तुतः श्रुतः।
युस्माभि र्नः पुराणस्य व्याजाद्रत्नत्रयं वचः॥ २॥
प्रकथ्यतेऽन्वयोऽथात्र ग्रंथकृद्ग्रंथभक्तजः।
मूलसंघे वरे वीरपारंपर्यान्चतुर्गणे॥ ३॥
अभूद्गणो बलात्कारः पद्मनंद्य दि पंचसु।
नामास्मिन्स्य मुनिग्रीव शारदा बलवाचकः॥ ४॥
आचार्या कुदकुंदाख्यात्तस्मादनुक्रमादभूत्।
सकलकीर्तियोगीशो ज्ञानी भट्टारकेश्वरः॥ ५॥
येनाधृतो गतो धर्मो गुर्जरे वाग्वरादिके।
निग्रंथे न कवित्वादिगुणे न वाहंता पुरा॥ ६॥
तस्माद् भुवनकीर्ति श्रीज्ञानभूषणयोगीराट्।
विजयकीर्त्त योऽभवन् भट्टारकपदेशिनः॥ ७॥
तेभ्यः श्री शुभचंद्रश्री सुमतिकीर्त्ति संयमि।
गुणकीर्त्त्याह्वया आसन् बलात्कारगणेश्वरः॥ ८॥
ततः श्री गुणकीर्त्तीयपदव्योमदिवाकरः।
वादिनां भूषणो भट्टारकोऽभूत् वादिभूषणः॥ ९॥
तत्पदाधीश्वरो विश्वव्यापिनी श्वेतकीर्त्तिधृत्।
रामकीर्तिरभूदस्य रामो वा सुखदो गुणैः॥ १०॥
तस्मात् स्वगच्छपतिरस्ति स पद्मनन्दी।
निष्णांतकोकसुखकारकपद्मनन्दी।
भट्टारको जिनमतांबरपद्मनन्दी
श्रीरामकीर्त्तिपदभूधरपद्मनन्दी॥ ११॥

यः [illegible] वहिरागी
शान्तो हि [illegible] संमूहः ।
[illegible]
कालकलौ परिहृताखिलवस्तुलोभैः ॥ १२ ॥
तस्मात् [illegible] वंशादिवालेन्दुविद्
[illegible] सः ।
प्राक् [illegible] मुनीश्वरत्वं चाचाराणि प्रभो
राजन्यं कुल संगृह्य सततं स्वांगीकृतान्न चलत ॥ १३ ॥
गिरिपुर धिपतिर्नृ पंपुंगवस्तत्नमिवीक्ष्य सुदोल्लसते प्रभुः ।
गिरिवरादिमहाहवसंस्थितः जलधिरंबु च येन विधुः यथा ॥ १४ ॥
तदुपदेशवशेन तदीयसत्प्रवरपुण्यभराकृतसाहसं ।
जयपुरागमिदं तनुबुद्धिना [illegible] ॥ १५ ॥
नाम्प्रवंसभवयं हतजीवराजेनेंयोवलास्सकलसौख्यकरः कृतोऽयं ।
[illegible] स्वपतिदु [illegible] ॥ १६ ॥
भट्टारकस्य गुरुदंगुरभूलसिद्धो,
मेधावितः सुमतिकीर्तिमुनेर्गुणाच्यः ।
आचार्यमुख्यसकलादिमंभूषणांख्य—
स्तच्छिष्य सूरिरभवत् स नरेन्द्रकीर्तिः ॥ १७ ॥
पूर्णस्य वक्तृकवितादिगुणैरदभ्रेः
शिष्यो बभूव नृपमान्यनरेन्द्रकीर्तिः ।
वर्णीस्तप भवयुषः संहितांख्यकांख्यः,
शिष्योऽस्ति तस्य जयसेवककामराजः ॥ १८ ॥
मात्रासंधिविभक्तिलिंगवचनार्तकारकरीत्यादिभिः,
प्रोक्तं यत्रहितं सरस्वतिमया ग्रंथेऽत्र सूरीश्वरोः ।
निर्माणे विदुभावतः [illegible] बालके,
[illegible] शिवकरा [illegible] ॥ १९ ॥
दुःसंध्यादिमलं विनाश्य गुणिनः संवीक्ष्य यूयं बुधाः,
हर्षन्तः कविचिह्नं कुरुत मो ग्रंथेऽह्नः स्वात्मनि ।
शुद्धं सज्जनता गुणादृहदमिवा कुर्वादिनैर्मल्यदं,
गंभीरं पृथुलं त्रिवंगसलिलं पंकेरहोल्लासराः ॥ २० ॥

भूयात्पुराणरचना भवपुण्यतो मे,
सम्यक्पदेन सहितो भवसौख्यवर्गात्।
अन्योत्थकर्मजनकाद्विमुखस्य काचि-
चारित्ररत्ननिचयो न हितस्ततोन्यः॥ २१॥

अमृतवार्द्धि ख भूमि सुदर्शनो विजयनामनगाचलमंदिरचपकरुक्।
समूहोः सहिताः इमे जयतु यावदिदं भुवनत्रये॥ २२॥
शिल्पिरुत्पादयत्येव जिनबिंबं तथा कविः।
शास्त्रं तन्मान्यतामेति मान्यं तन्मानितं जनोः॥ २३॥
राद्रस्यो तत्पुराणं शकमनुजयतेमेदपाटस्यमुख्ये।
पश्चात् संवत्सरस्य प्ररचितमटतः पंच पंचाशतोहि।
अभ्राभ्राब्धीक संवत्सरनिकरयुजः फागुणे मासि पूर्णे।
द्रम्रेवोचोदयाख्ये सुकविविनयिनो लालजिष्टोश्च वाक्यात्॥ २४॥

सकलकीर्त्तिकृतं पुरुदेवजं समवलोक्य पुराणमियंकृतिः।
जयमुनेर्गुणपालसुतस्य च वृहद्दलं जिनसेनकृतंकृता॥ २५॥

इति श्री जयांके जयनाम्निपुराणे भट्टारक श्री पद्मनन्दिगुरूपदेश ब्रह्मकामराजविरचिते पं० जीवराज-सहाय्यात् त्रयोदशमः सर्गः॥

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८५. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३७-४२ अक्षर। प्रति पूर्ण है।

संवत् १६६१ वर्षे भादवा वुदी ३ शुक्रे श्रीमूलसंघे सरस्वतिगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्योन्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिदेवास्तदन्वये भट्टारक श्री वादिभूषणदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री रामकीर्त्तिदेवा स्तद्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनंदीस्तदाम्नाये श्री गुर्ज्जरदेशे श्री सूरतविंदार श्री वासपूज्यचैत्यालये हुंबडजात य साह श्री संतोषी भ्राता साह जीवराज तयोः जननी आर्यिका बाई करमा तया स्थविराचार्य श्री नरेंद्रकीर्त्ति-स्तच्छिष्य ब्रह्म श्री लाड्यका तत्च्छिष्यब्रह्म श्री कामराजाय जयपुराणं लिखाप्य दत्तं॥

संवत् १७३० वर्षे ब्र० कामराजेन स्वाभिष्ट शिष्य ब्र० वाघजीष्टवे जयपुराणमिदं दत्तं॥

११. जिनसहस्रनाम सटीक।

मूलकर्त्ता आचार्य जिनसेन। टीकाकार आचार्य श्री श्रुतसागर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६१। साइज १२×५॥ इञ्च। प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है।

प्रशस्ति—

अर्हंतः सिद्धनाथास्त्रिविधमुनिजनाभारती चार्हतीऽव्या
सद्वंद्यो कुंदकुंदो विबुधजनहृदानंदनःपूज्यपादः
विद्यानंदोकलंकः कलिमलहरणःश्रीसमंतादिभद्रो
भूयान्मे भद्रबाहुर्भवभयमथनो मंगलं गौतमादि ॥ १ ॥
श्रीपद्मनन्दिपरमात्मपरः पवित्रो
देवेन्द्रकीर्त्तिरथसाधुजनाभिवंद्यः ।
विद्यादिनंदिवरसूरिरनल्पबोधः,
श्रीमल्लिभूषण इतोस्तत्र च मंगलं मे ॥ २ ॥

× × × × × ×

श्रीश्रुतसागरकृतिवरवचनामृतपानमत्र यैर्विहितं
जन्मजरामरणहरं निरंतरं तैः शिवं लब्धं ॥ ३ ॥
अस्ति स्वस्ति समस्तसंघतिलकः श्रीमूलसंघं,
वृत्तं यत्र मुमुक्षुवर्गशिवदं संसेवितं साधुभिः ।
विद्यानंदिगुरुस्त्वहास्तिगुणवद्गच्छेगिरः सांप्रतं,
तच्छिष्यश्रुतसागरेण रचिता टीका चिरं नंदतु ॥ ४ ॥

इत्याचार्यश्रीश्रुतसागरविरचितायां जिननामसहस्रटीकायामंतकृत्कृतविवरणे नाम दशमोध्यायः।

१२. जीवंधर चरित्र ।

रचयिता श्री शुभचन्द्राचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६५. साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-३६ अक्षर । प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट है । रचना संवत् १५६६. लिपि संवत् १६३५. जीवंधर चरित्र अभी तक अप्रकाशित है ।

मंगलाचरण—

श्रीसन्मतिः सतां कुर्यात्समीहितं फलं परं ।
येनाप्येत महायुक्तराज्यस्य वरवैभवः ॥ १ ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

श्री मूलसंघो यतिमुख्यसेव्यः, श्रीभारतीगच्छविशेषशोभः ।
मिथ्यामतध्वांतविनाशदक्षो, जीयाच्चिरं श्रीशुभचंद्रभासी ॥ १ ॥
श्रीमद्विक्रमभूपतेर्वसुहतद्वैतेशतेसप्तह,
वेदैन्यूनतरे समे शुभतरे पिमासे वरे च शुचौ ।

चारे गीष्पतिके त्रयोदशतिथौ सन्नूतने पत्तने,
श्री चन्द्रप्रभधाम्नि वै विरचितं चेदं मया तोषतः ॥ २ ॥

इति श्री जीवंधरस्वामिचरिते जीवंधरस्वामिमोक्षगमनवर्णननामत्रयोदशो भर्लः ।

संवत १६३६ वर्षे अषाढ सुदी १३ सोमवारे सांषणाग्रामे राय श्री सुरजनजी प्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवातच्छिष्य-मंडलाचार्यश्रीधर्म्मचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिदेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्री चन्द्र-कीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये साहगोत्रे साह श्री कमा तद्भार्या द्वे प्रथम भार्या करणादे द्वितीया लाहुडी । तयोः पुत्राः पच । प्रथम पुत्र साह ऊदा, द्वि० सा. माधु. तृ. सा० माधु चतुर्थ सा. चांदु पंचम सा. कालु । सा. ऊदा तद्भार्या उत्पिदे तयोः पुत्रौ द्वौ । प्रथम पुत्र जिनपूजापुरंदरान्, दानगुणे श्रेयांस, कीर्त्ति-गुणे रामचन्द्र, शीलगुणे सुदर्शन, प्रभावनांगे वज्रकुमार, इत्याद्यनेकगुणालंकृतगात्रान साह श्री भीखा तद्भार्या दानशीलतपभावना भावलदे तयोः पुत्राः चत्वारिः । प्रथम पुत्र साह जेसा भार्या जसमादे, द्वि० पुत्र मोटा, तृतीय चि० वेणा चतुर्थ चि० हरीदास । द्वितीय पुत्र साह सेखा तद्भार्यातिस्रः प्र० भा० शृंगारदे तयोः पुत्र चि० तेजा । द्वितीया भार्या सक्तादे । तृतीया भार्या संकरदे । सा. माधु भार्या मुक्तादे तयोः पुत्राः पंच । प्रथम पुत्र सा. श्रीतु भार्या बीतादे तयोः पुत्रास्त्रयः प्रमथ पुत्र खीवा द्वितीय पुत्र सांगा । तृतीय पुत्र माल्हा । द्वितीय पुत्र धर्मा भार्या धारादे तत्पुत्र ताल्हू । तृतीय पुत्र लाखा भार्या लखमादे । चतुर्थ पुत्र परवत भार्या पाटमदे । पंचम पुत्र नानू भार्या नारंगदे । सा. साधु भार्या पदमपती । साह चांदू भार्या दानशीलतप-भावना सुहागीचांदणदे तयोः पुत्रा चत्वारः । प्रथम पुत्र कुलमंडन सा. श्रिया तद्भार्या प्रथम सुहागदे द्वि० भार्या लाहुडी । द्वितीय पुत्र हीरा भार्या हीरादे तृ० पुत्र बोहिथ भार्या बहुरंगदे चतुर्थ पुत्र होला भार्या हरषमदे । साह काल्हू भार्या द्वे प्रथम केलवदे, द्वितीया भार्या कौतिगदे तयोः पुत्राः चत्वारः । प्रथम पुत्र सा० आखा भार्या अहंकारदे द्वि० पुत्र चि० देवा तृतीय पुत्र गढमल चतुर्थ पुत्र जालप एतेषां मध्ये जिनपूजा-पुरंदरान्, राजसभाशृंगारहारोपमान्, सौम्यगुणचद्रमा प्रतापगुणसूर्यसम, गंभीरगुणसमुद्रतुल्यान इत्याद्यनेक गुणगणालंकृतगात्रान् साह श्री ऊदा तत्पुत्र कुलमंडन साह सेखा तेनेदं कर्मक्षयार्थं जीवंधरचरित्रं लिखाप्य पं० श्री पदारथपठनाय दत्तं ।

१३. ज्ञानसूर्योदय नाटक ।

रचयिता श्री वादिचंद्रसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३१. साइज १०॥x४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४४ अक्षर । रचना संवत १६४८. लिपि संवत् १८३५. श्री वादिचन्द्र सरस्वतिगच्छ के आचार्य थे तथा पं० प्रभाचन्द्र के शिष्य थे । नाटक अभी तक अप्रकाशित है ।

मंगलाचरण—

अनाद्यनंतरूपाय पंचवर्णात्ममूर्तये।
अनंतमहिमाढ्याय सदोंकारनमोस्तुते ॥ १॥

प्रशस्ति—

मूलसंघे समासाद्य ज्ञानभूषं बुधोत्तमा।
दुस्तरं हि भवांभोधिं, सुतरं मन्यते हृदि॥

तत्पट्टामलभूषणं समभवद् दैगंबरीये मते,
चचंद्रर्हकरः सभातिचतुरः श्रीमत्प्रभाचंद्रमा।
तत्पट्टे जनि वादिवृंदतिलकः श्री वादिचंद्रोयतिः,
तेनायं व्यरचि प्रबोधतरणिर्भव्याब्जसंबोधनः।
वसुवेदरसाब्जांके वर्षे माघे सिताष्टमी दिवसे।
श्रीमन्मधूकनगरे सिद्धोऽयं बोधसंरम्भः॥

इतिसूरिश्री वादिचंद्रविरचिते ज्ञानसूर्योदयनामनाटके आत्मकर्मक्षयविवर्णनो चतुर्थोऽध्यायः

संवत् १८३५ मिती आषाढ सुदी १३ सोमवासरे लिखापितं साह श्री पूलीचंद गोधा धर्महेतवे लिखितं जती सूरजमल बृदांवतीमध्ये राज्ये श्री रावराजा श्रीविष्णुसिहजी।

१४. तत्त्वज्ञानतरंगिणी

रचयिता मुमुक्षु भट्टारक श्री ज्ञानभूषण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८। साइज १२×४॥ इञ्च प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ३६-४२ अक्षर। रचना संवत् १५६०, लिपि संवत् १८२५, तरंगिणी प्रकाशित हो चुकी है।

मंगलाचरण—

प्रणम्यशुद्धचिद्रूपं सानंदं जगदुत्तमं।
तल्लक्षणादिकं वच्मि तदर्थी तस्य लब्धये॥

प्रशस्ति—

जातः श्री सकलादिकीर्त्तिमुनि यः श्रीमूलसंघेग्रणी-
स्तत्पट्टोदयपर्वतेरविरभूद्भव्यांबुजानंदकृत्।
विख्यातो भुवनादिकीर्त्तिरथयस्तत्पादकंजेरजः,
तत्त्वज्ञानतरंगिणी स कृतवानेतां हि चिद्भूषणः॥
क्रीडंति ये प्रविश्ये मां तत्त्वज्ञानतरंगिणी।
ते स्वर्गादिसुखं प्राप्य सिद्धयंति तदनंतरं॥ २॥

ये च विक्रमातीताः शतपंचदशाधिकाः।
षष्टिसंवत्सराः जातास्तदेयं निर्मिताकृतिः॥ ३॥
ग्रन्थसंख्यात्रविज्ञेयाः लेखकैः पाठकैः किल।
षड्त्रिंशदधिका पंचशती श्रोतृजनैरपि॥ ४॥

इति मुमुक्षुभट्टारकश्रीज्ञानभूषणविरचितायां तत्त्वज्ञानतरंगिण्यां शुद्धचिद्रूपप्राप्तिक्रमप्रतिपादकोऽष्टादशोध्यायः।

संवत् १८२५ लिखतं माणिक चंदमहात्मना सवाईजर पुरमध्ये।

१५. त्रिभंगीसार टीका।

टीकाकार श्री विवेकनन्दि। भाषा प्राकृत संस्कृत। पत्र संख्या ३७, साइज ११×४॥ इञ्च।

मंगलाचरण—

सर्वज्ञं करण सर्वं त्रिभुवनाधीशार्च्यपादं विभुं।
यं जीवादिपदार्थसार्थकलने लब्धप्रशंसं सदा॥ १॥
कर्मद्रुमोन्मूलनदिक्करींद्रं सिद्धांतपाथो नधिदृष्टपारं।
षट्त्रिंशदाचार्यगुणैः प्रयुक्तं नमाम्यहं श्रीगुणभद्रसूरिं॥
या पूर्वं श्रुतमुनिना टीका कर्णाटकभाषया विहिता।
लाटीयभाषया सा विरच्यते सोमदेवेन।

× × × × ×

प्रणिपत्य नेमिचंद्र वृषभाद्यान् विपश्चिमान् जिनान् सवान्।
वक्ष्ये स्वभाषयाहं विशदां टीकां त्रिभंग्यायां॥

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

यथा नरेंद्रस्य पुत्रोमपुत्रा प्रियानारायणस्याब्धिसुता बभूव।
तथा तदेवस्य विजोणिनाम्नी प्रिया सुधर्म्मा सुगुणा सुशीला॥१॥
तयोः सुतः सद्गुणवान् सुवृत्तः सोमोभिधः कोमुदवृद्धिकारी।
व्याघ्रेरवालांबुनिधिः सुरत्नं जीयाच्चिरं सर्वजनानुवृत्तिः॥ २॥
श्रीमज्जिनोक्तानि समंजसानि शास्त्राणि लेभे स यथात्मशक्त्या।
श्रीमूलसंघाब्धि विवर्द्धनेंदोः श्रीपूज्यपादं प्रभुसत्प्रसादात्॥ ३॥

× × × × × ×

श्रीपद्मांघ्रियुगे जिनस्य नितरां लीनः शिवाशाधरः
सोमः सद्गुणभाजनं सविनयः सत्पात्रदाने रतः।

सद्रत्नत्रयभुक् सदा बुधमनोह्लादी चिरं भूतले,
नंद्यादिना विवेकिना विरचिता टीका सुबोधाभिधा ॥ ४ ॥
इति त्रिभंगीसारटीका समाप्ता ।

१६. दुर्गपदप्रबोध ।

रचयिता वाचनाचार्य श्री वल्लभ गणि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३० । साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ७३-७६ अक्षर हैं । प्रति जीर्ण है, अनेक स्थानों पर अक्षर मिट गये हैं ।

मंगलाचरण—

स्वस्ति श्री दायकं देवं नायकं शांतिनायकं ।
सद्बुद्धिदायकं शास्त्रकारिणां प्रणमाम्यहं ॥

प्रशस्ति—

श्री अकबरराजाधिप······प्राप्तसाम्यकीर्त्तीनां तेषां गुरूराजानां धर्मे राज्ये सुविख्याते । भूमिपयू··· १६८१ संख्ये वर्षे सुखाधिके मासे कार्त्तिके सप्तमी दिने··················· ।

पुत्रीत्वेन सुरी त्र ही शारण्यं ब्राह्मणः श्रिया ।
विद्याधिक्यं पराभूता येषां ते ऽमीयं जयंत्विह ॥ १ ॥
ज्ञानविमलनामानः उपाध्यायाः गुणाश्रयः
तर्कसाहित्यसिद्धांतप्रमुखग्रंथसद्विधः ॥ २ ॥
तेषां शिष्यवरैश्चक्रे श्री श्रीवल्लभवाचकैः ।
दुर्गपदप्रबोधोऽयं प्रकटज्ञानहेतवे ॥ ३ ॥
श्री हेमचंद्रसूरींद्रः कृते लिंगानुशासने ।
विद्यते या शुभा वृत्तिः तस्या दुर्गार्थबोधदः ॥ ४ ॥
× × × × ×
इति श्री दुर्गपदप्रबोधः समाप्तः ।

संवत १८१२ का मिती पोष सुदी १० आदित्यदिने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये मंडलाचार्य श्रीविद्यानन्दिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री महेंद्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीअनंतकीर्त्ति स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये बडजात्या गोत्रे साह श्री ठाकुरसी तत्पुत्राश्चत्वारः प्रथम पुत्र साह श्री गोरधनदास तत्पुत्र साह श्री मयाराम, द्वितीय पुत्र साह श्री सूर्यमल तत्पुत्र साह श्री नवनिधिराम, तृतीय पुत्र साह श्री योधराज तत्पुत्र साह श्री साहिबराम, चतुर्थ पुत्र साह श्री परमानंद तत्पुत्रौ चि० राजाराम हरिचंद्रौ एतेषां मध्ये साह श्री नवनिधिरामेन इदं ग्रंथं मंडलाचार्य श्री १०८ श्री अननन्त कीर्ति जी तच्छिष्य पंडित उदयरामाय घटापितं।

१७. धन्यकुमार चरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३४ । साइज ११×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४४ अक्षर । प्रति प्राचीन है । उक्त चरित्र हिन्दी अनुवाद सहित बनारस से प्रकाशित हो चुका है ।

मंगलाचरण—

नमः श्री वर्द्धमानाय पंचकल्याणभागिने ।
जिनाय विश्वनाथाय मुक्तिभर्त्रे गुणाब्धये ॥ १ ॥

अन्तिमपाठ—

सर्वे तीर्थकरा जगत्त्रयहिताः सिद्धाः अनंतविदः
पंचाचारपरायणाश्चगणिनः सत्पाठकाः साधवः ।
स्वमुक्त्यादिसु साधकावरतपो युक्ताश्च वंद्या स्तुता
भव्यैश्चैश्च मया दिशंतु शिवदं सन्मंगलं मेभवः ॥ १ ॥
भवेयुः श्रीमत्तोधन्यकुमारख्यसुयोगिनः ।
चरित्रस्याखिलाः श्लोकाः सार्द्धाष्टशतसंख्यकाः ॥ २ ॥

इति धन्यकुमार चरित्रे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवस्तस्य शिष्यमुनिसकलकीर्त्ति विरचिते धन्यकुमारतपः सर्वार्थसिद्धि गमनो नाम सप्तमो संधिः ।

संवत् १५३३ वर्षे पौष सुदी ३ गुरौ श्रवण नक्षत्रे श्री नयनपुरे सुरत्राण गयासुद्दीन राज्ये प्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतिगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सिहकीर्त्तिदेवाः तच्छिष्य मुनि रत्नभूषण तन्निमित्ते खंडेलवालान्वये साह नाथू तद्भार्या नैणसिरी तयोः पुत्राः पचायण भार्या पुंसरी । साह तेजा भार्या तेजसिरी । तत्पुत्र साह डूंगर । साह गोल्हा भार्या गोल्हसिरी तयोः पुत्रो साह दासा तयोः निजज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थमिदं धन्यकुमारचरित्रं स्वहस्तेन प्रदत्तं ।

१८. धर्मपरीक्षा ।

रचयिता श्री अमितगति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६०. साइज १२×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४१ अक्षर । रचना संवत् १०७०. लिपि संवत् १७३३. प्रति साधारण अवस्था में है । ग्रंथ प्रकाशित हो चुका है ।

मंगलाचरण—

श्रीमन्नमस्वस्त्रयतुंगशालं जगद्गृहं बोधमयः प्रदीपः ।
समंततो द्योतयते यदीयो भवंतु ते तीर्थकराः श्रिये नः ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

सिद्धांतपाथोनिधिपारगामी श्रीवीरसेनोऽजनिसूरिवर्यः।
श्रीमाथुरानां यमिनां वरिष्ठः कषायविध्वंसविधौ यतिष्ठः ॥ १॥
भासिताखिलपदार्थसमूहो निर्म्मलोमितगतिर्गणनाथः।
वासरो दिनमणेखि तस्माज्जायतेस्म कमलाकरबोधी ॥ २॥
नेमिषेणगणनायकस्ततः
पावनं वृषमधिष्ठितोविभुः।
पार्वतीतिरिवास्तमन्मथो
योगगोपनपरोगणार्च्चितः ॥ ३ ॥
कोपनिवारी शमदमधारो माधवसेनः प्रणतरसेनः।
सो ऽभवदस्माज्जलिमदस्मा यो यतिसारः प्रशमितसारः ॥ ४ ॥
धर्म्मपरीक्षाकृतवरेण्यां
धर्मपरीक्षामखिलशरण्यां
शिष्यवरिष्टोमितगतिनामा
तस्य पटूष्टो ? नद्य मभिधामा ॥ ५ ॥

× × × × × × × × ×

संवत्सराणां विगते सहस्रे संसप्ततौविक्रमपार्थिवस्य।
इदं निषेद्धान्यमतं समाप्तं जिनेंद्रधर्म्मामितियुक्तशास्त्र ॥

इति धर्म्मपरीक्षायाममित गतिकृतायां समाप्तः परिच्छेदः।

संवत् १७३३ कार्तिक सुदी २ दिने शुक्रवारे श्रीपातसाह मुलकगीर राज्ये सहादरामध्ये सा० परसदाम तत् पुत्र बनारसीदास तत्पुत्र निर्मलदास लिखापितं। लेखक श्वेतांबररामचंदेनलिख्यतं।

प्रति नं० २। पत्र संख्या १४५। साइज १०×५ इञ्च। लिपि संवत् १६६६।

अथ सवत्सरे श्री नृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६६६ वर्षे कार्त्तिकमासे शुक्लपक्षे तिथौ ३ शुक्रवारे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवाः द्वितीयः शिष्यमंडलाचार्य श्रीभुवनकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मं. श्रीधर्मकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मं. श्रीविसालकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री लक्ष्मीचन्द्र देवास्तत्पट्टे मं. श्री नेमचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री यशःकीर्तिस्तदाम्नाये गंगवाल गोत्रे जोबनेरवास्तव्ये राजि मनोहरदासविजयराज्ये सा० काल्हू तस्य भार्या कवलादे तस्य पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्र सा० तेजा तस्य भार्या तिलकादे तस्य पुत्राः षट्। प्रथम पुत्र सा तिलोका तस्यभार्यो तिहुसिरी तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र चि० श्रवण

द्वितीय पुत्र चि० करमचंद। सा० तेजा द्वितीय पुत्र सा० वेगा तस्य भार्या वेगमदे तस्य पुत्र चि० गोबीदास। सा० तेजा तृतीय पुत्र चि० सीहा चतुर्थ पुत्र चि० हीरा पंचम पुत्र चि० नराइण षष्ट पुत्र चि० सिरीपाल .... एतेषां मध्ये सा० रूप तस्य पुत्र चि० डूंगरसी इदं धर्मपरीक्षानामशास्त्रं मुनिगुणचंद्राय प्रदत्तं

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १५६६.

संवत् १५६६ पौष सुदि ६ शुक्रे दूष्टिकापथदुर्गे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचंद्रदेवास्तदाम्नाये मिथ्यातमध्वांतसूर्याः परमसैद्धांतिकमंडलाचार्यः श्रीसिंहनन्दिदेवास्तच्छिष्य वादिगजकेशरिचरित्रपात्रपरमतपस्वीमंडलाचार्यः श्री धर्मकीर्तिदेवाः। तस्याम्नाये सकलगुणसमन्वितपंडित चार्यः अभु भार्या साध्वी लाडो पुत्र ६ प्रथम पुत्र पं० दीन भाया.... द्वितीयः पुत्रः पं० घाघो तृतीयपुत्रः पं० धीरु भार्या साध्वी सुलखा। चतुर्थपुत्र वीरु पंचमपुत्र पं० दासे षष्ट पुत्र खरगु एतेषां मध्ये साध्वी सुलखा एतत् शास्त्रं लिखापितं।

१६. धर्मसंग्रह श्रावकाचार।

रचयिता पंडित श्री मेधावी। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ७१। साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४३ अक्षर। रचना संवत् १५४१. लिपि संवत् १५४२। कवि ने बादशाह फिरोजखां के शासन का उल्लेख किया है तथा लिपिकर्त्ता ने बहलोल साह के राज्य का उल्लेख किया है। ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है।

श्रियं दद्यात् स वो देवो नित्यानंदपदप्रदां।
यस्यानंतानिदृग्ज्ञानवीर्यसौख्यान्यनंतवत्॥ १॥

अन्तिम पाठ—

मेधाविनो गणधरात् स निशम्य धर्म्मं
श्रीगौतमादिति सयौरजनः प्रशस्तं।
भूयो निजं दृढतरां प्रविधाय दृष्टिं,
नत्वा जिनं मुनिवरांश्च गृहं जगाम॥ १॥
अनादिकालं भ्रमता मया या नाराधिता क्वापिविराधितैव।
आराधनां मंगलकारणीं, तामाराधयामीह जिनेंद्रभक्तः॥ २॥

इति सूरि श्री जिनचंद्रांतेवासिना पंडितमेधाविना श्रीधर्म्मसंग्रहे सल्लेखनास्वरूपकथनं श्रेणिकराजस्य गृहप्रवेशनं च दशमोधिकारः

प्रशस्ति—

स्वस्ति स्वतिलकायमानमुकुटघृष्टांह्रिपाथोरुहे,
स्वस्यानंदचिदात्मने भगवते पूजार्हते चार्हते।

श्रुति प्राशिर्ज्जिनकराद् त्रिभवे स्थिताय बुद्धायते
मनुष्यत्मतिजरादिनाशार हतस्वस्थाय शुद्धायते ॥ १ ॥

१

सम्यक्त्वज्ञानदर्शनयुग्पष्टी
सिंहास्नसुखतृप्तकृतवेणाद्रगाः।
ये प्राप्तिर्लोकुल्लवक्त्रनवीर्ययुक्ता
स्ते सन्तु नोजिनवराः शिवसौख्यदा वै ॥ २ ॥
सम्यक्त्वमुख्यगुणरत्नतदाकराये, संभूय लोकशिरसि स्थितमाद्वाना:
सिद्धाः सदा निरुपमागतमूर्तिवंधा, भूयान्नसुराशु मम ते भवदुःखहान्यैव ॥ ३ ॥
मूलोत्तरादिगुणराजिविराजमानाः
क्रोधादिदूषणमहीधृतविद्समानाः।
ये पंचधाचरणचारणलभ्यमानाः
नंदतु ते मुनिवराः वुधवंद्यमानाः ॥ ४ ॥
ये ऽध्यापयन्ति विनयोपनतान्विनेयान्
सद्द्वादशांगमखिलं रहसि प्रबुवान।
अर्थं दिशंति च धिया विधिवद्विदत-
स्ते ऽध्यापकाः हृदि मम प्रवसंतु संतः ॥ ५ ॥
रत्नत्रयं त्रिविधमप्यमृताय नूनं,
ये ध्यानमौननिरतास्तपसि प्रधानाः।
संसाधयन्ति सततं परभावमुक्ता

२

एते साधवो ददतु वः प्रियमात्मलीनां ॥ ६ ॥

३

लोकोत्तमाः शरणमंगलमंगभाजामर्हद्विमुक्तसमुनयो जिनधर्मकाश्च।
ये तान्नमामि च दधामि हृदंवुजेहं, संसारवारिधिसमुत्तरणैकसेतून् ॥ ७ ॥
स्याद्वादचिह्नं खलु जैनशासनं, जीयात्त्रिलोकीजनशर्मसाधनं।
चक्रे सतां वंधर्मनिधानोवनं, जन्मव्ययध्रौव्यपदार्थशासनं ॥ ८ ॥
सन्नंदिसंघसुरकर्मदिवाकरोभू-
च्छ्रीकुंदकुंद इति नाम मुनिश्वरोऽसौ।

१ सम्भात   २ आत्मलीना ३ धर्मकृश्च

श्रीयात्स यद्विहितशास्त्रसुधारसेन
मिथ्याभुजंगगरलं जगतः प्रणष्टं ॥ ६ ॥
आम्नाये तस्य जातो गुणगणसहितो निर्म्मलब्रह्मपूतः
सद्विद्या पारयातो जगति सुविदितो मोहरागव्यतीतः ।
सूरिश्रीपद्मनन्दी भवविहतिनदी नाविको भव्यनंदी
स्यन्नित्यानित्यवादी परमतविलसन्निर्मदी भूतवादी ॥ १० ॥
तत्पट्टे शुभचंद्रकोऽजनि जनिश्रीव्यांतरूपार्थवि-
द्वेषा स तपसां विधानकरणः सद्धर्म्मरक्षाचणः ।
येनोद्योति जिनेंद्रदर्शननभो नक्तं कलौ ज्योत्स्नया,
सद्वृत्त्यामृतगर्भया गुरुबुधा नंदात्मना स्वात्मना ॥ ११ ॥
तस्मान्नीरनिधेरिवेंदुरभवच्छ्रीमज्जिनेंद्राग्रणी ,
स्याद्वादांवरमंडलेकृतगतिर्दिग्वाससां मंडनः ।
यो व्याख्यानमरीचिभिः कुवलये प्रल्हादनं चक्रिवान्,
सद्वृत्तः सकलः कलंकविकलः षट्तर्कनिष्णातधीः ॥ १२ ॥
श्रीमत्पुस्तकगच्छसागरनिशानाथः श्रुतादिमुनि—
र्जातोर्हन्मततर्ककर्कशतया न्यायवादिनो योऽभिनत् ।
यस्मादष्टसहस्रिकां पठितवान् विद्भिरन्यैरहं,
सोऽयं सूरमल्लिको विजयते चारित्रपात्रं भुवि ॥ १३ ॥
सूरि श्री जिनचंद्रकस्य समभूद्रत्नादिकीर्त्तिर्मुनिः,
शिष्यस्तस्यविचारसारमतिमानसद्ब्रह्मचर्यान्वितः ।
योनेकैर्मुनिभिस्त्रगुणान्वितिभिराभातीहमौद्यौग्गणे,
चन्द्रो व्योम्नि यथा गृहैः परिवृतो यैश्चोल्लसत्कांतिमान् ॥ १४ ॥
तच्छिष्यो विमलादिकीर्त्तिरभवन्निग्रन्थचूडामणि—
र्यो नाना तपसा जितेंद्रियगणः क्रोधेभकुंभे शृणिः ।
भव्यांभोजविरोचनोहरशशांकाभस्वकीर्त्योज्वलो,
नित्यानंदचिदात्मलीनमनसे तस्मै नमो भिक्षवे ॥ १५ ॥
यः कक्षापटमात्रवस्त्रमनलं धत्ते च पिच्छं लघु,
लोचं कारयते सकृत् करपुटे भुक्ते चतुर्थादिभिः ।
दीक्षां श्रौतमुनीं वभार नितरां सत्क्षुल्लकः साधकः,
आर्यो दीपक आख्यात्र भुवने सौदीप्यतां दीपवत् ॥ १६ ॥

ख्यातोऽभूज्जैनचंद्रो जिनमतरसतिः श्रावकाचारभृच्च-

स्वश्रोतान्ऋजातोद्धरणतनुरुहो भीपुहीमातृसूतः।

शीहाख्यः पंडितो वै जिनमतनयनः श्रीहिसारे पुरेस्मिन्,

ग्रंथः शास्त्रभितेन श्रिसहति वसता नूनमेप प्रसिद्धैः ॥ १७ ॥

सपादलक्षे विषयेति सुन्दरे, श्रिया पुरे नागपुरं समस्ति तत्।

पेरोजखाना नृपतिः प्रयाति न्यायेन शौर्येण रिपून् निहन्ति च ॥ १८ ॥

वसंति यस्मिन् धनधान्यसंपदा लोकाः स्वसंतानगणेन धर्मतः।

जैनाधनाश्च स्वगृहेषु पूजनं सत्पात्रदानं विधरयनारतं ॥ १६ ॥

मेधावी नामा निवसन्नहं बुधः, पूर्णं व्यधां ग्रंथमिमं तु कार्त्तिके।

चंद्राब्धि वाणैक १५४१ मितेत्रवत्सरे, कृष्णे त्रयोदश्यं दिनिश्चशक्तितः ॥ २० ॥

चंद्रप्रभसद्मनि तत्र मंडिते कूटस्थसकुंभसुकेतनादिभिः।

महाभिषेकादिमहोत्सवैर्ल्लसत्, प्रवृद्धसंगीतरसेन चातिशं ॥ २१ ॥

मेधाविनाम्नः कविता कृतोयं, श्रीनंदनोर्हत्पदपद्मभृंगः।

यो नंदनो भूज्जिनदाससंज्ञो, तु मोदको स्यास्तु सुदृष्टिरेषः ॥ २२ ॥

समंतभद्रवसुनन्दिकृतं समीक्ष्य

सच्छ्रावकाचरणसारविचारहृद्यं।

आशाधरस्य च बुधस्य विशुद्धवृत्तेः

श्रीधर्म्मसंग्रहमिमं कृतवानहं भो ॥ २३ ॥

यद्यर्थदोषः क्वचिदर्थजातः शब्देषु वा छन्दसि कोथवा स्यात्।

युक्त्यां विरुद्धं गदितं मया यत्, संशोध्य तत् साधुधियः पठंतु ॥ २४ ॥

शास्त्रं प्राच्यमतीवगंभीरं पृथतुरमर्थैर्ज्ञातुमलकः।

तस्मादल्पं पिच्छलममलं कृतमिदमन्योपकृतौ नूनं ॥ २५ ॥

गर्व्वान्न मया कारि न कीर्त्ती न च धनमाननिमित्तं त्वेतत्।

हितबुद्ध्याकेवलमपरेषां स्वस्य च बोधविशुद्धिविवृद्ध्यै ॥ २६ ॥

सद्दर्शनं निरतिचारमवंतुभव्याः

श्रद्धा दिशंतु हितपात्रजनायदानं

कुर्वंतु पूजनमहो जिनपुंगवानां,

पांतु व्रतानि सततं सह शीलकेन ॥ २७ ॥

गाढं तपन्तु जिनमार्गरतामुनींद्राः संभावयंतु निजतत्त्वमनघमुक्तं।

धर्म्मो भवेद्विजयवान्नृपतिः पृथिव्यां, दुर्भिक्षमत्र भवतान्न कदाचनापि ॥ २८ ॥

राज्यं न वांछामि न भोग्यसंपदो, न स्वर्गवासनं न च रूपयौवनं ।
सव्वं हि संसारनिमित्तमंगिनां, तदान्वमृष्टं चणिकं च दुःखदं ॥ २६ ॥
यद्दुर्लभं भवभृतां भवकाननेऽस्मिन्
दंभ्र यतां विविधदुःखमृगारिभीमे ।
रत्नत्रयं ... सौख्यविधायि तन्मे,
द्वेधास्तु देव तव पादयुगप्रसादात् ॥ ३० ॥
अज्ञानभावात् यदि किंचिनूनं, प्ररूपितं क्वाप्यधिकं वभाषे ।
सर्वज्ञवक्त्रोद्भविके हि तन्मे, क्षांत्वा हृदब्जेधिवसे सदात्वं ॥ ३१ ।
यावत्तिष्ठति भूतले जिनपतेः स्नानस्य पीठंगिरि—
स्त्वाकाशे शशिभानुबिंबमधरे कूर्मस्य पृष्ठे मही ।
व्याख्यानेनच पाठनेन पठनेनेदं सदा वर्त्ततां,
तावच्च श्रवणेन चित्तनिलये संतिष्ठतां धीमतां ॥ ३२ ॥
भूयासुश्चरणाजिनस्य शरणं तद्दर्शने मे रतिः
भूयाज्जन्मनि प्रियतमासंगादिमुक्तेगिरौ ।
सद्भक्तिस्तपसश्च शक्तिरतुला द्वेधापि मुक्तिप्रदा,
ग्रंथस्यास्य फले न किंचिदपरं या चेत्तयोगैस्त्रिभिः ॥ ३३ ॥
व्याख्याति वाचयति शास्त्रमिदं शृणोति
विद्वांश्च यः पठति पाठयतेऽनुरागात् ।
अन्येन लेखयति वा लिखति प्रदत्ते,
स स्याल्लघुश्रुतधरश्च सहस्रकीर्त्तिः ॥ ३४ ॥
शांतिः स्याज्जिनशासनस्य सुखदा शांतिर्नृपाणां सदा,
शांतिः सुप्रजशां तयोभरभृतां शांतिर्मुनीनां सदा
श्रोतॄणां कविताकृतां प्रवचनव्याख्यातृकाणां पुनः,
शांतिः शांतिरथाग्नि जीवनमुचः श्री सज्जनस्यापि च ॥ ३५ ॥
यः वल्याणपरंपरा प्रकुरुते यं सेवते सत्तमा,
येन स्यात् सुखकीर्त्ति जीवितं गुरु स्वस्त्यत्रयस्मै सदा ।
यस्मान्नान्यपरः सुहृत्तनुमतां यस्य प्रसादाच्छ्रिय—
स्तं धर्म्मादिकसंग्रहं श्रयत भो यस्मिन् जनो वल्लभः ॥ ३६ ॥
कूपान्निःकाश्य पातुं भवति हि सलिलं दुष्करं यस्य ..स्य
केनाप्यन्येन नूतोत्कुटनिहतमहोऽन्यथा वा तदेव ।

तद्वत्पूर्वप्रणीतात्कठिनविवरणात् ज्ञातुऽर्थोऽत्र शक्यः
कैश्चिदज्ञातग्रंथोर्वैस्तदितरसुगमो ग्रंथ एव व्यधायि ॥ ३७ ॥
धर्मसंग्रहमिमं निशम्य यो, धर्म्ममार्गमवगम्य चेतनः ।
धर्मसंग्रहमलं करोत्यसौ, सिद्धिसौख्यमुपयाति शाश्वतः ॥ ३८ ॥
धर्मतः सकलमंगलावली, रोदसीपतिविभूतिमान्वली ।
स्यादनंतगुणभाक्केवली, धर्मसंग्रहमतः क्रियासुधीः ॥ ३६ ॥
सुधीः क्रियाद्यलमयुष्य, रक्षणे
तैः लाभः परहस्तयोगतः ।
जानन्कविश्रांति मथप्रवर्त्तने
भूयात्समुक्तश्च परपोक्यतः ॥ ४० ॥
चतुर्दशशतान्यस्य चत्वारिंशोत्तराणि वै ।
सर्व्वं प्रमाणमावेद्यं लेखकेत्वेन संशयं ॥ ४१ ॥

इत्येतद्ग्रंथकविसंवंवसंसूचिकाचूलिकः समाप्ता ।

श्रीविक्रमादित्यराज्यात संवत् १५४२ वर्षे कार्तिक सुदी ५ गुरुदिने श्री वर्द्धमान चैत्यालये विराजमाने श्री हिसारपेराजापत्तने सुलतान श्री वहलोलसाहिराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवाः...... ....।

२०. नेमिनाथपुराण ।

रचयिता श्री ब्रह्म नेमिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १५०. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४३-४७ अक्षर । प्रति पूर्ण है । अक्षर अस्पष्ट तथा वहुत छोटे हैं । विषय-भगवान नेमिनाथ का जीवन चरित्र । लिपि संवत् १६४३.

मंगलाचरण—

श्रीमन्नेमिजिनं नत्वा लोकालोकप्रकाशकं ।
तत्पुराणमहं वक्ष्ये भव्यानां सौख्यदायकं ॥ १ ॥
×
नमद्देवेन्द्रमौलीनां लसत्कांतिसरोवरे ।
यस्य पादद्वयं प्राप्य प्रोल्लसत्कमलश्रियं ॥ २ ॥
सर्वसौभाग्यसंदोहः सर्व्वशक्रसमर्चितः ।
यो भवत्सर्व्वसौख्यानां कारणं भव्यदेहिनां ॥ ३ ॥

× दरोनले इत्यपि पाठः

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

गच्छे श्रीमत्मूलसंघतिलके सारस्वतीये शुभे,
विद्यानन्दिगुरुप्रपट्टकमलोल्लासप्रदो भास्करः ।
ज्ञानध्यानरतः प्रसिद्धिमहिमा चारित्रचूडामणिः
श्रीभट्टारकमल्लिभूषणगुरु जीयात्सतां भूतले ॥ १ ॥
प्रोद्यत्सम्यक्त्वरत्नो जिनकथितमहासप्तभंगीतरंगैः
निर्द्धूतैकांतमिथ्यामतमलनिकरक्रोधनकादिदूरः ।
*श्रीमज्जेनेंद्रवाक्यामृतविशदरसः श्रीजैनेन्द्रप्रवृद्धि
जीयान्मे सूरिवर्योव्रतनिचयलसत्पुण्यपण्यः श्रुताब्धिः ।२ ॥
मिथ्यावादांधकाराक्षयकरणरविः श्रीजिनेन्द्राङ्घिपद्म,
द्वंद्वे निर्द्वद्वभक्तिर्जिनगदितमहाज्ञानविज्ञानबंधुः ।
चारित्रोत्कृष्टभारो भवभयहरणो भव्यलोकैकबंधुः,
जीयादाचार्यवर्यो विशदगुणनिधिः सिंहनन्दिमुनीन्द्रः ॥ ३ ॥
यस्योपदेशवशतो जिनपुंगवस्य—
नेमिपुराणमतुलं शिवसौख्यकारी ,
चक्रे मयापि मतितुच्छतयात्र भक्त्या,
कुर्यादिदं शुभमतं मम मंगलानि ॥ ४ ॥
शांतिं कान्तिं सुकीर्त्तिसकलसुखयुतां संपदामायुरुच्चैः
सौभाग्यं साधुसंगं सुरपतिमहितं सारजैनेन्द्रधर्म्मं ।
विद्यां गोत्रं पवित्रं सुजनजनशतं पुत्रपौत्रादिजात्यं,
श्रीनेमेः सत्पुराणं दिशतु शिवपदं वात्र भव्याः पवित्रं ॥ ५ ॥

इति श्री त्रिभुवनैकचूडामणिश्रीनेमिजिनपुराणे भट्टारक श्री मल्लिभूषणशिष्याचार्यः श्रीसिंहनन्दि-नामांकिते ब्रह्म नेमिदत्त विरचिते श्रीनेमिनाथनिर्वाणं पंचमकल्याणवर्णनो नाम षोडशमोधिकारः ।

संवत्त १६४३ शाके १५०८ समये फागुणवुदि ८ सोमवासरे मघा नक्षत्रे शोभननामयोगे श्रीमत्का-ष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्रीविजयकीर्त्ति तत्पट्टे आचार्य श्री पद्मकीर्त्ति तच्छिष्य ब्रह्म श्री धर्मसागर तच्छिष्य पं० केशवद्धन इदं पुराणं लिखितं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २१६. साइज १२×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २५–३० अक्षर । प्रति प्राचीन है, कागजों का रंग सील लगने से बदल गया है ।

* जिनेंद्र इत्यपि पाठः

संवत् १६७४ वर्षे फागुणमासे कृष्णपक्षे सप्तम्यां तिथौ शुक्रवासरे श्री नेमिनाथचैत्यालये वीजवाड-मध्ये श्री जहांगीर राज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरागोत्रे साह वीवा तस्य भार्या वहुरंगदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र साह माल्हा तस्य भार्या मैम्हालादे तस्य पुत्राः त्रयः। प्रथम पुत्र साह नेना तस्य भार्या नैलादे तस्य पुत्र खीवा तस्य भार्या खेमलदे। साह माल्हा द्वितीय पुत्र साह केसौ तस्य भार्या कसुभदे। साहा माल्हा तृतीय पुत्र साह लीला तस्य भार्या ललतादे। तस्य पुत्र साह भोजा चीरंजीव साह वीवा द्वितीय पुत्र साह धाना तस्य प्रथम भार्या धारादे द्वितीया लाडमदे तस्य पुत्रा त्रयः। प्रथम पुत्र साह पेमा। द्वितीय पुत्र साह आसा तस्य भार्या आसलदे। साह पेमा तृतीय पुत्र साह कुंभा तस्य भार्या प्रथम कुंभलदे द्वितीया केरादे। साह पेमा चतुर्थ पुत्र साह सैसा तस्य भार्या प्रथमा सुहागदे द्वितीया हरजाणदे तस्य पुत्र साह सुद्रचिरंणजी। साह पेमा पंचम पुत्र साह पंचायण········ ·········· ···········।

२१. पद्मपुराण।

रचयिता भट्टारक श्री सोमसेन। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २६७। साइज ६॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६-२६ अक्षर। लिपि संवत १७५१।

मंगलाचरण—

वंदेऽहं सुव्रतं देवं पंचकल्याणनायकं।
देवदेवादिभिः सेव्यं भव्यवृंदसुखप्रदं ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

× × × × × ×

शाके षोडशशतवर्षके षट्पंचासद्युक्ते मासेश्रावणिके तथा ॥ १ ॥
शुक्लपक्षत्रयोदश्यां बुधवारे शुभे दिने।
निष्पन्नं चरितं रम्यं रामस्य पावनं ॥ २ ॥
महेन्द्रकीर्त्तियोगीन्द्रप्रसादाच्च कृतं मया।
सोमसेनेन रामस्य पुराणं पुण्यहेतवे ॥ ३ ॥
यदुक्तं रविषेणेन पुराणं विस्तराद्वरं।
तदेवात्र च संकुच्य किंचिद्विकथितं मया ॥ ४ ॥
गर्वेण न कृतं शास्त्रं नापि कीर्त्तिफलाप्तये।
केवलं पुण्यहेत्वर्थं श्रुताः रामगुणाः मया ॥ ५ ॥

× × × × × ×

रविषेणकृते ग्रंथे कथा यावत्प्रवर्त्तते ।
तावच्च सकलात्रापि वर्त्तते वर्णतां विना ॥ ६ ॥
वैराट विषये रम्ये जितुरनगरे वरे मंदिरे ।
पार्श्वनाथस्य सिद्धो ग्रंथः शुभे दिने ॥ ७ ॥
सेणगणेति विख्याते गुणभद्रो भवन्मुनिः ।
पट्टे तस्यैव संजातः सोमसेन यतीश्वरः ॥ ८ ॥
तेनेदं निर्मितं शास्त्रं रामदेवस्य भक्तितः ।
स्वस्यनिर्वाणहेत्वर्थं संक्षेपेण महात्मनः ॥ ९ ॥
यस्मिन्निदं पुरे शास्त्रं श्रण्वन्ति च पठन्ति वा ।
तत्र सव सुखं क्षेमं परं भव निर्मगलं ॥ १० ॥
सेणगणे यतिपरमपवित्रे वृषभसेनगणधर शुभवंशे ।
पंडितवर्गसुखकरं जातः सोमसुसेनयतिवरमुख्यः ॥ ११ ॥
श्रीमूलसंघे वरपुष्कराख्ये गच्छे सुजातो गुणभद्रसूरिः
पट्टे च तस्यैव सुसोमसेनो भट्टारके भूविदुषां शिरोमणिः ॥ १२ ॥

इति श्री रामपुराणे भट्टारकश्री सोमसेनविरचिते रामस्वामिनो निर्वाणवर्णनो नाम त्रयत्रिंशत्तमोऽधिकारः ॥

संवत् १७५१ वर्षे शाके १६१६ मिति भादवा सुदी १४ बृहस्पतिवारे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री नरेंद्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जगत्कीर्त्ति तच्छिष्याचार्यवर्य आचार्य श्री शुभचंद्र तच्छिष्य पंडित श्री ताराचंद पंडित श्रीनगराज पंडित श्रीजीवराज पंडित श्री देवकरण पंडित श्रीमेघराज पंडित मयाचन्द इत्यादि पंडित ७ तदाम्नाये पचवारा देशे लिवाणनगरे खंडेलवालवंशे भौंसा गोत्रे साह श्री विलालभार्या बहुरंगदे तयोः पुत्र साह श्री नेहंद भार्या नमोनेमादे तयोः पुत्रः साह श्री गुणराज भार्या सुगणादे तयोः पुत्र साह श्री पासो भार्या पाटमदे तयोः पुत्रः साह श्री टोडरमल भार्या लाडी तयोः पुत्र साह श्री दयालदास भार्या दाडिमदे तयोः साह श्री हरराम भार्या हीरादे तयोः पुत्र साह श्री जीवराज भार्या जौणोद तयोः पुत्र साह श्री आणंदराम भार्या अणदादे द्वितीय पुत्र साह श्री चि० वखतराम भार्या वखतावरदे एतेषां मध्ये साह श्री हरराम भार्या हीरादे तयो पुत्र साह श्री जीवराज पितृभ्यां भक्तिकार्ये श्री सोलहकारणदशलक्षणको व्रतों का उद्यापन बहोत उछाह से भंडार कियो ज्ञानदानार्थं श्री रामपुराणजी शास्त्र घटायो. आचार्य श्री शुभचंद्रजी ने।

२२. पद्मपुराण ।

रचयिता श्रीमच्चन्द्रकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४१२. प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर । साइज ११×४॥ इञ्च ।

मंगलाचरण—

सिद्धं जिनं सद्द्रव्यापेक्षया सार्धनाद्यव ।
सद्द्रव्यसाधनं ध्रौव्यव्ययोरन्त्यंकितं मतं ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

सत्काष्टसंघभवनंदितटाख्यगच्छे
जातो मुनिः सकलसद्गुणमंडितात्मा ।
श्रीरामसेन इति यस्य जगत्प्रकाशं,
वादीभकेसरपतेरभिधानमासीत् ॥ १ ॥
तस्यान्वये समभवत् किल सूरिवर्यः
श्रीधर्मसेन इति नाम दधन् मनोज्ञं,
यस्येहवादिकरिकेसरिणो विशाला
कीर्त्तिजगद्र चिरमंडपगा बभूव ॥ २ ॥
तस्याभवद् विमलसेन इति प्रसिद्धः
सूरिपदांवुजविकासनसप्तसप्तिः ।
प्रासानवद्यशुभविद्युदारकीर्त्तिः
विद्वज्जनप्रकरपूजितपादपीठः ॥ ३ ॥
तस्याभ्यभूदखिलपंडितपूजितांघ्रि
सत्पट्टपंकजरविः सुचरित्रपात्रं ।
नाम्नार्थमत्रधिगात् न विशालकीर्त्ति–
र्यस्मात्प्रबोधमधिगम्य बुधा ननंदुः ॥ ४ ॥
तत्पट्टसागरनिशाकर आविरासीत्
श्रीविश्वसेन इति नाम दधन् मुनीन्द्रः ।
यादृशानां समधिगम्य जगत्प्रबोधम्
लब्ध्वा समस्तवृजिनार्णवपारमापत् ॥ ५ ॥
तत्पट्टेऽप्यभवत् समस्तजनताव्यामोहवन्यादवो
विद्वत्पंकजभास्कराः मुनिजनैः सेव्यांघ्रिपाथोरुहः ।

विद्याभूषण इत्यशेषविदुषां श्रोत्रप्रकाशेन यो
नाम्नाख्येन बुधान......दहोकांस्कान्मुनीन्द्रश्चिरं ॥ ६ ॥
श्रीभूषणाख्यो भवदस्यपट्टे भट्टारको लब्धसमस्तविद्यः ।
यो वादिगर्वकुलशैलवज्रो नावोधयत्कांश्चिद्र मोघवचोभिः ॥ ७ ॥
लब्धा गुरुत्वं खलु वाग्स्यतित्वं कलानिधित्वं च महामतित्वं ।
प्रकाशतां देवसभे.....यासीत् किं तस्य वाच्यं तपसो महत्त्वं ॥ ८ ॥
तस्यास्त्येको नामतश्च द्रकीर्त्तिः
शिष्यं स्वाम्यं प्र यंबुजेदिंदिरोयः ।
पात्रे जाड्यापि यस्मिन्नजस्र
जाता दृष्टिः सद्गुरोः स्नेहपूर्णा ॥ ९ ॥
तेन व्यधायि मुनिनाखिलदोषहारी लोकत्रयप्रथितसारमुदारभावं ।
सीतारघूत्तमचरित्रपयोधिरत्नं क्लृप्त इष्टदानविधिपद्मपुराणमेतत् ॥ १० ॥
रघुपतितरुरस्मात्पातुसम्यक्त्वबीजः
शुभभवति शाखो योगिसंसत्पलाशः ।
सुरमधुपयुतश्रीपंचकल्याणयुक्तो
ह्यसदमृतफलोऽयं सत्तपः पीठबंधः ॥ ११ ॥
यावद्धरामेपं सुमेरुशैलो बिभर्ति सूर्यश्चतपत्यजस्रं ।
तावन्मुदि पद्मपुराणमेतद् भूयो जनानां निखिलाघहारि ॥ १२ ॥

इति श्रीमच्चंद्रकीर्त्तिमुनीन्द्रविरचितं पद्मपुराणं समाप्तमगमत् ।

२३. पद्मपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री धर्मकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २५१. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर । प्रति प्राचीन है । रचना संवत् १६६९ लिपि संवत् १६७०.

मंगलाचरण—

शक्रालीमौलिरत्नांशुवारिधौतपदांबुजं ।
ज्ञानादिमहिमाव्याप्त विष्टपं विष्टपाधिपं ॥ १ ॥
मुनिसुव्रतनामानं सुव्रताराधितक्रमं ।
वंदे भक्तिभरानम्रः श्रेयसे श्रेयसि स्थितं ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

एतद्कथाश्रवाद्भव्यः श्रद्धावान् सत्क्रियायुतः ।
संसाराब्धिं समुत्तीर्य प्राप्नुयात् शिवसुखवरं ॥ १ ॥

अथाभवन्मूलसुसंघएव गच्छे सरस्वत्यभिधेगणे च ।
वलात्कृतौ श्री मुनिपद्मनन्दिः श्रीकुंदकुंदान्वयलब्धसुतिः ॥ २ ॥
देवेंद्रकीर्त्तिश्च बभूव तस्य पट्टे महिष्टेसु महानुभावः ।
त्रिलोककीर्त्तिस्ततआत्तदीक्षो भट्टारकास्तत्पदलब्धनिष्टः ॥ ३ ॥
सहस्रकीर्त्तिमुनिवृंदसेव्यो यशःसुकीर्त्तिः शुभकीर्त्तिसिंधुः ।
बभूव भट्टारकस्तत्पदस्थो मुनिः स्मरारेर्हनने प्रवीणः ॥ ४ ॥
तत्पट्टपंकेजविकाशने यः साम्यं बिभर्तीह सहस्रभानोः ।
हतस्मरारिर्जितदुःकषायो विनष्टदुर्भाव च यो महात्मा ॥ ५ ॥
यं वीक्ष्य लोकव्रतभासुरांगतपस्विनं शास्त्रविदं मुनीशं ।
भजंति मिथ्यात्वं च यं न जातु क्रियापरं शीलनिधिं सुशांतं ॥ ६ ॥
यं सेव्यमानाः सततं सुशिष्याः विज्ञातत्वाव्रतभासुरांगाः ।
भवन्ति नूनं जगति प्रकाशास्तपःकृशा गौरविणो गुणौघैः ॥ ७ ॥
यं सेवमानः समकुक्षिजातं मुनीशमासीद्बुधरत्नपालः ।
पटुत्ववाग्मित्वकवित्वचित्रविनीतितासद्गुणरत्नपात्रं ॥ ८ ॥
एवं विधोऽसौ मुनिसंघसेव्यो भट्टारको भासितदिक् समूहः ।
संघस्य कल्याणतति प्रदेया नाम्नागुरुः श्रीललितादिकीर्त्तिः ॥ ९ ॥
तच्छिष्यस्तत्पदस्थो व्रतनिचययुतो जैनपादाब्जभृंगो,
नाम्नाधर्मादिकीर्त्तिमुनिरमलमनास्तेन चैतत्पुराणं ।
स्वल्पप्रज्ञेन दृष्टं निजदुरितचयप्रक्षयाय हिताय,
भव्यानां च परेषां श्रवणसुपवने प्रोद्यतानामजस्रं ॥ १० ॥
मूलकर्त्तापुराणस्य श्री जिनश्चोत्तरस्तथा ।
गणीशो यतयोऽन्ये च उत्तरोत्तरकर्तृकाः ॥ ११ ॥
इदं श्री रविषेणस्य पुराणं वीक्ष्य निर्मितं ।
चिरस्थेयाः क्षितौ भव्यैः श्रुतं चाधीतमन्वहं ॥ १२ ॥
संवत्सरे ह्यष्टशते मनोज्ञे चैकोन सप्तत्यधिके सुमासे ।
श्रीश्रावनेसूर्यदिने तृतीया तिथौ देशेषु हि मालवेषु ॥ १३ ॥
सरोजपुर्व्यामिवधर्म्मपुर्यां सहायतः श्री ललितादिकीर्त्तेः ।
पारंगतश्चास्य पुराणवार्द्धे रहं प्रहीणोपि मतिप्रपंचैः ॥ १४ ॥
तर्क्कव्याकरणछंदोलंकारादिन् प्रपंचतः ।
न वेद्म्यहं ततस्तेषां च्युतौ कार्यात्क्षमासतां ॥ १५ ॥

ग्रंथः विस्तारणीयोयं सद्भिः परहिते रतैः।
यतः पद्मानि सूतेभस्तद्ग्रंथं नयतेनिलः॥ १६॥
अथ धर्मोजिनैरुक्तो वर्द्धतामात्र शाश्वतः।
संघस्य तुष्टिपुष्टी च भूयास्तां सर्वकर्म्मसु॥ १७॥
क्षेमं च सर्वलोकानां भूयाच्च विजयी नृपः।
काले काले प्रवर्षतां मेघासौभिक्ष्यकारिणः॥ १८॥
व्याधयो यान्तु नाशं च दुर्भिक्षं चौरमारयः।
प्रलयं यांतु पृथ्वीस्तु फलिनी धर्मशक्तितः॥ १९॥
श्रोतृणां पाठकानां च लेखकानां तथैवं च
भूयात्कल्याणसत्प्राप्तिर्धर्मचक्रप्रसादतः॥ २०॥
धर्मकार्येषु सर्वेषु सत्रोश्च जिनदेवताः।
सहायिन्योऽह भूय सुः प्रमादपरिमुच्य च॥ २१॥

इति श्री पद्मपुराणे भट्टारक श्रीधर्मकीर्त्तिविरचिते पद्मदेवनिर्वाणगमनवर्णनो नाम चतुश्चत्वारिंश पर्व्वः॥

संवत्सरे १६७० मिते मासे चंद्रकारावदाते पक्षो मंगलास्य दीपां मंगल……… तिरस्कृतां विघ्नप्रसारे रविवारे प्रशस्तगुणश्रेष्ठायां ज्येष्ठायां च घनो–पवनादिशोभाभरित…… सेखमंलासे महानगरे विद्वज्जनपूरिताकारे चंद्रप्रभजिनागारे श्रीमति नष्टाघे मूलसंघेह शारदागच्छे वर्द्धितसुकृतवने बलात्कारगणे च स्वयशसा व्याप्ताखिलमूर्त्ति भट्टारको यशःकीर्त्ति नामासीत्। तत्पट्टे ललितवाक्यामृत न्यक्कृताखिलमूर्त्ति भट्टारको ललितकीर्त्तिर्वर्त्तते। तत्पट्टोदयाद्राविनमूर्त्तिभट्टारको धर्मकीर्त्तिः वर्त्तते मुनींद्रः। तेनेदमुपासिकार्पितद्रव्येण लेखियित्वा निजांते वासिने गांगानाम्ने प्रदत्तं अधीत्यौ–

२४. प्रतिष्ठापाठ।

रचयिता महापंडित श्री आशाधर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६४. साइज १०॥×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २५–२८ अक्षर। रचना संवत् १२८५. इसका दूसरा नाम जिनयज्ञ कल्प भी है। ग्रंथ में ६ अधिकार हैं तथा सम्पूर्ण पद्य संख्या ६५४ हैं। ग्रन्थ छप चुका है।

प्रशस्ति—

श्रीमानस्ति सपादलक्षविषयः शाकंभरीभूषणः
तत्र श्री रतिधाममंडलकरं नामास्ति दुर्गं महत्।
श्री रत्न्यामुदपादि तत्र विमलव्याघ्रेरवालान्वयात्,
श्री सल्लक्षणतो जिनेंद्रसमयश्रद्धालुराशाधरः॥ १॥

व्याघ्रेरवालवरवंश सरोजहंसः
काव्यामृतोघरसपानसुतृप्तगात्रः ।
सल्लक्षणस्य तनयो नयविश्वचक्षु
राशाधरो विजयतां कविकालिदासः ॥

× × × × × ×

आशाधरत्वं मयि विद्धि सिद्ध' निसर्गसौन्दर्यमजर्य ।
सरस्वती पुत्रतयादेतदर्थन् परं वाच्य मयं प्रपंचः ॥

× × × × ×

श्रीमदर्जुनभूपालराज्यश्रावकसंकुले ।
जिनधर्मोदयर्थं यो नलकच्छपुरे वसत् ॥

× × × × ×

विक्रमवर्षे सपंचाशीति द्वादशशतेष्वतीतेषु ।
आश्विनि सितांत्यदिवसे साहसमल्लापराख्यस्य ॥

× × × × × × ×

प्रति नं० २. पत्र संख्या १२३. साइज १०॥×५॥ इञ्च । प्रति जीर्ण शीर्ण अवस्था में है ।

संवत् १५६० वैशाखमासे शुक्लपक्षे पूर्णिमायां तिथौ शनिवारे अदेहद्वारपल्लीनगरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनन्दिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री विद्यानंदिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री मल्लिभूषणदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री लक्ष्मीचन्द्रदेवा स्तेषां शिष्य ब्र० श्रीवृषभदासस्य उपदेशात् श्री शांतिदास लिखायितः ॥

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १५५. साइज १२×५॥ इञ्च ।

संवत् १७२२ वर्षे भाद्रमासे प्रतिपदातिथौ गुरुवासरे श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे ········· कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकवृन्दशोभित श्रीमन्नरेन्द्रकीर्त्ति तत् शिष्य पंडितराज श्री तेजपालजी तत् शिष्य आचार्य श्री चंद्रकीर्त्तिजी तत् शिष्य पं० घासीराम प० भीवसी चिरंजीवी मयाचंद पठनार्थं लिखापितं ।

२५. प्रद्युम्नचरित्र ।

रचयिता श्री सोमकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १०५. साइज १०×४॥ प्रत्येक पृष्ठ पर १५–१८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४-४८ अक्षर । रचना संवत् १५३० लिपि संवत् १७२४. सोलह सर्ग हैं । चरित्र अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है ।

मंगलाचरण—

श्रीमंतं सन्मति नत्वा नेमिनाथं जिनेश्वरं ।
विश्वजेतापिमदनो बाधितुं न शशाक यं ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

नंदीतटाख्ये विमले सुगच्छे श्री रामसेनो गुणवारिराशिः ।
बभूव तस्यान्वयशोभकारी श्री रत्नकीर्त्तिः दुरितापहारी ॥ १ ॥
श्रीलक्ष्मीसेनोऽत्र ततो बभूव शीलालयः सर्वगुणैरुपेतः ।
तस्यैव पट्टोद्धरणैकधीरः श्री भीमसेनः प्रगुणः प्रवीरः ॥ २ ॥
श्री भीमसेनस्यपदप्रसादात् सोमादिकीर्त्तिश्रुतेन भूमौ ।
रम्यं चरित्रं विनतं स्वभक्त्या संसोध्य भव्याः पठनीयमेतत् ॥ ३ ॥
संवत्सरे सन्निधि संज्ञकेवि वर्षत्रि-त्रिंशैकयुतेपवित्रे ।
विनिर्मितं पौषसुदेश्चतस्यां त्रयोदशा या बुधवारयुक्ता ॥ ४ ॥
यावन्मेरु महीतलेऽति विदितो यावद्रविमडले
यावद्भूवलयः परग्रहगणे यावत्सतां चेष्टितं ।
तावन्नंदतु शास्त्रमेतदमलं श्री शांतिचैत्यालये,
भक्त्या येन विनिर्मितं सुखकरं तस्यास्तुवे सर्वदा ॥ ५ ॥
यावन्मेरु मही यावच्चंद्रार्के तारकाः ।
त वन्नदात्वदं नूनं चरित्रं पापनाशनं ॥ ६ ॥

इति श्री प्रद्युम्नचरित्रे श्री सोमकीर्त्याचार्यविरचिते श्री नेमिनाथप्रद्युम्नशांबकुमरअनुरुद्धादि निर्वाणगमन नाम षोडशः सर्गः ॥

संवत् १७२४ वर्षे कार्त्तिक वुदी १३ दिने श्र मालवदेशमध्ये श्री सुलतानपुर मध्ये लिखितं शुभं ॥

सवत्सरे रसैककर्मकांकयुक्तेः मासि भाद्रपदे सितेतरे प्रथमायां तिथौ सजीवायां कृष्णगढपुरे श्रीमन्महाभूपबहादुरसिंहाजिद्राज्ये श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक जिछी रत्नकीर्त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक जिछी विद्यानन्दि जी तत्पट्टे भट्टारक जिछी महेन्द्रकीर्त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री अनंतकीर्त्तिजी तत्पट्टे भट्टारक श्री भवनभूषणजी तत्पट्टे सकलविमलकलकलकलानिधिः करांवमलतरयशो वरसावरीकृतदिकप्रमादनिकरभव्यः भव्यनिश्राज्ञानासारांधकारक्षयैककारणप्रभाकरः सद्वचोः विराजमानमहामानजनौघेभ्रातः महाबलपंचानसमानः क्रोधमानमायालोभमद्धराधरवज्रोपमान सकलेतरयतिगणनत्रेशविराजमानतरवरजनविहितः प्रशंसवरगुणगणरंलगणरत्नाकरः भट्टारकप्रवर भट्टारकजिछी १००८ श्री विजयकीर्त्तिस्तद्विनयतत्परविनेयाचार्यजिछी देवेन्द्रभूषणजीत्तत्सतीर्थं वुधास्त्रिलोकचंद्रः सदारामस्त्विद्वनेया वुधा दयाचंद्र वर्द्धमान विमलदास दौलतिराम ऋषभदास गुलाबचंद भगवानदास वीरदास मोती जगजीवणदयभि धानश्चरा एतेषां पठनार्थं आचार्य श्री देवेन्द्र भूषणेन स्वपठनार्थं इदं चरित्रं लिखितं ।

२६. प्रवचनसार प्राभृत वृत्ति ।

श्री ब्रह्मरलदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १८९. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रति पूर्ण तथा प्राचीन है। लिपि संवत् १५४३.

मंगलाचरण—

नमः परमचैतन्यस्वात्मोत्थसुखसंपदे ।
परमागमसाराय, सिद्धाय परमेष्ठिने ॥

समाप्ति—

एवं पूर्वोक्तक्रमेण एषु सुरासुर इत्याद्येकोत्तरशतगाथापर्यन्तं सम्यक्ज्ञानाधिकारस्तदनन्तरं तम्हा तस्सण माइ इत्यादि दशोत्तरशतगाथापर्यंतं ज्ञेयाधिकारोऽपरनामदर्शनाधिकारस्तदनंतरं एवं पणमियसिद्धे इत्यादि·········महाधिकार त्रयेणैकादशाधिकत्रिंशत गाथाभिः प्रवचनसारप्राभृतवृत्तिः समाप्ता । संवत् १५४३ वर्षे भाद्रपद सुदी ६ तिथौ ।

प्रशस्ति—

श्रीजिनसूरस्य वाक्योत्करकरोत्कराः ।
अज्ञानध्वांतनाशाय भवंतु जगतः परं ॥ १ ॥
श्रीदेश्रीमूलसंघे च नंद्याम्नाये लसद्गणे ।
वलात्कारि जगद्वंद्ये गच्छे सारस्वत्याभिधाः ॥ २ ॥
श्रीमत्कुंदादिकुंदाख्यसूरेरन्वयकेभवत् ।
पद्मनंदी शिवानंदी भट्टारकपदस्थितः ॥ ३ ॥
तत्पट्टांभोजमार्त्तंडः शुभचन्द्रोगणाग्रणी ।
तत्पट्टे चाभवच्छ्रीमान् जिनचंद्राभिधोग्रणी ॥ ४ ॥
तच्छिष्यस्तद्गुणैः प्राप्ताचार्यपदवीं मुनिः ।
रत्नकीर्त्तिरितिख्य तस्तदाम्नाये वभूव च ॥ ५ ॥

संगही गोरा तद्भार्या गुणसिरि तयोः पुत्राः सं० सागा, सं० गोगा सं० देवा रत्नपाल तयोः मध्ये सं० गोगा तद्भार्या केल्ह इदं ज्ञानावरणीकर्म्मक्षयार्थं श्रीमन्मंडलाचार्य रत्नकीर्त्ति तत् शिष्यमुनिविमलकीर्त्तिप्रदत्तमिदं पुस्तकं । लिखितं पं० गोगा ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७७. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रति पूर्ण है लिखावट सुन्दर है ।

संवत् १५७७ वर्षे आषाढसुदी ३ श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे नंद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्यः धर्मचन्द्रस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये भौंसागोत्रे साह षौंराज भार्या षिवसिरि तत्पुत्र सा.

तिहुणा द्वितीय वीरदास तिहुणा भार्या श्रीमति तत्पुत्र सा. लोहट भार्या ललितादे तत्पुत्रमेघा नेमाभार्या नमणसिरी तत्पुत्र दुलहणी भार्या जैणादे असू तत्पुत्र आसू इदं शास्त्रं नागपुरमध्ये लिखाप्य श्री मुनिधर्म-चन्द्रायदत्तं ।

२७. पाण्डवपुराण ।

रचयिता आचार्य श्री शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३४७. प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०–३४ अक्षर । रचना संवत् १६०८. लिपि संवत् १८३१. ग्रन्थ में २५ अधिकार हैं। प्रशस्ति में शुभचन्द्र ने, अपनी १० रचनाओं का तथा कितने ही स्तोत्रों का उल्लेख किया है। पाण्डवपुराण की रचना में शुभचन्द्र को अपने शिष्य श्रीपाल वर्णी से सहायता प्राप्त हुई है। ग्रन्थ अभी तक अप्रकाशित ही है। प्रति नवीन है लेकिन दीमक ने खा लिया है। अन्तिम पाठ नहीं है।

मंगलाचर—

सिद्धं सिद्धार्थसर्व्वस्वं सद्विदं सिद्धसत्पदं ।
प्रमाणनयसंसिद्धं सर्वज्ञं नौमि सिद्धये ॥ १ ॥
वृषभं वृषभं भांतं वृषभांकं वृषोन्नतं ।
जगत्सृष्टिविधातारं वंदे ब्रह्माणमादिमं ॥ २ ॥
चन्द्राभं चंद्रशोभाद्यं चंद्रार्च्यं चन्द्रसंस्तुतं ।
चन्द्रप्रभं सदा चन्द्रमीडे सच्चन्द्रलांछनं ॥ ३ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

तादृग्विधोऽहं प्रगुणैर्जिनेशं, स्तुवंश्चसद्भिः सकलैः परैश्च ।
क्षाम्यः सदा कोपगणं विहाय, बाल्ये जने को हि हितं न कुर्यात ॥ १ ॥
श्रीमूलसंघे जनि पद्मनन्दी, तत्पट्टधारी सकलादिकीर्त्तिः ।
कीर्त्तिः कृता येन च मर्त्यलोके शास्त्रार्थकर्त्री सकला पवित्रा ॥ २ ॥
भुवनकीर्त्तिरभूद् भुवनाधिपैः ।
भुवनभास्करचारुमतिस्ततः ।
वर तपश्चरणोद्यतमानसो
भवभयाहि खगेट् क्षितिवत्क्षमी ॥ ३ ॥
चिद्रूपवेत्ता चतुरश्चिरंतनं
चिद्भूषअर्चितपादपद्मकः ।
सूरिश्चचंद्रादिचयैश्चिनोतु वै
चारित्रशुद्धिखलु नः प्रसिद्धिदां ॥ ४ ॥

विजयकीर्त्तिर्यतिमुदितात्मको,
 ह्यजितताान्वमतः सुगतै स्तुतः ।
अवतु जैनमतः सुमतो मतो
 नृपतिभि र्भवतो भवतो ......॥ ५ ॥
पट्टे तस्य गुणांबुधि व्रतधरो धीमान गरीयान्वरः
 श्रीमच्छ्री शुभचन्द्र एष विदितो वादीभसिंहोमहान् ।
तेनेदं चरितं विचार सुकरं चाकारि चचंद्रचां,
 पांद्वो श्री शुभसिद्धि सात जनकं सिद्धयै सुतानां सदा ॥ ६ ॥
चन्द्रनाथचरितं चरितार्थं पद्मनाभचरितं शुभचन्द्रः ।
मन्मथस्य महिमानमतन्द्रो जीवकस्य चरितं च चकार ॥ ७ ॥
चंदनायाः कथा येन बद्धवा नांदीश्वरी तथा ।
आशाधरकृताचार्या वृत्तिः सद्वृत्तिशालिनी ॥ ८ ॥
त्रिंशच्चतुर्विंशतिपूजनं यः सद्वद्धसिद्धार्चन माव्यधत्ता ।
सारस्वतीयार्चनमत्रशुद्धं चिंत मणीयार्चनमुच्चरिष्णुः ॥ ९ ॥
श्री कमदाहविधिवंधुरसिद्धसेवां
 नानागुणौघगणनाथसमर्चनं च ।
श्रीपार्श्वनाथवरकाव्यसुपंजिकां च यः,
 स चकार शुभचन्द्रचंद्रतर्थोचद्रः ॥ १ १० ॥
उद्यापनमदीपिष्ट पल्योपमविधेश्चयः ।
चारित्रशुद्धितपसश्चतुस्त्रिद्वादशात्मनः ॥ ११ ॥
संशयवदनविदारणमपशब्दसुखंडनं परं तर्क्के ।
स तत्त्वानिर्णयं वरस्वरूपसंबोधनीं वृत्तिं ॥ १२ ॥
अध्यात्मपद्यवृत्तिं सर्वार्थपूर्वसर्वतोभद्रं ।
योकृतसद्व्याकरणं चिंतामणिर्नामधेयं च ॥ १३ ॥
कृता येनांगप्रज्ञप्तिः सर्वांगार्थ प्ररूपिका ।
स्तोत्राणि च पवित्राणि षट्पादः श्री जिनेशिनां ॥ १४ ॥
तेन श्री शुभचन्द्रदेवविदु-सत्पांडवानांपरं,
 दीप्यद्वंशविभूषणं शुभभरभ्राजिष्णुशोभकरं ।
शुभद्भारतीनाम निर्मलगुणं सच्छन्दचिंतामणि,
 पुष्पत्पुण्यपुराणमन्त्रसुकरं चाकारि प्रीत्यामहत् ॥ १५ ॥

शिष्यस्तस्य समृद्धबुद्धिविशदो यस्तर्क वेदीवरो,
वैराग्यादिविशुद्धिवृद्धंजनकः श्रीपालवर्णीमहान्।
संशोध्याखिल पुस्तकं वरगुणं सत्पांडवानामिदं
तेनालेखि पुराणमर्थनिकरं पूर्वे वरे पुस्तके ॥ १६ ॥
श्रीपालवर्णिनाकारि शास्त्रार्थं संग्रहे।
साहाय्यं सचिरं जीयात् वरविद्याविभूषणः ॥ १७ ॥
ये शृण्वन्ति पठंति पांडवगुणं संलेखयंत्यादरात्—
लक्ष्मीराज्यनराधिपस्यच सुता चक्रित्वशक्रेशिनां।
भुक्त्वाभोगमिदं पुराणमखिलं संबोभुवस्फुन्नता,
मुक्तौ ते भवभीमनिम्नजलधिं संतीर्य शांतं गताः ॥ १८ ॥
अर्हंतो ये जिनेंद्रावरवचनचयैः प्रीणयंतः सुभव्यान्,
सिद्धाः सिद्धिं समृद्धिं ददतु इह शिवं साधवः......

× × × × × ×

संवत् १८३१ वर्षे वैशाखसुदि ६ रविदिने श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री सुरेंद्रकीर्त्तिः आम्नाये आचार्य श्री विजयकीर्त्ति शिष्य रूपचंद-उपदेशात् आदौ वासी शेरपुर अधुना वासी कोटा नगरे रामपुरा मध्ये जाति वैद साहाजी श्री कवलापति जी तत्पुत्र साहजी श्री धर्ममूर्त्ति जैतरामजी भार्या बाई अनोपमातत्पुत्र साहजी श्री धर्ममूर्त्ति तुलारामजी साहजी श्री वर्द्धमानजी साहजी श्री ताराचंदजी तुलारामस्य भार्या बाई जगां वर्धमानजी भार्या वरधादे ताराचंदस्य भार्या तारमदे बाई कुंदना वर्धमानस्य पुत्र उमेदराम। ताराचंदस्य पुत्र माणिकचंदजी आत्मकल्याणार्थं ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं साहजी श्री धर्ममूर्त्ति श्री तुलारामजी घटापितं शास्त्रं पाण्डवपुराणं।

२८. पुण्याश्रव कथाकोश।

रचियता श्री मुनि केशवनन्दि के शिष्य रामचन्द्र मुमुक्षु। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १५६. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४३-४६ अक्षर। कोश में ५२ कथायें है। ग्रन्थ के अन्त सूची दे रखी है।

मंगलाचरण—

श्रीवीरं जिनमानम्य वस्तुतत्त्वप्रकाशकं।
वक्ष्ये कथामयं ग्रंथं पुण्याश्रवाभिधानकं ॥ १ ॥

ग्रन्थ समाप्ति—

इति पुण्याश्रवाभिधाने ग्रंथे, केशवनन्दिदिव्यमुनिशिष्यरामचंद्रमुमुक्षु विरचिते दानफलाख्य-वर्णनो षोडशवृत्ताः समाप्ताः।

प्रशस्ति—

यो भव्याब्जदिवाकरो यमकरो मारेभपंचाननो,
नानादुःखविधायिकर्मकुभृतो वज्रायते दिव्यधीः ।
यो योगींद्रनरेंद्रवंदितपदो विद्यार्णवोत्तीर्णवान्,
ख्यातः केशवनंदिदेवयति यः श्री कुन्दकुन्दान्वयः ॥ १ ॥
शिष्योऽभूत्तस्य भव्यः सकलजनहितो रामचन्द्रो मुमुक्षुः,
ज्ञात्वा शब्दापशब्दान् सुविशदयशसः पद्मनंद्याह्वयाद्
वंद्या वादीभसिंहात्परमयतिपने सो व्यधाद् भव्यहेतो
ग्रंथ पुण्याश्रवाख्यं गिरिसमितिमितैं दिव्यपद्यैः कथार्थैः ॥ २ ॥
कुंदकुंदान्वये ख्याते ख्यातो देशे गणाग्रणी ।
अभूत संघाधिपः श्रीमान् पद्मनन्दी त्रिरात्रिकः ॥ ३ ॥
वृषभाधिरूढो गणयोगणोद्यतो
जिनाग्रकोर्नंदितचित्तवृत्तिकः ।
उमासमालिंगित ईश्वरोपम
स्ततोप्यभूत् माधवनंदिपंडितः ॥ ४ ॥
सिद्धांतशास्त्रार्णवपारदृश्वा
मासोपवासो गुणरत्नभूषः ।
शब्दादिवार्थो विबुधप्रधानो,
जातस्ततः श्रीवसुनन्दिसूरिः ॥ ५ ॥
दिनपतिरिवानित्यं भव्यपद्माधिबोधी
सुरगिरिरिवदेवैः सर्वदा सेव्यपादः ।
जलनिधिरिव शश्वत् सवसत्त्वानुकंपी,
गणभृदजनिशिष्यो मौलिनामातदीयः ॥ ६ ॥
कलाविलासः परिपूर्णवृत्तो
दिगंवरालंकृति हेतुभूतः ।
श्री नंदिसूरिर्मुनिवृद्धवंद्यः
तस्मादभूच्चंद्रमानकीर्त्तिः ॥ ७ ॥
चार्वाकबौद्धजिनसांख्यशिवद्विजानां,
वाग्मित्ववादिगमकत्वकवित्वचित्तः ।
साहित्यतर्कपरमागमभेवभिन्नः
श्री नंदिसूरिगगनांगनपूर्णचंदः ॥ ८ ॥
समाप्तोऽयं पुण्याश्रवाभिधानकं··· ··· ···।

२६. पुराणसार संग्रह।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत (गद्य)। पत्र संख्या १२६. साइज १२×५॥ इञ्च प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४७-५१ अक्षर। विषय-आदिपुराण उत्तर पुराण पाण्डवपुराण आदि के सार का वर्णन। लिपि संवत् १८२२. संग्रह अभी तक अप्रकाशित है।

मंगलाचरण—

सर्व्वकर्मारसंतानं हत्वा येन तपस्विना।
मोक्षश्रीसाधिता तस्मै नमोऽजितजितात्मने ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

धर्म्मांगं धर्म्ममूलं गुणगणसदनं तीर्थराजस्य जातं
विश्वार्च्यं विश्ववंद्यं गणधररचितं कीर्त्तितं कीर्त्तिमद्भिः।
भव्याराध्यं शरण्यं भवभयसकृतां धर्म्मिणांमुक्ति हेतोः,
दुः कर्मघ्नं हि जीयान्नरसुरमुनिभिः ज्ञानतीर्थं धरित्र्यौ ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

संवत् १८२२ वर्षे शाके १६८७ प्रवर्त्तमाने कार्त्तिकमासे कृष्णापक्षे तिथौ ८ सोमवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे शिवयोगे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे द्वितीयशिष्यमंडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्यः श्रीविशालकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्यः श्री लक्ष्मीचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सहस्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मं० श्रीनेमचंददेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री यशःकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री भानुकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री भूषणजी देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री देवेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्यः श्रीअमरेंद्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्तिजी तदाम्नाये त्रयोदशप्रकारचारित्रप्रतिपालक आचार्य श्री १०८ लक्ष्मीचन्द्रजी तत्पट्टे आचार्य १०८ नरेंद्रकीर्त्तिस्तत्पट्टे पूरमपूज्य सकलगुणगणालंकृताचार्य १०८ श्री सकलकीर्त्तिजी तत्पट्टे पंचमहाव्रतधारकः पंचसमितिधारकः त्रयगुप्तिसाधकः अष्टाविंशमूलगुणयुक्तः द्वाविंशपरिषहसहनधीरः सप्तदशसंयमभेदनित्याचरन आचार्यवर्य्यधैर्यः सकलशिरोमणि आचार्य जी श्री १०८ श्री क्षेमकीर्त्ति जी तच्छिष्य लिखितं पंडित जोधराज द्वितीय शिष्य पं० ईसर स्वहस्तेन।

अथ संवत्सरेऽस्मिन् विक्रमादित्यराज्यात् संवत १८२४ वर्षे मार्गशिरमासे शुक्लपक्षे अष्टम्यां तिथौ शनिवासरे श्री मूलसंघे नंद्यम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक जी श्री चन्द्रकीर्त्ति जी तदाम्नाये खंडेवालान्वये नागपुरवास्तव्ये महाराजाधिराज राजराजेश्वर महाराजा श्री विजयसिंह जी राज्यप्रवर्त्तमाने पाटणी गोत्रे साहजी श्री हीरानंदजी तस्य भार्या हीरादे तत्पुत्र सा० टकुंदास भार्या तिलकादे। तत्पुत्र सा० जीवराज तस्य भार्या जिणादे तयो. पुत्राः त्रयः। प्रथम पुत्रा सा० ईसरदास

द्वितीय सा० कपूरचंद तस्य भार्या कपुरादे तस्य पुत्राश्चत्वारः। प्रथम पुत्र सा० वधूराम भार्या वोहरंगदे द्वितीय पुत्र सा० जीवणराम तस्य भार्या जिणादे तृतीय पुत्र सा० कचरदास तस्य भार्या कंचरादे चतुर्थ पुत्र सा० गुलावचंद तस्य भार्या गुलावदे। तृतीय पुत्र सा० डालुराम तस्य भार्या डालमदे तयोः पुत्रौ द्वौ। प्रथम पुत्र सा० चूहड तस्य भार्या चूहडदे द्वितीय पुत्र सा० फतेचंद तस्य भार्या फतमलदे। सा० मनुजी तस्य भार्या मानादे तयो पुत्रा सा० भावुजी तस्य भार्या भावलदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र रूपचन्द तस्य भार्या रूपलदे द्वितीय पुत्र रामचंद। सा० कचरदास जी तस्य भार्या कचरादे तयोः पुत्राः साह रिषभदास भार्या रिषभादे। साह गुलावचंद तत्पुत्र सा० मिलाजी भार्या मिलादे तयोः पुत्राश्चत्वारः। प्रथम पुत्र मोतीराम द्वितीय पुत्र माणिकचंद तृतीय पुत्र नैणचंद चतुर्थपुत्र दोलतराम। साह फतेहचंद तत्पुत्र मयाराम एतेषां मध्ये जिनपूजापुरंदरान् संघभार धुरंधुरान् जिनचैत्यालययात्राप्रतिष्ठाकरणसमर्थान् द्वादशव्रतप्रतिपालकान् सद्गुरुपदेशनिर्व्वाहकान् साहजी श्री रिषभदासजी इदं शास्त्रं सकलपुराणाख्यं लिखाप्य स्वज्ञानावरणीकर्मक्षय निमित्तं सत्पात्रा आचार्यवर्य श्री १०८ श्री क्षेमकीर्त्तये प्रदत्तं ॥

३०. भक्तामरस्तोत्र वृत्ति।

वृत्तिकार श्री गुणसुंदर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २८. साइज १०॥x४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ५३-५५ अक्षर। लिपि संवत् १४२६. लिपि संवत् १६५४. श्री गुणसुंदर आचार्य गुणचन्द्रसूरि के प्रमुख शिष्य थे। इनका दूसरा नाम गुणाकरसूरि भी है।

वृत्तिकार की प्रशस्ति—

श्रीचंद्रगच्छेऽभयसूरिवंशे श्रीरुद्रपल्लीयगणाधिपचंद्राः।
श्रीचंद्रसूरिप्रवराबभुस्ते येभ्रातरः श्रीविमलेंदुसंज्ञाः॥ १॥
तत्पट्टे जिनभद्रसूरिगुरवः संलब्धलब्धप्रभाः।
सिद्धांताम्बुधिकुंभसंभवनिभाः प्रख्यातमन पां शुभाः॥ २॥
जातः श्रीगुणशेखराभिधगुरुस्तस्मात्तपोनिर्म्मलः।
शीलः श्रीतिलकोजगत्तिलक इत्य……प्रणोः॥ ३॥
सद्व्यसकविः कवित्वख्याता चारित्रचारुकरुणाः करुणास्तकामः।
तत्पट्टभूपणमणिर्गतदूपणोऽभूत श्रीमान् मुनींद्र गुणचंद्र गुरुर्गरिष्ठा॥ ४॥
संप्रत्य………निर्देशाभयदेव सूरीणां।
गुणचंद्रसूरिशिष्यागुणसुन्दरवाचकोल्पे मतिः॥ ५॥
वर्षे षड्विंशाधिकचतुर्दशशती मितेवपत्तौ।
आश्विनमासे रचितामरस्त्वपत्तनिवृत्तिः॥ ६॥
× × × × × ×
इति श्री भक्तामरवृहत् वृत्ति समाप्ता।

संवत् १६५४ वर्षे कार्त्तिक शुक्लचतुर्दश्यां लिखितं सांडानगर मध्ये ।

३१. भक्तामरस्तोत्र वृत्ति ।

वृत्तिकार ब्रह्म श्रीरायमल्ल । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३५. साइज ११॥×६॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५–३८ अक्षर । टीका काल संवत् १८६७ लिपि संवत् १६६८. वृत्तिकार की प्रशस्ति—

श्रीमद् हूंबडवंशमंडणमणिर्मह्मीयेति नामा वणिक्,
तद्भार्या गुणमंडिता व्रतयुता चांपामितीताभिधा ।
तत्पुत्रो जिनपादपंकजमधुपो रायादिमल्लो व्रती
चक्रे वृत्तिमिमां स्तवस्य नितरां नत्वा श्रीवादींदुकं ॥ १ ॥
सप्तषष्ट्यधिके वर्षे षोडशाख्ये (१६६७) हि संवति ।
आषाढश्वेतपक्षस्य पंचम्यां बुधवारके ॥ २ ॥
ग्रीवापुरे महीसिंधो स्तटभागंसमाश्रिते ।
प्रोत्तंगदुर्गसंयुक्ते श्रीचन्द्रप्रभसद्मनि ॥ ४ ॥
वणिनः कर्मसीनाम्नः वचनात् मयकारचि ।
भक्तामरस्य सद्वृत्तः रायमल्लेन वर्णिना ॥ ४ ॥
इति श्री ब्रह्मरामल्लेन विरचिता भक्तामरस्तोत्र वृत्तिः समाप्ता ।

संवत् १६६८ वर्षे कार्तिक सुदी १३ शनिवारे श्री काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भट्टारक श्री विद्याभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री भूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री चंद्रकीर्त्ति तत्पट्टाभरण श्री भट्टारक श्री राजकीर्त्ति तत्पट्टाभरण भट्टारक श्री लक्ष्मीसेन विजयराज्ये भट्टारक श्री राजकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म श्री कल्याणसागरस्य पठनार्थे ।

३२. भक्तामरस्तोत्र वृत्ति ।

वृत्तिकार श्री अमरप्रभसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १८. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४–३८ अक्षर ।

मंगलाचरण—

अज्ञानतिमरान्धानां ज्ञानांजनशलाकया ।
नेत्रोन्मुनिमीलतेजेन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

प्रशस्ति—

श्रीअमरप्रभसूरिणां वैदुष्यगुणभूषिताः ।
भक्तामरस्तवींवृत्ति प्रकापुः सुखबोधिकां ॥ १ ॥

संवत् १६३६ माघ सुदी २ सोमवासरे लिखापितं पंडित शिरोमणि केसोदास आपजोग्यपठनार्थं लिख्यते कायस्थ पूरनमल माथुरान्वये।

संवत् १६६५ पौष बुदी ११ बृहस्पतिवासरे शेरपुर वास्तव्ये श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये महाराजा श्रीजगन्नाथराज्ये श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये ····· भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्त्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सौगणी गोत्रे सा० सांगा तद्भार्ये प्र० सिंगारदे द्वि० लाडमदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्र० सा० नांदा तद्भार्ये द्वे प्र० नारंगदे द्वि० ल्हौडी तयोः पुत्राः चत्वार: प्रथम सा० टीला तद्भार्या त्रिभुवनदे। द्वि० सा० मोहन चि० गूजर एतेषां मध्ये सा० नांदा तद्भार्या नारिंगदे इदं शास्त्रं देवशास्त्रगुरुर्भक्तितया भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तये प्रदत्तं।

३३. भोजप्रबन्ध।

रचयिता श्री रत्नमन्दिर गणि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७२. साइज १२×५।। इञ्च। ग्रन्थ पद्य संख्या ३३३१. रचना संवत् १५१७. लिपि संवत् १८०५. ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है।

मंगलाचर—

ॐकारः कल्पकारस्करनिकरतिरस्कारिदानातिरेकः,
शब्दब्रह्मैकरत्नाकरहिमकिरणः कारणं मंगलानां।
देयाद्वः शुद्धबुद्धिं निरवधिमहिमांमभोनिधिः,
सर्वसिद्धाचार्योपाध्यायसाधूनभिदधदं चकं धीमदाराधनीयः ।।१।।

प्रशस्ति—

भोजे प्रबन्धराजेऽस्मिन् रत्नमंदिरलेखिते।
कवीश्वरकृतानंदोऽधिकारः सप्तमोऽभवत् ।। १ ।।
ज्ञातः श्री गुरुसोमसुन्दरगुरुश्रीमत्तपागच्छप,
स्तत्पादांबुजषट्पदो विजयते श्रीनंदिरत्नगणिः।
तत शिष्योस्ति च रत्नमंदिरगणी भोजप्रबंधोऽद्भुत,
स्तेनासौ मुनिर्भूमिभूतशशिभृत् १५१७ संवत्सरे निर्मितः ।। २ ।।

संवत् १८०५ वर्षे मिती चैत सुदी ११ तिथौ लिखितं जती प्रयागदासेन।

३४. महावीर पुराण।

रचयिता महापंडित श्री आशाधर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३६. साइज १०।।×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३० अक्षर।

मंगलाचर—

वीरं नत्वेंद्रभूतिं च त्रिपष्टिश्रेष्ठपुंश्रितं।
इति वृत्तं ब्रु वे स्मृत्यै समासेन यथागमं ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

सोहमाशाधरः कंठमलं कर्त्तुं सधर्म्मणां।
पंजिकालं कृतं ग्रंथमिमं पुण्यमरीरचं ॥ १ ॥
× × × × × ×
संक्षिप्यतां पुराणान् नित्यस्वाध्यायसिद्धये।
इति पंडितलाजाख्यिज्ञप्ति प्रेरिकात्र ये ॥
× × × × × ×
प्रमारवशंवार्दीदु देवपालनृपात्मजे।
श्रीम ········ देव सिस्थाम्नावंतीमवत्यलं ॥
नलकच्छपुरे श्रीमान्नेमिचैत्यालयेसिधत्।
ग्रंथो संष्ठिनवंधेक विक्रमार्क समात्यये ॥
खडिलां वंशे महनकमलश्रीसुतः सुहक्।
धीनाको वर्द्धतां येन लिखिता स्वाद्य पुस्तिका ॥

३५. महीपालचरित्र।

रचयिता श्री चारित्रसुन्दरगणि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३३. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४५-५० अक्षर। रचना संवत् १५२५ के आस पास। लिपि संवत् १८२५. ग्रन्थ जामनगर से प्रकाशित हो चुका है।

प्रारम्भिक पाठ—

यस्यांशदेशे शतकुंतलाली, दूर्वांकुरालीव विभाति नीला।
कल्याणलक्ष्मी वसतिः संदिश्यादादीश्वरो मंगलेमालिकां वः ॥
यस्यांक्रमोपास्तिवशाज्जडोपि, विना श्रमं वाङ्मयपारमेति।
सदा चिदानंदमयस्वरूपा सा सारदा पातु रतिपरां मे ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

महीपालस्यैवं चरितमिदसुधद्रसमयं,
मया प्रोचे पुण्यातिशयविशदं शश्वदधिया।
प्रसादेन श्रीमज्जिनवरपतेश्चापि सुगुरोश्च,
नंद्यादे तद् भुवि कविजनानंदजनकं ॥ १ ॥

नित्यं सच्छुक्लपक्षस्थितिरिति विशदो नाशितो श्यामपक्षो,
विध्वस्ताशेषदोषो बहुमुनिसहितो भूरिशोभाभिरामः ।
विश्वाल्हादं ददानो हतनिखिलतमाः शश्वदाप्तोदयोत्र,
श्रीमच्छोपरविधुवदयं राजते शुद्धवृत्तः ॥
कल्याणवलिशालिनोत्रसुमनः श्रेणीश्रितो विश्रुतः,
श्रीमान् वृद्धतपोगणो विजयतेऽयंमेरुवत्निश्चलः ।
विश्वालंकरणस्य विस्तृतजुषः सन्नंदनस्यान्वहं,
भां विस्फाति युतस्य यस्य पुरतः पादा इवान्ये गणाः ॥ ३ ॥
तस्मिन् विस्मयकारि चारुचरितं चारित्रचूडामणिः,
श्रीमान श्रीविजयेन्द्रसूरिरभवद्भव्यांगचिंतामणिः ।
तत्पट्टे समभून्महींद्रमहितः श्रीक्षेमकीर्त्तिगुरुः,
कारकान्तोविबुधान् धिनोति नितरां यत्कालवृत्तिस्तथा ॥ ४ ॥
श्री रत्नाकरसूरय समभवन् ज्ञानांबुरत्नाकराः,
कीर्त्तिस्फीतिमनोहराशुभगुणश्रेणीलतांभोधर ।
यन्नाम्नात्र तयो गणो यमभजद्रत्नाकराख्यांवरां,
ख्यातेन क्षिति मंडलेऽपिसकले सत्यां तमो हारिणाः ॥ ५ ॥
तस्यानुक्रमपूर्वशैलतरणिः कामद्विपोघस्तृणिः,
सूरीशोभयसिंह इत्यजनिसद्योगींद्रचूडामणिः ।
तत्पट्टे प्रकटप्रभाव विदितो विध्वस्तवादिघृणिः,
जज्ञे श्री जयपुंडूसूरिरसमो भव्यात्मचिंतामणिः ॥ ६ ॥
कीर्त्तिर्यस्य निरस्तापनिवहासच्छीलदंऽस्थिता,
चंचच्चंद्रकलोज्वलादशदिशां श्वेतातपत्रापते ।
तत्पट्टे स्फुटवादिकुंजरघटा सिंहो हृदंहोव्रजः,
सूरींद्रो जयताच्चिरं गणधरः श्री रत्नसिंहाभिधः ॥ ७ ॥
तस्यानेकविनेयसेवतपदांभोजभव्यावली,
चंचन्नेत्रचकोरचंद्रसदृशस्यात्रभूमीपतेः ।
शिष्याणूरचयांचकार चतुरश्चारित्ररम्याभिधो,
विश्वाश्चर्यकरं महीपचरितं नानाविचारोद्धरं ॥ ८ ॥
श्री रत्नसिंहगुरुपादशिरोरुहालि-
श्चारित्रसुंदरकवि यदिदं ततान ।

तस्मिन् महीपचरिते भववर्णनाख्ये,
सर्गः समाप्तिमगमत् किल पंचमोयं ॥ ६ ॥

इति भट्टारक श्री रत्नसिंहसूरि शिष्यमहोपाध्याय श्री चारित्रसुंदरगणिविरचिते श्री महीपालचरिते चा काव्ये पंचमः सर्गः। संवत् १८२५ तपसि मासे कृष्णपक्षे कर्म्मवाद्यां जयादे मध्ये पूर्णी कृतम्। टोंकनगर-मध्ये लिखिता जती पूरणचन्द्रेण लिखापिता विद्वत् सुखरामजी पठनार्थे।

३६. मुनिसुव्रतपुराण।

रचयिता ब्रह्म श्रीकृष्णदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११६. साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ तथा प्रति पंक्ति में ४३-४७ अक्षर। रचना संवत् १६८१. लिपि संवत् १८५०. पुराण अभी तक अप्रकाशित है।

मंगलाचरण—

देवेन्द्रार्चितसत्पादपंकजं प्रणमाम्यहं।
आदीश्वरजगन्नाथं सृष्टिधर्म्मकरं भुवि ॥ १ ॥

अन्तिमपाठ प्रशस्ति—

काष्ठासंघे वरिष्ठेऽजनिमुनिपनुतो रामसेनोभदंत,
स्तत्पादांभोजसेवाकृतविमलमतिः श्रीभीमसेनः क्रमेण।
तत्पट्टे सोमकीर्त्तिर्यवनपतिकरांभोजसंपूजितांह्रि,
रेतत्पट्टोदयाद्रौ जिनचरणलयीश्रीयशः कीर्त्तिरेनः ॥ १ ॥
कमलपतिरिवाभूच्छ्रयुदयाद्यतंसेन,
उदितविशदपट्टे सूर्यशैलेन तुल्ये।
त्रिभुवनपतिनाथांह्रिद्वयाशक्तचेत,
स्त्रिभुवनजनकीर्त्तिर्नमितत्पट्टधारी ॥ २ ॥
रत्नभूषणभदंत……न्यायनाटकपुराणसुविधः।
वादिकुंजरघटाकटसिंहस्तत्पट्टेऽजनिरंजनभक्तः ॥ ३ ॥
देवतानिकरसेवितपाद श्रीनृपेशविभुपादप्रसात्।
कोमलेन मनसा कृत एष ग्रंथ एव विदुषां हृदिहारः ॥ ४ ॥
सोधयंतु विबुधाविविरोधामत्पुराणमदएवमनोज्ञं।
संभवंति सुजनाः खलु भूमौ ते सदा हितकराहतपापाः ॥ ५ ॥
………ऽथ वर्षे १६८१ श्री कीर्त्तिकाख्ये।
धवले च पक्षे जीवे त्रयोदश्यपराह्णयामे कृष्णेन सौख्याय विनिर्मितोऽयं ॥ ६ ॥

लोहपत्तननिवासमहेभ्यो हर्ष एव वर्णिजामिव हर्षः ।
तत्सुतः कविविधः कमनीयो भातिमंगलसहोदरकृष्णः ॥ ७ ॥
श्रीकल्पवल्लीनगरे गरिष्टे श्रीब्रह्मचारीश्वर एव कृष्णः ।
कंठावलं व्यूर्जितपूरमझः प्रवर्द्धमानोहितमाततान ॥ ८ ॥
पंचविंशतिसंयुक्तं सहस्त्रत्रयमुत्तमं ।
श्लोकसंख्येतिनिर्दिष्टकृष्णेन कविवेधसा ॥ ९ ॥

इति श्रीपुण्यचंद्रोदयमुनिसुव्रतपुराणे श्रीपूरमल्लांके हर्षवीरिकादेहल ब्रह्मश्री मंगलदासात्मज ब्रह्मरकृष्णदासविरचिते रामदेवशिवगमनं त्रयोविंशतितमः सर्गः समाप्तः । संवत् १८५० का पोषमासे ...क्षे तिथौ १ गुरुवासरे लिखित महात्मा संभूराम ॥

संवत्सरे शून्यशराष्टेंदु १८५० मिते पोषमासे शुक्लपक्षे पंचम्यांतिथौ चन्द्रवासरे ढूंढाहडदेशे ...नयपुरनगरे श्री वृषभदेवचैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये अंबावती-...ट्टारकशिरोरत्न श्रीमहेन्द्रकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक पट्टोदयाद्रिदिनमणिनभश्रीमत्देमेन्द्रकीर्त्तिदेवस्त-...जमार्त्तण्डचण्डोद्योतितपरवादिभपंचानभट्टारकश्रीसुरेन्द्रकीर्त्तिस्तदाम्नायेखंडेलवालान्वये पाटणीगोत्रे-...कशिरोमणि साहश्रीसंतोषरामः तद्भार्या संतोषसुखदे तत्पुत्रचिरंजीव श्रीधर्मधुरंधर वधूरामजी ...र्या वधूदे तत्पुत्र चिरंजीविश्रीमोहनलाल एतेषां मध्ये दानपूजाव्रतशीलप्रभावक श्रावकधर्मक्रियापरायण-...त्रिश्रीवधूरामेणेदं मुनिसुव्रत पुराणं लिखाप्य निजज्ञानवरणीकर्मक्षयार्थं भट्टारक श्रीसुरेन्द्रकीर्त्तये घटापितं ।

मेघदूतावचूरि ।

टीकाकार श्री सुमतिविजय । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३०. साइज ९॥×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ...क्यां तथा प्रति पंक्ति में ४६–४८ अक्षर । लिपि संवत् १७५१.

...र का मंगलाचरण—

शारदां च गुरुं नत्वा मेघदूतावचूरिका ।
सुमतिविजयनेयं क्रियते सुगमत्वया ॥ १ ॥

राजरंजनदक्षाश्च पाठकाः सुनिमंडले ।
जीयाः सुधीः घनाः शाश्वत् श्रीमद्विनयमे रवः ॥ १ ॥
सुमतिविजयेनेयं विहिता सुगमत्वया—
वचूरिः शिशुबोधार्थं तेषां शिष्येण धीमता ॥ २ ॥
विक्रमाख्ये पुरे रम्येऽभीष्ट देव प्रसादतः ।
मेघाद्वताभिधानस्य पूर्णकाव्यस्य सौख्यदा ॥ ३ ॥

३८. मेघदूत टीका।

टीकाकार श्रीमेघराज। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४४. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०–४४ अक्षर।

टीकाकार का मंगलाचरण—

नत्वाहं परमात्मानं सर्वातिशयसंयुतं।
मेघदूतस्य काव्यस्य कुर्वे टीकां सुबोधिकां॥ १॥

अन्तिम समाप्ति—

इति श्री कालिदासकृतं मेघदूतकाव्यं तस्य सुखबोधिका नाम्नी टीका वृत्तिः समाप्ता।

संवद्वह्निवसुमुनींदुवत्सरे वैशाखबहुलनवम्यां तिथौ कविवासरे श्रीपार्श्वचंद्रसूरिगच्छे महोपाध्याय श्री १०८ श्री हीरानंद चंद्रास्तेषां शिष्यामहोपाध्यायाः श्रीरामचंद्रास्तच्छिष्य श्रीअचलराजजी तच्छिष्य श्रीलालचंद्रजी तच्छिष्य मुनिरत्नचंद्रेणेयं लिखिता॥

३९. यशोधर चरित्र।

रचयिता श्री ज्ञानकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६८. साइज १२×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३–३७ अक्षर। प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है।

मंगलाचरण—

श्रीमन्नाभिसुतो जीयाज्जिनो विजितदुर्नयः।
मंगलार्थं नतो वस्तु सर्वदा मंगलप्रदः॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

चंपादिपुर्याः सविधे सुदेशे बंगाभिधा सुन्दरतां दधाने।
ख्य ते पुरेऽकब्बरनामके च चैत्यालये श्री पुरुतीर्थ यस्य।
श्री मूलसंघे च सरस्वतीति गच्छे बलात्कारगणे प्रसिद्धे।
श्री कुन्दकुन्दान्वयके यतीशः श्री वादिभूपो जयतीह लोके॥ २॥
तद्गुरुबंधुर्भुवनसमर्च्यः पंकयकीर्त्ति परम्रविवत्रः।
सूरिपदाप्तो मदनविमुक्तः सद्गुणराशि र्जयतु चिरं सः॥ ३॥
शिष्यस्तयोर्ज्ञानसुकीर्त्तिनामा श्री सूरिरध्यात्मसुशास्त्रवेत्ता।
चरित्रमेतद्रचितं च तेनाचंद्रार्ककालं रंजयताद्धरित्र्यां॥ ४॥
शते षोडशएकोन षष्टिवत्सरके शुभे।
माघे शुक्लेऽपि पंचम्यां रचितं भृगुवासरे॥ ५॥
राजाधिराजोऽत्र तदा विभाति श्री मानसिंहोजित वैरिवर्गः।

अनेकराजेन्द्रविनम्यपादः स्वदानसंतर्पितविश्वलोकः ॥ ६ ॥
प्रतापसूर्यस्तपतीह यस्य द्विषां शिरस्सु प्रविधायपादं ।
अन्याय दुर्ध्वांत मपास्यदूरं पद्माकरं यः प्रविकाशयेच्च ॥ ७ ॥
तस्यैव राज्ञोऽस्ति महानमात्यो नानू सुनामा विदितो धरित्र्यां ।
समेदशृंगे च जिनेन्द्रगेहमष्टापदेवादिमचक्रधारी ॥ ८ ॥
योकारयद्यत्र च तीर्थनाथाः सिद्धिंगता विंशतिमानयुताः ।
यः कारयेन्नित्यमनेक संघ्यायात्रांधनाद्यैः परमां च तस्या ॥ ९ ॥
तत्प्राथना च संप्राप्य जयव्रतंवुधस्य च ।
आग्रहाद्रचितं चैतच्चरित्रं जयतां चिरं ॥ १० ॥
श्री व रदेचोस्तु शिवायते हि श्री पद्मकीर्त्तिष्ट विधायको यः ।
श्री ज्ञानकीर्त्ति प्रविवंद्य पादो नानू स्वधर्मेणयुतस्य नित्यं ॥ ११ ॥

इति श्री यशोधरमहाराज चरिते भट्टारक श्री वादिभूपण शिष्याचार्य श्री ज्ञानकीर्त्ति विरचिते राजाधिराज महाराजमानसिंह प्रधान साह श्री नानूनामांकिते भट्टारक श्री अभयरुच्यादि दीक्षाग्रहण स्वर्गादिप्राप्तिवर्णनो नाम नवमः सर्गः ॥

संवत् १६६१ श्रावणमासे कृष्णमासे द्वितीयातिथौ कुजवासरे वंगदेशे अक्कबरनगरे राजाधिराज श्री मानसिंह राज्यप्रवर्त्तमाने श्री पार्श्वनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचंद्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गोधा गोत्रे साह श्री याचकजनसंदोह कल्पवृक्ष श्रावकाचारचरणनिरतचित्तः साह श्री चाचा तस्य भार्या चौसरदे तयोः पुत्रस्त्रयः प्रथमपुत्र साह नेमा तस्य भार्या निमलदे तस्य पुत्र साह वल्लू तस्य भार्या वालहदे द्वितीय पुत्र साह खेमा तस्य भार्या खेमलदे तस्य पुत्र चि० कल्लू तस्य भार्या कौतूकदे तस्य पुत्र चि० दुर्गा तस्य भार्या दुर्गादे तृतीय पुत्र साह श्री पंचाईण तस्य भार्या द्वे प्रथमभार्या पाटमदे द्वितीय भार्या भावलदे । प्रथम भार्या स्वपतिच्छिदानुगामिनी शीलालंकृतगात्राः साध्वी पाटमदे तयो पुत्र प्रथम दानगुणश्रेयांस सकलजन नंदकारकस्ववचनप्रतिपालन समर्थसर्वोपकारक साह श्री नाथू तद्भार्या नारंगदे तयो पुत्र चत्वार प्रथम पुत्र चि० डूंगरसी तस्य भार्या कोडमदे द्वि० पुत्र चि० मोहनदास तृतीय पुत्र चि० नारायणदास चतुर्थ पुत्र चि० ऋषभदास । साह श्री पंचाईण तस्य भार्या द्वितीय भावलदे तयो पुत्राश्चत्वारः देवशास्त्रगुरुभक्ततत्परान् नयविनयविवेकविचारचातुरीचमत्कृतनरनिकरान् श्री जिनपूजापुरंदरान् राजासभाशृंगारहारान् प्रथमपुत्रसाप श्री हरषा तद्भार्ये द्वे प्रथमभार्या हरषमदे तस्य पुत्र चि० प्रयागदास तद्भार्या दाडिमदे साह श्री हरषा तस्य द्वितीय भार्या प्रतापदे साह श्री पंचाइण तस्य तृतीय पुत्र साह श्री हीरा तस्य भार्या हमीरदे । साह

श्री पंचाइण तस्य चतुर्थपुत्र मानू तस्य भार्या महिमादे। तस्य पंचम पुत्र चि० केसोदास तस्य भार्या कस्मीरदे एतेषां मध्ये स्वकुलाकाशप्रकाशनचंद्र सज्जनजनचकोरचक्षु चंद्रमंडल श्रीभगवन् मुखोद्गत प्रवचन श्रद्धामृत पानसंछर्दितानादिकालानमिथ्यात्वमहागरल साह श्री नाथू तेनेदं यशोधरचरित्रं लिखाप्य भट्टारक श्री चंद्रकीर्त्ति तस्य शिष्य आचार्य श्री शुभचंद्राय दत्तं कर्मक्षयनिमित्तं।

४०. यशोधर चरित्र।

रचयिता कायस्थ श्री पद्मनाभ। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८६. साइज ६x४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर। लिपि संवत् १७६६. यशोधर चरित्र अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है।

मंगलाचरण—

परमानंद जननीं भवसागर तारिणीं।
सतां वितनुतां ज्ञानलक्ष्मीचन्द्रप्रभप्रभुः॥ १॥

अन्तिम पाठ—

उपदेशेन ग्रन्थोऽयं गुणकीर्त्तिमहामुनेः।
कायस्थ पद्मनाभेन रचितः पूर्व सूत्रतः।
संतोष जैसवालेन संतुष्टेन प्रमोदिना।
अतिश्लाघितो ग्रंथो यमर्थं संग्रहकारिणा॥ २॥
साधोर्विजयसिंहस्य जैसवालान्वयस्य च।
सुतेन पृथ्वीराजेन ग्रन्थोऽयमनुमोदितः॥ ३॥

इति श्री यशोधरचरित्रे दयासुंदराभिधाने महाकाव्ये साधु श्री कुशराजकारापिते कायस्थ श्री पद्मनाभविरचिते अभयरुचिप्रभृति सर्वेषां स्वर्गगमनो नाम नवमः सर्गः॥

प्रशस्ति—

जातः श्री वीरसिंहः सकलरिपुकुलव्रातनिर्घातपातो,
वंशे श्री तोमराणां निजविमलयशो व्याप्तदिक्चक्रवालः।
दानैर्मानैर्विवेकै न भवति समता येन साकं नृपाणां।
केषामेषा कवीणां प्रभवति धिषणां वर्णने तद्गुणानां॥ १॥
ईश्वरचूडारत्नं विनिहत करघातवृत्तसंघातः।
चंद्र इव दुग्ध सिंधोस्तस्माद्धुद्धरणभूपशुचीयते तिमिरं॥ २॥
यस्य हि नृपते र्यशसा सहसाशुभ्रीकृत त्रिभुवनेऽस्मिन्।

कैलाशे ति गिरि निकरः क्षीरति नीरं शुचीयते ति नरं ॥ ३ ॥
तत्पुत्रो वीरसिंहः सकलवसुमती पाल चूडामणिर्यः ।
... प्रख्यातः सर्वलोके सकलबुधजनानंदकारी विशेषात् ॥
तस्मिन् भूपाल रत्ने निखिलनिधिगृहे गोपदुर्गे प्रसिद्धे,
भुंजानेः प्राज्यराज्यं विगतरिपुभयं सुप्रजः सेव्यमानः ॥ ४ ॥
वंशेऽभूज्जैसवाले विमलगुणनिधिः भूलणः साधुरत्नं,
साधु श्री जैनपालो भवदुदितयशास्तत्सुतो दानशीलो ।
जैनेंद्राराधनेषु प्रमुदितहृदयः सेवकः सद्गुरूणां,
लोणाख्या सत्यशीला जनिविमलमतिर्जैनपालस्य भार्या ॥ ५ ॥
जाता षट् तनया स्तयोः सुकृतिनो श्री हंसराजोऽभव-
त्तेषामाद्यतमस्तदनुजः सैराजनामाजनि ।
रैराजो भव राजकः समजनि प्रख्यातकीर्त्तिर्महान्,
साधु श्री कुशराजकस्तदनुजो श्री क्षेमराजोनवु ॥ ६ ॥
ज्ञात श्री कुशराज एव सकल क्ष्मापाल चूडामणिः,
श्री मत्तोमरवीरमस्य विदितो विश्वासपात्रं महान् ।
मंत्री मंत्रविचक्षणः क्षणमयः क्षीणारिपक्षः क्षणात्,
क्षोण्यामीक्षणरक्षणाक्षणमति जैनेन्द्रपूजारतः ॥ ७ ॥
स्वर्गस्पर्द्धि समृद्धि कोटि विमलश्चैत्यालयः कारितो,
लोकानां हृदयंगमो बहुधनैश्चन्द्रप्रभस्यप्रभोः ।
येनैतत्समकालमेव रुचिरं भव्यं च काव्यं तथा,
साधु श्री कुशराजकेन सुधिया कीर्तिश्चिरस्थापकं ॥ ८ ॥
तिस्रस्तस्यैव भार्या गुणचरितयुतास्तासु रल्होभिधाना,
पत्नी धन्या चरित्रा व्रतनियमयुता शीलशौचेनयुक्ता ।
दात्री देवार्चनाढ्या गृहकृतिकुशला तत्सुतः कामरूपो,
दाता कल्याणसिंह जिनगुरुचरणाराधनेतत्परोभूत् ॥ ९ ॥
लक्षणश्रीर्द्वितीयाभूत् सुशीला च पतिव्रता ।
कौशीरा च तृतीयेयमभूद्गुणवती सती ॥ १० ॥
शांतिर्हे स्तुभूयाच्चंद्रतु नृपते सुप्रजानां जनानां ।
वक्तृणां वाचकानां प्रतिदिनमावकं कृ कारापितानां ।

श्रोतृणां लेखकानां बहुविमलधियां द्रव्यलिख्यापकानां।
तद्वत्श्रद्धापराणां विविधबहुमतैः भावकानां तथैव ॥ ११ ॥
कायस्थपद्मनाभेन बुधपादाब्जरेणुना।
कृतिरेषा विजयतां स्थेय दाचंद्रतारकं ॥ १२ ॥

४१. यशोधर चरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७४. साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर। ग्रन्थ पूर्ण है। लेकिन दीमक लग जाने से फट गया है। उक्त चरित्र प्रकाशित नहीं हुआ है।

प्रशस्ति—

संवत् १६३० वर्षे आषाढ सुदी २ सोमवासरे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री कुन्दकुन्दाचार्यः। तदन्वये भट्टारक श्री जिनचन्द्रः। तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचंद्रः। तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रः। तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्ति। तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री चन्द्रकीर्त्तिः। तदाम्नाये खंडेलवाल पाटणी गोत्रे संगही दूलहा भार्या दूलहदे। तयो पुत्र सं० हीरा द्वितीय पुत्र सं० ठकुरसी तत् भार्या लखणा। तयो पुत्र सं० ईसर भार्या ईसरदे तयोः पुत्र सं० रूपसी देवसी सं० सेवा भार्या साहिबदे तयोः पुत्र मानसिंह सं० गुणदत्त भार्या गौवादे तयोः पुत्र सं० गेगा स० प्रमत् सं० रेखा सं० ठकुरसी भार्या लखणा शास्त्र यशोधर चरित्र ब्रह्मरायमल्ल जोग्य दद्यात्।

४२. योगचिंतामणि।

रचयिता श्री हर्षकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६०. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४८-५४ अक्षर। विषय-वैद्यक। ग्रन्थ का दूसरा नाम वैद्यक सार संग्रह भी है।

मंगलाचरण—

यत्र वित्रासमयांति तेजांसि च तमांसि च।
महीयस्तदहं वंदे चिदानंदमयं महं ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

न रोगाणां क्रमः कोऽपि निदाननिरूपणं।
केवलं बालबोधाय योगाः केऽपि निरूपिताः ॥
स्तरीश्वरप्रवरसन्नशिरावतंस,
श्री चन्द्रकीर्त्तिगुरुपादयुगप्रसादात्।
गंभीरचारुतरवैद्यकशास्त्रसारं,
श्री हर्षकीर्त्तिवरपाठक उद्धारः ॥ २ ॥

विचार्य्यपूर्व्वशास्त्राणि हर्षकीर्त्याद्रिसूरिभिः।
किं विदुः क्रिया तस्मै तद्रहस्यं विद्यकार्णवात् ॥ ३ ॥

× × × × ×

यथा जननामिह वांछितार्थान् चिंतामणि पूरयंतु समर्थः।
तथैव सम्पजभूरियोगान् श्री योगचिंतामणि रापिपर्त्ति ॥ ४ ॥

श्रीमन्नागपुरीय तपोगच्छीय श्री हर्षकीर्त्तिसूरि संकलित श्री योगचिंतामणौ वैद्यकसारसंग्रहे सप्तमको मिश्रकाध्यायः।

४३. राजवार्त्तिक।

रचयिता श्री भट्टाकलंकदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५५४. साइज १२×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४३ अक्षर। प्रति सुन्दर है।

संवत् १५८२ वर्षे आषाढवुदि १३ श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचंद्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये बाकलीवालगोत्रे चंपावतीवास्तव्ये रावश्रीरामचन्द्रराज्ये संघभारधुरंधर संघपति सं० तीको तद्भार्या पूनी तयोः पुत्रौ सा० चाया द्वितीय ताल्हू। सा० चाया भार्या गूजरि तत्पुत्र रामा द्वितीय होला। सं० ताल्हू भार्या नौलादे तयोः पुत्र सद्गुरुपदेशनिर्वाहकौ चतुर्विधदानवितरणकल्पवृक्षौ जिनपूजापुरंदरौ सं० लाल्हू द्वितीय सं० वाल्हू भार्या ललतादे। सं० वाल्हू भार्या बहूसिरि एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं कर्मक्षयार्थं लिखाप्य भक्त्या ब्रह्मलालाय दत्तं।

४४. वरांगचरित्र।

रचयिता परवादिदंतिपंचानन भट्टारक श्री वर्द्धमानदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७२. साइज ११×५ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १३८३. लिपि संवत १५६५.

मंगलाचरण—

जिनस्य सज्ञानमयैकदर्पणे जगत्समस्तं प्रतिबिंबतां गतं।
स यस्य संसारविमोहितात्मनं पुनातु चेतांसि सतां निरंतरं ॥ १ ॥

अन्तिम पद्य तथा प्रशस्ति—

स्वस्ति श्री मूलसंघे भुविविदितगणे श्री वलात्कारसञ्ज्ञे,
श्रीभारत्यादिगच्छे सकलगुणनिधिर्वर्द्धमानाभिधानः।
आसीद्भट्टारकोऽसौ सुचरितमकरोच्छीवरांगस्यराज्ञो,
भव्यश्रेयांसि तन्वद्भुवि चरितमिदं वर्त्ततामाकेतारं ॥ १ ॥

प्रमाणमस्य काव्यस्य श्लोका ज्ञेया विशारदैः ।
अनुष्टुप् संख्यया सर्व्वे गुणो भार्गीदुसम्मिताः ॥ २ ॥

संवत १५६५ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे षष्ठी दिवसे शनैश्चरवारे उत्तरानक्षत्रे रावश्री मालदे राज्यप्रवर्त्तमाने रावत श्री खेतसीप्रतापे सांखौणनामनगरे श्री शांतिनाथजिनचैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे सा० चोखा तद्भार्या वीरणि तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम सा चेला द्वितीया सा० खेमा । सा० चेला भार्ये द्वे प्रथम हरखू द्वितीय नाल्ही तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा श्रीपाल द्वितीय सा० पोल्हण तृतीय सा० भांकू । सा० श्रीपाल भार्या सूवट तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम सा जिनदास द्वितीय सा० रूपभदास । सा० पोल्हण तद्भार्या होली । सा० भांकू भार्या टोमा तयोः पुत्र चिरंजी नानिग । सा० खेमा भार्या रोहिणी तयोः पुत्र सा० डालू तद्भार्या डलूसिरि एतेषां मध्ये जिनपूजापुरंदर चतुर्विध दानवितरण कल्पवृक्ष सद्गुरुपदेशनिर्वाहक सा० श्रीपालेन इदं शास्त्रं लिखाप्य उत्तमपात्राय दत्तं ।

प्रति नं० २, पत्र संख्या ६०, साइज १२×५ इञ्च । प्रति प्राचीन है । लिपि संवत् १६६०.

प्रशस्ति—

संवत् १६६० वर्षे ज्येष्ठ सुदी १४ तिथौ भृगुवासरे श्री राजमहलनगरे महाराजाधिराजराजा श्री मानसिंहजी राज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये कासलीवालगोत्रे याचकजनसंदोहकल्पवृक्ष श्रावकाचारचरणनिरतचित्तसाह सोढा तद्भार्या सीलतोयतरंगिणी विनयवागेश्वरी सोहिलादे तयो पुत्राश्चत्वार । प्रथम पुत्र धर्म्मधुराधरणधीर साह श्री छाजू तद्भार्या दानशीलगुणभूषणा भूषितगात्रा नाम्ना छायलदे तयो पुत्रौ द्वौ । राजसभाश्रृंगारहार स्वप्रतापादिनकर मुकुलिकृत शत्रुमुख कुमुदाकर स्वजननिशाकर आल्हादित कुवलयदानगुण अल्पीकृतकल्पपादपश्री पंचपरमेष्ठिचिंतनपवित्रितचित्तसकलगुणीजनविश्रामस्थान प्रथम साह जेहा तद्भार्या जेहलदे तयोः पुत्राश्चत्वारः । प्रथम पुत्र देवा तद्भार्या देवलदे द्वितीय पुत्र साह ईसर तृतीया पुत्र कुंता चतुर्थ पुत्र भगवान । द्वितीय पुत्र करमसी तद्भार्या करणादे तयोः पुत्र साह नेमा तद्भार्या नेमलदे तयोः पुत्रास्त्रयः । प्रथमपुत्र दानगुणश्रेयांस सकलजनानंद कारक स्ववचन प्रतिपालनसमर्थ सर्व्वोपकारक साह हरषा तद्भार्या स्वपतिछंदानुगामिनी शीलालंकृतगात्राः साध्वी हरषदे द्वितीय पुत्र साह वेणा तद्भार्या बहुरंगदे तृतीय पुत्र फलहू । पुत्र साह खेम तद्भार्या खेमलदे तयोः पुत्राः द्वे प्रथमपुत्र साह जेसा द्वितीय हय तृतीय पुत्र साह धर्मा तद्भार्या धारादे तयोः पुत्र वीरु द्वितीय पुत्र राइमल तस्य भार्या रयणादे तृ० पुत्र दुर्गा तस्य भार्या दुर्गमदे चतुर्थ पुत्र साह टीला तस्य भार्या टीलमदे

तयो पुत्र साह जगलाम तस्य भार्या हमीरदे तयो पुत्र साह जगमाल तस्य भार्या जौणादे द्वितीय पुत्र साह मल्लू तृतीय पुत्र कल्याण तस्य भार्या कल्याणदे एतेषां मध्ये साह हरषा तस्य भार्या हरषमदे लिख.प शास्त्रवरांगचरित्रं जेठलिणवरव्रत प्रद्योतनार्थं भार्या श्री शुभचंद्राय दत्तं।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ७३. साइज १३×५ इञ्च। लिपि संवत् १८७३.

संवत् १८७३ वर्षे आश्विन कृष्णपक्षे ५ बुधवासरे श्रीमत् ग्वालेरमुल्कलसकर महाराजि दौलतरावसिंध्या राज्यप्रवर्त्तमाने श्री आदिनाथचैत्यालये धर्मोक्तसन्मानसचतुसंघ युते वाद्यगीत मंगल प्रवर्द्धित नित्योत्सवे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये श्री नावती सुपट्टे सकलभट्टारक शिरोमणि भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति जिष्णुना पट्टोदयाद्रि सहस्त्ररश्मिसन्निभ भट्टारक श्री श्री जैनेन्द्रकीर्त्तिनिर्मलविमलानां पट्टलंकारलक्षापमान भट्टारक श्रीसुरेन्द्रकीर्त्ति तदाम्नाये खंडेलवालान्वये दोंग्या गोत्रे धर्मशिरोमणि साहजी श्री जिणदासजी तस्य पत्नीकुक्षौ पुत्रास्त्रयः ज्येष्ठ पुत्र रतनचंदजी मध्यपुत्रः फतेचंदजी तस्य पुत्रौ द्वौ ज्येष्ठ पुत्र रामलालजी लघु पुत्र केवलरामजी तस्य पितृव्य वंशाद्रौ सहस्त्ररश्मि सदृश धर्मभारधुरंधर सेठजी श्री मनीरामजी तस्य पत्नि कुक्षौ पुत्र लक्ष्मीचंद्र एतेषां मध्ये ज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थं वरांगचरित्र ग्रंथं घटापितं।

४५. वर्द्धमानपुराण।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८०. साइज ११×५। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४२-५६ अक्षर। प्रति नवीन तथा सुन्दर है। लिपि संवत् १८०४.

मंगलाचरण—

जिनेशे विश्वनाथाय अनंतगुणसिद्धये।
धर्मचक्रभृते मूर्द्धना श्री वीरस्वामिने नमः॥ १॥

अन्तिम पद्य—

जल्पितेन बहुना किमाश्रयेद्वीरनाथं इह यो मया स्तुतः।
स ददातु कृपया प्रमोदभुतान्, मुक्तये निजगुणान् स्वशर्मणे॥ १॥
त्रिसहस्त्राधिकापञ्चत्रिंशच्छ्लोकाः भवन्ति वै।
यत्नेन गुणिताः सर्वे चरित्रस्यास्य सन्मतेः॥ २॥

इति श्री भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिविरचिते श्री वर्द्धमानपुराणे श्रेणिकाभयकुमारभवावली भगवन्निर्वाणगमनैकोनविंशतिमोऽधिकारः।

संवत् १८०४ वर्षे माहमासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां तिथौ बृहस्पतिवासरे श्री सवाईजयपुरनगरे महाराजाधिराज राजा श्री प्रतापसिंहराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री

कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री जगत्कीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री क्षेमेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये गंगवाल-गोत्रे याचकजनसंदोहकल्पवृक्ष श्रावकाचारचरणनिरतचित्त साहजी श्री मूलकचंदजी तद्भार्या शीलतोय-तरंगिणी विनयवागेश्वरी मल्लूकदे तयोः पुत्र धर्मधुरंधर चतुर्विधदानेषु सदा वितरणसमर्थ साहजी श्री दौलतरामजी तद्भार्या दानशीलगुणभूषण भूषितगात्रा नाम्नां दौलतादे तयोः पुत्रास्त्रयः। प्रथम पुत्र साह सभाराम सभाशृंगारहार स्वप्रतापदिनकरमुकलितशत्रुमुख कुमुदाकर स्वजनिशाकर अह्लादितकुवलयदानगुण-अल्पीकृतकल्पपादप श्री पंचपरमेष्ठीचिंतन पवित्रितचित्त सकलगुनीजनविश्रामस्थान साह श्री हाथीराम तद्भार्या शीलदान गुणदेव विनयभक्तिपूजाभूषितवपुषा स्वपतिछंदानुगामिनी नाम छाजी द्वितीय पुत्र नाम साहिसाहिबराम तद्भार्या साहिबदे तयोः पुत्र नाम साह सहजराम तद्भार्या नाम्नै सहुतादे एतेषां मध्ये स्वकुलाकाशप्रकाशनचंद्रसज्जनजनचकोरचक्षु श्री सर्वज्ञवदनोद्गतस्वच्छसुधापान स वर्द्धितानादि-कालीन मिथ्यात्वमहागरल साह श्री हाथीराम तेनेदं पट्चत्वारिंशतगुणविराजमान श्री वर्द्धमानपुराणं लिखाप्य परवादीभकुंभस्थलविदारनैकमृगेंद्र स्वचनचातुरी निरस्कृतमिथ्यात्वादयः तस्य पंडितजी श्री चोखचंदजी तत् शिष्य पं० कृष्णदासाय दत्तं कर्मक्षयनिमित्तं ॥

प्रति नं० २. पत्र संख्या १२३. साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६६८. प्रति पूर्ण तथा सुंदर है।

संवत् १६६८ वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां रविवासरे श्रीमद्वागड महादेशे श्री सागपत्तने श्री मूलसंघे आचार्य श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्त्तिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषणदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री ज्ञानकीर्त्तिदेवा स्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री यशःकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री गुणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री सकलचन्द्रदेवोपदेशात् हुंबड जातीय वजीयाण गोत्रे पासहोत साह जोधा भार्या जोमादे सुत साह नाका भार्या बाई श्री तइनायके तया इदं शास्त्रं स्वज्ञानावरणीकर्मक्षयाय सत्पात्राय पं० श्री सकलचंद्राय तद्दोहिता बाई हीरा लिखाप्य दत्तं।

४६. श्रावकाचार सार।

रचयिता श्री पद्मनन्दि मुनि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४१. साइज १२×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४८-५२ अक्षर। रचना संवत् १५८० लिपि संवत् १५६४.

मंगलाचरण—

स्वसंवेदनसुव्यक्त महिमानमनश्वरं।
परमात्मानमाद्यंतं विमुक्तं चिन्मयं नमः॥ १॥

समाप्ति—

इति श्रावकाचारसारोद्धारे श्री पद्मनन्दिमुनि विरचिते द्वादशव्रतवर्णनं नाम तृतीयः परिच्छेदः।

प्रशस्ति—

यस्य तीर्थंकरस्येव महिमाभुवनातिगः ।
रत्नकीर्त्तिर्यतिस्तुत्यः स नेकषामशेषवित् ॥ १ ॥
अहंकारस्फारी भवदमितवेदांतविबुधो,
हसद्ध्वांतश्रेणी क्षपणनिपुणोतिद्युतिभरः ।
अधीती जैनेन्द्रे जनि रजनिनाथप्रतिनिधिः,
प्रभाचन्द्र सांद्रोदयशमिततापव्यतिकरः ॥ २ ॥
महाव्रतिपुरंदरः प्रशमदग्धरागांकुरः स्फुरत्परमपौरुषः स्थितिरशेषशास्त्रार्थवित् ।
यशोभरमनोहारी कृतसमस्तविश्वंभरः परोपकृतितत्परो जयति पद्मनंदीश्वरः ॥
श्रीमत्प्रभेंदु प्रभुपादसेवा हे वाकिचेताऽप्रसरत्प्रभावः ।
सच्छ्रावकाचारमुदारमेनं श्रीपद्मनन्दी रचयांचकार ॥
श्रीलंबकंचुककुले विततांतरिक्षे, कुर्वन्नरश्रांधवसरोजविकाशलक्ष्मीः ॥
लुंपन् विपक्षकुमुदव्रजभूरिकांतिं, गोकर्णहेलिरुदियापलसत्प्रभावः ॥ ४ ॥
भुवि सूपकारसारं पुण्यवता येन निर्म्ममे कर्म्म ।
भीम इव सोमदेवो गोकर्णात्सोभवत् पुत्रः ।
सती मतल्लिका तस्य यशःकुसुमवल्लिका पत्नी,
श्री सोमदेवस्य प्रेमाप्रेमपरायणा ॥ ५ ॥
विशुद्धयोः स्वभावेन ज्ञानलक्ष्मीजिनेंद्रयोः ।
नया इवा भवन् सप्तगंभीरास्तनयास्तयोः ॥ ६ ॥
वासाधरहरिराजौ प्रह्लादः शुद्धधीश्चमहाराजः ।
भवराजो रत्नाख्यः स तनयाख्यश्चेश्वमीसप्त ॥ ७ ॥
वासाधरस्याद्भुतभाग्यराशेमिशात्तयोर्वेश्मनि कल्पवृक्षः ।
अगण्यपुण्योदयतोऽवतीर्णो वितीर्णचेतोऽभिमतार्थसार्थः ॥ ८ ॥
वासाधरेण सुधिया गांभीर्याद्यदि तृणीकृतोनाब्धिः ।
कथमन्यथा स वडवाज्वलनसूत्रस्थितोज्वलति ॥ १० ॥
× × × × ×
द्वितीयोप्यद्वितीयो भूद्धैर्यौदार्यादिभिर्गुणैः ।
पुत्र श्री सोमदेवस्य हरिराजाभिधः सुधीः ॥ १० ॥
गुणैः सदास्मप्रतिपक्षभूतैः संगीकरोत्येष विवेकचक्षुः ।
इतीव शिष्यैः हरिराजसाधु र्दोषैरवालोकि न शीलसिंधुः ॥ ११ ॥

संप्राप्य रत्नतृतीयैकपात्रं रत्नं सुतं मंडनमुर्वरायाः।
श्री सोमदेवः स्वकुटुंबभारनिर्वाहचितार्राहतो बभूव ॥ १२ ॥
दृष्टं शिष्टजनैः सपत्नकमलैः कुत्रापिलीनं जवा–
दर्थिप्रोद्धतनीलकंठनिवहै नृंत्तं प्रमोदोद्‌गमान्।
तृष्णाधूलिकणोत्करैर्विगलितं स्थाने मुनींद्रः स्थितं,
वृष्टि दानमयीं वितन्वति तरां रत्नाकरांभोधरे ॥ १३ ॥
सांतो नाम्न्यां पत्न्यां जिनराजध्यानकृत्सहरिराजः।
पुत्रं मनः सुरवाख्यं धर्म्मादुत्पादयाम स ॥ १४ ॥
× × × × ×
संघभारधरोधीरः साधुर्वासाधरः सुधीः।
सिद्धये श्रावकाचारमचीकरदमुंमुदा ॥ १५ ॥
यावत्सागरमेखला वसुमती यावत्सुवर्णाचलः,
स्वर्णारी कुल संकु ······· गमित्तं ······ ।
वितास्क ············· दपितो लोकप्रकाशोद्यतौ,
तावन्नंदतु पुत्रपौत्रसहिता वासाधारः श्रावकः ॥

संवत् १५६४ वर्षे वैशाख वुदी ७ तिथौ सोमवासरे श्रीमेवातदेशे बहादुरपुर नगरे श्री हुमायूं पातिसाहि मुगलराज्य प्रवर्त्त माने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे ············।

४७ श्रीपालचरित्र।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११२. साइज ६×३ इञ्च। रचना संवत् १५८५. लिपि संवत १७१४. प्रति पूर्ण है लिखावट सुन्दर है।

मंगलाचरण—

नत्वा श्रीमज्जिनाधीशं सुराधीशार्चितक्रमं।
श्रीपालचरितं वक्ष्य सिद्धचक्रार्चनोत्तमं ॥ १ ॥

अन्तिमपद्य तथा प्रशस्ति—

गच्छे श्रीमति मूलसंघतिलके सारस्वतीये शुभे,
श्रीभट्टारकपद्मनन्दिमुनयो देवेन्द्रकीर्त्तिस्ततः।
विद्यानन्दिगुरुस्ततो गुणनिधिः पट्टे तदीये सुधीः,
श्री भट्टारकमल्लिभूषणगुरू सद्बोधसिंधुर्महान् ॥ १ ॥

तत् शिष्यो गुणरत्नराजितमतिः श्रीसिंहनन्दीगुरुः,
सद्रत्नत्रयमंडितोतिनितरां भव्यौघनिस्तारकः।
तेषां पादपयो न मुग्धमधुपः श्री नेमिदत्तायते,
चक्रे चारुचरित्रमेतदुचितं श्रीपालजं संक्रियात् ॥ २ ॥
अग्रोत्तोत्तमवंशमंडनमणिः स ब्रह्मचारीशुभः
श्री भट्टारकमल्लिभूषणगुरोः पादाब्जसेवारतः।
जीय दत्र महेंद्रदत्त सुयती, संज्ञानवान्निर्मलः
सूरि श्री श्रुतसागरादियतिनं सेवा परः सन्मतिः ॥ ३ ॥

ख्याते मालवदेशाख्ये पूर्णाशानगरे वरे
श्री मदादिजिनागारे सिद्धं शास्त्रमिदंशुभं ॥ ४ ॥
संवत् सार्द्ध सहस्त्रे च पंचाशीति समुत्तरे।
आषाढशुक्ला पंचम्यां संपूर्णं रविवासरे ॥ ५ ॥

इति श्री सिद्धचक्रपूजातिशयं प्राप्ते श्रीपालमहाराजचरिते भट्टारक श्री मल्लिभूषणशिष्याचार्य श्री सिंहनन्दि ब्रह्म श्री शांतिदासानुमोदिते ब्रह्म नेमिदत्तविरचिते श्रीपालमहामुनींद्र निर्वाणगमनोनाम नवमोधिकारः समाप्तः।

श्रीअग्रोतान्वये यो गोत्रेगोयलमंडितः।
स श्री रामादास ख्यो तत्तनूजो गुणाग्रणी ॥ १ ॥
सुरापगादितीर्थेषु स्नानेषु यः सदारतः।
सः श्रीमान् क्षेमदासोभूत क्षमादिगुणसागरः ॥ २ ॥
हरेरर्चा गुरोभक्तिः दानतत्परमानसः।
नृणानां हृदयिव्याप्ती सौधीयंया सुखावह ॥ ३ ॥
महागुणवतीरम्या सुचरित्रापतिव्रता।
क्षेमश्री नाम तस्यांसीद्भार्या लावन्यसुन्दरी ॥ ४ ॥
तयोः पुत्राः समुत्पन्ना त्रयः रत्नत्रयोपमा।
निजवृत्तेषु ये लीनाः भूपैः सन्मानिताः सदा ॥ ५ ॥
ज्येष्ठोति च गुणश्रेष्ठो धर्मज्ञो धर्मवत्सलः।
निजाचारेषु यो लीनो सः श्रीकेशवनामभाक् ॥ ६ ॥
मृद्वांगी कोमल पीमानसे कल्याणान्विता।

दानेन कल्पवाल्ली घातद्रामाराजमत्यपि ॥ ७ ॥
तयोः पुत्रव्यसुदेवः गुणज्ञो गुणसागरः ।
तद्भार्या गुणग्रामा नाम्ना परिमलदेसती ॥ ८ ॥
शील वर्तिः तपः स्नेहद्वौकुलेद्योतिदीपिका ।
विल्लुदासः द्वितीयः स्यात् ·········भक्तितत्परः ॥ ९ ॥
तत् भामात् रमास्याख्यः शीला दिगुणमंडिताः ।
तयोः पुत्रों वभूवासौ श्रीमच हूरनामभाक् ॥ १० ॥
कुलांगणी महागीणैः पयः पाणैश्च वर्द्धितं ।
तृतीयस्तु महाविज्ञो गुणज्ञो गुणभूषणः ॥ ११ ॥
श्रीमनमोहनदासाख्यो विनयाद्रिगुणलंकृतः ।
तद्भामा गुणाधामश्च सुंदरी शुभलक्षणः ॥ १२ ॥
तयो सूनुः वभूवासौ देवीदास गुणाधिक: ।
तद् भार्या च भवेत्साध्वी नाम्ना भोगमती मता ॥ १३ ॥
तयोः पुत्रौ समुत्पन्नौ बाललीलाविराजितौ ॥
प्रथमः सुत आंनदी द्वितीयः हेमराज भाक् ।
शुभपुण्यफलंपुत्राः पुण्यात् किं किं न जायते ॥
चक्रे महोत्सवं रम्यं जगज्जनमनः प्रियं ।
सत्यं सत्पुत्रसंप्राप्तौ किन्न कुर्वन्ति साधवः ॥

एतेषां मध्ये शीलतोयतरंगिनी दानगुणचेलना कल्पवल्ली अनूरमती इदं पुस्तकं श्रीपालनाम चरितं संपूर्णं ॥ संवत १७१४ वर्षे श्रावणमासे शुक्ल पक्षे पार्वणी द्वितियादि वसे भृगुवासरे श्रीमत्काष्ठासंघे माथुर गच्छे आचार्य श्री श्री श्री १०८ क्षेमसेनजी तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेंद्रकीर्तिजी आचार्य श्री १०८ यशकीर्ति जी ब्रह्म पं श्री पद्मसागरजी ब्र. श्री दयासागरजी ब्र. कल्याणसागरमिदं पुस्तकं लिखितं ।

४८. श्रेणिकचरित्र ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०८, साइज ६॥×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर । लिपि संवत् १७६६,

मंगलाचरण—

श्री वर्द्धमानमानंदं नौमि नाना गुणाकरं ।
विशुद्धध्यानदीप्त विहुतकर्मसमुच्चयं ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

जयतु जित विपक्षो मूलसंघः सुपक्षो
हरतु तिमिर भारंभारती गच्छ वारः
नयतु सुगतिमार्गं शासनं शुद्धवर्गं
जयतु च शुभचन्द्रः कुन्दकुन्दोमुनींद्रः ॥ १ ॥

पुराणकाव्यार्थ विदांवरत्वं विकासयन् मुक्तिविदांवरत्वं ।
विभातु वीरः सकलाद्यकीर्त्तिः कृताय केनोतो सकलाद्यकीर्त्तिः ॥ २ ॥
भुवन कीर्त्तियति जयताद्यमी, भुवनपूरित कीर्त्तिचयः सदा ।
भवनविंव जिनागमकारणो, भवन वांदुदवातभरः परः ॥ ३ ॥
तत्पट्टोदय पर्वते रविरभूद् भव्यांबुजं भासयन्,
सन्नेत्रासहरं तमो विघटयन्नानाकरैं र्भासुरः ।
भव्यांनंतगतश्च विग्रहमतः श्री ज्ञानभूषः सदा,
चित्रं चंद्रक संगतः शुभकरं श्री वर्द्धमानोदयः ॥ ४ ॥
जयति विजयकीर्त्तिः पुण्यमूर्त्तिः सुकीर्त्ति,-
जयतु च यतिराजो भूमिपैः स्पृष्टपादः ।
नयनलिनहिमांशु र्ज्ञानिभूषस्यपट्टे,
विविध पर विवादिक्ष्माधरे वज्रपातः ॥ ५ ॥
तत्च्छिष्येण शुभेंदुना शुभमनः श्री ज्ञान भावेन वै,
पूतं पुण्यपुराण मानुपभवं संसारविध्वंसकं ।
नो कीर्त्या व्यरचि प्रमोहवशतो जैनेमते केवलं,
नाहंकारवशात्कवित्वमदतः श्री पद्मनाभेहितं ॥ ६ ॥
इदं चरित्रं पठतः शिवं वै श्रोतुश्चपद्म श्वरवत्पवित्रं ।
भविष्णुसंसारसुखं नृ देवं संभुज्य सम्यक्त्वफलप्रदीपं ॥ ७ ॥
चंद्रार्कहेमगिरिसागरभूविमानं,
गंगानदीगगनसिद्धशिलाश्च लोके ।
तिष्ठन्ति यावदभितो वरमर्त्यसेवा,
तिष्ठंतु कोविद मनोबुंजमध्यभूताः ॥ ८ ॥

संवत् १७६६ वर्षे कार्त्तिक शुक्ल प्रतिपदा शशिवासरे लिपिकृतं त्रिदरावति नगरे पं० विहादारीसेन ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६६. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७३०.

संवत् १७३० माघ सुदी ४ बृहस्पति वासरे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवा स्तच्छिष्य मुनि जयकीर्त्ति स्तच्छिष्य माघनंदेन वर्णिना लिखितं।

४६. सम्यक्त्व कौमुदी।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत (गद्य) पत्र संख्या ८०. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १५८२.

मंगलाचरण—

श्रीवर्द्धमानमानम्य जिनदेवं जगत्प्रभुं।
वक्ष्येऽहं कौमुदी नृणां सम्यक्त्वगुणहेतवे ॥ १ ॥

समाप्ति—

इति कौमुदी कथा समाप्ता।

प्रशस्ति—

संवत् १५८२ वर्षे फाल्गुन सुदी १४ शुभदिने श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नंद्याम्नाये श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकजिनचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे भट्टारकप्रभाचंद्रदेवास्तदाम्नाये चपावतीनामनगरे महारावश्रीरामचन्द्रराज्ये खंडेलवालान्वये साहगोत्रे संघभारधुरंधर सा० काथिल भार्य्या कावलदे। तस्य पुत्र जिनपूजापुरंदर सा० गूजर भार्य्या प्रथम लाछि द्वतीया सरो। प्रथमपुत्रनिजकुलगगनद्योतनदिवाकरान् व्रतनीमरत्नत्रयरत्नाकरान् कल्लासली प्रसरतं-मूलखंडणान् देवगुरुशास्त्रभगतउज्जयत गरितीर्थाद्योपर्जितागण्यपुण्यान्, जिनचरणकमलप्रधूतप्रभरित-गद्योदकपवित्रतांगान् जिननाथकथितआगमध्यातमरमकरंदचंचरीकान् पंथिकसुजनजनकलापकल्पनापूरणकल्प-वृक्षान् सम्यक्त्वादिगुणरत्नमालाविभूषितवित्तकंठस्थलान् एतान् साह नेमा भार्य्या द्वौ प्रथमभार्य्या नारंगदे द्वितीय लाडी तस्य पुत्र चिरंजीवि सा० रत्नपाल संघभारधुरंधर सा० गूजर तस्य द्वितीय पुत्र सा० लाल्हू तस्य भार्य्या दमयंती तृतीय पुत्र सा० कमा तस्य भार्य्या करणादे तस्य पुत्र चारि प्रथम उदा सा० माधउ, सा० साधउ, चन्द्रसेन एतान् इदं शास्त्रं कौमुदीं लिखाप्य कर्मक्षयनिमित्तं ब्रह्मवूचाय दत्तं ॥

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५१. साइज १०×४ इञ्च। प्रति पूर्ण है लिखावट सुन्दर है।

संवत् १५६० वर्षे माहसुदी १३ सोमे श्री पचुरदुर्गे हाडान्वये रावश्री अपयराजदेव कंवरनरवद राज्य प्रवर्त्तमाने श्रीमत् अचलगच्छे पंडित मिश्र, पं० लाभमेर गणीनां श्रीकौमुदी ग्रंथं। श्री वोसवंशे साह-श्रीवंतं त्रिवृद्धयशस्वी गोइद तत्पुत्रकुलमध्ये श्रेष्ठयशस्वी राज्यमान्य साहश्रीवंतं साह सीहा। साह श्रीवंत-कील्हा तत्पुत्र चिरंजीवि साह पारस चिरंजीवि साह चंपा सकुटम्बेन इदं पुस्तकं कौमुदीग्रंथ लिखाप्य कर्मक्षयनिमित्तं दत्तं।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३२. साइज १३×४॥ इञ्च । प्रारम्भ के १२ पृष्ठ नहीं है। लिपि संवत् १६२५.

संवत् १६२५ वर्षे शाके १४६० प्रवर्त्तमाने दक्षिणायेन मार्गशीर्षशुक्लपक्षे अष्टम्यां दिवसे श्री कुंभमेरुदुर्गे श्री उदयसिंहराज्ये श्रीखरतरगच्छे श्री गुणलाभमहोपाध्यायैः स्वत्वाचार्थं लिखापितासौ वाच्यमाना चिरं नंदतात्।

५०. सम्यक्त्व कौमुदी ।

रचयिता श्री गुणाकर सूरि भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३५. साइज ११।।×४।। इञ्च । रचना संवत् १५०४. लिपि संवत् १६११.

मंगलाचरण—

तस्मै नित्यं चिदानंद स्वरूपायार्हते नमः ।
यदागमरसास्वद तत्त्वं विज्ञायते नरः॥ १ ॥
युगादौ जगदे येन श्रेयः श्रेयस्करानृणां ।
स भूयाद्भविनां भूत्यैनाभिजन्मा जिनेश्वरः ॥ २ ॥

अन्तिम—

पूर्वैर्पिभि र्या रचिता कथेयसमेऽपि काव्यें सुभापितेश्च ।
श्लोकै र्मया सा ग्रथिता प्रमोदाद्वोदाभ्रवाणेदुमितेत्रवर्षे ॥ १ ॥
इति चैत्रगच्छीयैः श्री गुणाकरसूरिभिः ।
चक्रे श्लोकै नवारम्या कथा सम्यक्त्वकौमुदी ॥ २ ॥
पुष्फदंतौ स्थिरौ यावद्यावच्च ध्रुव मंडलं ।
वाच्यमाना वुधै स्तावज्जीयात्सम्यक्त्व कौमुदी ॥ ३ ॥

इति सम्यक्त्व कौमुदी समाप्ता ।

संवत् १६११ वर्षे भादवा सुदी ४ दिने मेड़ता मध्ये उपाध्याय श्री कर्मतिलक तत् शिष्य वा० श्री ज्ञानतिलक लिखावतं सम्यक्त्व कौमुदी आत्मर्थे ।

५१. सारस्वत चन्द्रिका सटीक ।

टीकाकार श्री चन्द्रकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६६. साइज ६।।×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०–४२ अक्षर । लिपि संवत् १७४६.

मंगलाचर—

नमोस्तु सर्वकल्याणपद्मकाननभास्वते ।
जगन्नितमनाथाय पराय परमात्मने ।

प्रशस्ति—

तीर्थे वीरजिनेश्वरस्य विदिते श्रीकौटिकाख्ये गणे,
श्रीमच्चांद्रकुले वटोद्भववृहद्गच्छे गरीमान्विते।
श्रीमन्नागपुरीयकाह्वयत् या प्राम्नावर्दते धूना,
स्फूर्ज्जद्भूरि गुणान्विता गणधरश्रेणि सदा राजते ॥ १ ॥
वर्षे वेदमुनींद्रशंकर ११७४ मिते श्री देवसूरिप्रभुः,
जज्ञेऽभूत्तदनु प्रसिद्धमहिमा पद्मप्रभःसूरिराट्।
तत्पट्टे प्रथितप्रसन्न शशभृत्त सूरिसनादिनःसूरींद्रा—
स्तदनंतरं गुणसमुद्राह्वात्रभूवु बुधाः ॥ २ ॥
तत्पट्टे जयशेखराख्यसुगुरुः श्री वज्रसेनस्ततः,
तत्पट्टे गुरुहेमपूर्वतिलकः शुद्धः क्रियाद्योतकः।
तत्पट्टे प्रभूरत्नशेखरगुरुः सूरीश्वराणां वरः,
तत्पट्टांबुधिपूर्णचन्द्रसदृशः श्रीपूर्णचन्द्रप्रभुः ॥ ३ ॥
तत्पट्टे जनि हेमहंस सुगुरुः सर्व्वत्रजाग्रद्यशाः,
आचार्याः श्रीरत्नसागरवरास्तत्पट्टपद्मायमा।
श्रीमान् हेमसमुद्रसूरिरभवच्छ्री हेमरत्नस्ततः
तत्पट्टे प्रभूसोमरत्नगुरवः सूरीश्वराः सद्गुणाः ॥ ४ ॥
तत्पट्टोदय-शैलहेलिरमल श्री जैसवालान्वयेऽ—
लंकारः कलिकालदर्पदमनः श्री राजरत्नप्रभुः।
तत्पट्टे जितविश्ववादिनिवहागच्छाधिप : संप्रतिः,
सूरी श्री प्रभुचन्द्रकीर्ति गुरवो गांभीर्यधैर्याश्रयाः ॥ ५ ॥
तैरियं पद्मचन्द्राह्वोपाध्य याभ्यर्थनाकृता।
शुभा सुबोधिकानाम्नी श्रीसारस्वतदीपिका ॥ ६ ॥
श्रीचंद्रकीर्तिसूरींद्रपादांभोजमधुव्रतः।
हर्षकीर्तिसूरिरिमाम् दशांकेऽलिखत् ॥ ७ ॥
अज्ञानध्वांतविध्वंसविधानेदीपिकानिका।
दीपिकेयं विजयतां वाच्यमाना बुधैश्चिरं ॥ ८ ॥
स्वल्पस्य सिद्धस्य सुबोधकस्य सारस्वतव्याकरणस्य टीका।
सुबोधिकाख्यां रचयांचकार सूरीश्वर श्री प्रभु चन्द्रकीर्त्तिः ॥ ९ ॥

इति श्रीमन्नागपुरीयतपोगच्छाधिराज भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्तिसूरि विरचिता श्री सारस्वत व्याकरणस्य दीपिका संपूर्णाः ॥

५२. सिद्धान्तसार संग्रह ।

रचयिता आचार्य श्री नरेन्द्रसेन। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६३. साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत १८०३. लिपि स्थान जयपुर। प्रति जीर्ण शीर्ण हो चुकी है।

प्रारम्भ—

भूर्भुवः स्वस्त्रयीनाथं त्रिगुणात्मत्रयात्मकं।
त्रिभिः प्राप्तपरंधाम वंदे विध्वस्तकल्मषं ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

श्रीवीरसेनस्य गुणादिसेनो जातः सुशिष्यो गुणिनां विशेष्यः।
शिष्यस्तदीयोऽजनि चारुचित्तः सद्दृष्टिचित्तोऽत्र नरेंद्रसेनः॥ १ ॥
गुणसेनोदयसेनाऽजयसेना संबभूवुरतिवर्याः।
तेषां श्री गुणसेनः सूरिर्जातः कलाभूरिः॥ २ ॥
अतिदुःखमानिकटवर्त्तिनिकालयोगे,
नष्टे जिनेंद्र शिव वर्त्मनि यो बभूव।
आचार्य नाम विरतोऽत्र नरेंद्रसेन-
स्तेनेदमागमवचो विशदं निबद्धं ॥ ३ ॥

इति सिद्धांतसारसंग्रहे आचार्यश्रीनरेंद्रसेन विरचिते द्वादशमः परिच्छेदः समाप्तः।

५३. सिन्दूर प्रकरण ।

रचयिता श्री सोमप्रभसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११. साइज १२×५ इञ्च। पद्य संख्या ६६. लिपि संवत् १८८६.

प्रारम्भ—

सिंदूरप्रकरस्तपकरशिरः क्रोडे कषायाटवी,
दावार्चिर्निचयः प्रबोध दिवस प्रारंभसूर्योदयः।
मुक्तिस्त्रीकुचकुंभकुंकुमरसः श्रेयस्तरोपल्लवः,
प्रोल्लासः क्रमयोर्नखद्युतिभरः पार्श्वप्रभोः पातु वः॥

प्रशस्ति—

सोमप्रभाचार्यमभाःसियन्नपुंसां तमः पंकमपाकरोति।
तदप्यमुष्मिन् सुपदेशलेशे निशम्य माने निशमेतिनाशं ॥ १ ॥

अभयपदर्जितदेवाचार्यपट्टोदयाद्रिं,
धुमणिविजयसिंहाचार्यपादारविंदे।
मधुकरसमतां य सतां यस्तेन सोमप्रभेण,
व्यरचि मुनिपरक्ष सूक्तमुक्तावलीय॥ २॥

इति सोमप्रभसूरि विरचितं सिंदूरप्रकराख्यं सुभाषित शास्त्रं शतकं

संवत् १८८६ भादवा सुदी २ बृहस्पतिवासरे मालपुरानगरे भट्टारकजी श्री १०८ देवेंद्रकीर्त्तिजी तस्य शिष्य पं० मेहरचंद्र स्वहस्तेन लिखितं।

५४. सुदर्शनचरित्र।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७५. साइज ११x५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर। प्रति नवीन है।

मंगलाचरण—

नत्वा पंचगुरून् भक्त्या पंचमी गुरुनायकान्।
सुदर्शनमुनेश्चारु चरित्रं रचयाम्यहं॥ १॥
येषां स्मरमात्रेण सर्व्वे विघ्ना घना यथा।
वायुना प्रलयं यान्ति तान् स्तुवे परमेष्ठिनः॥ २॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्री शारदासार जिनेंद्रवक्त्रान् समुद्भवासार जनैक चक्षुः।
कृत्वा क्षमामंत्रं कवित्वलेशो मातेव बालस्य सुखं करोतु॥ १॥
श्री मूलसंघेवरभारतीये गच्छे बलात्कारगणेतिरम्ये।
श्री कुन्दकुंदाख्य मुनेंद्रवंशे जातः प्रभाचन्द्रमहामुनींद्रः॥ २॥
पट्टे तदीये मुनि पद्मनन्दी भट्टारको भव्य सरोजभानुः।
जातो जगत्रयहितो गुणरत्नसिंधुः, कुर्यात् सतां सारसुखं यतीशः॥ ३॥
तत्पट्टपद्माकर भास्करोऽत्र देवेंद्रकीर्त्तिमुनिचक्रवर्त्ति।
तत्पादपंकेज सुभक्तियुक्तो विद्यादिनंदी चरितं चकार॥ ४॥
तत्पट्टे जनि मल्लिभूषणगुरु चारित्रचूडामणिः,
संसाराम्बुधि तारणैकचतुरश्चिंतामणिः प्राणिनां।
सूरी श्री श्रुतसागरो गुणनिधिः श्रीसिंहनन्दीगुरुः,
सर्वे ते यतिसत्तमाः शुभतरा कुर्वन्तु वो मंगलं॥ ५॥

गुरूणामुपदेशेन सच्चरित्रमिदं शुभं ।
नेमिदत्तो व्रती भक्त्या भावयामास शर्मदं ॥ ६ ॥

इति श्री सुदर्शनचरित्रे पंचनमस्कारमहात्म्यप्रदर्शके ब्रह्म श्रीनेमिदत्तविरचिते सुदर्शनमहामुनि मोक्षलक्ष्मी संप्राप्ति व्यावर्णनो नाम द्वादशमोऽधिकारः ॥ इति सुदर्शन चरित्रं संपूर्ण ॥

५५. स्वामीकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा सटीक ।

मूलकर्त्ता स्वामी कार्त्तिकेय । टीकाकार आचार्य शुभचन्द्र । भाषा प्राकृत संस्कृत । टीका संवत् १६०१. लिपि सवत् १७२१. प्रारम्भ के ७३ पृष्ठ नहीं है । ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है ।

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघेऽजनि नंदिसंघः वरावलात्कारगणः प्रसिद्धः ।
श्री कुन्दकुन्दोवरसूरिवर्यः, विभातिभामूषणभूषितांगः ॥ १ ॥
तदन्वये श्रीमुनिपद्मनंदी, ततोऽभवच्छ्रीसकलादिकीर्त्तिः ।
तदन्वये श्री भुवनादिकीर्त्तिः श्रीज्ञानभूषोवरवित्तिभूषः ॥ २ ॥
तदन्वये श्री विजयादिकीर्त्तिः, तत्पट्टधारी शुभचंद्रदेवः ।
तेनेयमाकारि विशुद्धटीका श्रीमत्सुमत्यादि सुकीर्त्तिकीर्त्तेः ॥ ३ ॥
सूरिश्रीशुभचन्द्रेण वादिपर्वतवज्रिणा ।
त्रिविद्येनाऽनुप्रेक्षायावृत्ति विरचितावरा ॥ ४ ॥
श्रीमत विक्रमभूपतेः परमिते वर्षे शते षोडशे,
माघे मासिदशाग्रवह्निमहिते ख्याते दशम्यां तिथौ ।
श्रीमच्छ्रीमहीसारः सारनगरे चैत्यालये श्रीपुरोः,
श्रीमच्छ्रीशुभचन्द्र देवविहिता टीका सदा नन्दतु ॥ ५ ॥
वर्णी श्रीक्षीमचन्द्रेण विनेयेन कृतप्रार्थना ।
शुभचंद्र गुरोः स्वामिन कुरु टीकां मनोहरां ॥ ६ ॥
तेन श्रीशुभचन्द्रेण त्रैवेद्येन गणेशिना ।
कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाया वृत्तिविरचितावरा ॥ ७ ॥
तथा साधु सुमत्यादिना कृतप्रार्थना ।
सार्थीकृतीसार्थेन शुभचन्द्रेण सूरिणा ॥ ८ ॥
लक्ष्मीचन्द्रगुरुः स्वामीशिष्यस्तस्यसुधीयशा ।
वृत्तिर्विस्तरितातेन श्री शुभेंदुप्रसादतः ॥ ६ ॥

५६. सम्यक्त्व कौमुदी ।

रचयिता श्री खेता । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६६. साइज ९॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७६३.

प्रारम्भ—

श्री वर्द्धमानमानम्य त्रैलोक्यनभो मणिं ।
ब्रुवेऽहं कौमुदीं नृणां सम्यक्त्वस्थितिहेतवे ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

खेताराधिपतिप्रकाशविमलस्वांतप्रकाशात्मनां,
ब्रह्मज्ञानविदां महोपशमिनां दिग्वाससां योगिनां ।
चारित्रेण जिनोदिते नहि पुनर्विभ्राजितानां मुनि,
शिष्येणात्मविशुद्धये विरचिता पुण्या कथा कौमुदी ।
गणभृन्मुखशीतांशु प्रभवात्तत्त्वकौमुदी ।
भूयादुपासकानां हि कथा संबोधलब्धये ॥ २ ॥
वैदुष्यदृष्टये नैव कवित्वयशसे न च ।
श्लोकै र्व्यरचि किंत्वेषा धर्म्मार्थं कौमुदी परं ॥ ३ ॥

इति श्री कौमुदी कथायां पंडिता खेता विरचितायां अष्टमी कथा समाप्ता । इति कौमुदी ग्रन्थ संपूर्ण ।

संवत् १७६३ वर्षे कार्त्तिक मासे शुक्लपक्षे ८ शनौ दिने लिपिकृतं परमपूज्यजी श्री ५ उत्तम जी तच्छिष्यस्थविरजी श्री राघा जी तच्छिष्यस्थविरजी श्री सोहाजी तत् शिष्यस्थविरजी श्री चेतराम जी तत्पट्टधारी पूज्य श्री लच्छीरामजी तदंतेवासी शिष्य केसर ऋषिणा लिपी कृतं फल्कनगरे ।

५७. हनुमच्चरित्र ।

रचयिता श्री ब्रह्मजित । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२२. साइज ११॥×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-४० अक्षर । लिपि संवत् १६८०.

मंगलाचरण—

सद्बोधसिंधुचन्द्राय सुव्रताय जिनेशिने ।
सुव्रताय नमो नित्यं धर्म्मशर्म्मार्थसिद्धये ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

जैनेंद्रशासनसुधारसपानपुष्टो देवेन्द्रकीर्त्तियतिनायकनैष्ठिकात्मा ।
तत्च्छिष्यसंयमधरेण चरित्रमेतत्, सृष्टं समीरण सुतस्य महर्द्धिकस्य ॥ १ ॥
यः पठेच्चरितमेतदुत्तमं पाठयत्यपि परान् शिष्यान् ।
यः शृणोति खलु भावयेच्चयः सोश्नुते सुखमनुत्तरं दिवि ॥

विशदशीलस्वघुनीसिलातलैकराजहंसोत्सवायकीडनः प्रियः,
स्वमतसिंधुवद्धनप्रकृष्टयामिनी न पीनतेजसोद्धु त प्रभामितः ।
सुरेंद्रकीर्त्तिशिष्य विद्यादिनंद्यनंगमदनैकपंडितः कलाधर
स्तदीप देशनामवाप्यशुद्धबोधमाश्रितो जितेंद्रियस्य भक्तितः ॥
गोलशृंगारवंशे नभसि दिनमणि वीरसिंहोविपश्चित्,
भार्या पीथा प्रीतीता तनुरुहविदितो ब्रह्मदीक्षाश्रितोऽभूत ।
तेनोच्चैरेष ग्रंथ कृत इति सुतरां शैलराजस्य सूरेः,
श्री विद्यानंदिदेशात्सुकृतविधिवशात्सर्वसिद्धिप्रसिद्धयै ॥
इदं श्री शैलराजस्य चरितं दुरितापहं ।
रचितं भृगु कच्छे च श्री नेमिजिनमन्दिरं ॥
धर्म्मार्थी लभते भृषं धनुयुतो वृद्धिं च निःस्वाधनं,
पुत्रार्थी सुकुलोचितं च तनयं कामांश्च कामी लभेत् ।
मोक्षार्थी वरमोक्षम श्चलभते प्राक्तेन सांद्रेण किं,
ह्येतत् शैलमुनींद्रराजचरितं सर्वार्थसिद्धिप्रदं ॥
पठकः पाठकश्चैव वक्ता श्रोता च भावकः ।
चिरं नंद्यादयं ग्रंथस्तेन सार्द्धं युगावधिं ॥
प्रमाणमस्य ग्रंथस्य द्विसहस्रमितं बुधैः ।
श्लोकानामिह मंतव्यं हनूमच्चरिते शुभे ॥

इति श्री हनूच्चरिते ब्रह्मजितविरचिते द्वादशः सर्गः ॥
संवत् १६८० वर्षे मार्गसिर सुदी पंचमी दीतवार पुस्तक लिखापितं जैसी श्रीपति ।

५८. हरिवंशपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति के शिष्य ब्रह्मचारि श्री जिनदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २२३. साइज १२॥×५। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४६–५० अक्षर । प्रति लिपि संवत् १८०३. प्रति शुद्ध तथा सुन्दर है ।

मंगलाचरण—

सिद्धं संपूर्णभव्यार्थं सिद्धेः कारणमुत्तमं ।
प्रशस्तदर्शनज्ञानचारित्रप्रतिपादनं ॥ १ ॥
सुरेन्द्रमुकटाश्लिष्टपादपद्मांशुकेशरं ।
प्रणमामि महावीरं लोकत्रितयमंगलं ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्री वर्द्धमानेन जिनेश्वरेण त्रैलोक्य वंद्येन यदुक्तमादौ ।
ततः परं गौतमसंज्ञकेन गणेश्वरेण प्रथितं जनानां ॥ १ ॥
ततः क्रमाच्छ्री जिनसेनाम्नाचार्येण जैनागमकोविदेन ।
सत्काव्यकेलिसदने पृथिव्यां नीतं प्रसिद्धं चरितं हरेश्च ॥ २ ॥
श्री कुन्दकुन्दान्वय भूषणोऽथ बभूव विद्वान् किल पद्मनन्दी ।
मुनीश्वरो वादि गजेन्द्रसिंहः प्रतापवान् भूवलये प्रसिद्धः ॥ ३ ॥
तत्पट्टपंकेजविकासभास्वान् बभूव निर्ग्रंथवरः प्रतापी ।
महाकवित्वादि कलाप्रवीणः तपोनिधिः श्री सकलादिकीर्त्तिः ॥ ४ ॥
पट्टे तदीये गुणवान् मनीषी क्षमानिधानो भुवनादिकीर्त्तिः ।
जीयाच्चिरं भव्यसमूहवंद्यो नाना यतिव्रातनिषेवणीयः ॥ ५ ॥
जगति भुवनकीर्त्तिर्भूतले ख्यातकीर्त्तिः,
श्रुतजलनिधिवेत्तानंगमानप्रभेत्ता ।
विमलगुणनिवासच्छिन्नसंसारपाशः,
स जयति जिनराजः साधुराजी समाजः ॥ ६ ॥
सद्ब्रह्मचारी गुरुपूर्वकोऽस्य भ्राता गुणज्ञोऽस्ति विशुद्धचित्तः ।
जिनस्य दासो जिनदासनामा कामारिजेता विदितो धरित्र्यां ॥ ७ ॥
श्री नेमिनाथस्य चरित्रमेतद्,
अनेन नीत्वा रविषेणसूरेः ।
समुद्धृतं स्वान्यसुखप्रबोध—
हेतोश्चिरं नंदतु भूमिपीठे ॥ ८ ॥
श्रीमज्जिनेश्वरपदांबुजचंचरीक—
स्तच्छात्रसद्गुरुषु भक्तिविधानदक्षः ।
सार्थाभिधोऽसौ जिनदासनामा,
दयानिवासो भुवि राजतेऽत्र ॥ ९ ॥
न ख्याति पूजाद्यभिमानलोभाद्ग्रंथः कृतोऽयं प्रतिबोधहेतौ ।
निजान्ययोः किंतु हिताय चापि परोपकाराय जिनागमोक्तः ॥ १० ॥
जिनप्रसादादिदमेवयाचे,
दुःखक्षयं शाश्वतसौख्यहेतोः ।

कर्म्मक्षयं बोधिचरित्रलाभं,
शुभां गतिं चेह न चान्यदेवः ॥ ११ ॥
यद्किंचिदत्र स्वरसंधिजातं,
पदादिकिंचद्स्खलितं प्रमादात् ।
क्षमस्व तद्भारतितुच्छवुद्धे,
ममाशुनो मुह्यति कः श्रुताब्धौ ॥ १२ ॥
तथा च धीमद्भिरिदं विशोध्यं,
मुनीश्वरै निर्म्मलचित्तयुक्तैः ।
कृत्वानुकंपां मयि जैन शास्त्र-
विशारदैः सर्वकषायमुक्तैः ॥ १३ ॥
यावन्महीमेरु नगः पृथिव्यां शशी च सूर्यः परमाणवश्च ।
श्रीमज्जिनेंद्रस्य गिरश्च तावन्नंदंत्विदं नेमिचरित्र मार्यं ॥ १४ ॥
रक्षां संघस्य कुर्वंतु जिनशासनदेवताः ।
पालयंतोऽखिलं लोकं भव्यसज्जनवत्सलः ॥ १५ ॥

इति श्री हरिवंशे भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिशिष्य ब्रह्मचारि श्री जिनदास विरचिते श्री नेमिनाथ-निर्वाण वर्णनो नामैकोनचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ३६ ॥

संवत् १८२७ वर्षे मितो ज्येष्ठ वुदि ५ चंद्रवासरे सवाई जयपुरमध्ये चंद्रप्रभुचैत्यालये पंडितोत्तमपंडित श्री चोखचंदजी तत् शिष्य पंडितोत्तमपंडित श्री रायचंदजी तत् शिष्येण सेवक सवाई रामेण इदं त्रटितं ग्रंथ पूर्ण कृतं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३५५. साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर । प्रति में दो तरह की लिखावट है । प्रति सुन्दर तथा शुद्ध है ।

शुभ संवत् १६६१ वर्षे ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे चतुर्थी दिने राजमहलनगरे श्री पार्श्वनाथचैत्यालये महाराजाधिराज श्री मानसिंहजी राज्य प्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्ति तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गोधा गोत्रे याचकजनसंदोहकल्पवृक्ष श्रावकाचारचरणनिरतचित्त साह श्री धनराज तद्भार्या शीलतोयतरंगिणी विनयवागेश्वरी धनसिरि तयो पुत्रः त्रयः प्रथम पुत्र धर्म्मधुरा धरणधीर साह श्री रूपा तद्भार्या दानशीलगुणभूषणभूषितगात्रा नाम्ना गूजरि तयो- पुत्र राजसभाशृंगारहार स्वप्रतापदिनकर मुकुलिकृत शत्रुमुखकुमुदाकर स्वसनिसाकारआह्लादित कुवलय दान गुण .... ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २६७. साइज १२॥×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४४ अक्षर। प्रति प्राचीन है।

श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण स्वगुरुभगिनी बाइ गौतमश्रिया लेखयित्वा ब्र० नरसिंहस्य पठनार्थं इदं शास्त्रं दत्तं।

संवत् १५५५ वर्षे मार्गसिर वदि १३ रवौ मुनि श्री संघनंदिना ग्रंथोऽयं ब्रह्म गुणसागराय दत्तः।

संवत् १६४५ वर्षे कार्त्तिकमासे शुक्लपक्षे पंचमी तिथौ सोमवासरे श्रीमालपुरे राजाधिराज श्री भगवंतदास जुगराज्य श्री मानसिंह राज्य प्रवर्त्तमाने श्री आदिनाथ चत्यालये श्री मूलसंघे नंद्यम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभ-चन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री जिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धमचन्द्रदेवास्तत शिष्य मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिदेवा स्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री चन्द्रकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये कासलीवालगोत्रे सा० सोढा तद्भार्या कल्हो तत्पुत्रा चत्वार प्र० सा० छाजू द्वि० सा० करमसी तृतीय धर्मसी चतुर्थ सा० ठीला। प्रथम सा० छाजू भार्या नापु तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० जेणा भार्या जेणादे तत्पुत्र चत्वारः। प्रथम देवा द्वि० इसर तृतीय कुंता चतुर्थ भगवान। द्वितीय कर्मसी भार्या करमाइ तत्पुत्र चत्वार प्रथम सा० सांगा भार्या सिंगारदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम कला द्वि० माला। द्वि० सा० गंगा तद्भार्या गौरादे तृ० सा० नेमा तद्भार्या नायकदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० हरिषा तद्भार्या हरषमदे द्वि० सा० वेणा तद्भार्या बहुरंगदे। चतुथ सा० खेमा तद्भार्या खेमलदे तत्पुत्र चि० सावलदास। तृतीय सा० धर्मसी तद्भार्या नाल्हो तत्पुत्र सा० वीरु तद्भार्या विरादे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० राइमल द्वि० चि० डूंगर। चतुर्थ सा० टीला तद्भार्या दामु तत्पुत्र सा० हेमा तद्भार्या हेमलदे तत्पुत्र चि० जगमाल एतेषां मध्ये सा० हेमा आचार्य सिंहनन्द्ये घटापितं।

५६. हरिवंशपुराण।

रचयिता आचार्य जिनसेन। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४२०. साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर। ग्रन्थ पूर्ण है। रचना काल-शक संवत् ७०५. लिपि संवत् १६४०.

प्रारम्भिक पाठ—

सिद्धं ध्रौव्यव्ययोत्पादलक्षणं द्रव्यसाधनं।
जैनं द्रव्याद्यपेक्षातः साधनाद्यथ शासनं॥ १॥
शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभानवे।
नमः श्री वर्द्धमानाय वर्द्धमानांजनशिने॥ २॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

ततस्त्रिलोकः प्रतिवर्षमादरात् प्रसिद्धदीपालिकयात्र भारते ।
समुद्यतः पूजयितुं जिनेश्वरं जिनेन्द्रनिर्वाणविभूतिभक्तिभाक् ॥ १ ॥
त्रयः क्रमात्केवलिनो जिनात्परे द्विषष्टिवर्षान्तरभाविनोऽभवन् ।
ततः परे पंचसमस्तपूर्विणस्तपोधना वर्षशतान्तरे गताः ॥ २ ॥
त्र्यशीतिके वर्षशते तु रूप्ययुक् दशैव गीता दशपूर्विणः शते ।
द्वये च विंशेगभृतोपि पंच ते शते च साष्टदशके चतुर्मुनिः ॥ ३ ॥
गुरुः सुभद्रो जय भद्रनामा परो यशोबाहुरनंतरस्ततः ।
महार्हलोहार्य गुरुश्च ये दधुः प्रसिद्धमाचारमहांगमत्र ते ॥ ४ ॥
महातपो भृद्विनयंधरश्रुतामृषिश्रुतिं गुप्तपदादिकां दधत् ।
मुनीश्वरोऽन्यः शिवगुप्तसंज्ञको गुणैः स्वमर्हद्बलिरप्यधात्पदं ॥ ५ ॥
समंदराज्योऽपि च मित्रवीरविर्गुरू तथान्यौ बलदेवमित्रकौ ।
विवर्द्धमानाय त्रिरत्नसंयुतः श्रियान्वितः सिंहबलश्च वीरवित् ॥ ६ ॥
सपद्मसेनो गुणपद्मखंडभृत् गुणाग्रणीर्व्याघ्रपदादिहस्तकः ।
स नागहस्तीजितदंडनामभृत्स नंदिषेणः प्रभुदीपसेनकः ॥ ७ ॥
तपोधनः श्रीधरसेननामकः सुधर्मसेनोऽपि च सिंहसेनकः ।
सुनन्दिषेणेश्वरसेनकौ प्रभु सुनंदिषेणाभयसेन नामकौ ॥ ८ ॥
स सिद्धसेनोऽभयभीमसेनको गुरू परौ तौ जिनशांतिषेणकौ ।
अखंड षट्खंड मखंडितस्थितिः समस्तसिद्धांतमधत्त योऽर्थतः ॥ ९ ॥
दधार कर्म्मप्रकृतिं श्रुतिं च यो जिताक्षवृत्तिर्जयसेनसद्गुरुः ।
प्रसिद्धवैयाकरणप्रभाववानशेषराद्धांतसमुद्रपारगः ॥ १० ॥
तदीयशिष्यो मितसेनसद्गुरुः पवित्रपुन्नाटगणाग्रणी गणी ।
जिनेंद्र सच्छासनवत्सलात्मना तपोभृता वर्ष शताधिजविना ॥ ११ ॥
सुशास्त्रदानेन वदान्यता मुना वदान्यमुख्येन भुवि प्रकाशिता ।
यदग्रजो धर्म्मसहोदरः शमी समग्रधीर्धर्म्म इवात्तविग्रहः ॥ १२ ॥
तपोमयी कीर्ति मशेषदिक्षु यः क्षिपन्बभौ कीर्तितकीर्तिषेणमाः ।
तदग्रशिष्येण शिवाग्रसौख्यभागरिष्ट नेमीश्वर भक्तिभारिणा ॥ १३ ॥
स्वशक्तिभाजा जिनसेन सूरिणा धिया ल्पयोक्ता हरिवंशपद्धतिः ।
यदत्र किंचिद्रचितं प्रमादतः परस्परव्याहतिदोषदूषितं ॥ १४ ॥
तदप्रमादास्तु पुराणकोविदाः सृजंतु जंतुस्थिति शक्तिवेदिनः ।
प्रशस्तवंशो हरिवंशपर्व्वतः क्व मे मति क्वाल्पतराल्पशक्तिका ॥ १५ ॥

अनेन पुण्यप्रभवस्तु केवलं जिनेन्द्रवंशस्तवनेन वांछितः ।
न काव्यबंधव्यसनानुबंधतो न कीर्तिसंतानमहामनीषया ॥ १६ ॥
न काव्यगर्वेण नचान्यशीलया जिनस्य भक्त्यैव कृता कृतिर्मया ।
जिनाश्चतुर्विंशतिरत्रकीर्तिताः सुकीर्तयो द्वादश चक्रवर्त्तिनः ॥ १७ ॥
नवत्रिधासीरिहरिप्रतिद्विषस्त्रिषष्टिरित्थं पुरुषाः पुराणगाः ।
अवांतरेऽनेक शतानि पार्थिवा महीचराः व्योमचराश्च भूरिशः ॥ १८ ॥
क्षितौ चतुर्वर्गफलोपभोगिनः पुराण मुख्येऽत्रयशस्विनःस्तुताः ।
अगण्यपुण्यं हरिवंशकीर्त्तनं यदत्र गण्यं गुणसंचितं मया ॥ १९ ॥
फलादमुष्यात्तु मनुष्यलोकजा भवतु भव्या जिनशासनस्थिताः ।
जिनस्य नेमेश्चरितं चराचरं प्रसिद्धजीवादि पदार्थभासनं ॥ २० ॥
प्रवाच्यतां वाचकमुख्य सज्जनैः समागतैः श्रोत्रपुटैः प्रपीयतां ।
जिनेंद्रनामग्रहणं भवत्यलं महादिपीडा- पगमस्य कारणं ॥ २१ ॥
प्रवाच्यमानं दुरितस्य दारणं सतां समस्तं चरितं किमुच्यते ।
कुर्वन्तु व्याख्यानमनन्यचेतसः परोपकारार्थं स्वमुक्तिहेतवे ॥ २२ ॥
सुमंगलं मंगलकारिणामिदं- निमित्तमप्युत्तममर्थिनां सतां ।
महोपसर्गे शरणं सुशांतिकृत् सुशाकुनं शास्त्रमिदं जिनाश्रयं ॥ २३ ॥
प्रशासनाशासनदेवताश्चया जिनाश्चतुर्विंशतिमाश्रिताः सदा ।
हिताः सतामप्रतिचक्रयान्विताः प्रयाचिताः सन्निहिता भवंतुताः । २४ ॥
गृहितचक्राप्रतिचक्रदेवता तथोर्जयंतालयसिंहवाहिनी ।
शिवाय यस्मिन्निह सन्निधीयते क्व तत्र विघ्नाः प्रभवन्ति शासने ॥ २५ ॥
ग्रहोरगाभूतपिशाचराक्षसा हितप्रवृत्तौ जिनविघ्नकारिणः ।
जिनेशिनां शासनदेवतागणा प्रभाव शक्त्याथ समंश्रयंति ते ॥ २६ ॥
प्रकाममाकांक्षितं कामसिद्धयेः प्रसिद्ध धर्मार्थ विमोक्षलब्धयः ।
भवन्ति तेषां स्फुट मल्प यत्नतः पठंति भक्त्या हरिवंश मत्र ये ॥ २७ ॥
निवार्य मात्सर्यमवार्य वीर्ययोधियासुधैर्योज्झितया जिनादराः ।
अनार्यवर्या सहिता सपर्यया पुराणमार्याः प्रथयंतु विष्टपे ॥ २८ ॥
किमर्थना प्रार्थनयात्र यततः स्वभावतो विश्वभरक्षमाविदः ।
पयोधरोन्मुक्त मिवाभ्र भूधरा विधाय मूर्ध्नि प्रथयंति भूतले ॥ २९ ॥
सुवृष्टमुत्सृष्टं मुदातशब्दकै नवं पुराणं च पुराण वारिसन् ।
महाभ्रकूलं जनिता शरत्कुले श्रुतःसमुद्रान्त मिदं प्रतन्यते ॥ ३० ॥

जयन्ति देवासुर संघसेविताः प्रजातिशांतिप्रदशांतिशासनाः ।
विशुद्धकैवल्यविनिद्रदृष्टयः सुदृष्टतत्वा भुवनेजिनेश्वराः ॥ ३१ ॥
जयन्त्वजय्याजिनधर्मसंततिः प्रजास्विह क्षेममुभिक्षमस्ततः ।
सुखाय भूयात्प्रतिवर्षवर्षणैः सुजात सस्या वसुधा सुधारिणां ॥ ३२ ॥
शाके ष्वब्दशतेषुसप्तसुदिशं पंचोत्तरेषूत्तरां,
पातींद्रायुध नाम्नि कृष्णनृपजे श्री वल्लभेदक्षिणां ।
पूर्व्वां श्रीमदवंति भूभृतिनृपे वत्सादि राज्ये परां,
सूर्याणांमधि मंडलं जययुते वीरे वराहेवनि ॥ ३३ ॥
कल्याणैः परिवर्द्धमानविपुल श्री वर्द्धमाने पुरे,
श्री पार्श्वालयनन्नराजवशतौपर्याप्तशेषः पुरा ।
पश्चाद्दोस्तटिका प्रजाप्रजनित प्राज्यार्चना वचने,
शांतेः शांतिगृहे जिनेसुरचिते वंशोहरीणामयं ॥ ३४ ॥
व्युत्सृष्टापरसंघसंततिबृहत्पुन्नाटसंघान्वये,
प्राप्तं श्री जिनसेनसूरिकविना लाभाय वोधे पुनः ।
दृष्टोऽयं हरिवंशपुण्यचरितः श्री पर्वतो सर्व्वतो,
व्याप्ताशा मुखमंडलस्थिरतरस्थेयात् पृथिव्यां चिरं ॥ ३५ ॥

इत्यरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्य कृतौ गुरुपर्व्वकमल वर्णनो नाम षष्ठितमः सर्गः ।

इति श्री हरिवंशपुराणसमाप्तमिदं ।

संवत् १६६२ वर्षे पौष सितपंचम्यां तिथौ संग्रामपुरवास्तव्ये महाराजाश्रीमानसिंह राज्यप्रवर्तमाने श्रीधर्मनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे नंद्याम्न ये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदंकुदांचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक जिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीचन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये चांदवाडगोत्रे सा० श्री जादू तद् भार्या जौणादे स्तयोः पुत्राश्चत्वारः प्रथम सा० लालू तद्भार्या ललतादे स्तयोः पुत्राः सप्त । प्रथम सा० गढमल तद्भार्या गौरादे द्वि० चि० भरथा तृतीय चि० वेणा भार्या बहुरंगदे, चतुर्थ चि० मनोहर, षष्ठ चि० दयाल सप्तम धीनड । प्रथम देवदत्त, द्वि० सा० कुंभा तद्भार्या कोडमदे स्तयो पुत्र चि० दासा तृतीय सा० मानू तद्भार्या लाडमदे स्तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० वीठल द्वि० चि० गोइंद । चतुर्थ सा० कल्याण तद्भार्या कल्याणदे एतेषां मध्ये चतुर्विधदानवितरणसमर्थः सा० कल्याण तद्भार्या कल्याणदे तया इदं हरिवंश पुराणाख्यं शास्त्रं पल्यव्रतउद्योतनार्थं भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्त्तये घटापितं ।

संवत् १६१६ वर्षे आश्विनमासे शुक्लपक्षे प्रतिपत्तिथौ शुक्रवासरे शतभिखानक्षत्रे धृतिनामयोगे श्रीवैरिम्हादुर्गे श्रीनेमिनाथचैत्यालये श्रीराजाधिराजभारमलराज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवा ……… ……… मुनी ललितकीर्त्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सौगाणी गोत्रे सा० लाहुड तद्भार्या हेमी तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० सोढा द्वि० सा० जसपाल। सा० सोढा भार्या खेमी तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० पीथा द्वि० सा० परवत। सा० पीथा भार्या सिरसिरि तत्पुत्रौ द्वौ प्र० सा० योगा तद्भार्या गुणसिरी द्वितीय सा० बोहिथ तद्भार्या बहुरंगदे तत्पुत्र चि० धीनड। सा० परवत भार्या पौसिरी। सा० जसपाल भार्ये द्वे प्रथम जसमादे द्वितीय लक्ष्मी तत्पुत्र सा० धरमा तद्भार्या धारादे एतेषां मध्ये सा० सोढा भार्या खेमी षोडशकारणव्रतोद्यापनार्थं इदं शास्त्रं मंडलाचार्यश्रीललितकीर्त्तये घटापितं।

संवत्सरे बाणवसुमुनींदुमिते १७८५ पौषमासे शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां तिथौ सोमवासरे भिलायनगरे श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये गीतवादित्रप्रवर्द्धितनित्योत्सवे चतुःसंघशोभिते कछवाहवंशोद्भवप्रतापाग्निविध्यापितशत्रुमंडलशरणागतवज्रपंजरकल्पनिजदानसंतर्पिताथनीपकलोकराजर्षिमहाराजि श्री कुशलसिंहजी राज्ये प्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीसुरेंद्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजगत्कीर्त्तिदेवास्तत्पट्टोदयाद्रिदिनमणि निर्वेधसद्योगचर्यविद्यावैरीपरीरंभसंतर्जितं मूर्छिप्रतापबलः निजक्षमासलिलनिर्द्धूतपापपंकः भट्टारकेंद्रभट्टारकश्रीदेवेंद्रकीर्त्ति स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सौगाणी गोत्रे साहजी श्रीरेखराज तत्पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्र साह गिरधरदास तत्पुत्रौ द्वौ। साह विहारीदास तत्पुत्र सा० सुखराम तत्पुत्रौ द्वौ सा० बालचंद सा० जादुदास। तत्पुत्र चि० चैनराम गिरधरदास द्वितीयपुत्र सा० कृष्णदास तत्पुत्र सा० धनराज तत्पुत्रौ द्वौ चि० भूधरदास चि० मनीराम रेखराज। द्वितीय पुत्र सा० नरहरदास तत्पुत्राः चत्वारः प्रथम पुत्र सा० पीताम्बरदास तत्पुत्र किसनदास तत्पुत्र सा० सदाराम तत्पुत्रौ द्वौ सा० नाथूराम ….। नरहरदास द्वितीय पुत्र सा० कल्याणदास तत्पुत्र रूपचंद तत्पुत्राः पंच। सा० किशोरदास सा० श्रीचंद सा० सोनपाल सा० कंवरपाल सा० कुसलराम। सा० नरहरदासस्य तृतीय पुत्र गंगारामः तत्पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्र सा० गोरधनदास तत्पुत्रास्त्रयः चि० मोजीराम चि० मयाराम। सा० गंगाराम द्वितीय पुत्र साह भैलीदास तत्पुत्र चि० टेकचंद तत्पुत्रौ द्वौ चि० नान्हूराम चि० जयचंद सा० गंगाराम तृतीयपुत्र सा० चतुर्भुज। नरहरदास चतुर्थपुत्र श्रीमज्जिनराजचरणकमलसमवलोकनपरः साहजी श्री हरीकेशजी तद्भार्या हीरादे तत्पुत्राः चत्वारः प्रथम पुत्र साह दयाराम द्वितीयपुत्र सा० उदैराम तद्भार्या उत्तमदे द्वि० लाडी तृतीय गुजरि तत्पुत्रौ द्वौ साह रत्नचंद तद्भार्या रतिसुखदे तत्पुत्र चि० सेवाराम। सा० उदैराम द्वितीय पुत्र अनूपचंद तद्भार्या अनोपदे। साह हरीकेश तृतीय पुत्र साह रामजीदास तद्भार्या रायचंदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र चिरंजीव अजबराम तद्भार्या अजायबदे। साह रामजीदास द्वितीय पुत्र चि० मनसाराम तद्भार्या मनसुखदे। सा० हरीकेश चतुर्थपुत्र सा० दीपचंद तद्भार्या दाडिमदे एतेषां मध्ये चि० श्री मनसारामेन स्वहस्तेन लिपिकृतः।

अपभ्रंश और प्राकृत भाषा के ग्रन्थों की प्रशस्तियां

१. अमरसेन चरित्र ।

रचयिता श्री माणिक्कराज । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ९६. साइज १०॥ × ४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में लगभग ३२-३५ अक्षर । लिपि संवत् १५७७. प्रथम पृष्ठ नहीं है ।

कृति के प्रारंभ में कवि ने आश्रयदाता का परिचय इस प्रकार दिया है:—

घत्ता

ए सयलवितित्थंकर कुवहोसहिधरं, ते सहपणविवि पुहमिवर ।
पुणु अरुहहवाणी तिजयपहांणी, वियमणिधारिविकुगइहर ॥ १ ॥

पुणु गोयमु गणहरु णाणठाणि, जे अखिउ सम्मइ जिणहवाणि ।
पुणु जेणपयत्थइं भासियइं, तवतवहितरणपोयणसुहाइं ।
पुणु तासु अणुक्कमिमुणिपहाणु, णियचेयणत्थतम्मउ सुजाणु ।
हुयवहुसहत्थह सुइणिहाणु ; जिंहंदुद्धरि णिज्जिउ पंचवाणु ।
विणयाणाकलाणयपारुपत्त ; उद्धरियभव्वजेसमविसत्त ।
सतंइयताह मुणिगच्छणाहु , गयरायदोससंजइयसाहु ।
जे ईरियगंत्थहकहपवीण , णियज्झाणे परमप्पयहलीणु ।
तवतेयणियत्तणु किंयउरवीणु ; सिरिखेमकिंत्ति पट्टिहिपवीणु ।
सिरिहेमकित्ति जिहयउधामु , तंहु पट्टविकुम रविसेणुणामु ।
णिगंथु दयालउ जइ वरिवरिट्टु, जि कहिउ जिणागममेउ सुट्टु ।
तंहु पट्टिणिविट्ठउ वुहपहाणु ; सिरिहेगचंदुमयतिमिरभाणु ।
तं पट्टिधुरंधरु वयपवीणु ; वरपोमणंदि जोतवहंरवीणु ।
तं पणविवि णियगुरुसीलखाणि , णिगंथु दयालउ अमियवाणि ।
पुणु पतणमिकह-सवणहिराम ; आयणहु जासहत्थराम ।

घत्ता

गोयमएवंजाकहिए, सेणियस्ससुह दायणि ।
जावुहयणचिंतामणिय, धम्मारसहुतरंगिणि ॥ २ ॥

महिवीढिपहाणउ गुणवरिट्ठु   सुरहुविमणविभज्जणाइसुदिट्ठु ।
वरतिविणाणसंडिउचित्तु   णं इह पंडिउ गुरुपारपत्तु ।
कहियासु विणाणें चणिउइट्ठु ; अरियणजणाह हियसल्लुकट्ठु ।
जहिं सहहिं णिंतर जणणिकेय ; पंडुरसुवण्णधयसुहसमेय ...... ।
सद्धाजसतोरणजत्थहम्म ; कणसुहसंदायण णं सुकम्म ।
चउहट्टयचच्चरसुमहग्घ , वणिवर ववहरहिं विजहिं पयत्थ ।
सज्जणयणकोलाहलसमत्थ ; जहिं लयणिवसहिं संपुण्ण कत्थ ।
जहिं आवणम्मि थियविविहभंड ; कसवट्टिहिं कसियहिं मम्मखंड ।
जहिं विसहिं महायणसुद्धबोह ; णिच्चंचियदयादाणसोह ।
जहिं वियरहिं वरचउवण्णलोय ; पुण्णेणपयासियदिव्वभोय ।
ववहारचार संपुण्णसव्व ; जहिं सत्तवसणामयहणीमव्व ।
सोहणपालयझिणावम्मसीज ; जहिं माणिणिमाणण महुरचरीज ।
जहिं चोरचाडकुसुमालदुट्ठ   दुज्जणखलदुव्वयपिसुणविट्ठ ।
णवि दीसहि कहिमि हिदुहियदीण ; पेम्माणुरत्तपच्चज्जिपवीण ।
जहिं रेहहिं दयपयविज्जिसमल्लु ; तं वीकयंगरंगियववल्लु ।

घत्ता-

सुहलच्छिजसायरु णं रयणायरु, दुहयणसुणाइंदरु ।
सत्थत्थहि सोहिउ जणमणमोहिउ, णं वरणायरहणहरु ।
जहिं साहि सिक्कंदरसाहिमाणु ; णियपइपालइ अरियणमयाणु ।
तं रज्जिवसइ वणिवरपहाणु ; दुत्थियजणपोसणु गुणणिहाणु ।
जो अइरवालु कुलकमलभाणु ; सिरिकुलवयहरिसियमाणु ।
मिच्छत्तवसणवासणविरत्तु ; जिणसासणिणिच्चयदयभत्तु ।
चउविहयणमणीमासतोसु ; जो वंसहसंडणु सुयणतोसु ।
तं भासिणि गुणगणगणभिराहि ; मरुदेविणामें महुवाणि ।
तं णंदणु णियकुलगयणभाणु ; चउविह कलचंदु अखराणु ।
जिणवम्मोवरिकिञ्चवहणाहु ; णिवडियउद्दु पुरयणहणाहु ।
जिणचरणोदयसिरिवीपवित्तु ; आयमसेरलूदताणुचित्तु ।
अट्ठरिउ चउविहसंघमाद ; आगणिविभावयचरित्तचारु ।
चउदाणवंतु णं गंधहत्थि ; वियरंड़णिच्चजणवम्मथंधि ।

सम्मत्तरयणालंकियसरीरु कणयायलुव्वणिकंपुधीरु।
सुहिपरियणकइरव विणहिदंसु जिणवरसहंमज्झे लद्धसंसु।
तं भ मणि दिउचंदही पियाच्छि जिणसुयगुरुभत्तिय सीलसुच्छि।
तं जायउ णंदणु सीलखाणि चउमहणाणामें अमियवाणि।
धणकण कंचणसंपुण्णसंतु पंडियहं विपंडिउगुणमहंतु।

घत्ता

दुहियणदुहणासु बुहकुलसासणु जिणसासणरहधुरधवलु।
विज्जालच्छीघरु रूवेणायरु अहणिसुकियविहउद्धरणु ॥४॥

त पणईण पणइणि वद्धदेह णामें खेमाही पियसणेह।
सुरसिंधुरगइसइ वइविलोल परिवारहु पोसणसुद्धसील।
णरश्यणहणं उप्पत्तिखाणि जा वीणा इव कलयंठिवाणि।
सोहग्गरूवचेनणियदिट्ठ सिरि रामहुसीया जिह्वरिट्ठ।
तहिउ वीरउ वणणारयणचारि णं संत चउक्कसुरुवधारि।
तं मज्झिपढमुवियसियसुवत्तु लक्खण लक्खकिउव सणचंत्तु।
अतुरियसाहसु महसकगेहु चाएणकणु संपइहिंगेहु।
धीरें गिरिगंभीरें सायरु णं धरणीधरु णं रविससिसुरु।
णं सुरतरु पइपोसणुदुहहरु णं जिणधम्मुपयडुथिउवसुवरु।
जिं णियजसिपूरियदाणिमहिं जोणिवसुहपालउ सुयणसुहि।
दिउराजुणामु चउधरियं सुहिं जिणधम्मधुरंधरुधम्मणिहिं।
विण्णणयकुणलु बीयउसुपुत्तु जो सुणइजिणेसरधम्मसुत्तु।
सुपवीणरायववारकज्जि गंभीरुजसायरु बहुगुणज्जि।
झाभू चउधरिय विसुद्धभाइ जे णिवमणुरंजइविविहभाइ।
अणुवि तीयउ रिसिदेवभत्तु गिहभारधुरंधरु कमलवत्तु।
चुगनाणामें चउधरियउत्तु जो करइ णिच्चउवयारतत्तु।
पुणु चउथउ णंदणु कुलपयासु अवगमिय सयलविज्जाविलासु।
जिणसमयामयरसतित्तचित्तु छुट्टाणामें चउधरिय उत्त।

घत्ता

ए चउभाइय जिणमइराइय दिउराजुणामु णरुवउसुमई।
णाणासुहविलसइ कइयणपोसइ णियकुलकमलज्जुपुहई ॥

अन्तिम पाठ तथा ग्रन्थकार की प्रशस्ति—

णंदउ जिणवरसासणसारउ जिणवाणीविकुमग्गवियारउ ।
णंदउ बुहयणसमयपरिट्ठिय णंदउ सज्जणजेविसविट्ठिय ।
णंदउ णरवइपयरखंतउ णायमग्गुज्जोयहं दरिसंतउ ।
संतिवियंभउ पुट्ठिवियंभउ तुट्ठिवियंभउ दुरिउणिसुंभउ ।
सेणिउणिग्गउ णरयणिवासहु जिणधम्मुविपयडउ भववासहु ।
जिं मच्छरु मोहविपरिहरियउ सुहयज्झाणिजें णिय मणुधरियउ ।
हेमचंदु आयरिउ वरिट्ठउ तहु सीसु वितवतेयगरिट्ठउ ।
पोमणंधर णंदउ मुणिवरु देवणंदि तहु सीसु महीवरु ।
एयारह पडिमउ धारंतउ रायरोसमयमोहहणंतउ ।
सुहज्झाणेँ उवसमुभावंतउ णंदउ बंभलोलु समंतउ ।
तहं पासजिणेँदहगिहर वणा वेपंडियणिवसंसिद्धकणायवंगणा ।
गरुवउ जसमलु गुणगणणिहाणु वीयउ तहु बंधउ भव्वजाणु ।
सिरि संतिदास गंथत्थजाणु चव्वइ सिरि पासुविणयमाणु ।
णंदउ पुणु दिवराउ जसाहिउ पुत्तकलत्तपउरुविसाहिउ ।

घत्ता

रोहियासिपुरिवासि सयलुलोउसहणंदउ ।
पासजिणहुपयसरय णाणाथोत्तहिंवंदिउ ।

पुणु णामावलि भणउ विसारी दायहु केरी वणणविसारी
अइरवालु सुपसिद्ध विभासिउ सिंघल गोत्तिउ सुपणसमासिउ ।
वूल्हाणिवि अहिहाणं भणिउ जं णियतेयं कुलु संताणिउ ।
करमचन्दु चउधरिय गुणावरु दिवचंदहो भज्जहि विमणोहरु ।
तस्स तणुरुह तिण्णिविजाया णं पंडवइणा तिण्णिसमाया ।
पढमउ सत्थअत्थरसभायणु महणाचंदुणांडइयउधरइणु ।
तहवणियापेमाहीसारी पुत्तच्चउकिंजुवमणाहारी ।
अग्गिमुचाणेँसेयंसिउ उज्जलजसचरिओ विजयंसिउ ।
असुचरुपहरतियहिविरत्तउ जं असव्वुकइयाणउ उत्तउ ।
दिउराजुजिणसहहिमल्लउ णोणाहीतियरमणुविमल्लउ ।
तहुकुखिणिविमुत्ताहलाहलाइं इप्पणाइंवेसुपरिउसलाइं ।
पहिलारउणियकुलहंविदीउ हरिवसुणामु गुणगणविदीउ ।

घत्ता

तहु भज्जा गुणहिमणुज्जा मेल्हाहीपभणिज्जए।
गउरिंगगणुडवहिसुया तहुकसउप्पमदिज्जइं ॥ १२ ॥

पुव्वहि अभयदाणु असुदिरिणउं तह सुउ अभयचंदु सुणिसरिणउ।
अवरु विगुणरयणहि रयणायरु देवराजसुउ सयलदिणायरु।
रतणपालु णामेंपभणिज्जइ तहुभूराहीललणवि णिज्जइ।
देवराय पुणु बीयउभायउ झाझूणामें जगविक्खायउ।
तहचोवाहीभज्जकहिज्जइं तोतेंयहुणोहेंजोइज्जइ।
पढमउ णायराउ तहु कामिणि सूवटहीणामें जणराविणी।
बीयउगेल्हुवि अवरुपयासिउ झाझू तीयउ पुत्तु पयासिउ।
चाओणामें जणविक्खायउ महणासुउ चुगणपियभासउ।
डूंगरही तहु भामिणिसारी खेतसिंघ णंदणुजुयहारी।
सिरियपालु पुणु रायमल्लु पुणु कुवरपालु भासिउ जडिल्लु।
महणाअवरू चउत्थउ णंदणु छुटमल्लुवि जोधम्मु मंदणु।
फेराही अंगणमणहारउ दरगहमल्लुवि णंदणु रहसारउ।

घत्ता

करमचंद पुणु पत्तु बीयउजोजुविभणिउं।
साहाहियपियउत्तु गुरपयरत्तु विणाणिउं ॥ १३ ॥

तहो अतहोअंगो भवतिणिणाय विसुसुयपवणंजउअज्जुणोय।
पहिलारउ रावण तससणारि रामाहीजाया अहि वियारि।
तहुसरीरिसुवचारिउवण्णा पुहईमल्लुविपढमुसुवण्णा।
तस्स भज्जवहुणेहालंकिय कुलिचंदही जायावहुवसंकिय।
कित्तिसिंघु तहुकुक्खिउपण्णउ गग्गिर गिरुणवकंचणवण्णउ।
पुणु जसचंदुव चंदु भणिज्जइ लूणाहीपियणअणुरंजइ।
तह वितणंधउलक्खणंकिउ मदणसिंघ जो पावहसंकिउ।
अवरुवि वीणकंठुवीणावरु पोमाही तहु कामिणीमणहरु।
णारसिंघुवि तउ सुउविगरिट्ठउ अच्छिपिल्लुणंपियरहइट्ठउ।
पुणु लाडणु रूवेंमयरद्धउ तहुवीवोकंताविजसद्धउ।
पुणु जोजावीयउ पुत्तुसारु णियरूवेंजित्तउ जेणमारु।

दोदाहीकामिणी अणुरंजइ   ज सुहिमरणे सग्गिगमिज्जइ।
जोजाअवरु वि णंदणुसारउ   लखमणुणामें पंडिय हारउ।
मल्लाहीकामिणी तहु णंदणु   हीरुणामें जणमणणंदणु ।

घत्ता

अवरु वि णंदणुतीयउ, ताल्हूणामें भणिउ।
वाल्हाही मणहारु वेसुयताहं समासिउ ।

पढमउ पोमकंतिदामूसुहो   इच्छाही भामिणी दिणणउसुहो।
महदासुवि तहु पुत्तपियारउ   पुणु दिवदासु वीरमणहारउ।
साधारणही भज्जमणोहरु   घणमलु णंदणु तहुपुणुसुहयरु।
जगमलही कामिणी तहुसारी   चायमल्लु सुयपोसणयारी।
इय दिवराजहं वंसुपयासिउ   काराविउ सत्तुजि रससारउ।
कोहमोहमय माणवियारउ   जं अक्खरुणं किंपि विणासिउ।
सुपसाएं विविरुद्ध उभासिउ   त सरसइ महु खमउभडारी।
वीरजिणहो मुह णिग्गयमारी   .... ।
हेम पोमआयरियवसंम्मि   चंभव्जुणगुणगणिणाणिहीसें।
मइकसवट्टियवंणाधरंप्पिणु   कव्वसुवणहु जीहविदेप्पिणु।
मत्त अत्थ सोहग्गुखिवेविणु   अत्थविरुद्धकिट्टिकट्टेविणु।
सोहिउ एहु विमणुणाएविणु   होउ चिराउ सुकव्वुरसायणु।
विक्कमरायहु ववगयकालइं   लेसुमुणीविसरअंकालइं।
धरणि अंकसहुचइभविमासें   सणिवारें सुयपंचमिदिवसें।
कित्तियणरकंतसुहजोयं   हुउ पुणणउसुविसुत्तहजोयं।

घत्ता

हो वीरजिणेसर जगपरमेसर एत्तिउ लहुमहुदिज्जउ।
जहिं कोक्कुणामाणु आवणजाणु सासयपउमहुदिज्जइ।

इस महाराय सिरि अमरसेण चरिए चउवग्गं सुकहकहामयरसेणसंभरिए सिरि पंडिय मणि माणिक्कविरइण साधु महणासु चउधरी देवराज णामंकिए सिरि अमरसेण...... ...गमणवण्णं णाम सत्तमंइमपरिच्छेयं सम्मत्तं।

प्रतिलिपि कार की प्रशस्तिःअथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपतिः विक्रमादित्यगताब्दः संवत् १५७७

कार्तिक वदि ४ रवि दिने कुरु जंगलदेशे श्री सुवर्णपथसुभस्थाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री मलयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणभद्रसूरिदेवास्तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गोइलगोत्रे सुवर्णपथिवास्तव्यं जिनपूजापुरंदर कुलवान साधु छल्हू तस्य भार्या सीलतोयतरंगिणी साध्वी करमचंदही तयोः बहुप्रकारदान दाइक साधु वाटु तेन इदं अमरसेन शास्त्रं लिखापितं ज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थं ।

२. आचारांग सटीक

टीकाकार श्री शीलांकाचार्य । भाषा प्राकृत संस्कृत । पत्र संख्या १४३. साइज १२×४½ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर २२ पंक्तियां तथा प्रति में ८०-८४ अक्षर । विषय आचार धर्म का वर्णन ।

लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १६०४ वर्षे मार्गशीर्ष वदि ३ मृगसोमामृतसिद्धियोगे श्री कुंभमेरुमहादुर्गाधिराजशिरोमणौ श्री वृहद्खरतरगच्छे श्री श्री श्री जिनकुशलसूरिपट्टानुक्रमे श्री जिनराजसूरिपट्टपूर्वाचलमार्त्तण्डमंडलावतारहार श्री पूज्यराज्य श्री जिनवर्द्धनसूरिपट्टे श्री जिनचंद्रसूरिपट्टे श्रीजिनसागरसूरिपट्टे श्रीजिनसुंदरसूरिपट्टे श्रीजिन-हर्षसूरिपट्टमौलिमंडनश्री जिनशासनशृंगार कालिकाल श्री गौतमावतार श्री जिनचंद्रसूरिपट्टावतंशं सांमत-विजयमान श्री पूज्य श्री श्री जिन शीलसूरिविजयराज्ये आ० श्रीविवेकरत्नसूरिपुंगवानां शिष्य श्री जयकीर्ति-महोपाध्यानां शिष्य श्री हर्षकुञ्जरोपाध्याय पं० रत्नशेखरगणि वा ज्ञानकुञ्जरगणि पं० हरिकुञ्जरगणि पं० सत्य-सुंदरगण्यादय स्तेषां शिष्याः पं० परमपूज्य श्री नयसमुद्रगणीनां शिष्येण वा गुणलाभगणिना निजपुस्तके स्वशिष्यचरणोदय मुनिसाहाय्याल्लिखितेयं वृत्ति ।

३. आत्मसंबोध काव्य ।

रचियता कवि रइधू । भाषा अपभ्रंश । पृष्ठ संख्या ३२. साइज ६½×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति में २८-३६ अक्षर । विषय—अध्यात्म ।

मंगलाचरण—

जयमंगलगारउ वीरुभडारउ भुवणसरणु केवलणयणु ।
लोगोत्तमु गोत्तमु संजयसोत्तमु आराहमि तहं जिणवयणु ॥

अन्तिम पाठ

सम्मत्तु वलेणाणु णुलहे विचरेविचरणु ।
साहिज्जइ मोक्खु भविहि भव्वहु दुहहरणु ॥

लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १५३४ वर्षे श्रावण सुदी ५ भौमवासरे श्री मूलसंघे कुंदकुंदाचार्याम्नाये भट्टारक श्री सिंहकीर्त्त

तस्य शिष्य श्री प्रचण्डकीर्त्ति देवास्तस्य शिष्यमंडलाचार्य श्री सिहनन्दि इदं आत्मसंबोधग्रन्थं लिख्यतं कर्म-क्षयनिमित्तं। प्रति नं० २। पत्र संख्या ४०. साइज ६३/४×४१/२ इञ्च। लिपि संवत् १६०७।

लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १६०७ वर्षे अषाढ वुदि ८ शनिवारे रेवती नक्षत्रे श्री सलीमसाहराज्ये रावणपार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री धर्मकीर्तिदेवास्तत् शिष्य निवाइसपूरि श्रावकः, गोधा गोत्रे संगही भीष अर्जुन। सजनपुत्र सोनपाल पुत्र ३ वस्तु, पूरू, राउ। भतिजा बहुडु जिणदास श्रावकाः .... वाइसपूर निमित्यर्थं घटापितः।

४. आदि पुराण।

रचयिता महाकवि पुष्पदंन्त। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या २१८। साइज १२×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ५०-५६ अक्षर। लिपि संवत् १६६२। विषय—पुराण।

मंगलाचरण—

सिद्धि वहूमणरंजणु परमणिरंजणु भुवणकमलसरणेसरु।
पणविवि विगवविणासणु णिरूवमसासणु रिसहणाहु परमेसरु।

अन्तिम पाठ—

गउभरहु वि मोक्खवि शुद्धमइ विविहकम्सबंधेहि चुओ।
फणिखेयरकित्तरपवरनर पुप्फदंत गणसंथओ॥

इय महापुराणेति सट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फदंत विरइए महाभव्वभरहाणुमंणिए महाकव्वे सगणहररिसहणाहभरह णिव्वाणगमणं नाम सत्ततीसमोपरिछेउ सम्मत्तो।

लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १६६२ वर्षे विक्रमादित्य राज्ये...... .... सा नरसिंह तद्भार्या पाउ द्वितीया भाउ। नरसिंह प्रथम पुत्र सा० गुणिया भार्या विल्हो तत्पुत्राश्चत्वारः। प्रथम पुत्र देवगुरुशास्त्र-भक्त सा० नरपति भार्या ठकुरी तत्पुत्र सा० ज्ञानचन्द। गुणिया द्वितीय पुत्र सा० मोल्हू भार्या चंदणी। तृतीय पुत्र सा० दिउचन्द। चतुर्थ पुत्र सा० डुल्ह। सा० नरसिंह द्वितीय पुत्र सा० ताल्हू भार्या जिणो। तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सा० रावण तद्भार्या वीधो तत्पुत्र सा० विमल्ह। तील्हा द्वितीय पुत्र सा० भोला तद्भार्या दीपो तत्पुत्र सा० दोचा। सा नरसिंह तृतीय पुत्र सा० हेमा तद्भार्या ऊलो। सा० नरसिंह चतुर्थ पुत्र सा० तिहुण तद्भार्या जीवो तत्पुत्र सा० उदा सा० नरसिंह पंचमपुत्र तेजू भार्या सोभी। सा० नरसिंह षष्ठम पुत्र सा० वस्तू भार्या कुसुरी। सा० सीधर द्वितीय पुत्र सा० देवीदास भार्या गल्हा तत्पुत्र सा० छाजू सा० पल्हो। सा० सीधर तृतीय पुत्र सा० लोल्ह तद्भार्या जल्पही तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सा० ढूंढा द्वितीय गूजर

भार्या दोदाही। एतेषां मध्ये साह गुणियां पंचसीउद्धरणधीर दीवानदीपक परोपकारकः। साह गुणिया तत्पुत्र नरपति केन इदमादिपुराणग्रंथं आत्मकर्मक्षयनिमित्तं लिखापितं।

उक्त प्रशस्ति को काटकर निम्न प्रशस्ति फिर से जोड़ी गयी है।

प्रशस्ति—

श्रीमंतं जिनं नत्वा केवलज्ञानलोचनं।
लिखामि प्रशस्तिकेय वंशसिद्धिप्रदायकं ॥ १ ॥
त्रिनवत्यधिके वर्षे मासे श्रावणपंजिके।
संवतेपोडशाख्याते पंचम्यां भौमवासरे। २॥

संवत् १६६३ वर्षे श्रावण सुद ५ भौमवासरे नगरे चोम्रदुर्गाख्ये
साहिजिहा दिलीपतेः राज्यं मेवकोम्र सिंहे धम्मंपूर्व्वं कुर्वंति ॥ ३ ॥

कुन्दकुन्दान्वये श्रीमान् बलात्कारगणे शुभे।
श्रीमूलसंघे भूद्धीमान मुनिराजप्रभेंदुकः ॥ ४ ॥
तत्पट्टे मुनियोः धीरः चंद्रकीत्यभिधोयतिः।
तत्पट्टे शक्रकीर्त्याख्यो भूपसेवितपंकजः ॥ ५ ॥
तत्पट्टे राजते श्राशो नरेशो मुनियोः वशी।
रूपानर्जितदेवेशो भट्टारक गणधिपः ॥ ६ ॥
तदाम्नाये च विख्याते श्री खंडेलवालान्वये।
लुहाड्यागोत्रे बुद्धिमान् संघेशो विष्णुनामकः ॥ ७॥
तद्वंशो रत्नसो नामा प्रियत्रिर्वेलवान्वभौ।
तत्पुत्राः षट् च विज्ञेयाः हन्दाद्याः संघधारकाः ॥ ८ ॥
हन्दू च गढमल्लश्च पद्मसी च जट्टुस्तथा।
पंचमः साहिमल्लाख्यः वल्लू नामा च षष्टमः ॥ ९ ॥
हन्दः प्रतापदे भार्या द्वितीया च सुजाणदे।
तेषां पुत्रा च विख्याता पदार्था त्रा नत्राश्रिताः ॥ १० ॥
पेमराजो गूजरश्च हेमराजेन्द्रराजकौ।
दयाजयार्थैकल्याणमनो राजांतका भुवि ॥ ११ ॥
पेमराजः धारमदेपु धारदे प्रभुपरः।
रेजे सुमतिदासस्य सुमतादे प्रभोः पिता ॥ १२ ॥
गौतदे गूजरौ जज्ञे चंद्रभाणतयोः सुतः।
तृतीयो हेमराजाख्यो लाडी हमीरदेधवः ॥ १३ ॥

तत्पुत्रौ भुविजज्ञाते नाथू काल्हू च धीधनौ।
लाडी धवेंद्र राज्याख्यो धणराजपितात्रभौ ॥ १४ ॥
पंचमोऽभयराजाह्वो भार्या दुरगादे पतिः।
चूहड कुसलाभिख्यो तत्पुत्रौ च बभूवतुः ॥ १५ ॥
अजौ राजो राइसिंहपिताऽजाइवदेप्रभुः।
धीनड पिता अखैराजः प्रियाऽहींकारदेधवः ॥ १६ ॥
छीतर धीनड तात प्रिया कल्याणदे प्रियः।
कल्याणाह्वोऽष्टमो रेजे नवमो मनराजकः ॥ १७ ॥
तस्य प्रिये द्वे ज्ञाते लाडी च मन सौख्यदे।
जिनवेश्म कृतं येन सूमदुर्गे मनोरम ॥ १८ ॥
द्वितीयो गढमल्लाख्य स्त्रिभार्यस्त्रिपुत्रकः।
दयालऋषभाह्व सुंदरैश्च विराजते ॥ १६ ॥
तृतीय पद्मसी नामा ड्यागदे पारदे पतिः।
टोडरस्यपितर्रेजे जगरूपपितामहः ॥ २० ॥
तुर्यो जटमल्लाख्योऽभूतजौणादे भर्तृकः परः।
पंचम साहिमल्लश्च दुरगादे रमणः सुधीः ॥ २१ ॥
वल्हू विराजते षष्टः भर्त्ता बहुरंगदे स्त्रियः।
मंत्रीशः पेमराजख्यः उग्रसिंहमहीपतेः ॥ २२ ॥
संघेश पेमराजस्य चोग्रसिंह महीपतेः।
मंत्रीशस्य वभौ कांता सुघारदे च नामतः ॥ २३ ॥
सीतेव रामराजस्य पांडोः कुंतीव सुंदरी।
दानतः कल्याणवल्लीव रेजे भीव सुता शुभा ॥ २४ ॥
तेनेदं शास्त्रं लिखाप्य नरेशाय मुनये च दत्तं।
कर्म्मक्षयार्थं वै चिरं नंदतु भूतले ॥ २५ ॥

प्रति नं० २. पत्र संख्या २७१. साइज ११×५ इञ्च। प्रति में तीन प्रतियों के पत्र मिलाये गये हैं। लिपि संवत् १५६४।

लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १५६४ वर्षे श्रावण सुदी ३ मंगलवारे राणापुर नाम नगरे रायश्री हेमकरणराज्ये श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये टोंग्या गोत्रे ....।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २५७. साइज १०×४½ इञ्च। प्रति प्राचीन है। पृष्ठों के बीच २ में खाली जगह छूटी हुई है।

संवत् १४६१ वर्षे भादवा वुदी ६ बुधवासरे अद्येह श्री महयोगिनीपुरे समस्तराजावली विराजमानं सुरत्राण श्री महम्मूद साह राज्यप्रवर्त्तमाने श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये बलात्कारगणे श्री सरस्वतीगच्छे मूलसंघे भट्टारक श्री रत्नकीर्तिदेवास्तत्पट्टे श्री रायराजगुरु मंडलाचार्य वादीन्द्र त्रैविद्यापरमपूजाचेनीय भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवाः तत्पट्टे तपोधन श्री अभयकीर्तिदेवाः। अर्जिका वाई खेमसिरी तस्याः अर्जिका अध्यात्मशास्त्ररसिरसिका भेदाभेदरत्नत्रयआराधकचारित्रपवित्रा भव्यजनप्रबोधका दीनदुःखसंतापनिवर्त्तिका चतुरासीजीवदयापर आत्म-रहस्यपरिपूर्णा अर्जिका धर्म्मसिरि ··· ·· ·· ··· सहिलवालान्वये परमगुणसंपूर्णा जीवदयातत्पर कुलमंडणोपा-कारक धर्म्मकार्यविपयतत्परा सा० जोल्हा तस्य भ्राता भार्या महीदराम्। सा० सूढा तस्य भ्राता गुणोपकारक सा माल्हा सा० थिरदेवा। सा जोल्हा तस्य भार्या अनेकदानविपर्यान्तरपरा गुणसंपूर्णा जैनधर्म्मविपयतत्परान गुणप्रियंवदा हरो तस्य प्रथम पुत्र जिनपूजापुरंदर सा० मतना भ्राता परोपकारको सा० चालिराज तस्य भ्राता जीवदयापरी सा पदम भ्राता अनेकगुणसंपूर्णा विद्याविपय तत्परान् सा नल्हा एतैः जैनधर्म्मो · ···· ·· ··· ।

प्रति नं० ४। पत्र संख्या २१८. साइज ११×४½ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर। प्रति प्राचीन है प्रतिलिपि संवत् नहीं दे रखा है।

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवातत्पट्टे भट्टारक श्रीमदभिनवप्रभाचन्द्रदेवः तेनिज-निजमताखर्वगवर्पर्वतारुढसर्वचार्वाकादिपरवादि मदांधसिंधुरसिंहायमानं विहिताचार्यपदस्थापनाय सकल भव्य-चेतश्चमत्कारि सर्वजीवोपकारिचारुचरित्रचारि यथोक्तनग्नमुद्राधारी समस्तविद्वज्जनमनोहारि श्रीमन्निग्रंथाचार्यवर्य निःशेपमिथ्यात्वतमस्कांड खडनोच्चंडचंडिमप्रकांडमार्त्तंडमंडलायमान खंडेलवालविशदवंशे श्रीमन्नायकगोत्रे सं० भोजा भार्या भीवणि तत्पुत्रा स० लोहट द्वितीय पुत्र स० गोरा। लोहट भार्या धर्म्मिणी। तत्पुत्रा खेमा, द्वितीय पुत्र दूदा तृतीयं पुत्र सेवा। गोरा भार्या केलू एतेषां मध्ये संघपति लोहटाख्येन निजज्ञानावरणीय कर्म्म-क्षयार्थं इदं पुष्पदंतकविकृतं आदिपुराण शास्त्रं दत्तम्।

संवत् १६६४ वर्षे कार्तिक सुदी ६ शुक्रवारे पूर्वापाढनक्षत्रे तक्षकवास्तके श्री आदिनाथ चैत्यालये महाराजा श्री जगन्नाथजी राज्ये श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक ...नन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति-...ाये खंडेलवालान्वये काला गोत्रे साह नानू तद्भार्या नाइकेद तयो पुत्रास्त्रयः प्रथम साह चेला तद्भार्या ...दे तत्पुत्र चिरंजीव कल्याण द्वितीयं चिरंजीव मनरूप तृतीय साह मोहन तद्भार्या महिमादे एतेषां मध्ये श्री नानू तद्भार्या नायकदे इदं शास्त्रं अष्टाहिका व्रतोद्यापनार्थं भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्त्तयेदत्तं ।

५. उत्तरपुराण

उत्तरपुराण। रचयिता महाकवि पुष्पदन्त। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ३९८। साइज १४×४ इञ्च प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०। ४८ अक्षर। प्रति बहुत प्राचीन है। उक्त ग्रन्थ अपभ्रंश भाषा का सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ माना जाता है। इसमें ६३ शलाकाओं के महापुरुषों का जीवन चरित्र वर्णित है। ग्रन्थ के अन्त में महाकवि ने अपना विस्तृत परिचय लिखा है।

मंगलाचरण—

णंभहो णंभालयसामियहो, ईसहो ईसरचंदहो।
अजियहो जियकामहो कामयहो, पणवेवि परमजिणिंदहो॥

प्रशस्ति तथा ग्रंथ का अन्तिम भाग—

कयतिजोएसुणिरोहु अणिट्ठिउ। किरियाछिण्णाई झाणि परिट्ठिउ।
णिहिय अघाइचउक्कु अदेहउ। वसुसमगुणसरीरुणिण्णेहउ।
रिसिसहसेण समउ अरिछिंदणु। सिद्धउ जिणुसिद्धत्थहो णंदणु।
अग्गिंदहिं अंचिउ सिहिजालहिं। अमरिंदहिं णवकुवलयमालहिं।
णिव्वुए वीरेगलियमयरायउ। इंदभूइ गणि केवलि जायउ।
सो विउलइरिहिं गउ णिव्वाणहो। कम्मविमुक्कउ मासयठाणहो।
तहिं वासरे उप्पण्णउ केवलु। मुणिहे सुधम्महो पक्खालियमलु।
तं णिव्वाणहो जंबूणामहो। पंचमु दिव्वु णाणु हयकामहो।
णंदि सु णंदिमित्तु अवरु वि मुणि। गोवद्धणु चउत्थु जलहरझुणि।
ए पच्छए समत्थ सुअपारय। णिरसियमिच्छामनयभय णीरय।
पुणु वि साहुजय पोट्ठिलु खत्तिउ। जउ णाउ वि सिद्धत्थु हयत्तिउ।
दिहिसेणकु विजउ बुद्धिलजउ। गंगु धम्मसेणु वि णीसल्लउ।
पुणु णक्खत्तउ पुणु जसवालउ। पंडु णामउ धुअसेणु गुणालउ।

घत्ता

अणुकंपउ अप्पउ जिणेवि थिउ। पुणु सुहद्दु जिणसुअहरु।
जस भद्दु अखलु अमंदमइ। णाणें णावइगणहरू॥ १॥
भद्दवाहु लोहकु भडारउ। आयारंगधारि जगसारउ॥
एयहिं सव्वु सत्थु मणि णाणिउ। सेसहिं एक्कु देसु परियाणिउ॥
जिणसेणेण वीरसेणेणवि। जिणसासणु सेविउ मयगिरिपवि॥
पुव्वंयालि णिसुणिय सुइं भरहें। राएं वहुरिउ दावियविरहें॥
पुणु सयरेण सव्ववीरंकें। पुहईसेण सगुत्तससंकें॥

भावमत्तमित्ताइयवीरें । जसदुइण्ण वि सुट्ठ गंभीरें ॥
धम्मदाण वीरहिं रइयंते । जुज्झवीरणरणाहें संतें ।
मीमंधरगणेण तिविट्ठें ॥ अरुहवयणु आपणिणउं इट्ठें ।
पुणु सयंभु पुरिसोत्तिम णामें । पुरिसपुंडरीयं जयकामें ।
पुरिसदत्तणामेण कुणालें । गोविंदेण णंद गोवालें ।
उग्गसेण महसेण हियत्थें । णिच्चलमाणमेहिं पुणु पत्थें ।
एवं रायपरिवाडिए णासुणिउं । धम्मु महामुणिणाहहिंपिसुणिउं ।
सेणियराउ धम्मसो आरहं । पच्छिल्लउ वज्जियभवभारहं ॥
ताहं वि पच्छए वहुरमणाडियए । भरहें काराविपु पद्धडियएं ।
पढेवि सुणेवि आयणिणवि णिम्मले । पयडिल सम्मइएं इय महियले ॥
कम्मक्खयकारणु गणिदिट्ठउ । एवं महापुराणु मइं सिट्ठउ ।
एत्थु जिणिंदमग्गि ऊणाहिउ । बुद्धिविहूणें जं मइ साहिउ ॥
तं महु खमउ तिलोयहो सारी । अरुहंगय सुअ देवि भडारी ।
चउवीस वि महुं कलुसुखयंकर । देंतु समाहि वोहि तित्थंकर ॥

घत्ता

दुहं छिंदउ णंदउ सुअणयले णिरुवमु कयणारसायणु । आयगयाउ मणाउ ताम जणु, जाम चंदु तारायणु ॥

विरसउ मेहजालु वसुहारहिं । महि पिच्चउ वहुवण्णपयारहिं ।
णंदणु सामणु वीरजिणेसहो । सेणिउ णिरगउ णरयणिवासहो ॥
लग्गउ गहवणारंभहो सुरवइ । णंदउ पयसुहु णंदउ णरवइ ।
णंदउ देसु सुहिक्खु वियंभउ । जणुमिच्छत्तु दुचित्त णिसुंभउ ।
पडिवण्णयपरिपालणसूरहो । होउ संति भरहहो गिरिधीरहो ।
होउ संति गुणहिंमहल्लहो । तासु जि पुत्तहो सिरिदेवल्लहो ।
एउं महापुराणु रयणुज्जले । जं पापडियउ सधरधरायले ॥
चउ वियदाणुजयकयचित्त हो । भरह परमसब्भवसुमित्तहो ।
भोगइत्तहो जयजसवित्थिरहो । होउ संति णिरु णिरुवमचरियहो ।
होउ संति णणणवहो गुणवंतहो । कुल वलवच्छल सामत्थमहंत हो ।
णिच्चमेव पालिय जिणधम्महं । होउ संति सोहण गुण धम्महं ।
होउ संति संतहो दगइयहो । होउ संतिसुअणहो संतइयहो ।

जिणपयणमणविचल्लियगव्वहं । होउ संति णीसेसहं भव्वहं ॥

घत्ता

इय दिव्वहो कव्वहो तणउं फलु, लहुं जिणणाहु पयच्छउ ।
सिरि भरहहो अरुहहो जहिं गमणु, पुप्फयंतु तहिं गच्छउ ॥

सिद्धिविलासिणिमणहरदूयं । मुद्धाएवीतणुसंभूयं ॥
णिद्धणसधणलोयसमचित्तं । सव्वजीवणिक्कारणमित्तं ॥
सद्दसलिल परिवड्ढियसोत्तं । केसवपुत्तं कासवगोत्तं ॥
वमलसरासइ जणियविलासं । सुण्णभवण देवउलणिवासं ॥
कलिमलपावपडलपरिमत्तं । णिग्घरेण णिपुत्तकलत्तं ॥
णयवावीतलायकयण्हाणं । जरचीवरवक्कलपरिहाणं ॥
धीरं धूलीधूसरियंगं । दूरुज्झिय दुज्जणसंसग्गं ॥
महिसयणयलकरपंगुरणं । मग्गिय पंडियपंडिय मरणं ॥
मण्णखेडपुरवरे णिवसंतं । मणे अरहंतधम्मु झायंतं ॥
भरहमणणिज्जं णयणिलयं । कव्वपबंधजणियजणपुलयं ॥
कोहणसंवच्छरे आसाढए । दहमइ दियहे चंद रुइरूढइ ।

घत्ता

सिरि णिवहहो भरहहो बहु गुणहो, कइकुलतिलएं भासिउं ।
सुपहाणु पुराणु तिसिट्ठिहिं मि. पुरिसहं चरिउं समासिउं ॥

इय महापुराणे तिसिट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे वीरणाह णिव्वाणगमणं णाम तिसट्ठिपुरिस वण्णणो णाम दुउत्तरसय संधी समत्तो।

संवत्सरेऽस्मिन् श्री विक्रमादित्यगताब्दाः संवत् १३६१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ९ गुरुवासरे अद्येह श्री योगिनीपुरे समस्तराजावलि शिरोमुकुटमाणिक्यखचित नखरश्मी सुरत्राण श्री सम्सदसाहि नाम्नि महीं विभ्रति सति अस्मिन राज्ये योगिनीपुरस्थिता अग्रोतकान्वय नभः शशांक सा० महिपाल पुत्रः जिनचरणकमलचंचरीकः सा खेत फेरा साहा महाराजा तृपा एतैः सा० खेत पुत्र गल्हा आजा एतौसा० फेरा पुत्र वीधा हेमराज एतैः धर्म्म कर्म्मणि सदोद्यमपरैः ज्ञानावरणीयकर्म्मक्षयाय भव्यजनानां पठनाय उत्तरपुराण पुस्तकं लिखापितं । लिखितं गौडान्वय कायस्थ पंडित गंधर्व पुत्र बाहड राजदेवेन ।

६. उपदेशमाला ।

रचयिता श्री धर्मदासगणि । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या १८ । साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४५-५० अक्षर । प्रति प्राचीन है । जीर्ण अवस्था में है ।

मंगलाचरण—

नमिऊण जिणवरिंदे इंदनरिंदच्चियतिल्लोय गुरु ।
उवएसमालमिणमो वुच्छामि गुरुवएसेण ॥ १ ॥
जगचूडामणिभूओ उसभोवीरातिलोय सिरि तिलउ ।
एगोलागाइच्चोए गोचक्कू तिहुयणस्स ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

इय धम्मदासगणिणा जिणवयणुवएकज्जमालाए ।
मालुव्वविविहकुसुमा कहियाउ सुसीसवग्गस्स ॥ १ ॥
संतिकरी बुद्धिकरी कल्लाणकरी सुमंगलकरीय ।
होउ कहगस्सपरिसाए तहय णिव्वाणफलदाई ॥ २ ॥
इत्थ समप्पइ णमो माला उवएस पगरणपगयं ।
गाहाणं सव्वगां पंचसयाचेवचालीसा ॥ ३ ॥
जावइ लवणसमुद्दो जावइ नक्खत्तमंडिउ मेरु ।
तावइ रईयमाला जयंयिमिथ्यरथावराहो ॥ ४ ॥
अक्खरमात्राहीणं जंमियपढियं अयाणमाणेण ।
तं खमहु मज्झसव्वं जिणवयणविणिगायावयणी ॥ ५ ॥

इति उपदेशमाला प्रकरणं समाप्तं ।

७. उपासकाध्ययन ।

रचयिता आचार्य श्री वसुनन्दि । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या ३७ । साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर ।

मंगलाचरण—

सुरवइतिरीडमणिकिरणवारिधाराहिसित्तपयकमलं ।
वरसयलविमलकेवल पयासियासे सतच्चत्थं ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

छव्वसयापण्णासुत्ताराणि एयस्स गथं परिमाणं ।
वसुणादि णाणिवद्धं वृत्थरियव्वं वियहेहिं ॥ १ ॥

संवत् १६२३ वर्षे पोष बुदी २ शुक्रवासरे श्री पार्श्वनाथचैत्यालये गढचंपावतीमध्ये महाराजाधिराज श्री भारमलकछवाहा राज्ये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि-देवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणचंद्रदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्य धर्म्म चन्द्रः तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री ललित कीर्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे साहा चापा तद् भार्या सोना तत् पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र संघभारधुरंधर जिनपूजापुरंदर साह जाटा द्वितीय साह दासा। सा० जाटा भार्या जैसिरी तत्पुत्र ३ साह नेता भार्या नारिंगदे तत्पुत्र चि० नाथू सा० खेता भार्या खेतलदे। तत्पुत्र २ चि० नेणा गोपालसाह। चैहथ भार्या चांदणदे तत्पुत्र धर्मदास। साह दासा भार्या दौडदे तत्पुत्र चि० पदारथ भार्या पाटमदे तत्पुत्रौ द्वौ पीथाग्रिथा दुतिय पुत्र बरहथ भार्या सरदे एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं लिखापितं शील शालिनी देवगुरुभक्ति बहू श्री जैसिरी। अर्जिका श्री मुक्ति दत्तं।

प्रति नं० २। पत्र संख्या २६। सांइज १०½×४½ इञ्च।

संवत् १६१२ वर्षे भाद्रपदमासे शुभशुक्लपक्षे अष्टमीदिवसे प्रीतयोगे तक्षकगढमहादुर्गे महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने श्री आदिनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदा-चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवाः। तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचंद्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री ललितकीर्ति देवा स्तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे साह लोहट तद्भार्या शीला तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा० गोइंद द्वितीय सा० दामा तृतीय सा० गोकल। सा० गोइंद भार्या सोढी तत्पुत्राश्चत्वारः। प्रथम सा० पासा दु० सा० आसा तृ० सा० आल्हा चतुर्थ सा० पचाइण। सा० पासा भार्या पाटमदे तत्पुत्रास्त्रयः। प्रथम सा० कवरा भार्या कवलश्री द्वि० विगेह तृ० चिरंजी हरा। सा० आसा० भार्या आसलदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम श्रीपाल भार्या श्रियादे द्वि० वाछा, तृतीय सा० आल्हा भार्या सुहागदे। तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सोहा भार्या शृंगारदे, द्वि० चि० हेमा। चतुर्थ सा० पचाइण भार्या पोसीर तत्पुत्रौ द्वौ। प्रथम चि० वीरदास द्वि० धनेड। द्वि० सा० भार्या चांदौ तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० बोहिथ, द्वि० सा० वाला, सा० बोहिथ भार्या वालहदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह सुरताण द्वि० साह साधु। सुरताण भार्ये द्वे प्र० सिंगारदे द्वि० सुरताणदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० गोपाल चि० गढमल द्वि० सा० साणु भार्या साहिबदे। द्वि० सा० वाला भार्या बहुरंगदे। तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० सारंग द्वि० माधो। तृतीय सा० गोकल भार्ये द्वे प्रथम उदी द्वि० नोलादे। तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० कुंभा द्वि० सहसा। प्रथम सा० कुंभा भार्या कुंभलदे तत्पुत्रौ द्वौ० प्रथम चित्राण द्वि० चि० पदमा। द्वि० सा० सहमल भार्या सिंगारदे एतेषां मध्ये साह बोहिथ भार्या वालहदे इदं शास्त्रं कल्याणकव्रतउद्यापनार्थं आर्यनरसिंघाय दत्तं।

८. करकण्डुचरित्र।

रचयिता श्री मुनि कनकामर। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६२। साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४६ अक्षर। प्रति स्पष्ट तथा सुन्दर है विषय—महाराजा करकण्डु का जीवन।

प्रारम्भिक पाठ—

मणभारविणासहो सिवपुरवासहो पावतिमिरहरदिणयरहो ।
परमप्पयलीणहो विलयविहीणहो सम्मिचरणसिरि जिणवरहो ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

घत्ता

णियरूउ लहेविणु सो णियइं फेडे वि कम्मणिबंधणाइं ।
सव्वत्थसिद्धिसंपत्तुरवणे, कणयामरमुणिवरवयहलइं ॥
चिरुदियवरवंसुप्पराएण, चंदारिसिगोत्तें विमल एण ।
वइरायइं हुयइं दियंवरेण, सुपसिद्धणामकणयामरेण ।
बुह मंगल एवहो सीसएण उप्पाइय जणमणतोसएण ।
आसइयणयरि संपत्तएण, जिणचरणसरोरुह भत्तएण ।
अच्छतइं तहिं मइ चरिउ एहु, घर पयडिउ भवियण विणउणेहु ।
मइं सत्थविहीणइं भणिउं किंपि, सोहेविणु पयडउ विवुहु तंपि ।
परकज्जकरण उज्जुय मणाहं, अप्पाणउं पयडिउ सज्जणाहं ।
करजोडिवि मग्गिउ इउ करतु, महुदीणहो ते सयलुवि खमंतु ।

घत्ता

जो पढइ सुणाइं मणे चिंतवइ जणवएं पवडइ एउ चरिउ ।
सो णरु भुवणहो मंडणउं लहइ सकित्तणु गुणभरिउ ॥
जो णवजोव्वणदिवसहिं चडियउ अमर विमाणहो णं सुरुपडियउ ।
कणयवराणु अइमणरहगत्तउ जसुविजवालु णरहिउ रत्तउ ।
धम्ममहातरुसिंचियअप्पणु जो विजवालहो णं सुहदप्पणु ।
जो अरिणिहणाइं दुस्सहलीलइं जसुमणुरंजिउ कुंजरकीलइं ।
बंधवइट्ठमित्तजणरोहणु णिवभूवालहो जो मणमोहणु ।
दीणाणाहहो जो दुहभंजणु कण्णणरिंदहो आसयरंजणु ।
जो वोल्लंतउ णिवसहखोहइं जो ववहारइं णरवइमोहइ ।
जो गुरु संगरे अइसय धीरउ जो जण पयहुण कायर हीरउ ।
जो चामीयरकंकणवरिसणु जो वंदीयण सहलउ करिसणु ।
जोजिणपाय सरोयहंमहुयरु जो सव्वंगु विणयणाहं सुंदरु, ।
जो कमिणिहिं मणम्मिणम्मुच्चइ जोजण सीलतरंगिणि वुलइ ।

कित्तिमंतियकहवगाथकइ ,- जसुगुणा लिंती सरसइ संकइ ।
तहो सुय आहुलगल्हेराहुल , मुणिकणायामर पयउव्वाहुल ।

घत्ता

तहु अणुगएंयउ चरिउ , मइंजणावए पयडिउं मणहरउ ।
ते वंधवपुत्तकलत्तसहु , चिरु णंदउ जार विसंसिहरउ ॥

इय करकंडुमहरायचरिए मुणि कणयामर विरइए भव्वायणा कण्णावयंसो पंचकल्लाणविहाणकप्प तरुफलसंपत्तो करकंडु सव्वत्थसिद्धिलाहो णाम दहमो परिछेउ समत्तो ।

संवत् १५८१ वर्षे चैत्र सुदि ६ गुरुवासरे घट्यालीनाम नगरे राउ श्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये कासलीवाल गोत्रे चतुर्विधदानवितरणकल्पवृक्ष साह काधिल तद्भार्या कावलदे तयो पुत्रास्त्रयः प्रथम साह गूजर द्वितीय साह राणौ जिनचरणकमलचंचरीकान् दानपूजा समुद्यतान् परोपकारनिरतान् प्रस्वस्तिचित्तान सम्यक्त्वमतिपालकान् श्री सर्वज्ञोक्तधर्म्मान रंजितचेतसान् कुटुंबसाधारकान् रत्नत्रयालंकृतदिव्यदेहान् आहारौपधा भयशास्त्रदानसमन्वितान् त्रयो सह बछराज तद्भार्या प्रतिप्रतापदा तस्य पुत्र परमश्रावक साह पचाइण तद्भार्या सीलवती प्रतापदे तत्पुत्रा सा० दूलह एतेषां मध्ये साह वछराज इदं शास्त्रं लिखाप्य सत्पात्राय ब्रह्म भोजा जोगी दत्तं ज्ञानावरणक्षयार्थं ।

९. कर्मप्रकृति

मूलकर्त्ता आचार्य नेमिचन्द्र । टीकाकार अज्ञात । भाषा प्राकृत । संस्कृत । लिपि संवत् १७७७ विषय-सिद्धान्त । मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र के शासनकाल में नागपुर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गयी ।

ग्रन्थ समाप्ति

इति प्रायः श्री गोम्मटसारमूलात् टीका च निकाश्य क्रमेण एकीकृत्य लिखिता । श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती विरचित कर्मप्रकृतिग्रन्थस्य टीका समाप्ता ।

संवत् १५७७ वर्षे आषाढ सुदी ३ श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य धर्मचंद्रस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये डेह वास्तव्ये पहाड्या गोत्रे सा० ऊधा तद भार्या लाडी तत्पुत्र सा० फलहु भार्या गुणसिरि तत्पुत्र पचाइण इदं शास्त्रं नागपुर मध्ये लिखाप्य तं ।

१० कर्मकांड सटीक।

मूलकर्त्ता श्री नेमिचन्द्राचार्य। टीकाकार श्री सुमतिकीर्तिसूरि। भाषा प्राकृत संस्कृत। पत्र संख्या ७५। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४७-५४ अक्षर। विषय-सिद्धान्त। लिपि संवत् १६२२।

ग्रन्थ समाप्ति—

इति श्री सिद्धांतज्ञानचक्रवर्ति श्री नेमिचन्द्रविरचिते कर्मकाण्डस्य टीका समाप्ता।

लिपिकार की प्रशस्ति—

अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यराज्यात् संवत् १६२२ वर्षे भाद्रपद सुदी १५ दिने आगरा-न मनगरे पातिसाह श्री मुद्गल अकबरजलालदीन राज्ये श्रीमत्काष्ठसंघे माथुरगच्छे पुष्करान्वये भट्टारक श्री मलयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीवादीभकुंभस्थलविदारणैकसिंह श्रीगुणभद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीसर्व्वगुणगरिष्ट भानुकीर्तिदेवास्तदाम्नाये अग्रोतकान्वये वांसलगोत्रे साधु श्री गिणा तद्भार्या खिमाई तत्पुत्रश्चत्वारः। प्रथम पुत्र चाऊ तस्य भार्ये द्वे प्रथम भार्या ········ ········तत्पुत्र चिरंजीव रिखभदास। द्वितीय भार्या मांडणदे। साह ग्यान द्वितीय पुत्र राऊ तृतीय पुत्र पदार्थ चतुर्थ पुत्र देऊ एतेषां मध्ये साधु श्री रिखभदासेन पुष्पांजलिव्रतोद्यापनार्थं एतद् ग्रंथं लिखापित।

११ क्रियाकलाप।

रचयिता अज्ञात भाषा प्राकृत संस्कृत। पत्र संख्या ८६ साइज ६॥×३॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३१-३५ अक्षर। प्रति प्राचीन है। मूल पाठ प्राकृत में है। संस्कृत में उसकी टीका है। ग्रन्थ ३६ दंडकों में विभक्त है। विषय-क्रियाकाण्ड।

लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १३६६ फाल्गुन सुदी ५ शुक्रवासरे श्री योगिनीपुरे सुरत्राण श्रीमन्महंमदसाहिराज्यप्रवर्त्तमाने काष्ठासंघे त्रयोदशविधवादित्रभट्टारकनयसेनः तस्य शिष्यः भट्टारक दुर्लभसेनः तस्याभ्यर्थनाय पुरतः सिदं प्रतिक... वृत्तं लिखपयित्वा दरवार चैत्यालयसमीपस्थित अग्रोतकान्वय परमश्रावक साणिया इति पूर्वपुरुषसंज्ञकेन पारशाम्नाय सा० पाणा भार्या हलो अनयो पुत्रौ द्विउप सा० पूना नामानो। सा० पूना भार्या धीसो अनयोः पुत्रेण दरवारचैत्यालये पंचम्युद्यापनाय सकलसंघसाकार्थं देवशास्त्रगुरुणामहामहं विधाय संघपूजावस्त्राहारादिभिः कृत्वा शास्त्रदानप्रस्तावे पंचपुस्तकानिदत्तानि सा० छाजू तस्य भार्या माल्हो प्रिथंतमेन········ ऽपुत्रेण भीमनाम्ना पंचम्युद्यापनंकृतं देवगुरुणां प्रसादात् शतायुभूयात् पंडित गंधर्वपुत्रेण बाहडदेवेन लिखितमिति शुभं।

१२ क्रियाकलाप स्तुति।

रचयिता आचार्य समन्त भद्र। भाषा प्राकृत संस्कृत। पत्र संख्या २०७। साइज १०॥×४॥ इञ्च

प्रत्येक पृष्ठ पर ९ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३-३६ अक्षर। टीकाकार श्री पंडित प्रभाचन्द्र। प्रति में मूलभाग कम है और टीका भाग अधिक है। प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट नहीं है।

संवत् १५७७ वर्षे वैशाख बुदी ४ शुक्रवासरे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खटकडिपुरे राव श्री राव नरवददेवराज्ये बघेरवालान्वये कोट्वागोत्रे सा० गणा तद् भार्या वाल्हू तत्पुत्रौ साह भीखू साह माधौ भीखू भार्या सीलव्रतसंयमगुणादिसंयुक्ता आल्ही तत्पुत्राः तोलू साह वोहिथ साह खेता नामानस्त्रयः। भोलू भार्या मदना वोहिथ भार्या राजो प्रथमा न्यासंगू तत्पुत्राः साह लाला जीणा चापा लाखा। लाला भार्या कान्हू तत्पुत्र उधरण। जीणा भार्या देउ तत्पुत्र नरसिंह। खेता भार्या करमैती एतैः शास्त्रं लिखाप्य सत्पात्राय मुनि माघनं दिने दत्तं।

१३ चन्द्रप्रभचरित्र।

रचयिता महाकवि यशःकीर्ति। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १२०। साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर। विषय--चरित्र।

मंगलाचरण—

नमिऊण विमलकेवलच्छी सव्वंगदिणपरिरंभं।
लोयालोयपयासं चंदप्पसामियं सिरसा ॥१॥
तिकालवट्टमाणे पंचवि परमेट्ठिए ति सुद्धोहं।
तह नमिऊण भणिस्सं चंदप्पह सामिणो चरियं ॥२॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

इयं सयलवि सुरवइ जिणसंथुइ परभत्तिभैयभरसत्ता।
पंचमकल्लणाहो सुरेख णिहाणाहो करिवि ठाणिसपत्ता॥
जं सुद्धु असुद्धउ गंथचारु जं सारु असारउ वहुपयारु।
तं जिणवाणी खमउ सव्वु महुकविगहिलहो विलमउ अगव्वु।
जे परमेसर जाणहि अपारु ते सोहिवि सोहिवि कुणहु सारु।
मुणिजणपंडिय मेल्लिवि कसाउ मोहतु मुणि य इह सुहपसाउ।
गुज्जरदेसहं उमत्तगामु तहिं छहासुरहुउ दोणणामु।
सिद्धउ तहो णंदणु भव्वबंधु जिणधम्मु भारि जं दिण्णु खंधु।
तहु सुउ जिट्ठउ वहुदेवुभव्वु जिं धम्मकज्जि विवकलिउ दव्वु।
तहु लहु जायउ सिरिकुमरसिंहु कलिकाल करिंदहो हणणसींहु।

तहों सुउ सजायउ सिद्धपालु, जिणपुज्जदाणु गुणगणरमालु ।
तहो उवरोहे इह कियउ गंथु, हउं ण मुणमि किं पिविसत्थ गंथु ।

घत्ता

जा चंद दिवायर सव्वविसायर जा कुल पव्वय भू वलउ ।
ता एहु पवट्टउ हियइं चट्टउ सरसइं देविहिं मुहि तिलउं ।

इय सिरिचंदप्पह महाकइजसकित्तिविरइए महाभव्वसिद्धपालसवणभूसणे चंदप्पहं सामि णिव्वाण-गमणो णाम एयारहमो संधी परिच्छेउ सम्मत्तो ।

संवत् १६०३ वर्षे शाके १४६८ पञ्चाब्दयो मध्ये प्रमाथिनाम संवत्सरे दक्षिणायने मासनौ वपरितौ महामांगल्य श्रावण मासे शुक्लपक्षे दशम्यांतिथौ शनिवारे घटी ८ परतपे का ११ दशम्यांतिथौ मूलनक्षत्रे घटी ३६ विकुंभनामयोगे घटी ६ परतप्रीत्यनामयोगे मध्याह्न वेलायां वंदावतीस्थानात् हाडाचौहाणान्वये राव श्री सूयमल तत्पुत्र रावश्री सुरभीताण राज्यप्रवर्त्तते जंबूद्वीपे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये तद्गच्छे तदाम्नाये तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्ट भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्म्मचन्द्र स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वयें जीवदयाव्रतपालणं साह श्री वोहीथा न्याती गंगवाल साह वोहिथ भार्या डोडी तयोपुत्र प्रथम जिनदास भार्या लेरी द्वितीय भार्या लाडी तृतीय भार्या गुजरी । द्वितीय साह भेल भार्या लहौकन तयोः पुत्रः प्रथम वदा द्वितीय भोज्या । गंगवाल साह वोहिथ तस्य गृहे भार्या गेंडी तयोः पुत्रः साह जिनदास भार्या गुजरी तयोः पुत्र प्रथम नानीगा भार्या नारंगदे द्वितीय जालप कर्मक्षयार्थं लिखापितं बहु गुजरी ।

प्रति नं० २ । पत्र संख्या ११७ । साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२-३६ अक्षर । अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

संवत् १५८३ वर्षे आषाढ सुदी ३ बुधवासरे पुष्य नक्षत्रे राणा श्री संग्रामराज्ये चंपावतीनगरे रावश्री रामचंद्रप्रतापे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि-देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा स्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र स्तदुपदेशात् खंडेलवालान्वये साह गोत्रे सा० काधिल भार्या कवलदे तत्पुत्रा सा० गूजर द्वितीय सा० राधा तृतीय सा० वाछा । साह राधौ भार्या खणादे तत्पुत्राः चत्वारः प्रथम साह रामदास तद्भार्या रावणादे द्वि० साह धू भार्या हरिषमदे तत्पुत्रौ द्वौ सा० पासा भार्या पाटमदे द्वितीय गूजरि तत्पुत्र हरराज सा० आसा भार्या अहंकारदे तृतीय साह दासा तद्भार्या उदाडमदे तत्पुत्रौ प्रथम भीवसी तद्भार्या भावलदे तत्पुत्रौ नानू फाडू । द्वितीय धर्ममी तद्भार्या धारादे । चतुर्थ सा० घाटम तद्भार्या घाटमदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० देवसी तद्भार्या देवलदे.......... ।

१४ जम्बूस्वामि चरित्र।

रचयिता श्री वीर। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ७६। साइज ११×४।। इञ्च प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-३६ अक्षर। ६२ वां पृष्ठ नहीं है। रचना संवत् १०७६ लिपि संवत् १५१६। विषय—अन्तिम केवली श्री जम्बू स्वामी के जीवन चरित्र का वर्णन।

मंगलाचरण—

विजयंतु वीरचरणाणिं चंपि मंदिरंमि थरहरिए।
कणसु छणंततो ए सुनरणि लगंत विंदु छंकारा॥ १॥

ग्रन्थ समाप्ति

इय जंबूसामिचरिए सिंगारवीरे महाकव्वे महाकइदेवयत्तसुय वीर विरइय बारहश्रणुपेहाउ भावणाए विज्जुचरस्स सव्वह सिद्धिगमणं नाम एयारसमोसंघी परिछेउ सम्मतो।

प्रशस्ति—

वीरसाणसयचउक्कं सत्तरिजुत्त जिणंदवीरस्स।
णिव्वाणा उववणो विक्कमकालस्स उप्पत्ती॥ १॥
विक्कमणिवकालाउ छाहत्तरदससए सु वरिसाणं।
माहम्मि सुद्धपक्खे दसम्मी दिवसम्मी संतम्मि॥ २॥
सुणियं आयरियपरं पाराए वीरेण वीरणिद्दिट्ठं।
बहुलत्थपसत्थपयं पवरमिणं चरिय मुद्धरियं॥ ३॥
इत्थेवदिणेमेहवणपट्टणे वड्ढमाणजिण पडिमा।
तेणावि महाकइणा वीरेण पयट्ठिया पवरा॥ ४॥
बहुरायकज्जधम्मत्थ कामगोट्ठीविहत्तसमयस्स।
वीरस्स चरियकरणे इक्को संवत्सरो लग्गो॥ ५॥
जस्स कयदेवयत्तो जणणोसच्चरियलद्धमाहप्पो।
सुहसीलसुद्धवंसो जणणी सिरिसंतुआभणिया॥ ६॥
जस्सय पसण्णवयणा लहुणो सुमइससहोयरातिण्णि।
सीहल्ल लखणंका जसइणामेत्तिविक्खाया॥ ७॥
जाया जस्स मणिट्ठा जिणवइ पोमावइ पुणोवीया।
लीलावइ तिंतईया पच्छिमभज्जा जयादेवी॥ ८॥
पढमकलत्तं गरुहो सत्ताण कयत्तविडविपारो हो।
विणयगुणमणिणिहाणो तणउ तह णेमिचंदोत्ति॥ ६॥
सो जयउ कयवीरो, वीरजिणंदस्स कारियं जेण।
पाहाणमयं भवणं पियरुद्देसेण मेहवणे॥ १०॥

अह जयउ जसणिवासो   जसणाउ पंडिउत्ति विक्खाउ ।
वीरजिणालयसरिसं   चरियमिं णं कारियं जेण ॥ ११ ॥

लिपिकार की प्रशस्ति—

मन्ये वयं पुण्यपुरीव भाति   सांडु डुणोति प्रकटी वभूव ।
प्रोत्तुं गतन्मंडनचैत्यगेहाः   सोपानवद्दश्यति नाकलोके ॥ १ ॥
पुरस्सरा रामजलत्रकूपा   हर्म्याणि तत्रास्ति अतीवरम्याः ।
दृश्यंति लोकार्धनपुण्यभाजा   ददाति दानस्य विशालशाला ॥ २ ॥
श्रीविक्रमार्क्केन गते शताब्दे   षडक पंचक सुमार्गशीर्षे ।
त्रयोदशीया तिथि सर्वशुद्धा   श्री जम्बु स्वामीति च पुस्तकोऽयं ॥ ३ ॥

१५. जिनदत्त चरित्र ।

रचयिता पंडित लाखू । भाषा अपभ्रंश । पत्र सख्या १६७ । साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४--३८ अक्षर । रचना संवत् १२७५ लिपि संवत् १६११ ।

मंगलाचरण—

सप्पयसरकलहंसहो हियकलहंसहो—
कलहंसहो सेयंसवहा ।
भणमि सुअणकलहंसहो रयकलहंसहो—
णावेवि जिणहो जिणयत्तकहा ॥ १ ॥

ग्रन्थ समाप्ति

इय जिणयत्तचरित्ति धम्मत्थकाममोक्खवण्णणए प्मावसुपविति सगुणसिरिसाहुलसुवलक्खण विरइए भव्वसिरि सिरिहरस्सणामंकिए जिणयत्तजइवरस सग्गिगमणो णाम एयारहमो परिच्छेउ सम्मत्तो ।

प्रशस्ति—

इह होंतउ आसिविसालवुद्धि—
पुव्विजय जिणवरु तिरयण विसुद्धि ।
जायसहो वंसउ वयरणसिंधु   गुणगरुवा मलमाणिक्कसिंधु ।
जायव णरणाहहो कोसवालु   जसरसमुछिय दिचक्कवालु ।
जसवालु तासु सुउ मइपगलु   लाहडु लडहउ लक्खणालु ।
जण जाणिय जिणमइ दुवइतासु   ताह गय सत्तपमुक्कतासु ।
पढमउ अल्हणु सुहि सत्थसूरु,   परिवारणारहपरमासपूरु ॥

पवयणवयणामय पाणपोट्ठु, अवमेयमहामइदलियदुट्ठु।
जिणयहवणच्चण पूयणमयत्तु, अहियाणियणिहि लवियणायवित्तु।
मेच्छत्तछत्तछेयणछइल्लु गंभीरपरमणिमयमइल्लु ।
जिणपरिभावणछच्छल्लमल्लु सम्मत्ता इरणामजमहल्लु ॥
किल्लिवेल्लिणिल्लूरणिल्लु, भायरसुवलक्खणणेह गिल्लु।
परिवारभारउद्धरणधीरु, जिणगन्धवारिपावणसरीरु॥
पविहियतियालवेदणविसुद्धि, सुवसत्थभावभावणअमुद्धु।
बहुसेवयणारसिंघट्टपाय, वंदीणदीणदिण्णचाय॥
भोयणिहियपोसियसूरिवंदु, सउलामरवहकयचंदुवंदु।

घत्ता

तहो सोहणहो रसालहो भोयपरालहो—
कलकणिट्ठच्छसहोयर।
छहविमहामइ सोहणरिउवल सोहण—
गुणरोहणविहियायर॥ १॥

णाहुलु साहुलु सोहणमइल्लु, तह रयणु मयणु सतणु जिच्छइल्लु।
छहमहिभायर अल्हणहोभत्त, छहमविहो माणासत्तचित्त।
छहमवितहो पंयपयरुहदुरेह, छहमयणोवयवामदेह।
साहू जहु सुपियपियममणुज्ज, णामें जयताकयणिजयकज्ज।
ताह जिणंदणु लक्खणु सलक्खु, लक्खण लक्खिउ सयदलदलक्खु।
विलसियविलासरसगलियगव्व, ते तिहुअण गरि णिवसंतिसव्व।
सो तिहुवणगिरिभग्गउ जवेण, घित्तउ वलेण मिच्छाहि वेण।
लक्खणु सव्वाउसमाणुसाउ, विच्छोयउ विहिणा जणियराउ।
सोइत्थ तत्थहिंडंतु पत्त, पुरे विल्लरामि लक्खणु सुपत्तु।
लोक्खणहो समउ सो करइ पणउ, विरदा णंदणु सम्माणघणउ।
दिणि दिणि तं अइसय वुच्छिजंतु, तहि जिसरोहु णिब्भरुमहंतु।
असरालवारिपोसियसरीरु, भद्दवए पवुट्ठए मेहुणीरु।
तइ णहाउ णिब्भरु तुसारु, जं एयारहमए मासिफारु।
जं जिट्ठइ णिट्ठुरु तवइ सूरु, खर कर पयंडवंम्हडपूरु।
चिरु वट्टइ भोकह चित्तु तं जि, सुवणहो सुवणेसहु णेहुअंजि।

घत्ता

जह अहिणवघणादंसणो तावविहंसणो चंद कवउगंहुल्लियइ।
सिरिहरु सिरिसाहारउ रयपरिहारउ लक्खण ग्गेहरसुल्लियइ ॥२॥
णत्ररेक्क दिणम्मि महाणुभाउ, आभत्थिविमलहोधत्थपाउ।
पभणिउ भो बंधव अइपवित्त, विरइव्वउ जिणयत्तहो चरित्त।
तहो वयणे मइ विरइउ सवोज्ज, वणियाहो ववसायउ मणोज्ज।
पद्धडिया बंधे पायडत्थु, अइहि जाणिज्जसु सुप्पसत्थु।
सयलइ पद्धडियइ एइहुंति, सत्तरिणत्रउ दसयडुणिण संति।
एयइ गंथइ सहसइ वयारि, परिमाणु मुणिहु अक्खर वियारि।
हउ मुक्खु णिरक्खरु खलियलज्ज, ण वि याणमिहे यहेउकज्ज।
पय बंधणि बंधुण मुणमिकिंपि, मइ विरइउ संपइ चरिउ तंपि।
परजिण णाहहो भत्तीकएण, अवियलचलकलणलणएण।
इहु जइविच्छंदवइ हीणुतोवि, महु मुक्खहु दोसु मगहउ कोवि।
करमउ लिविपयडिवि णेह जोउ, अब्भत्थितुसिमइ णिहिलुलोउ।
पवयण गुणागरु अउ गलियपाउ, चउवणणसंघु जगि बुड्ढिजाउ।
अहिवंदउ जिणणाहह पयाइ, संसार सरणि संपय गयाइ।
जिण समइ अगव्वह भव्वयाह, दुक्खक्खउ होउजि सव्वयाह।
थिय धम्महो कलिमलणासणासु, कल्लाणु हउ जिण सासणासु।
परिधविय चराचर जियहदेहु, असगल वारि वुट्ठउ सुमेहु।
णिस्सेस सेस्स संपत्ति होउ, णिरुवदउ सुहु अणु हवउ लोउ।
परि पसरउ मंगलुमोयपूरु, धरि घरि वज्जउ आणंद तूरु।
गडुलिय मणडुवइणविंदु, णच्चउ णिदलिय दुहाणकंदु।
चिरु अहिणदउ विरदा तणुउ, सिरिहरु सिरि विसइणि गव्वभूउ।
कुल गिरि गिरि वइ गहचंदसूर, सुरसरि सिरि सायरवारिपूर।
जिणधम्म पयट्टइ धरणिजाम, परिवड्ढउ सिरि हरवसुताव।
इणहं चरित्तु जो कोवि भव्वु, परिपढइ पढावइ गलिय गव्वु।
जो लिहइ लिहावइ परमु मुणइ, संभावइ दावइ, कहइ सुणइ।
जो देइ दिवावइ मुणिवराह, जइ तह सम्मइ पंडियपराहं।
सो चक्क वट्टिपउ आइकरिवि, पालिवि सक्कत्तणि लद्धि धरिवि।

अणुहुं जिवि संसारिय सुहाइ, सव्वइं दिव्वइं पयजिय दुहाइ ।
उव्वहिं यगहिल सुह रस पयासि, पत्थइ गत्थइ णिव्वुइ णिवासि ।

घत्ता

बारहसय सत्तरय पंचोयत्तरं, विक्कम कालि विइत्तउ ।
पढम पक्खि रवि वारइ छट्ठि सहारइ, पूसमासें सम्मत्तिउ ॥ ३ ॥

जो भुवणसरण समसरणसामिणि, सामि सालसुविसाल ।
सिरिहरहोतेमहंता अरहंतादिं तु कुल्लाणं ॥ १ ॥
जे सुपसिद्ध सुद्धिरिद्धि या बुद्धिबद्धगुणद्धारा ।
वर-धीरधम्मधरणाते सिद्धा सिद्धिंतहोदिंतु ॥ २ ॥
जसरसमंडकोवडदंडउद्दंडकंडखंडणया ।
णिच्चइ गुणकरंडातिसूरिदिंतुस्ससुहं ॥ ३ ॥
णिस्सारसारसंसारसायरेतरणताणंतरंडा ।
ते तस्स अहियंमोहावोहद्दींदितुवज्माया ॥ ४ ॥
णट्ठट्ठदुट्ठमयकट्ठभट्ठायातिट्ठगंठिणिट्ठवणा ।
णिट्ठाएसिट्ठियंगा ते साहू दिंतु मंगलयं ॥ ५ ॥
दुद्धमिंदियकम्महियसम्मसामयमयणिम्महणहरिणाउसिवमग्गदावतु ।
संसारडइणिविडविडवियडतोडणसपावउ ।
सम्मदंसणणाणणिरु सम्मच्चरिदविसालु ।
तरयणत्तउ सिरिहरहो अहिरक्खउ चिरुकालु ॥ ६ ॥
इति पंडित लाखु विरचित जिनदत्तशास्त्रं समाप्तं ।

संवत् १६११ चैत्र बुदि ११ सोमवासरं श्रवणनक्षत्रे सिद्धि नामा योगे आम्रगढमहादुर्गे श्री नेमीश्वर चैत्यालये राज श्री भारमल राज्य प्रवर्तमाने श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे नंद्याम्नाये श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये·········शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्य ब्रह्म वेगो इदं शास्त्रं भीवीशाय पठनार्थं दत्तं ।

१६. धनकुमारचरित्र ।

रचिता श्री पं० रइधू । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ५१. साइज ६॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में २८-३२ अक्षर । प्रति अस्पष्ट है । लिपि संवत् १६३६, ग्रन्थ कर्त्ता ने प्रारम्भ और अन्त दोनों स्थान पर प्रशस्ति लिखी है ।

मंगलाचरण—

पणविवि सिरिवीरहो गाणसीरहो कमजुउ धणकुमारचरिउ।
अक्खमि सुपसिधउ गुणगणरिद्धउ धम्मरसायणरसभरिउ।

ग्रन्थ के प्रारम्भ में कवि ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है—

× × × × ×

तहं सुधम्मपमुहाइं जईसर, पणविवि भत्तिएवय भारधर।
ताहं अणुक्कमि सूरि पहाणउं, सहसकित्ति तववयगुणठाणउं।
तास पट्टिणि रुद्दगुणभायणु, जो भाविउ मणिणाणरसायणु।
सिरि गुणकित्ति विवुहचिंतामणि, पणविवि तिरयण सुद्धिए वहुगुण।

घत्ता

इय जिणमुणिवरविदु माइविमणवयकाएं।
पुणु पयडमि जिणसथु गुरगुणकित्ति पसाएं॥ १॥

अणहिदिणिजिणगुणसुविसालें, विहसि विजंपिउ वुद्धि विसालें।
भोसहत्थ रयणरयणायर, मित्थामयतमणासदिवायर।
रइधू पंडिय सुणिणिम्मलयर, वुहयण जणमण रंजण कोत्थर।
जहं पइं पास जिणंदह केरउ, चरिउ रइउ वहुसुक्खजणेरउ।
पुणु वलहद्द पुराणु सुहंकरु, णेमि जिणंद चरिउ विरयउ वरु।
साट्टलसाहु णिमित्तें सुन्दरु, जहं पयं वड्ढमाण भासिउ वरु।
तहिं सिरि धणकुमार पुण्णहंफलु, महुवयणेंपयडहिपणुणयमलु।
ता गुरु भणियालावसु णेप्पिणु, रयधू वहु जंपइ पणवेप्पिणु।

घत्ता

तुम्हहं आएसें कव्वु विसेसें करमिण संसउ धरमि मणि।
परकारण वट्टइ चित्तिपवट्टइ सोयोरुणकुविणियमिजिणि॥ २॥

तं सुणि विभणइ गुणकित्ति एम, भो पंडिय तुहंणउं सुणहिं केम।
गोवागिरि णियडपएसि धम्मु, पुरुपाल संडुणोमेंणमणु।
इक्खाइ वंसि तहि चिरुवणेंदु, अगणिय आयापणवियजिणेंदु।
जसुवालु जसायरु गुणमहंतु, करमू पटवारि जणि महंतु।
तहु णंदणु णिरुवमगुणणिवासु, अहणिसु जो अच्चइ जिणवरासु।
चउविहसंघविणयाणुरत्तु, सिरि पूनउ साहु सधम्मिवत्तु।

तहु भज्जा सील गुणस्स खाणि, सव्वहियणाई तिथयरवाणि ।
तिहुवणि सिरि मुणियणि पयविणीय, सिरि हरसिरिजिमरो हेवहु नीय ।
एयहँ सजणिया चारिपुत्त, लक्खण लक्खंकय विणयजुत्त ।
णियकुलमयंकु पुणु पढमु ताहं, भुल्लणुजिमाहु पयडउ जणाहं ।
वीयउ पुणु कुहयणजणिव सु, सिरि सूले णामे जसपयासु ।
तइयउ णंदणु मयणावयंरु, सिरि कामराजु णामेण साहु ।
चउथेउ णंदणु आसणिवासु, आसलु णामें सो कुल पयासु ।
एयहिं जो पढमउ गुणगरिट्ठु, सिरि भुल्लणुणामें साहु सिट्ठु ।

घत्ता

आरउणपुरवरे सुईलत्थीघरे, तहिं पहुवइरिणिकंदणु ।
तोमर कुलमंडणु अरिसिरिखंडणु, सिरि गणेस णिवणंदणु ॥ ३ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

णंदउ जिणसासणु दुरियविणासणु सुहसयसासणु गुणभरिउ ।
श्रीरु सत्थसमिथउ वएणहिंसुयउ णंदउ महियलि इहु चरिउ ॥ ४ ॥

णंदउ महिवइ णाएपवीणु, णंदउ सज्जणयणु भरियदीणु ।
णंदउ सुधम्मु सिवसोखयारि, णंदहु जइवरवयभारधारि ।
इक्खायवंसमंडणमयंकु, सिरि पुण्णपालसुउ विगयसंकु ।
णंदउ भुल्लणु णामेण साहु, णिउरादिवल्लहु दीहवाहु ।
महुहोज्जउ विमलसमाहिवोहि, जादुग्गइ गमणहु पाहणिरोहि ।
णियकालें वरसउ मेहमाल, हरिगिहि समुहु मंगल वमाल ।
वहु अथसमिद्धउ चरिउ एहु, परिपुण्णकरिविसवेयगेहु ।
पडिएणससाप्पिउ पावणासु, भुल्लणहुहत्थि पयडियपयासु ।
तेण जिणिय सीसिचडाविऊण, पुणु पंडिउ पुज्जिउ पणमिऊण ॥
लेहाविविवहुपुथयजितेण, महिविथारिउ पुणउ सुवेण ।

घत्ता

गुणमुणिहुं पसाएं पयडियराएं सिद्धउ कव्वर सायरणु ।
सोवाइ जंतउ अथ संयंतउ, वट्टउ सुहसयभायणु ॥ ४ ॥

जिणगुणगणराएं वज्जियमाएं, चरिउ रुराविउ एहुवरु ।
तहु-वंसपसिद्धउ सुहजिणरिद्धउ, पयडमि जणमणसुक्खकरु ॥६।

धणकणजणपुण्णउ सुहणिवासु, पुरुपालिसंडु अरिविहियतासु ।
तहिं वणिवरु जिणपयचंचरीउ, भवभमणहु जा मुणि णच्च भीउ
कम्मू पटवारिउ गुणगरिट्ठ ; सो येसुणाइं मुणि दाण इट्ठ ।
तहि भज्जाहवी रुव सार; .... ।
तुहं नंदणाह णवणं णवपयत्थ, गोवद्धनाइ मणि मुणियसत्थ ।
उद्धरणु पढमु उद्धरियदीणु, साधारणु सावयधम्मिलीणु ।
तीयउ खम्हउ खमगुण महंतु, तुरियउ पुण्णउ पुण्णमहतु ।
मलमुक्कमल्लिहिं पंचमउवुत्त, जो परियणाइं अणुमुपवित्तु ।
रयणत्तयं मत्तउ रयणु साहु; हरिमुत्ति हरु पुणु दीहवाहु ।
अट्ठमउ थिरराजु गुणोहट्ठाणु; धूर्वाल नवमव चुज्झिय पमाणु ।
एयहं जिमज्झि चउथउ जिवुत्तु, सिरि पुण्णपालु मुणिमाणिय सुत

घत्ता

तहु पढमी भामिणि कुलगिह सामिणि, तिहुवण सिरि णामें भणिया ।
वीई पुणु मणसिरि णं पीयडसिरि, अहपवित्ति रुवहु भणिया ॥ २
णंदण वयारि तहु विणयवंत, ण णंतचउक्कजिजणिसहतं ।
ताहं जिगुरुमनंतणिअभुल्लु, सिरिमुल्लणु णामा सोजि अतुल्लु ।
तहु भ आचउ विहपत्त भत्त, णिउर दे न माणिगह महंत ।
बीयउ णंदणु सूलेसुवाणि, तहु भज्जमहासिरि णेह खाणि ।
तहु तिण्णि पुत्तकुल भवणदीव, णरयण इंह वणणीय कामदिउ ।
अमरदिउ लाडमखु, णरयणत्तउ जायउ पयखु ।
तीयउ णंदणु पुणु कामराउ, कल्लाण सिरी भज्जासराउ ।
चउत्थउसुउ आसलु विगयपाउ, परिवारु पहु णंदउ सराउ ।

घत्ता

एयहं सव्वहं पुणु पयडिय वहुगुणु णंदउ मुल्लणु गुणभरिउ ।
धणयत्तकुमारहु सयफलसारहु कारिउ उवइहु चरिउ ।

इय सिरिधणकुमारचरिए कयसुअभावण फलेण विप्फुरिए सिरिपंडियरइधू विरइए सिरि पुन्नपाल सुत साधु श्री मुल्लण णामंकिय भव्वजीवाणामणिए धणकुमार णिव्वाणगमणंवण्णणो णाम चउथी संघो परिछेउ सम्मत्तो । इति श्री धन्कुमार चरित्रं समाप्त । मुनि श्री भारमल्ल लिखितं ।

संवत् १६३६ वर्षे फाल्गुन मासे शुक्लपक्षे सप्तम्यां तिथौ अर्कवासरे श्री जिनचैत्यालयादि मूलनायक श्री चन्द्रप्रभस्वामी विराजमाने मारुवाड देशे श्री मेदनीपुरवरे अज्ञानांतमरदिनकर विधुरिजिन-शरणसज्जनानद नृपवर लक्ष्मीवल्लभे राज श्री पातिसाह श्री अकब्बर जलालदीमहंमदराज्ये। पायंदामहं-मदखानराज्ये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगछे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये उभयभाषाप्रवीण भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे सिद्धान्तजलसमुद्रविवेककलाकमलिनीविकाशनमार्त्तण्ड भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे विद्याप्रधानचारुचारित्रोद्वहनभट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे वादीभकुंभविदारणैक केशरी भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा स्तत् द्वितीय शिष्य दुर्द्धरपंचमहाव्रतधारणैकप्रचंड श्रीमत् मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्ति तत् शिष्य पंचाचारचरणचतुरान् भेदाभेदरत्नत्रय आराधकान् स्मरसारंगविदारणैकमृगेंद्रान् श्रीमत् भुवनकीर्त्ति तस्य शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मकीर्त्ति भव्यकुमुदविकाशनैक निशाकर द्वितीय शिष्य मंडलाचार्य श्री विशालकीर्तिः तस्य शिष्य दुर्द्धरपंचमहाव्रतधारणैक प्रचंड श्रीमत् मंडलाचार्य श्री लक्ष्मीचन्द्र स्तदाम्नाये खंडेलवालवंशे पहाड्योगोत्रे पूजापुरन्दर साह फाल्हा भार्या फूलमदे पुत्र चत्वारि प्रथम पुत्र साह वीहड द्वितीय पुत्र साह जोधा तृतीय पुत्र साह मन्ना चतुर्थ पुत्र साह मेहा तस्य तृतीय पुत्रः सीलव्रतावगाढ परिपालान् श्रीमत् सुदर्शनावतार साह श्री लूंणा तस्य भार्या लूणांदे तस्य पुत्र साह श्रीवतं भार्या सुहलालदे तस्य पुत्र द्वितीय साह चि० वीदा द्वितीयपुत्र चिरंजीव धनराजेन साह मन्ना भार्या मयणश्री पुत्र साह श्री लूंणाकेन पुण्यार्थेन पुस्तकं लिप कारायित बाई श्री करामाई केन घटापितं।

१७. धर्मपरीक्षा।

रचयिता पं० हरिषेण। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ८८. साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०—३५ अक्षर। विषय—धार्मिक। प्रथम पृष्ठ नहीं है।

प्रारम्भिक पाठ—

सिद्धि पुरंधिहिं कंतु, सुद्धें तणु मणवयणें।
भत्तिए जिणु पणवेवि, चिंतिउ बुहहरिसेणें॥ १॥
मणुए जम्मि बुद्धिए किं किज्जइ, मणहरजाइ[1] कव्वुणरइज्जइ।
तं करंत अवियाणिय आरिस, हासुलहहि भडरणिगय पोरिस।
चउमुह कव्वु विरयणि सयंभुवि, पुप्फयंतु अण्णाणु णिसुंभिवि।
तिण्णिवि जोय जेण तं सीसइ, चउमुह मुहथियताव सरासइ।
ते एवं विहहउ जडमाणउ, तह छंदालंकार विहीणउ।
कव्वुकरंतु केम णवि लज्जमि, तह विसेस पियजणकिह रंजमि।
तो वि जिणिंद[2] धम्म[3] अणुरायइ, बुहसिरिसिद्धसेणसुपसाइ।
करमि सइं जिणलिणिदलथिउजलु, अणुहरेइ णिरुवमु मुत्ताहलु।

[1] सुलहहिरणे [2] सयं [3] जेन

घत्ता

जा जय रामें आसि, विरइय गाहपबंधि ।
साहम्मि धम्मपरिक्ख, सापद्धडिया बंधि ॥ १ ॥

अन्तिम भाग तथा प्रशस्ति—

घत्ता

सिद्धसेणपयवंदहि दुक्किउ णिंदहि हरिसेणु णवंता ।
तहिथियतेखगसहयर कयधम्मायर विविह सुहइं पावंता ।

इय मेवाडदेसि जणसंकुल, सिरिउजपुर णिग्गयधक्कडकुलि ।
[१]
गवकरिंदकुंभदारणहरि, जाउ कलाहि कुसलु णामेंहरि ।
तासु पुत्त परणारिसहोयरु, गुणगणणिहि कुलगयणदिवायरु ।
गोवद्धणु णामें उप्पण्णउं, जो सम्मत्तरयणसंपुण्णउं ।
[२]
तहो गोवद्धणासु पियगुणवइ, जो जिणवरमुणिवरपियगुणवइ ।
ताइं जणिउं हरिसेण णामें सुउ, जो संजाउ विवुह कइ विस्सुउ ।
सिरि चित्तउडु चएवि अचलउरहो, गउणियकज्जें जिणहर पउरहो ।
तहि छंदालंकारपसाहिय, धम्मपरिक्ख एहतें साहिय ।
जेमज्झत्थमणुय आयण्णहि, ते मिच्छत्तभाउ अवगण्णहि ।
[३]
ते सम्मत्त जेणमलु खिज्जइ, केवलणाणु णाणु उप्पजइ ।

घत्ता

तहो पुण केवलणाणहो णेयपमाणहो, जीवपएसहिं सुहडिउ ।
[४]
वाहाहिउ अणंतउ अइसयवंतउ मोक्खसोक्खु फलु पयडिउ ।

[५] [६]
विक्कम णिवपरिवत्तियकालइ, ववगयवरिससहसचउतालइ ।
इय उप्पण्णु भवियजण सहयरु, डंभरहियधम्मासयसायरु ।

१ कुलीहि २ गुणवइ ३ तेण ४ वाहारहिउ ५ परिवत्तिए ६ गयएवरिसएहसेहिंभचालए

ते गांदहु जे भत्तियभावहिं,[1] तेगांदहुं जे लहहि लहावहि।
ते गािय परदुह दूरि लुढावहि,[2] जो पुगु केविहु पढहि पढावहि।
ताण गिरंतर सोक्खइ सुहइहि, एयहु अत्थुकेविजे पयडहिं।
जे गिसुणेविपरिक्खहि भत्तिए, ते हुं जहिं गिम्मल मइ सत्तिए।[3]
सयल पाणि वग्गहो दुहुहिल्लउ, सोसमिद्धिए महिसोहिल्लउ।
परहिय करणि बिहंडिय अहंहो, होउ जिणत्तगु चउविह संवहो।
पयडिय पहुपयाव आरिवारिं,[4] गांदउ भुवइ सहो परिवारिं।
धम्मपवत्तणेणगांदुहहारें, गांदहु पयवहु अइववहारें।

घत्ता

[5] संखदुसहमुसयाहिउ संदरसयाहिउ, इचकहरयगु अमाव्वहं।
जाहरिसेणधराधर ववहि-गयगुधर, तामजगउं सुहु भव्वहं॥

इय धम्मपरिक्खाए चउवग्गाहिट्ठियाए वुह हरिसेण कयाए एयारसमो संधि परिच्छेद सम्मत्तो।

१८. नागकुमार चरित्र।

रचयिता श्री महाकवि पुष्पदंत। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ७०, साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३-३७ अक्षर। लिपि संवत् १६१२.

मंगलाचरण—

पणवेंप्पिणु भावें पंचगुरु, कलिमलवज्जिउ गुणभरिउ।
आहासमि सुयपंचमिहिं फलु, गायकुमारचारुचरिउ॥ ध्रुवकं॥

महाकवि ने प्रारम्भ में अपना परिचय इस प्रकार लिखा है—

घत्ता

सिरिकण्हरायकरयलि णिहियां, असिजलवाहिणि दुग्गयरे।
धवलहरसिहरहयमेहउले, पविउल मण्णखेडणयरे॥ १॥

१ दावहि २ हरे ३ जै सुं ४ आरिवारें ५ संखए दुमहसुसेहिउ इय कयरयगु अगव्वह। जो हरिसेण-धराप्परउ यहिगयणिवर तामजगहु सुहु भव्वहं।

मुद्धाई केसवभट्टपुत्त, कासवरिसिगोत्ति विसालचित्तु ।
णण्णहु मंदिरि णिवसंतु संतु, अहिमाणमेरु गुणगणमहंतु ।
पत्थिउ महिपणविथसीसएण, विणएण महोवहिसीसएण ।
दूरुज्झियदुक्कियमोहणेण, गुणधम्में अवरु वि सोहणेण ।
भो पुप्फयंत पडिवण्णपणय. मुद्धाई केसवभट्टतणय ।
तुहुं वाएसरि देवीणिकेउ, तुहुं अम्हहं पुण्णणिबंधहेउ ।
तुहुं भव्वजीवपंकरुहभाणु, पइंधणु मणिमणिणउ तिणसमाणु ।
गुणवंतभत्त तुहु विणयगम्मु, उज्झायपयासहि परमधम्मु ।

घत्ता

ओलग्गिउ भावें दिण्ण जि दिणे, णियमयपंकय थिरु थविउ ।
कइ कव्वपिसल्लउ जसधवलु, सिसुजुयलेण पविण्णविउ ॥ २ ॥
भणु भणु सिरिपंचमि फलु गहीरु, आयण्णमि णायकुमारवीरु ।
ता वल्लहरायमहंतएण, कलिविलसिय दुरियकयंतएण ।
कुंडिल्लगोत्तणहससहरेण, दालिद्दकंदकंदलहरेण ।
वरसच्चरयणरयणायरेण, लच्छीपोमिणिमणिसरहरेण ।
पसरंत किंत्ति वहुकुलहरेण, विच्छिण्णसरासइबंधवेण ।
वहुदीणलोयपूरियधणेण. मई पसरपरिज्जयपरवलेण ।
णियपइविइण्णचिंतियफलेण, छणइंदबिंवसण्णिहमुहेण ।
कुंदव्व भरहहियतणुरुहेण, ... ।
णण्णेण पउत्त महाणुभाव, भो कुसुमदसणहयवसणताव ।
करिकव्वु मणोहरु सुयहि तद्दु, जिणधम्मकज्जिमाहोहि मंदु ।
आयण्णमिहउ भणु णिम्मलाइं, सियपंचमि उव वासहु फलाइ ।
णण्णेण पवोल्लिउ एम जाम, णाइल्लइ सीलई एम ताम ।

घत्ता

कइ भणिउ समंजसु जसविमलु, णण्णु जि अण्णु ण घरसिरिहे ।
तहुं केरउ णामु महग्घयरु, देविहि णायउ सुरगिरिहिं ।
तं तुहुं मि चहावहि णियकव्वि, दिहि होउ णरिण आसण्णभव्वि ।
बुद्धीए णण्णु सुरगुरु ण भति, पर णण्णहु णउ वइरिय जिणंति ।

पहु भत्तिए हरणु वसुमाणु दिट्ठु, पर णएणु ण वाणरु णरु विसिट्ठु ।
गंगेउ सच्चें जणियतुट्ठि, पर णएणु ण वइरिहिं देउ पुट्ठि ।
धम्मेण जु हिट्ठिलु धम्मपुत्तु, पर णएणु पवासदुहिण चत्तु ।
चाएण कण्णु जणदिण्णचाउ, पर णएणु न बंधुहु देइ घाउ ।
कंतीए मणोहरु छणससंकु, पर णएहु णउ दीसइ कलंकु ।
गरुयत्ति महिसुविसुद्धचरिउ, पर णएणु ण किडिदाढइं धरिउ ।
सुथरत्तें मेरु भणंति जोइ, पर णएणु पुरिसु पत्थरु ण होइ ।
सायरु वि गहीरु कयायरेहिं, पर णएणु ण मंथिउ सुरवरेहिं ।

घत्ता

जो वण्णिउं वण्णिउं वरकइहिं, भावे णियमणि भावहिं ।
तहु णएणहु केरउ णामु तुहुं, सुललियकव्वि चडावहि ॥ ४ ॥
णिच्चेलत्तणु केसालुंचणु, णिच्चणमेज्जादेहाउंचणु ।
ण्हाणविवज्जणु दंताधोवणु, कालइ णीरसु परवसु भोयणु ॥
धरणिसयणु रइरससंकोयणु, दूसहदसमसयमुहविंधणु ।
पिसुणाकोसणु ताडणु बंधणु, चंडायवदलकंपवणाइं ॥
धाराहरजलधारासवणइ, सिसिरोसाकणहरमरु वेयइं ।
हिमपडणाइं णिट्ठुतणु तेयइं, उन्हइ सोसियंगरसभेयइं ॥
वणतरुणिहसण सिहि सिहव जणाइं, गुहगयभीमोयरसहवसणाइं ।
कंठोलंबियविसहरचलणाइं, सीहावग्घजीहादलघुलणाइं ॥
कोलघोरघोणाणिल्लुणणाइं, संवरगयगंडयकंडयकंडुयणाइं ।
एव माइदुक्खाइं सहेप्पिणु, रण्णिवसेप्पणु भिक्खचरेप्पिणु ।
सत्तु वि मित्तु वि मरिसु गणेप्पिणु, मिउ भुंजेप्पिणु णिंदा जणेप्पिणु ।
भोयभुयंगच्छिवउ सुमरेप्पिणु, मणिजगभंगुरत्तु भावेप्पिणु ।
सुक्कज्झाणु मणि आऊरेप्पिणु, मोहमहारि राउ मिल्लेप्पिणु ॥
कम्मकसायराय ताडेप्पिणु, दुढकम्मट्ठगंठि मिल्लेप्पिणु ।
जुत्तायारु तिगुत्तिहिं गुत्तउ, चउहु मि तेहिं रिसिहि संजुत्तउ ॥

घत्ता

झत्ति अणंगु अणंगु हुउ, पत्तउ मोक्खु अणंगवियारउ ।
पुप्फयंतसुरणमियपहु, पसियउ णायकुमारु भडारउ ॥

इय णायकुमारचारुचरिए णण्णणामंकिए महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे सिरिणायकुमार-वालमहावाल छेयाभेयमोक्खगमणं णाम णवमो संधी परिछेउ समत्तो ।

स्वस्ति संवत् १६१२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ५ शनिवारे श्री आदिनाथचैत्यालये तक्षकगढमहादुर्गे महाराजाधिराज राउश्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचंद्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचंद्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सावडा गोत्रे सा० घीडा तद्भार्या विजयश्री तत्पुत्राः पंचः । प्र० सा० सोढा द्वि० सा० गाल्हाए, सा० रतन, चतुर्थ सा० माल्हा । सा० सोढा भार्या भोली तत्पुत्र चत्वारः । प्र० सा० चाहड, द्वि० सा० खीवा, तृ० सा० दूलह, चतुर्थ सा० देवा, पं० सा० पूना । साह चाहड भार्या मदना । सा० दूहल भार्या करमा तत्पुत्रास्त्रयः । प्रथम सा० पोपा, द्वि० सा० थेल्हा, तृ० सा० श्रीपाल । साह पोपा भार्या पोसिरि तत्पुत्रौ द्वौ प्र० साह सुरत्राण द्वितीय चि० पनाइण । सुरत्राण भार्या सुहागदे । सा० थेल्हा भार्ये द्वे प्रथम सरस्वति, द्वितीय लाडा तत्पुत्रौ द्वौ, प्र० डूंगरसी तद्भार्या नाथी, द्वितीय भेला । सा० श्रीपाल भार्ये द्वे प्रथम सरुपदे द्वितीय लहुडी तत्पुत्र सा० रुपा । सा० देवी भार्ये द्वे । प्र० सोभा द्वितीय सरुपदे तत्पुत्रास्त्रयः । प्र० सा० सरवण भार्या होली तत्पुत्र हेमा सा० टीहा भार्या चंद्रा । सा० ईसर भार्ये द्वे प्रथम ईसरदे द्वि० चारू । सा० रतन भार्या सारमा तत्पुत्र स्त्रयः प्र० सा० छीतर भार्या छायलदे तत्पुत्र चि० कौजू । सा० चौहथ भार्या चतुरगदे । तृ० सा० राणा भार्या राणादे । भेला भार्या भावलदे । सा० माल्हा भार्या द्वे । नाल्हा द्वि० मेहा तत्पुत्रौ द्वौ । प्र० सा० टेहू द्वितीय सा० नोता । सा० टेहू भार्यास्त्रयः प्रथम तहुणश्री द्वितीय सुहागदे तृतीय गूजीर तत्पुत्रौ द्वौ प्र० सा० पदमसी भार्ये द्वे प्रथम पतायदे द्वितीय पाटमदे तत्पुत्र चिरंजी रामदास । सा० नोता भार्ये द्वे द्वितीय कोडमदे तत्पुत्र चि० आखा भार्या अहकारदे द्वितीय सागा एतेषां मध्ये सा० टेहू सा० नोता इदं शास्त्रं नागकुमार पंचमी लिखाप्य पंचमी व्रत उद्योतनार्थं मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिये दत्तं ।

१६. नागकुमार चरित्र ।

रचयिता श्री पं० माणिक्कराज । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १२४. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर । प्रति प्राचीन तथा सुन्दर है । प्रारम्भ के दो पृष्ठ नहीं है । कवि ने ग्रन्थ के प्रारम्भ में भी अपना विस्तृत परिचय दिया है । भाषा बहुत सरल और मधुर है ।

प्रारम्भिक कवि परिचय—

तहि जिणवरमंदिरु धवलु भव्वु । सिरिआइणाह जिणबिंबु दिव्वु ॥
तहि णिवसइ पंडिय सुहखाणि । सिरि जइसवाल कुल कमल तरणि ॥
इक्खाकुवंससमहियलिवरिट्ठु । वुह सूराणंदणु सुह गरिट्ठु ॥

उप्पण्णउ दीवा उरिरवण्णु । वुहु माणिक्कु णामें वुड्हि मण्णु ।
तत्थंतरि सावउ इक्कुपत्तु । वयदाणसीलसियमेणजुत्त ।
वुहयण रंजणु गुणगणविसालु । विच्छिण्णवत्थदिप्पंतभालु ।
घमत्थ ामसेवंतु संतु । तस जीवदयावरु सिरिमहंतु ॥
मेरुव्वधीरु गुणगणगहीरु । जिणगंधो वयणम्मलसरीरु ॥
णरवइ सहमडणु सव्वभासि । गोहाणगोहु सुयसीलरासि ।
चंदुव्वमुवणसतावहारि । वररूवमउण्णउ णं मुरारि ।
छहअंगविहूसिउ णं महेसु । मदाग्यपुज्जिउं णंमहेसु ।
जिणपयसी संकिउ णीलकेसु । रमदंसणपालउ सुयणतोस !
सिरि ठाकुराणि जिय धम्मधुरधरु । सुरवइ करभुयजुयलेहि विमलु ।
सिरि जइसवाल इक्खाक्कुवंस । चउजगसीणंदणु सुच्छवंस ।
टोडरूमलुणामे घरपयंलु । जं कित्ति तिलोयह पूरिथिरु ॥

घत्ता

ते आइ वि जिणहरि णयणाणंदणि, अइणाहु जिणवंदियउ ।
पुणु दिट्ठउ पंडिउ भवियणमंडिउ, अइविणयं अब्भत्थियउ ॥

अष्टमी संधी परिच्छेद के वाद—

जइसवाल कुलसंपन्नो, दानपूयपरायणः ।
जगसी नंदनः श्रीमान्, टोडरमल्लु चिरंजियः ॥
वस्तुपाल इव ख्यातो, मध्यलोके वभूव यः ।
टोडरमल्लु ते साध्नो, वर्द्धतां कांम्रलोचने ॥

अन्तिम पाठ—

सिरि णायकुमारचरिउ खालु, पभणिउ कइयणपुव्वहि ।
जो भव्वहभासइं लिहइ सुणइ मई ते सिवसुह माणिक्क लहहि ॥

इय णायकुमारचारु चरिये विवुहचित्तारंजणु पंडिय सिरिमणिक्कराज विरइए चउधरी जगसी पुत्त राइरंजण टोडरमल्लणामंकिए सिरि णायकुमारु वालि महाबालि छेया भेया णिव्वाण गमणं णवमो संधि परिछेउ समत्तो ।

प्रशस्ति—

णंदउ जिणवरिंद जिणसासणु । दय धम्मु विभव्वह आसासणु ।
णंदउ णरवई पइपालंतउ । णदंउ मुणिगणु सुत उतवंतउ ।
णदंउ जिण सुहमग्गीचरंतउ । भवियणु दाणपूयविरयंतउ ।

दुक्खदलिद्द दहिक्खु व णिरसउ । कालि कालि धाराहलु वरिसउ ॥
घरि घरि मंगलु गीउ पदरिसउ । घरि घरि णारि उरहंसें णच्चउ ।
घरि घरि लोउ सुहेहिं रंजउ । घरि घरि संखुसुमदलु वज्जउ ।
जिणवरिंदसुयगुरपयअंचणु । चउविहसंघहदाणहपोसणु ।
पुत्तकलत्तसुयणपइ पालउ । णंदउ टोडरमल्लु दयालउ ।
णंदउ एहु गत्थुं ता महियलि । जा वहि मेरु चंदु रविणिहयलि ।
संघह चिरु दुकिउ विहु णंतउ । भवियण लोयह पाढि जंतउ ।
लेस मुणोस विमर अंभाले । विक्कमरायहववगयकाले ।
फागुण चंदिण पंख ससि वालें । पणरहसइगुणासियउर वालें ।
सिरि पिरथी चंदुपसायं सुंदरु । णवमी सुहणक्खित्तु सुहवालें ।
सज्जणलोयह विणउ करेप्पिणु । हुउ परिपुण्णु कव्वु रससंदिरु ।
विरयउ एहु चरित्तु सुवुद्धिए । पिसुणवयणकद्दमेणभरेप्पिणु ।
ता महु दोसु भव्वु मगहउ कोइं । जइयहु अत्थमत्तहीणउ हुए ।
मज्भु खमंतु ववुहसव्वचित्तिम । विणवेइ मणिक्कु कई इम ।
मइ जलेण जं कायमि साहिउ । अण्णुवि अमुणंते हीणाहिउ ।
कइयण जण तिलोयहु सारी । त जि खमउ सुय देवि भडारी ।
अइरो सैंसो हि जहु गंथु वरि । वुहयणरोसुण करहु महु उप्परि ।
णच्चउ कामिणि होउ सुमंगलु । विसमउ गमिणि वज्जउ मंदलु ।
माणिक्कराज वज्जिय मएण । गुरुपण वछलें पहिएण ।
टोडरमल्लहत्थें दिण्णु सत्थु । तं पुण्णु करेप्पिणु एहु गंथुं ।
दाणेंसेयं सहकरण्णु तवि । णिय सिरह चडाविउ तेण गंथु ।
पुणु समाणिउ वहु वत्थवेंण । पंडिउ चर पट्टहि थविऊतेण ।
अंगुलियहि मुछिय णिय करेंहिं । वर वत्थइ कंकण कुंडलेहिं ।
पुज्जिउ आहरणहि पुणु पुणु तुरंतु । हरिरोवि वि सज्जिउ विणयं विरुत्त ॥
गउ णिय घरिपंडिउ गंथि तेण । जिण गेहि णियउ वहु उत्थवेण ।
तहि मुणिवर विंदाह सुत्थ गंथु । दिण्णउ गुर हत्थें सिवह पंथु ।
वित्थारिउ अत्थु वियारि तेण । भव्वयणह सुह गइ दावणेण ।

घत्ता

पुणु टोडरमल्लहं णिवसरि पुण्णहं, लिहियइ गंथ वहुसुत्थणिरू
जिणि गिहि मुणि संघहं तववयवंतहं, णाणदाणु तं दिण्णुवरु ॥

अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १५६२ तत्र पोष मासे कृष्णपक्षे पंचम्यां तिथौ भौमवासरे श्री पालंब शुभस्थाने श्री पातिसाहि हुमायूं राज्यप्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्कर-गणे श्र भट्टारक श्री मलयकीर्तिदेवान् तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणभद्रदेवान् तत्पट्टे मुनि क्षेमकीर्तिदेवान् तदाम्नाये मुनि श्री धर्मभूषणदेवान् तदाम्नाये ब्रह्मचारी मुनि छाजू तत् शिष्य श्री मुनि ब्रह्मचारि पदमा एतत् इक्ष्वाकुवंशे श्री गोत्रे भंडारी श्री अग्रवाल वंशाम्नाये श्री पंचदशलाक्षणीकव्रतपालकान् पंचमी उद्धरण धीर साधुवस्थावसे तस्य भार्या शीलतोयतरंगिनी विनय वागेश्वरी तस्य नाम सुनखो। तत्पुत्र तृतीय ज्येष्ठ पुत्र गुण गरिष्ठ साधू दासु——।

२०. पद्मपुराण।

रचयिता श्री पं० रइधू। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६०. साइज १०॥×४ इञ्च। प्रत्यक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ५०-५४ अक्षर। विषय—पुराण। प्रति जीर्ण अवस्था में है। लिपि संवत् १५५१. ग्रन्थ का दूसरा नाम बलभद्र पुराण भी है।

मंगलाचरण —

परणयविद्धंसणु मुणिसुव्वयजिणु, पणविवि बहुगुणगण भरिउ।
सिरि रामहु केरउ सुक्खजणेरउ, सह लक्खण पयडमि चरिउ।

ग्रन्थकर्त्ता की प्रशस्ति—

सिरिआइणाहु भव्वयणइट्ठु, पणवेप्पिणु लोयत्तयवरिट्ठु।
पुणु सम्मिपहु धम्मामयसवंतु, भव्वयणहु भवतण्हासमंतु।
तहि संति वि जीवदयापहाणु, जिं भासिउ महियलि तिमलणाणु।
पुणु वड्ढमाणु चरमल्लुदेउ, सो सव्वहं जीवहं खेरउ सेउ।
पुणु ताहं वाणिज्झाए विचिंत्ति, लोयत्तमगामिणि वरणादित्ति।
पुणु इंदभूति गणहरु णवेवि, सो भद्दु वि जंवूसामि तेव।
पुणु ताह अणुक्कमि देवसेणु, इंदियभुयंगणिद्दलणवेणु।
पुणु विमलसेणु तह धम्मसेणु, सिरि भावसेणु गयमारसेणु।
तह सहसकित्ति आयमपहाणु, तह पट्टिणि सव्वउ गुणनिहाणु।
गच्छह णाइकु सिहि गुण मुणिंदु, सहत्थपयासणु विगयतंदु।

घत्ता

तहु पट्टि जईसरु णिहंयर ईसरु, जसकित्ति वि मुणिगणतिलउ।
तहु सिस्सु पहाणउ तववयठाणउ, खेमचंदु आयमणिलउ॥ १॥

गोव्वगिरि णामें गढु पहाणु, णं विहिणा णिम्मिउ रयणठाणु।
अइउच्चु धवलु णं हिमगरिंदु, जहिं जम्मु समिच्छइ मणिसुरेंदु।
तहिं डुंगरेंदु णामेण राउ, अरिगणसिरिग्गि संदिन्नधाउ।
तुं वर वर वंसहं जो दिणिंदु, जि पवलहं मिच्छह खणिउ कंदु।
तहो पट्टवरणि णं रूवलच्छि, णामें चांदा देई सुयिच्छ।
तहु पुत्तु कित्तिसिंघु जि गुणिल्लु, जो राइ णीइ वनसणइ छल्लु।
पियपायभत्तु पचक्खमारु, पञ्जुण्णवमहियलि कुमरुसारु।
तहु रज्जिवणीसरु शुद्ध चित्तु, संचयिउ जेण जिणधम्मवित्तु।
जसु चित्तु सुपत्तहं दाणिरत्तु, जिणणाहपूयजोणिच्चभत्तु।
झाणामएण अहिणिसहि लीणु, काउसग्गेंतणु कियउ खीणु।
आयमपुराणपढणइसम्मत्थु, णियमणुयजंम्मु जि कियउ कयत्थु।
जो आइरवालवंसह मंयकु, भिहु पक्खसुद्ध सो णेयवंकु।
चादू साहु णंदणु पवीणु, णियजणणिहल्लोपयविणयलीणु।
जिणसासणि भत्त कसायखीणु, हरसीहु साहु उद्धरिय दीणु।

घत्ता

तहु भज्जा गुणगणसज्जा, घोचंदही णामें भणिया।
मुणिदाणपियंकर वयणियमायर, णं पवित्तिरु वहुत्तणिया ॥ २ ॥
बीई तिय वील्हाही गुणंग, अइसीलविशुद्धजिणाइ गग।
जेठिहि णंदणु सिरिक मरमसीहु, गिहभारधुरंधरु वाहुदीहु।
मुणिसहणिवसह जसु पढमलेह, जाचयजणणापूरियसमीह।
तहु भज्जा जोणाही पवीण, गुरुदेव सथयपयभत्तिलीणु।
तहु वहिणी णंतमई पहाण, महसीललीणगिहलद्धमाण।
चउविहदाणे पोसियसुपत्त, अहणिसु जिणवरपयकमलभत्त।
लुहु ईहिं पुत्ति रुवें सुतार, णामेण णाणो णेहें सुसार।
जिणचरणकमलणमीयसरीरु, वयभरणिव्वाहणभीरु भीरु।
अण्णहि वासरि चिंतियउ तेण, हरसीहणामें इच्छियसिवेण।

घत्ता

किं किज्जइ वित्तें विहियममत्तें, जेण णादीणु भरिज्जइ।
किं तेण जिकोएं पयडयिरायं, वयभरु जिणधरिज्जइ ॥

णरूभउ पाविवि करणीउ एम भवदहिणिवडणुणो होइजेम।
चिंतिज्जइ दंसणु णाणु इट्ठु, चरणु वि पुणु लोयत्तय वरिट्ठ।
धम्मु जि दहलक्खणलोयसारू, सेविज्जउ एवु भवण्णसारू।
विणु धम्में जीउ ण सुक्खि थाई, ति विणु करुच्छिउ विसयलु जाइ।
इह चिंतवि पुणु गउ साहु तत्थ, अच्छइ पिडिउ जिणगेहि तत्थ।
वहु विणएं पुणु विण्णतु तेण, कर आरोप्पेवि णु णियसरेण।
भो रइधू पंडिव गुणणिहाणु, पोमावइ वरवंसह पहाण।
सिरिपालह वम्ह आयरियसीस, महुवयणु सुणहि भावुह गरीस।
सोढल णिमित्ति णेमिहि पुराणु, विरयउ जहपइं जण विहियमाणु।
तह रामचरित्तु विमहु भणेहि, लक्खण समेउ इउमाण मणेहि।
मुहु साणुराउ कहमित्तजेण, विण्णतिमज्झु अवहारि तेण।
मुहु णामु लिहहि चंदहु विमाणि, इय वयणु सुद्ध णियचित्तिठाणु।

घत्ता

इय णिसुणिविइं भंपियसवणाइ, पडियण ताउत्तउ।
हो हो किं वुतउ एहु अजुत्तउ, इउगह कम्मे गुत्तउ ॥ ४ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

भव्वहं गुणणंदउ कियसु कम्मु, अरु णंदउ जिणवर भणिउ धम्मु।
राउवि णंदउ सुह पयसमाणु, णंदउ गोवग्गिरि अचलठाणु।
णंदउ पुणु हरसीहसाहु एत्थु, जि भाविउ चेयण गुण पयत्थु।
सह अंगिमंतु जसु फुरइ चित्ति, कलिकालधरियजिण्णाणि सत्ति।
सिरि रामु चरित्त विजेणएहु, कराविउ सव्वहं जणिय णेहु।
तहु णंदणु णामें करमसीहु, मिच्छतमहाउयदलणसीहु।
सो पुणु णंदउ जिणचलणभत्तु, जो रायमहायणि माणु पुत्त।
सिरि योमावइ परवालवंसु, णंदउ हरसी संघवी जसंसु।

घत्ता

वालोहमहणसिह चिरुणंदउ इह, रइधू कइतीयउविधरा।
मोल्लिक्क सम्माणुउ कलगुणजाणउ, णंदउ सहिअलि सोविधरा।

इय वलहद्द पुराणे वुहयणविंदेहि लद्धसम्माणे सिरि पंडिय रइधू विरइय पइयवंधेण अथ विहिसहिए

सिरि हरसीहुसाहु कंठिकठाहरणे इहयलोयसुहसिद्धिकरणे सिरिरामणिव्वाणगमणं एकादशमो संधी परिच्छेउ सम्मत्तो।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५५१ वर्षे फाल्गुण सुदी ६ भौमवासरे श्री काष्ठासंघे पुष्करगणे भट्टारक श्री श्री कुवरसेणदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री हेमचन्द्रदेवास्तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गर्ग गोत्र साधु सा हींगा भार्या खिमा पुत्र ५। सा. थीरु, सा. नानू, सा. रुपा, सा. धन्ना, सा. जगा। थीरु भार्या मजो पुत्र पोपा ......द्वितीय पुत्र कुलिया भार्या वरमिणी ....। सा. नानू भार्या प्यारी। सा. हींगा तृतीय पुत्र रुपा भार्या २ न्योरा पुत्र बोहिथ, द्वितीया भार्या राजो पुत्र तिहुणा। सा. हींगा चतुर्थ पुत्र धन्ना भार्या प्यारी पुत्र छाजू। सा. हींगा पंचम पुत्र सा. जगा भार्या डलो पुत्र वाघू एतेषां मध्ये सा. जगा तेन इदं बलभद्रचरित्रं लिखाप्य पं० हींगाय समर्पितं।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १७२, साइज १ x४३ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर २६, ३० अक्षर। लिपि संवत् १६५६. प्रति शुद्ध तथा स्पष्ट है।

लेखक प्रशस्ति—

अथ संवत्सरेस्मिन् श्र नृपविक्रमादित्यगताब्दः संवत् १६५६ वर्षे मार्गसिर बुदि त्रयोदशी चंद्रवासरे चित्रा नक्षत्रे श्री रुहितगवावरादुर्गमकोटे तत्र अनेक शोभाशोभितजिणविहारे पातिसाह अकबर राज्य-प्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे अनेकवादीभकुंभस्थलविदारणैकमदोन्मत्तकेसरीन् भव्यांबुजविकासनैकभास्करोदयान् अबोधजीवप्रतिबोधकान् भट्टारकश्रीहेमचंद्रदेवा तत्पट्टोदयकरणैकसूर्योदयान् भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे अनेकविद्यासमुद्रान् पंचरसत्यागी भट्टारक श्री जसकीर्तिदेवास्तत्पट्टे अनेकगुणसमुद्रान् अनेकघोरवीरतपसंयुक्तान्, पंचमहाव्रतधारकान् भट्टारक श्री क्षेमेन्द्रकीर्तिदेवाः तत्पट्टोदयकरणैक-सूर्योदयान् भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्त्ति तथा भट्टारक श्री जसकीर्त्ति शिष्यपंचमहाव्रतधारकान तपसंयुक्तान् आचार्यश्रीगुणचन्द्रः। तस्यशिष्याणि पंच अणुव्रतधारक एकादशप्रतिमापालक स्वदेशप्रदेशविख्यातमान् वाई जिदो तस्य शिष्या बाई सुहागो एतेषां गुरु-आम्नाये तिजारिये गोतमगोत्रे रुहितगवावरेव तन्ये साहु लोला तयोः पुत्र नाथू तस्य भार्या माणी तयोः पुत्र ३ निल्हा द्वितीयपुत्र स्वामीदास तृतीय भैरो; साह स्वामीदास तस्य पुत्र ३ प्रथम पुत्र साह खिउपाल द्वितीय हीरो तृतीय लालचन्द; साहु भैरो तस्य पुत्र ३ प्रथम-पुत्र राजपाल द्वितीय सूरपाल तृतीय पुत्र तोतू एतेषां मध्ये साह स्वामीदास तस्य पुत्र प्रजापुरंदरदान सिरियं-सावनारन विवेकसुंदर साह खिउपाल तस्य भार्या शालतोयतरंगणी चतुर्विधदानदायकी स्वाधिषमो तयो पुत्र ३ प्रथम पंचमीव्रतोद्धरणधीरा त्रिपंचाशक्रियाप्रतिपालका राजसभाश्रृंगारहारपंडितशिरोमणि साह पदारथ तस्य भार्या भामिणी प्रियछंदाणुगामिणी वधूसभो तयो पुत्र कनकसिंह तस्य भार्या जीवा साधू खिउपाल पूजापुरंदर विवेकसुन्दर हीवानदीपगुजैनसभाश्रृंगारहार साह आगरमल तस्य भार्या भामणी

प्रियछंदाणुग मिनी वधू जटो तयो पुत्र दुइ प्रथमपुत्र दयालदास तस्य भार्या सुन्दरी द्वितीय पुत्र रामदास तस्य भार्या सुंदरी। साह खिउपाल तृतीय पुत्र जिनशासन उद्योतकारी जिनप्रतिष्ठाकरण इंद्रस्वरावतारान् भूपति सभा शृंगारहार चंद्रमा इव द्योतकारी विवेकसुंदर साधुमनोहर तस्य भामणा प्रियछंदाणुगामिणी भार्या नगीना तयो पुत्र चतुरभुज तस्य भार्या भागङ्तो एतेषां मध्ये साह खिउपाल तस्यपुत्र चतुर्विधदान-दायक साह अगरमल्ल तेनेदं शास्त्रं बलभद्रपुराणं लिखापितं। लिखाय करि बाई जिंदो नैदत्तं पठनार्थं। लिखतं पांडे केना। शुभं भवतु।

२१. परमेष्ठि प्रकाशसार।

अपभ्रंश। पत्र संख्या १८८. साइज ६।।×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३. ३६ अक्षर। प्रथम दो तथा १८७ का पृष्ठ नहीं है। विषय धम। प्रति प्राचीन है।

तृतीय पृष्ठ का प्रारम्भ—

घत्ता

गयसासयठाणइ सिद्धपहाणइं, कम्मरहिय गुणअट्ठजुवा।
इय पणपरमिट्ठिहिं केवलदिट्ठिहिं, रयणत्तयलद्धिकम्मचुवा॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

इय सिट्ठिसरुवइं सिवसुहदूवइं, णिसुणि वि जेणिच्छउ करहें।
सुयणाणणिरिक्खिवि, सुमणिहरि वि धम्मु अहिंसाते वरहें॥ १॥
इय परमिट्ठि पंचजगसारइं। भवियह जे भवदुत्तरतारइं॥
तह गुणपयडइ जिणवरवाणी। जा तयलोयपवित्तपहाणी॥
गणहरदेवपमुहमुणिरायइं॥ पयडहिं ते चहुरिद्धिविरायइं॥
इंदपमुह जे सुरवरवग्गइं। मुणिहियो तह गुणगणइणि सग्गइं॥
तहं पडिविवतिजयजहजरथइं॥ सुरणरअक्चहि ते सुपसत्थइ॥
तह अणु मग्गमुणिविंदइं। पुज्जणिज्ज ते तिहुयण चंदइ॥
तह गुणपूयरयहि जे भव्वइं। पूयहिं ते हि ण रामरसव्वइं॥
जे तहिं थुत्त पढहि तयकालइं। तह थुइ करहिं अमरअसरालइं॥
ते तह णाम जवहि एकग्गाइं। जे तह धम्मचित्त अणुरायइं॥
हो हि अमरणर सुक्खविरायइं। जे तह धम्मु पसंसहिं चित्तइं॥

पावहिं ते कमउत्तमगुत्तइं । जे तह णामु सुणहिं मरणंतइं ॥
कयणुमोयसुरालयपत्तइं । .... ।

घत्ता

जइ सयलतियालइं, धम्मुधरालइ, णरसुरकरहिं महंतइं ।
जे भावणभावहि ते सुइ पावहि, सासयकालअणंतइं ॥ २ ॥

एहउ जइतयलोयपहुत्तणु । तह अम्हारि सकइसुकयत्तणु ॥
अप्पवुद्धि अमुणियवरगंथइं । आयमपमुहअणावमअत्थइं ॥
तक्कछंदलंकारविहीणउ । ण वियायरणु मुणामि अपवीणउं ॥
अक्खरमत्तपयत्थइवज्जिउ । त जि कव्वु वुहयणहअउज्जिउ ॥
पुव्वसूरि जं कियसु कयत्तइं । तह जसपसरियभुवणमहंतइं ॥
जिणकमगोयमसामिणसंसिय । धम्मायरियसुगुणसुपसंसिय ।
जयसामितिकेवलिजुत्तइ । विण्हु दत्त पयु........ .... ।

× × × × × × ×

के पृष्ठ का अंश—

घत्ता

इहपणनयतेवणगयवासइं पुण.
विक्कमणिवसंवच्छरहे ।
तह सावणमासहु गुरपंचमिसहुं,
गथु पुण्णु तयसहसतहें ॥

मालवदेसदुगासें हवचलु । वट्टइ साहिगयासु महाचलु ॥
साहिणसीरुणामतह णदणु । रायधम्म अणुरावउ वहुगुणु ॥
पुज्जराजुव णिमंति पहाणइं । इसरदासु गयंदइं अ णइं ॥
पत्थाइरणदेसु वहुपावइ । अहणिसि धम्महुभावणभावइ ।
तह जे रटणायसुपसिद्धइं । जिणवेइहरमुणिसुपवुद्धइं ।
णेमीसरजिणहरणिवसंतइं । विरयउ एहु गंथु इरि संतइं ।
जइ विघु तह संघवइ पसत्थइं । संकरु णे मदासु वुहनत्थइं ।
तह गंथत्थ भेउ परियाणिउं । एउ पसत्थु गथु सुहु माणिउं ।
अवर सघवइं मणिअणुराइय । गंथ अत्थ सुणि भावणभावइ ॥

तेहिं लिहाइ णाणगंथइं। इय हरिवंसपमुहसुपसत्थइं।
विरइय पढमंतमहि वित्थारिय। धम्मपरिक्खपमुहमणहारिय।
पढहिं भव्वजइं पडिय लोइयइं। संतहोइ सुणि अत्थमणोयइं।

घत्ता

पुरणायरणरेसहं गोमहं देसहं—
मुणिगणसावयलोयमहं।
धणुकणु मणिसारइं धम्मद्धारइं
करहिं संति परमिट्ठिपहो॥

इय परमिट्ठिपयासुसारे अरुहादिगुणेहिं वरणणणालंकारो अप्पसुद सुदकित्ति जहासत्ति महाकव्वु विरयंतो णाम सत्तमो परिछेउ संमत्तो इति परमेष्ठिप्रकाशसार ग्रंथ समाप्तः।

२१. पाण्डवपुराण।

रचयिता मुनि श्री यशःकीर्त्ति। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ३४७, साइज १०॥x४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८। ४२ अक्षर। लिपि संवत् १६३६ रचना संवत्।

प्रारम्भिक भाग—

वीयसु सरधयरट्ठहो गयधयरट्ठहो सिरिलालमु सोगट्ठहो।
पणवेवि कहमि जिणिट्ठहो णुयवलविट्ठहो कह पंडवधयरट्ठहो।

ग्रन्थ के प्रारम्भ में दी हुई प्रशस्ति—

× × × × × × ×

सिरिसरवण उववणगिरि बिसालु, गंभीरपरिहउत्तंगसालु।
तहिं निवसइ जालपु साहु भव्वु, णिउजी भज्जालं किउ अगव्वु।
सिरिअयरवाल वसह पहाणु, जो संघहं वच्छलु विगयमाणु।
तहो णंदणु वाल्हाणयपमाउ, मवगावनयरे सो सइं जिआउ।
आवप्पिणु हितमक्खानु दिट्ठु, तेणावी सम्माणिउ किउ विदिट्ठु।
धेनाही तहो पियणाम सिट्ठ, गुरुदेवभत्तपरियणहं इट्ठ।
तहो णंदणु णंदणु हेमराउ, जिणधम्मो वरि जसु णिच्चभाउ।
सुरतानमुमारखतणइंरज्जे, मंतित्तणे थिउ पियभारकज्जे।

घत्ता

जें अरहंतु देउ मणिभाविउ, जासु पहुत्ते को वि ण ताविउ।

जेण कराविउ जिणचेयालउ, पुण्णहेउ चिररयपक्खालउ ॥ १ ॥

धयतोरणकलसहिं अलंकिउ, जसु गुरुत्तिहरिजणु वि संकिउ ।
परतियबंधउ परउवयारिउ, जेणि सव्वु जणु धम्महपेरिउ ।
संघधुरंधरु पयडु मुणिज्जइर, सावयधम्मेणिच्चमणु रंजइ ।
सत्तवसण जें धुरें वज्जिय, सीलसयणविर्त्तिवि आवज्जिय ।
सत्तगुणहं दायारहं जुत्तउ, नवविहदाणविहिए णउचुत्तउ ।
पणएं पणगुणें मउं भंजिउ, रयणत्तयभावणअणुरंजिउ ।
विणयंदाणु देइ जो पत्तहं, जिणु तिकालु पुज्जइ समचित्तहं ।
तासु भज्जु गुणरयणवसुंधरि, गघाणाम सेयगय जियसुरसरि ।
तवें चेलणदेविपहाणिय, जिणवरभत्तिहें णं इंदाणिय ।
अमियसरसवयणहिं सुचिह्निठिय, णउं तं बोलुराय अणुरंजिय ।
उवरिकडिल्लुसीलजें धारिउ, रयणत्तइ हारें मणु पेरिउ ।
धम्मसवणकुंडलजें धारिउ, जिणमुद्दामुद्दिय संचारय ।
जिणगेहम्मिगमणणेउरसरु, तहो चंदणकंकणसोहिउ करु ।
जिणवरमतसरणु कंचुउ धरि, जिणवरएहवणु तिलउ किउ णियसिरि ।
एयहं आहरणहं जा सोहिय, भारु मुणेवि कवणाहि नमोहिय ।
तासु पुत्तु पल्हणु जाणिज्जइ, चाएं तक्कुयणहि थुणिज्जइ ।
बीयउ स रंगु वि पियभत्तउ, कउलु तइउणंदुवमण चत्तउ ।

घत्ता

पल्हणणंदणु गुणणिलउ, मोल्हणमायपियरमणरंजणु ।
वल्हा साहुहें अवरु सुउ, लक्खाणामु जणमण आणंदणु ॥ २ ॥

दिउराजहीयभज्जहि समेउ, कीलंतहं हुउसंताणजोउ ।
णंदणु डूंगरु तह उधरणक्खु, हंसराउ तइउ सुउ कमलचक्खु ।
एक्कहिं दिणि चिंतउ हेमराउ, जिणधम्महीणु दिणु अहलुजाइ ।
णिसुणिज्जइ चिरपुरिसहं चरित्तु, हरिनेमिनाहपंडवहं वित्तु ।
ता होइ मज्झ जम्मुवि सलग्घु, नासइ चिर संचिउ पाउ मिग्घु ।
इव चिंतिवि जिणमंदिरहे पत्तु, जसमुणिपणविवि आक्खउ सचित्तु ।
सोउं इच्छमि पंडवचरित्तु, पयडहि सामिय जं जेम वित्तु ।
विवरीउ संव्वुजणु वज्जरेइ, णरयावणि दुक्खहो णउ डरेइ ।

तं णिसुणिवि जंपिउ मुणिवरिंदु, चंगउ पुच्छिउ चुरयणहं चंदु।
पंडव चरित्तु अइगहणु जइवि, वुहयणहिं हउ कहमि तइवि।
ता तहो वयणें गुणगणमहंतु, पारंभिउ सद्दत्थहं फुरंतु।
सज्जणदुज्जणभउ परिहरेवि णियणियसहावरत्त विदोवि।

घत्ता

सज्जणु वि सहावु अकुडिलभावु, ससिमेहु व उवयारमइ।
परदोस पयासिरू अवगुणभासिरू, दुज्जणुसाधु व कुडिलगइ।

अन्तिम भाग—

पढमहिं वीरजिणंदें अक्खिउ, पढइ गोयमेण णउ रक्खिउ।
सोहम्में पुणु जंबूसामें, विण्हुकुमारें णिग्गयणामें।
णंदिमित्त अवरज्जिय णाहें, गोवद्धणेण सुभद्दसहावें।
एमपरंपराइं अणुलग्गउ, आयरियाहं मुहाउ अवग्गउ।
सुणेसंक्खेवसुत्त अवहारिउ, मुणिजसकित्तिमहिहिं वित्थारिउ,
पद्धडिया छंदो सुमणोहरू, भवियणजणमणसवणसुहंकरू।
करेवि पुण्णु भव्वहं वक्खाणिउं, दिढुमिच्छत्तु मोहु अवमाणिउं।
जं हीणाहीउ किंपिविसाहिउं, तं सुयदेवि खमउ अवराहउं।
जो इहु चरिउ वि पढइ पढावइ, वक्खाणेप्पिणु भवियणदावइं।
जो पुणु सद्दहेइ समभावें, सो मुच्चइ पुव्वकियपावें।
जो आयरइति सुद्धि करेप्पिणु, सो सिउ लहइकम्मछिंदेप्पिणु।
जो पुणु एय चित्त णिसुणेसइ, सग्गु मोक्खु सोसिग्घुलहेसइ।
एउ पुराणु भवियहं आसासउ, अ युविद्धि जसुरिद्धि पयासइ।
वइरिउ मित्तत्तणु दरिसावउ, रज्जत्थिउ विरज्जु संपावइ।
पियकलत्त पुत्तत्थिउ तं पुणु, रज्जभट्ठु पुणु रज्जु चउग्गुणु।
इट्ठ समागमु धणु संपावइ, गउ परएसु सिग्घु घरू आवइ।
लाह सुहत्थिउ लाह सुहाइवि, देव देहिंवरू मच्छरू मुंचिवि।
साणुग्गहग्गहसयलपयट्टहि, मिछा भावखणद्धें तुट्टहिं।

घत्ता

आवइं सव्वइं जाहि खउ संपइ सुहघरि पइसहिं।
पंडवचरिउ सुणंताहं विवाहविलासइं विलसहि॥

अवरु वि सिउ कल्लाणु पयासइ, पुव्वकयइं दुरियांणिरणासइं।
संसारो वहिंतरि विसुलीलइ, अरिदुहवे विमुत्ति संहुकीलइ।
एउ चरिउ पवित्तु सिद्धक्खरु, पुढ़ पुर णु पुरिमाविएणउ चिरु।
सुसमाहिय चित्तिहे मो भावई, णउ सदेहु सो जि सुहु पावइ।
भवयणसवोहणहो णामित्ते, एउ गंथु किउ णिम्मलचित्तें।
णउ कवित्त णिव्विहि घणलोहें, णउ कासुवरि वड्ढिय मोहें।
छंदु तक्कलक्खणुणउ जाणिउं, कम्मखयणिमित्तु वक्खाणिउं।
णंदउ सासण सम्मइणाहें, णंदउ भवयणु कयउच्छाहें।
णंदउ णरवइ पयपालंतउ, णंदउ दयधम्मु वरिसहू कउ।
णंदउ मुणिगणु तउ पालंतउ, दुविहुधम्मु भवियणह कहंतउ।
दाणु पूयवयसीलहि पालंतउ, णंदउ सावय गणुरयवंतउ।
काल विणियणिच्चपरिसक्कउ, कासांविधण कणु दें तिन थक्कउ।
वउजउ मंगलु णिउजउ मगलु, णच्चउ णारायणु रहसंकलु।
णंदउ वील्हु पुत्तु गुणवंतउ, हेमराउ णिय पुत्त सइत्ताउ।
अत्थावरुद्धु बुहहिसो हव्वउ, धम्मत्थें आलसुणउ किव्वउ।
विक्कमराय हो ववगयकालए, महिसायरगह रास अंकालई।
कत्तियसिय अट्टमि बुहवासरें, हुउ परिपुण्णु पढमणदीसरें।
णहु महिचन्दु सूरु तारयणु, सुरगिरि उवहितारु सुहभायणु।
जाता णंदउ कालु हरंतउ, भवियजणहिं वित्थारिउ जंतउ।

घत्ता

इय चउविहसंघह विहुणियविग्घहं णिएणासियभवजरमरणु।
जय कित्तिपयासणु अखलियसासणु, पयडउ संति सयंभुजिणु॥

इय पंडुपुराणे सयलजणमणसवणसुहयरे सिरि गुणकित्ति स संमुणिजसकित्ति विरइय साधु वील्हा पुत्त हेमराजणामंकिए णेमिणाहजुधिट्ठरभीमाजुणणिव्वाणगमणं णंकुलसहदेवसव्वट्ठसिद्धि गमणदपंचमसग्गगमणपयासणो णाम चउतीसमो सग्गो समत्तो॥ इति पांडवपुराणं समाप्तं॥

संवत् १६३६ वर्षे भादवा सुदी १ प्रतिपत्तिथौ आदित्यवारे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दीदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तत् शिष्य पं० श्री ललितकीर्तिदेवास्तत् शिष्य पं० श्री चन्द्रकीर्तिदेवास्तस्याम्नाये खंडेलवालान्वये श्री नेमिनाथचैत्यालये निवाई वास्तव्ये राइ श्री

केसवदासराज्यप्रवर्तमाने छाबडान्वये स० रेडा तद्भार्या रयणोद तत्पुत्रौ द्वौ । प्र० सा० पदार्थ द्वि० सा० जिणदास । सा० पदार्थ भार्या पौसरि तत्पुत्रास्त्रय, प्रथम सा० नाथू द्वि० सा० श्री राणा तृतीय सा० हरदास सा० नाथू भार्या तूनी तत्पुत्र स० गोपाल भार्या प्रथम गोरादे द्वि० सुहागदे तृतीय लाडी, तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम चि० रामसिह द्वि० संकरदास तृतीय चि० उदयराज । द्वितीय सा० श्री राणा भार्ये द्वे प्रथम रयणादे द्वितीय लाडमदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० रूपसी द्वि० सा० सेखा, सा० रूपसी भा० द्वे प्रथम सुरूपदे द्वि० उछंगदे तत्पुत्रास्त्रय: चि० त्रामसी चि० खीवसी चि० साहमल्ल । द्वि० सा० शेषा भार्ये प्र० सुहलालदे द्वि० कोडिमदे तत्पुत्र चि० दुर्गादास । तृ० सा० हरदास भार्या हर्षमदे तत्पुत्रास्त्रयः सा० पूरण सा० नेतसी सा० साधू । सा० पूर्ण भार्या कपूरदे तत्पुत्र चि० प्रतापसिंह । सा० नेतसी भार्या नवलादे तत्पुत्रास्त्रयः चि० नारायण चि० मानसिह चि० सुरत्राण साधू भार्या सुजाणदे द्वि० सा० जिणदास भार्या द्वे० प्रथम मनी सफलादे तत्पुत्र पंच सा० कूंजा भार्या कुसुभदे, द्वि० सा० करणा भार्या करणादे तृतीय सा० भाप रभार्या सावलदे चतुर्थ कान्हड एतेषां मध्ये सा० राणा भार्या लाडमदे हरदास भार्या हरषमदे एताभ्यां इंद पांडव-पुराणशास्त्रं लिखाप्य आचार्य श्री हेमचन्द्राय घटापितं षोडशकारणव्रतोद्यापनार्थं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४७१. साइज १०॥×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति अक्षर। प्रति पूर्ण स्पष्ट और सुन्दर है। लिपि संवत १६१६।

संवत् १६१६ वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे चतुर्दशी तिथौ बुद्धवासरे धनिष्ठानक्षत्रे आमेरमहादुर्गे श्री नेमीनाथ जिनचैत्यालये श्री राजधिराज भारमल्ल राज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गोधा गोत्रे सा० झाझू तद्भार्या होली तत्पुत्राश्चत्वारः प्रथम सा० ठाकुर द्वि० सा० छाहड तृतीय साह थेल्हा चतुर्थ सा० चाचा। सा० ठाकुर भार्ये द्वे प्रथम डीडी द्वि० लाछि तत्पुत्राः सप्त प्रथम चतुर्विधदान वितरण कल्पवृक्ष जिनपूजापुरंदर सीलगांगेव साह तेजा द्वि० केल्हा तृतीय सा० लूणा, चतुर्थ सा० हर्ष्यौराज पंचम साह उदा षष्ट साह वोहिथ सप्तम सा० रेखा। साह श्री तेजा भार्ये द्वे प्रथम त्रिभुवनदे द्वि० ल्हौकन तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह लोहट द्वि० श्रंगारदे। द्वि० हठू, भर्या हरखमेद । द्वि० साह केल्हा भार्या केवलदे तत्पुत्रा पंच प्रथम सा० नारायण द्वि० नरवद तृतीय गोपाल चतुथ चिरंजीव सारंग पंचम साह पदारथ। साह नारायण भार्या नारंगदे, साह नरव दभार्या नरवददे तत्पुत्र चि० धीनड, सा० गोपाल भार्या गौरादे, तृतीय साह लूणा भार्या ललितादे तत्पुत्रौ द्वौ० प्रथम साह हूलू द्वि० भूणा। साह हूलू भार्या हुलसिरी। पं० साह ऊदा भार्ये द्वे० प्रथम उत्पोदे द्वि० लाडी षष्ट साह वोहिथ भार्या बहुरंगदे तत्पुत्र चिरंजीव देवा द्वि० साह छाहड भार्या छाहडदे तृतीय थेल्हा भार्या थिल्हसिरी तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम साह हीरा द्वि० साह हेमा तृतीय साह नाथू। साह हीरा भार्ये द्वे प्रथम

हारा। द्वि० नौलादे। तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चिरंजीव छीतर द्वि० चि० छाजू। साह हेम भार्या हेमसिरि तत्पुत्रा-श्चत्वारः प्रथम फलहू भार्या फूलमदे। साह डालू भार्या दाडौदेव। तृतीय नाथू भार्या नायकदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० हटू द्वि० चि० रूपा। चतुर्थ साह चाचा भार्या चौसिरि तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम साह नेमा द्वि० खेमा तृतीय साह पचायण। साह नेमा भार्या निर्मासिरि तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह नानू द्वि० वाला। नानू भार्या नैणादे साह खेमा भार्या खेमलदे तत्पुत्र मोकल तृ० साह पचायण भार्या पाटमदे एतेषां मध्ये साह लेजाना मध्ये येन इदं शास्त्रं पांडवपुराणनामानं मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तये घटापितं दशलक्षणव्रतोद्योतनार्थं।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४७५. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०। ३०. अक्षर। प्रति पूर्ण तथा प्राचीन है।

संवत् १६०२ वर्षे माघमसे कृष्णपक्षे चतुर्दशीतिथौ दावडदूंवाशुभस्थाने प्रोहितद्वारकेशरप्रतापे श्री मूलसंघे नंघाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा-स्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्त-त्शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तस्याम्नाये वीजावरग्यन्वये अजमेरा माहरोठ्यागोत्रे साह सकतू भार्या नाऊ तत्पुत्राश्चत्वारः प्रथम साह धरणि द्वि० साह धर्मसी साह कर्मसी चतुर्थ साह आसा। साह धरणि भार्या हरखू तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह वील्हा, द्वि० संघभारधुरंधर जिणपूजापुरंदर साह कील्हा, प्रथम भार्या पूरा द्वि० भार्या लाडी। साह हट भार्या चत्वार प्रथम शीता द्वि० लक्ष्मी तृतीय तोल्ही, चतुर्थे मोल्ही पुत्र चत्वारः साह बोहिथ, रामदास, महेश, दामोदर, एतेषां मध्ये सा० कील्हाख्येन इदं पांण्डवपुराणाख्यं शास्त्रं लिखाप्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रशिष्यकमलकीर्त्तये दत्तम्।

२२. पार्श्वनाथपुराण।

रचयिता श्रीपद्मकीर्त्ति। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १२५. साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२। ३६ अक्षर। प्रति शुद्ध है।

मंगलाचरण –

चउवीस वि जिणवरसामिय सिवसुहगामिय पणविव अणुदिणु भावें।
पुणु कहभुवणपयासहो पयडिमपासहो जणहमभिमससावें[१]॥ १॥

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

सुपसिद्ध महामुणिणियमधरू, थिउसेणसंघु इह मिहयवरू।
तहिं चंदसेणणामेणरिसि, वयसंजमणियमइ जाणुकिसि[२]।
तसु[३] सीसु महामइ णियमधारि, णायवन्त गुणायरू वंभयारि।

१ जणहो मभिसम्भावें २ जाडकिसि ३ तहो

सिरिमाहवसेणु महाणुभाउ, जिणुसेणुसीसु पुणु तसु जाउ।
तसु पुव्वसिरोहिं पउमकित्ति, उप्पण्णु सीसु जणु जासुचित्ति।
तें जिणवरसासणभाविएण, कह विरइय जिणसेणहोमएण।
ण खमयदोसविवज्जिएण, अक्खरपयजोडियलज्जिएण।
लकइत्त विजणेसुकइत्तहोइ, जइ सुयणहि भावइण्णु लोइ।
जइ अम्हिहि चुक्किवि किंपि कुत्तु, खमियव्वउ सुयणहिं तणिरुत्तु।

घत्ता

रिसिगुरुदेवपसाएं कहिउ असेसुविचरिउ मइ।
पउमकित्तिमुणिमुणिपुंगवहो देउ जिणेसरु विमलमइ॥

इति पार्श्वनाथचरित्त समाप्तं।

जयवविरुद्धं एयं णियाणवंवं जिणिंदतुहसमए।
तह वितहयचलणकित्तिणं जउ पोमकित्तिस्स॥ १॥
इयं पासपुराणं भमयापुहवीजिणालयादिठ्ठ।
एवहि जीवियमरणे हरिसविसाउणपउमस्स॥ २॥
सावयकुलंमिज्जंम्मो जिण चरणाराहणा कइ कइत्तं च।
एयाइ तिण्णिजिणवरभवे भवे होंतु पउमस्स॥ ३॥
[१]एयसयइ वाणऊआ कत्तियमासे अमावसीदिवसे।
लिहियं पासपुराणं कइणा इह [२]पउम णामेण॥ ४॥

संवत् १६११ वर्षे अषाढ वुदि ६ दिने शुक्रवासरे आल्हणपुरथाने श्री मल्लिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नंघाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्शिष्य वसुधराचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये चौधरी गोत्रे साह गोगा तद्भार्या गारवंदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र साह भादा द्वि० साह महाराज। साह भादा भार्या भावलदे तयोः पुत्र चिरंजीव वूचा तद्भार्या वहुरंगदे। सा० महाराज तद्भार्या सैणा तयो पुत्र सद्गुरुपदेशनिर्वाहक चतुर्विध दान कल्पवृक्ष साह वेल्हा भार्या हरषमदे तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम चिरंजीव सुरत्राण. द्वि० भीमसी एतेपां मध्ये साह महाराज तेनेदंपार्श्वनाथचरित्रं षोडशकारणव्रतोद्यापनार्थं वसुन्धराचार्य श्री धर्मचन्द्राय दत्तं।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०८, संवत् १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति

१ णवसयणउवाणुइए २ णामं पउमस्स

में ४१×४४ अक्षर। इसमें १८ वीं संधि में प्रथम प्रति से एक कडवक कम है।

संवत् १४६४ वर्षे भादवसुदी २ शनौदिने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री देवसेन देवास्तत्पट्टे श्री विमलसेनदेवास्तत्पट्टे श्री धर्मसेनदेवास्तत्पट्टे श्री भावसेनदेवास्तत्पट्टे श्री सहसकीर्त्तिदेवा स्तत्पट्टे श्री नेमीचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री गुणकीर्त्तिदेवा। श्री मदनचन्द्रदेवेन लिखितं पुस्तकं ज्ञान वरणक्षयार्थं पठनार्थं च। इदं पार्श्वनाथग्रंथं पंडित रूपचन्द्रेन छुडायितं पं० सांतू पासि।

२३. पार्श्वनाथचरित्र।

रचियता महाकवि श्रीधर। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६६. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५×४० अक्षर। लिपि संवत् १५७७. प्रति शुद्ध तथा स्पष्ट है।

मंगलाचरण—

पूरियसुअणासहो पावपणासहो णिरूवमगुणमणिगणभरिउ।
तोडियभवपासहो पणवेविपासहो पुणु पयडमि तासु जि चरिउ॥

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

× × × × × × ×

विक्कमणरिंद सुपसिद्धकालि, ढिल्ली पट्टणि धणकणविसालि।
सणवासी एयारहसएहि, परिवाडिए वरिसहंपरिगएहिं।
कसणट्ठमीहि आगहणमासि, रविवारिसमाणिउ सिसिरमासि।
सिरि पासणाहु णिम्मलु चरित्तु, सयलामलगुणरयणहि दित्तु।
पणवीससयइं गंथहो पमाणु, जाणिज्जहि पणवीसहिं समाणु।

घत्ता

जा चन्ददिवायर महिहरसायर ता बुहयणहि पढिज्जउ।
भवियहिं भाविज्जउ गुणिहि थुणिज्जउ. वरलेहयहिं लिहिज्जउ॥

इय सिरिपासचरित्तं रइयं बुहसिरिहरेण गुणभरियं अणुमणियमणुज्जं णट्टलनामेण भव्वेण पुव्वभवंतरक्खहणो पासजिणिदस्स च रू निव्वाणो जिणपियरदिक्खगमणो बारहमो संधी परिसम्मतो।

आसीदत्र पुरा प्रसन्नवदनो व्याख्याप्रदत्तश्रुतिः।
शुश्रूषादिगुणैरलंकृतमना देवे गुरौ भक्तिकः।
सर्वज्ञक्रमकंजयुग्मनिरतो न्यायान्वितो नित्यसो।
जेजाख्यो खिलचन्द्ररोचिरमलस्फूर्जद्यशोभूषितः॥ १॥

यस्यांगजो जनि सुधीरिह राघवाख्यो व्याख्यानमंदमतिहृज्झितसर्वदोषः।
श्रोतकाव्यवनभोगणपाल्वर्णेदु श्रीमाननेकगुणरंजितचारुचेतः ॥ २ ॥
ततोऽभवत्सोढलनामधेयः सुतो द्वितीयो द्वपत मजेयः।
धर्मार्थ मत्कृतयेविदग्धो जिनाधिपप्रोक्तवृपेन मुग्धः ॥ ३ ॥
पश्चाद्भूव शशिमंडलभ समानः ख्य तः क्षितौ यश्वरजनादिपलब्धमानः।
सद्दर्शनामृतरसायनपनपुष्टः श्री नट्टलः शुभमनाक्षपितारिदुष्ट ॥ ४ ॥
तेनेदमुक्तमधिया प्रविचिन्त्या चित्ते स्वप्नोपमं शेषमसारभूतं।
श्री पार्श्वनाथचरितं दुरितं पनोदि मं क्षायकारितमितेनमुदं व्यलेखि ॥ ५ ॥

अहो जणणिक्कन्लु चित्त करेवि, भिसं णिसए सुभमंतुधरेवि।
खणिक्क पयापि मञ्झु सुणेहु, कुभावइं सव्वइं हो तह णेहु।
इहत्थि पसिद्धु दिल्लिहि टक्क, णरुत्तमु णं अवइण्णउं सक्कु।
समग्गखंम तुम्हह तासु गुणाइं, सुरासुररायमणोहरणाइं।
ससंकसुहाम्मर्माकित्तहे धामु, सुरायले किण्णरगाइयणामु।
मणोहर माणि णिरंजणकामु, महामहिमालउ लोयहं वामु।
जिणेसरपायसरोयदुरेहु, विसुद्धमणोगइ णित्तइ सुरेहु।
सयागुरुभत्त गिरिंदुवधीरु, सुहं सुह ओजलहिव्वगहीरु।
अदुज्जणु सज्जणमुक्खपयासु, वियाणियमागहलोयपयासु।
असेसहंसज्जणमज्झि मणुज्ज, णरिन्दहं चित्तपयासिय चोज्जु।
महामइवंतहं भावइ तेम, सरोयणराहं रसायणु जेम।
सवंसणहं गणभासणसूरु, सवंधव वग्गमणिच्छियपूरु।
सुहोह पयासणु धम्मुयमुत्त, वियाणियजिणवर आयमसुत्त।
दयालयवट्टणु जीवणवाहु, खलाणणचन्दपयासणराहु।
पिया अइवल्लहवालिहेणाहु, ... ।

घत्ता

बहुगुणगणजुत्तहो जिणपयभत्तहो जो भासइ गुणनट्टलहो।
सो पयहिं णहगणु रमियवरगणु, लंघइ सिरिहिरहयसलहो।
पंचाणुव्वयधरणुससयल सुअणह सुहकारणु।
जिणमयपहसचरणु त्रिसमविसयासावारणु ॥
मूढभावपरिहरणु मोहमहिहरणिद्दारणु।

पावाविल्लणिदलणु असमसल्लइं उसारणु ॥
विच्छलविहाणपविहाणपवित्थरणु जिणमुणिपयपुज्जाकरणु ।
अहिं णंदउ णट्टलसाहुचिरू, बिबुहयणहं मणधणहरणु ॥ १ ॥
दाणवंतुतकिंदंतिधरियंतिरयणतकिमेणिउं ।
मववंतुतकिमयणु तिजयतावणु रइ माणिउ ॥
अइगहीरुतकि .लहिं गरूयलहरिहिं हयसुखहु ।
अथिरयरू तकिमेरुवयभय रहियउतकिनहु ॥
णंउदतिनसेणिउं नउमयणु, ण जलहिमेरूपुणुननहु ।
सिरिवंतु साहु जेजातणउं, जगिनट्टलु सुपसिद्धु इहु ॥ २ ॥
अगंवगंकलिंगगउडकेरलकण्णाडहं ।
चोडदिविडपंचालसिंधुखसमालवलाडहं ॥
जट्टभोट्टणेवालटक्ककुंकणभरहट्टहं ।
भायाणयहरिआणमगहगुज्जरसोरट्ठह ॥
इय एवमाइदेसेसु णिरू, जो जाणियइ नरिंदहिं ।
सो नट्टलुसाहु न वणियइ कह सिरिहरकइविंदहिं ॥ ३ ॥
दहलक्खणजिणभाणियधम्मु धुरंधरु वियक्खणु ।
लक्खणउवलक्खियसररू परचित्तवलक्खणु ।
सुहिसज्जणवुहयणविणीउ सामालंकरियउ ॥
कहलोहमयाहिमाणभयमयपरिरहियउ ।
गुरूदेवपियरपियभत्तियरू अयरवालकुलसिरितिलउ ।
णंदउ सिरिनट्टलु साहुचिरू, कइ सिरिहरगुणगणनिलउ ॥ ४ ॥
गदिरघोसु नवजलहरूव्वसुरसेलुवधीरउ ।
मलभररहियउनहयलुव्वजलणिहिवगहीरउ ॥
चिंतिययरू चिंतामणिव्व तरणिवतेइल्लउ ।
माणिणिमणहररइवरूव्व भव्वयणपियल्लउ ॥
गंडीउवगुणगणमंडियउ परनिम्महिय अक्खणु ।
जो सोवणियइं न केउणभणु, णट्टलुसाहुसलक्खणु ॥

इति श्री पार्श्वनाथचरित्रं परिसमाप्तं ।

संवत् १५७७ वर्षे आषाढ सुदी ३ श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्

शिष्य मुनि धर्मचन्द्रस्तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये पहाड्यागोत्रे साह ऊधा तद्भार्या लाडा तत्पुत्र साह फल्हू द्वि० गूजर। फलहू भार्या सफलादे साह गूजर भार्या गुणसिरी तत्पुत्र पंचाइण इदं शास्त्र नगपुर मध्ये लिखाप्य मुनिधर्मचन्द्राय दत्तं।

२४, पंचास्तिकायप्राभृत।

मूलकर्त्ता श्री कुन्दकुन्दाचार्य। टीकाकार श्री अमृतचन्द्राचार्य। भाषा प्राकृत-संस्कृत। पत्र संख्या १४८. साइज ६॥×४ इञ्च प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है। विषय-सिद्धांत।

लेखक प्रशस्ति—

संवत १६३७ वर्षे अषाढ बुदि १४ दिवसे शनिवासरे मर्गिसर नक्षत्रे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्तिदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गोधा गोत्रे सा० पचायण तद्भार्या पाढमदे तयोः पुत्री द्वौ प्रथम जिनपूजापुरंदर संघभार-धुरंधर चतुर्विध दानवितरणकल्पवृक्ष सा० श्री नूंना तद्भार्या नुनसिरि तयोः पुत्रा अत्वारः प्रथम सा० वीरू तद्भार्या ल्होकन, द्वितीय जिणदास तद्भार्ये द्वे प्रथम सरूपदे द्वि० लहुडी। तृतीय सा० चिमला तद्भार्या बहुरंगदे तयोः पुत्रास्त्रयः प्रथम सा० जीवा तद्भार्या जीवलदे तयोः पुत्र चि० दुरगा द्वि० सा० डीहा तद्भार्या डिहिसिरि; तृतीय चि० किसनदास चतुर्थ सा० चौड्या तद्भार्ये द्वे प्रथम चादणदे द्वि० लहुडा तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० कौजू द्वि० चि० दशरथ। द्वितीय पूना तद्भार्या पुनसिरि तयो पुत्रास्त्रयः प्रथम सा० जादू तद्भार्या जौणादे, द्वि० सा० नेता तद्भार्या नेतलदे तृतीय चि० जिणदत्त द्वि० सा० ऊरू तद्भार्या कौतिगदे एतेषां मध्ये सा० जिणदास तद्भार्या स्वरूपदे इदं शास्त्रं लिखाप्य उत्तमपात्राय दत्तं।

२५, प्रद्युम्नचरित्र।

रचियता महाकवि श्री सिंह सिद्ध। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १७५. साइज १२×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२×३५ अक्षर। प्रति प्राचीन है। पत्रों का रंग बदल गया है। अक्षर मोटे हैं।

मंगलाचरण।

खमदमयमनिलयहो, तिहुयणतिलोयहो, वियलयिकम्मकलंकहो।
थुइ करमि ससत्तिए, अइणिरुभत्तिए हारकुलगयणससंकहो॥

अन्तिम पाठ—

इय पज्जुण्णकहाए पयडियधम्मत्थकाममोक्खाए बुहरल्हणसुव कइसीह विरइयाए पज्जुण्ण संबु भाणु अणिरुद्धणिव्वाणगमनं णामपण्णरहमी संधी परिच्छेओ सम्मत्तो।

आरम्भ में दी हुई प्रशस्ति—

हयदुरियरिणं,[1]	तइलोयइणं।
भवभयहरणं,	णिज्जियकरणं।
सुहफलकुरुहं,	वंदिवि अरुहं।
पुणु सत्थमई,	कलहंसगई[2]
वरवएणपया,	मणिधरिवि सया।
पयपाणसुहा,	तोसिय विवुहा।
सव्वंगणिया,[3]	बहुभंगणिया।
पुव्वाहरणा	सुविसुद्धमणा।
सुयवरवयणी,	णयगुणणयणी।
कइयणजणणी,	तं दुव्विहणाणी[4]
मेहाजणणी,	सुहसयकरणी।
घरपुरपवरे,	गामे णयरे।
णिउ विउसत्तहे,	सुयभाणवहे।
सरसइसुसरा,	महु हो उवरा।
इमवज्जरइ,	फुडु सिद्धकइ[5]।
इयचोरभए,	णिसिभरि विगए।
पहराद्धट्ठिए,	चिंततु ठिए।

घत्ता

जा सुत्तउ अच्छइ तातहिं पच्छइ णारिइक्कमणहारिणिया।
सियवत्थणियत्थिय कंजयहत्थिय अक्खसुत्तसुयधारिणिया ॥१॥

सा चवेइ सिविणत्ति तक्खणे,	कइ सिद्धचिंतहि णियमणे।
तं सुणेवि कवि सिद्ध जंपिए,	भइ मज्झुणिरू हिय कंपए।
कव्व वुद्धि चिंततु लज्जिउ,	तक्कछंद लक्खण विवज्जिउ।
णावि समासु ण विहित्त कारउ,	संधिमुत्तगंथहं असारउ।
कव्वु कोइ ण कयावि दिट्ठउ,	महु णिघंटुकेणवि ण सिट्ठउ।

१गय २ घरेवि ३ अग्गं ४ दुविहणाणी ५छुडु।

तेण विहिणि चिंततु अच्छमि, खुज्जु होवि तालहलु वंछमि।
अंधुहोवि णवणट्टपिच्छिरो, गेय सुणणि वहिरोवि इच्छरो।
तं सुणेवि जाजयमहासुई, णिसुणि सिद्ध जंपइ सरासई।

घत्ता

आलसु संकिल्लहि हियउ म मेल्लहि, मज्झु वयणु एउ दिढुकरहिं।
हउं मुणिवरवंसे कहमिविसेसे, कव्वु किंपि तं तुहुं करहिं ॥ २ ॥
१
ता मलधारिदेव मुणिपुंगमु, णं पच्चक्खु धम्मु उवसमु दमु।
माहवचन्दु आसि सुपसिद्धउ, जो खमदमजमणियमसमिद्धउ।
तासु सीसु तवतेयदिवायरू, वयतवणियमसील रयणायरू।
तककलहरि झंकोलियपरमउ, वरवायरणपवरपसरियपउ।
जासु भुवणी दूरं तरू वंकिवि, न ठिउ पच्छण्णु मयणु आसंकिवि।
अमयचन्दु णामेण भडारउ, सो विहरंतु पत्तु बुहसारउ।
सरिसरणंदण वणसंछण्णउ, मठविहारजिणभवणरवण्णउ।
वंभणवाडउ णामें पट्टणु, अरिणरणाहसेणदलवट्टणु।
जो भुंजइ अरिणरखयकालहो, रणधोरियहो सुयहो वल्लालहो।
जासु भिच्चु दुज्जणमणसल्लणु, खत्तिउ गुहिलपुत्त गहि भुल्लणु।
तहिं संपत्त मुणीसरू जावहिं, भव्वलोउ आणंदिउतावहिं।

घत्ता

णियगुणअपसंसेवि मुणिहि णमंसवि, जो लोएहिं अदुगुंच्छियउ।
णयविणयसमिद्धें पुणु कइसिद्धें, सो जइवरू आउच्छियउ ॥ ३ ॥

× × × × ×

इय देवय णंदणु अवियण जणमणणयणाणंदणु।
बुहयणजणपयपंकय छप्पउ भणइ सिद्धु परमप्पउ ॥

अन्तिम प्रशस्ति—

कृतं कल्मषवृक्षस्य शास्त्रं शास्त्रं सुधीमता।
सिंहेन सिंहभूतेन पापसामजभंजनम् ॥ १ ॥
कामस्य काम्यं कमनीयवृत्तेः वृत्तं कृत्तं कीर्तिमतां[२] कवीनां।

१ पिउ २ कृतः

भव्येन[१] सिंहेन कवित्वभाजी, लाभाय तस्याश्च सदैव कीर्त्ति ॥ २ ॥

सव्वण्हू[२] सव्वदसी भवव्वणदहणो, सव्वमारस्स मारो ।
सव्वाणं भव्वयाणं समणमगहो सव्वलायाण सामी ॥ ३ ॥
सव्वेसु वत्थुरूवं, पयडणकुसलो सव्वणाणा व लोई ।
सव्वेहिं[३] भूययाणं करूण विरयणो सव्वयालं जयो सो ॥ ४ ॥
जं देवं देवदेवं अइसय सहिदं अगंदारोणिहंतं ।
सुद्धं सिद्धोहरत्थं कलिमलरहिदं भाव भावाणु मुक्कं ॥
णाणायारं अणंतं वसुगणगणियं[४] असहीणं मुणिच्चं ।
अम्हाणं तं अणिदं पविमलसुहिद देउ संसारपारं ॥ ५ ॥
जाई मोहाणु वंधं सररूहणिलए किं तवत्थं अणत्थं ।

संतं[५] देहत्थपारं विवुह्विरमणं खिव्ज देदीयमाणं ॥

वाए सोए[६] पवित्त विजयदु भुवणे कव्वचित्तं विचित्तं ।
दिव्जं तं जं अणंतं विरयदि सुइरं णाणलाई विदिंतं ॥ ६ ॥

घत्ता

जं इह हीणादिउ कइमि साहिउ,	अमुणिय सत्थपरंपरई[७] ।
तं खमउ भडारी विहुवणसारी	वाए सरिसच्चायरई ॥ ७ ॥

जा णिरु[८]सत्तहं[९]गि जिणवयणविणिग्गय दुहविणासणी ।
होउ पसण्ण मज्झु सा तुहयरि इयरणकुमइ णासणी ॥ ८ ॥
परवाइयवायाहरू अच्छम्मु,	सुअकेवलि जो पच्चक्खु धम्मु ।
सो जंपउ महामुणि अमियचन्दु,	जो भव्वणिवह कइरवहिं[१०] चन्दु ॥
मलधारि देव पयपोमभसलु,	जंगम सरसइ सच्छत्थ कुसलु ।
तह पयरउ णिरू उण्णइ[११] मयाणु,	गुज्जरकुलणह उज्जोय भाणु ॥
जो उहय पवरवाणीविलासु,	एवं विह विउसहो रल्हणासु ।
तहो पणइणि जिणमइ सुहयसील,	सम्मत्त वंत णं धम्मलील ।
कइ सीहु ताहिं गब्भंतरंम्मि,	संभविउ कम्मलु जह[१२] सुरसरंमि ॥

१ सधेन २ सव्वदंशी ३ सव्वेसिं ४ गणितं ५ संदेहयारं ६ सीए ७ सव्वापरई ८ चिरू ९ भंगि १० कइरिहिव ११ उण्णायमाणु १२ जि णररूहसरम्मि ।

जण वच्छलु सज्जणजाणि हरिसु, सुइ[१] सत्थविहि वइसय सारसु।
उप्पणु सहोयरू तासु अवरू, णामेण सुहंकरू गुणाहं पवरू॥
साहारणु लहु वउ तासु जाउ, धम्माणुरत्तु अइ दिव्वकाउ।
तइो अणुवउ[२] मइ एउवि सु सारू, सविणोउ विणसरू कुसुमसारू॥
जावच्छहि चत्तारि सुभाय, पर-उवयारिय जणजणियराय।
एक्कहिं दिणि गुरुणा भणिउ वच्छ, णिसुणहि पच्छयय कइरायदच्छ॥
भोवाल! सरासइ गुणसमीह, कि अविणेवइ दिणगमहि सीह।
चउविह पुरिसत्थर सोहभरिउ, णिव्वाहहि एउ पज्जुण्ण चरिउ॥
कइ सिद्धहो विरयंतहो विणासु, संपणाउ कम्म वसेण तासु।
महु वयण करेहि किं तुअ गुणेण, संतेण कुउ छाया समेण॥

घत्ता

कि तेण पहूवइ बहुधणाई, जं विहडियहण उद्धरइ[३]।
कव्वेण तेण किं कइयणेण, जं णाळइल्लहं मणुहरइ॥
गुरुणो पुणो पउत्तं पवियप्पं पुत्त[४] माधराहिचित्ते।
गुणिणा गुणं लहे दिणु जइ लोओ दूसणं थवइ॥
को वारइ सविसेसं खुद्दो खुद्दत्तणं प वियरंतो।
सुवणो छुडु मज्झत्थो असुणं तोणियसहावंच॥
संभवइ बहुयविग्घं मणुयाणं समय मग्गलग्गाणं।
मा होहि कज्जसिढिलो विरयहि कव्वं वरं तोवि॥
सुह असुहं णं वियाणावि[५] चित्तं धीरेवि तेजए वयणा।
परकज्जं परकव्वं विहडंतं जेहिं उद्धरियं॥
असियसइंदगुरूणं आएसं लहेवि झत्ति इय कव्वं।
णियमइणा णिम्मविश्र णंदउ ससिदिणमणी जाम॥
को लेक्खइ सत्थम्मि दुज्जणं पिअ सुहयरं।
सुयणं सुद्ध सहावं करमउ लिरए वि पत्थामि॥
जं किंपि हीण अहियं विउसा सोहंतु तं पि इह कव्वे।
धिट्ठत्तणेण रइयं खमंतु सव्वेवि सुह गुरुणो॥

१ सुइवंतु २ अणुधउ ३ उवयरइ।

अथ संवत्सरोऽस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्दः संवत् १५८७ वर्षे माघवुदि ५ सूर्यवासरे कुरुजांगलदेसे श्री सुलतान बब्बरसाहिविजयराज्यप्रवर्त्तमाने श्री सहारणपुर महादुर्गे निजर्द्धिवृद्धिप्रहंसितस्वर्गे तत्र श्री सर्वज्ञ विहारो जिनोपदिष्टतत्त्वकथाकथनसारे श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये उभयभाषाप्रवीण-तपोनिधि श्री उद्धरसेनदेवास्तत्पट्टे सिद्धांतजलसमुद्रविवेककलाकमलिनीविकासनैकदिणमणिः भट्टारक श्री देवसेनदेवास्तत्पट्टे कविविद्याप्रधानचरित्रचूडामणि भट्टारक श्री विमलमति विमलदेवास्तत्पट्टे अनेकविद्यानिधान यमनियमस्वाध्यायध्याननिरतः भट्टारक श्री धर्मसेनदेवस्तत्पट्टे छत्तीसगुणनिलय पंचमहाव्रतधरणधौरेयान् भट्टारक श्री भावसेनदेवास्तत्पट्टे काममतंगे मृगेन्द्रान् भट्टारक श्री सहस्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे सिद्धांत अध्यात्म भावसद्मान् निहतछद्मान् भट्टारकहीनदीनउद्धरणसमर्थान् कलितानेकशास्त्रार्थान् भट्टारक श्री गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे संयमविवेकनिलयान् विबुधकुलतिलकान् भट्टारकलघु भ्राता तथा श्री यशकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे वाचा शीतलान् भट्टारक श्री मलयकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे वादीभकुंभस्थलविदारणैकपंचमुख न् लब्धानेकसुखान् त्रयोदशविधचारित्राचरित्रनिर्जितकरण भट्टारकश्री गुणभद्रसूरिदेवः एतेषां आचार्याम्नाये अग्रोतकान्वये भूपणे गर्गगोत्रे जाल्हयहाडिये कलसौरेवालविहटवास्तव्यं तथा मणि उद्योतकारीपदसमाश्रितशीलगांगेव परोपकारी साधु लाधा, तस्य भार्या शीलशालिनी गुणमालिनी साध्वी साहणही। तस्य पुत्र २ प्रथम पुत्र पचमी उद्धरण धीरु सप्तक्षेत्रकृतनितविभवभारान् साधू मल्लू तस्य भार्या शीतलवचनश्रवणसमर्थं मुनिगणआहारदान दाइकी साध्वी करमचन्दही तस्य पुत्र विज्ञानकलासंयुक्तान् मातृपितृपदभक्तान् साह वसावणु तस्य भार्या साध्वी धन्नेही पुत्र २। प्रथम पुत्र साधु गढमलु, द्वितीय कटारू, साधु, लाधा द्वितीय पुत्र जिनप्रतिष्ठाजिनमहोत्सव करणकारणभर्त्ते स्वराबभारान् देवलोकगतः चौधरी वलिया, तस्य भार्या पुण्यपावनी साध्वीमायरही तस्य पुत्र ३ प्रथम पुत्र जिनशासनप्रभावकान् जिनपूजा अर्चनादिकरणकारण भर्तेश्वरावतारान् आश्रितजन कल्पपादान, पंचाइतसभाश्रंगारहारान् चौधरी भेजू तस्य भार्या शीलतोयतरंगिणी विनयवागेश्वरी साध्वी कामेही। तस्य पुत्र ३ प्रथम पुत्र मदा सदाचारविचारसारपारंगतान् साधु रावणु तस्य भार्या साध्वी इच्छाही द्वितीय पुत्र साधु तेजू। चिरंजीवि उगरदासु तृतीय पुत्र। चतुर्थ पुत्र चि० वेगराग। साधु वलिया द्वितीय पुत्र सुजनजनमनरंजन निजसरोवरमंडल कुमुदिनीविकासनैकमणिउद्योतकान् चतुर्विधदानवितरण श्रीयांसावतारान् भूपतिसभाश्रंगारहारान् चौधरी आसू तस्य भामिनी रूपेण निर्जितकामकामिनी गृहभारधराधारकी जिणचरणकमलसंसेवन चंचरीवन कारणी दानशीलप्रियंवदा साधू जिणदासही तस्य पुत्र विज्ञानकला संयुक्तम् चिरंजीवि कालदासु भार्या मोलंडही। साधु वालिया तृतीय पुत्र रत्नत्रकु डिडीरे पिंडपाण्डुरजसः पुण्डरीकखंडमंडितब्रह्मांडभांडमाण्डयान् निखिलगुणालंकृतशरीरान् सः चौधरी चूहडु। तस्य वनिता शीलतोयतरंगिणी विनयवागेश्वरी साध्वीरणमलही इदं प्रद्युम्नचरित्रं बाई तोलही उपदेशेन साधू चौधरी आसू तस्य भार्या साध्वी जिणदासही लिखापितं।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १७१. साइज ११×४½ इञ्च प्रत्येक पृष्ठ पर ९ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर। प्रति प्राचीन है अक्षरों का रंग घिलमिल होने लग गया है।

संवत १५६५ वर्षे भाद्रपद सुदी १३ दिने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र-देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये अजमेर वास्तव्ये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे सा झालाण तस्य भार्या पीथी तयोः पुत्राः साह पट्टिराज द्वितीय सा० सुरजिन तृतीय साह ईसर। साह पट्टिराज भार्या पउंसिरी तत्पुत्र साह धणराज साह सुरजिन भार्या दानशीलवंती सुनखती। साह धणराज भार्या लाडी तत्पुत्र पारस द्वितीय लोहर एतेषा मध्ये साह सुरजन भार्या पतिवृता द्विगुणयुक्ता सुनखत इदं शास्त्रं प्रद्युम्नचरित्रं लिखाप्य दशलाक्षणिक व्रतोद्यापनार्थं अर्जिका विनयश्रीयै दत्तं।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६५. साइज ११।।×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०×४४ अक्षर। प्रति प्राचीन है तथा पूर्ण है।

संवत्सरे १५१८ वर्षे शाके १३८३ पव्र्त्तमाने सर्व्वधारिनाम्नि संवत्सरे उत्तरायने ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे ६ षष्टम्यां तिथौ शुक्रवासरे घटिका ४१ पुष्यनक्षत्रे घटिका ४६ सिद्धिनाम्नियोगे घटिका ४५ श्री नैणवाहपत्तने सुरत्राण अलावद्दीन राज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा। भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्शिष्य मुनि मदनकीर्त्तिदेवास्तत् शिष्य मुनि नेत्रानंदिदेवा। तत् शिष्य ब्रह्म गाल्हा खण्डेलवालान्वये साह राऊं तद् भार्या साध्वी रावश्री तयोः पुत्राः साह छाजू कर्म्मसी धर्मसी। साह छाजू तद् भार्या साध्वी छाहिणी तस्य पुत्राः साह धाना गंगा, गजा, एतेषां मध्ये साह कील्हा तद् भार्या साध्वी पतिव्रतानार्थं पुत्रपौत्रकल्याणवृद्धिप्राप्त्यर्थं इदं प्रद्युम्नशास्त्रं लिखाप्य ब्रह्मगाल्हा सुहस्ते प्रदत्तं।

२६. बाहुबलिचरित्र।

रचयिता महाकवि धनपाल। भाषा अपभ्रंश। पृष्ठ संख्या २७२. साइज ६।।×३।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३३×३८ अक्षर। रचना संवत् १४५४ लिपि संवत् १५८६।

प्रारम्भिक पाठ—

सिरिरिसहणाह जिणपयजुयलु पणविवि णसियकलिमलु।
पुणु पढमकामए वहो चरिउ, आहासमि कयमंगलु॥

प्रारम्भ में दिया हुआ कवि परिचय—

गुज्जरदेसमज्झि णयवट्टणु, वसइ विउलु पल्हण पुरु पट्टणु।
वीसलएउ राउ पयपालउ, कुवलयमंडलु सयलु व मालउ।
तहि पुरवाडवंसजायामल, अगणियपुव्वपुरिसणिम्मलकुल।
पुणु हुउराय सेट्ठि जिणभत्तउ, भोवइ णामें दयगुणजुत्तउ।

सुहडउ तहो गांदणु जायउ, गुरु सज्जणहं मुअणि विक्खायउ।
तहो सुउ हुउ धणवालु धरायले, परमप्पय पयपंकयरउ अलि।
एतहिं तहि जिण तित्थणमंतउ, महि भमंतु पल्हणपुरे पत्तउ।
सिरिपहचन्दु महागणिपावणु, वहु सीसहि सहिं उणविरावणु।
णं वाएसरि सरिरयणायरु, सुमयकणयसुपरिक्ख णणायरु।
दिट्ठु गणीसें पयपणवंतउ, वुह धणवालु विवुह जणभत्तउ।
मुणिणा दिट्ठउ हत्थु विणोएं, हो सिवियक्खणु मज्झुपसाएं।
मं नुदेमि तुहकयमच्छयकरु, महु मुह णिग्गउ घोसहिं अक्खरु।
सूरि वयणु सुणि मणु आणंदिउ, विणएं चरणजु अलुमइं वंदिउ।
पढिए सत्थगुरु पुरउ अणालस, हुअजससिद्धि सुकइ आणावस।

घत्ता

पट्टणे खंभायच्चे, धारणयरि देवगिरि।
मिच्छामयविहुणंतु गणि पत्तउ जोइणिपुरि॥१॥

तहि भव्वहिं सुमोच्छउ वि हियउ, सिरिरयणकित्तिपट्टे णि हियउ।
महमंदसाहि मणुरंजियउ, विज्जहिं वाइय मउ भंजियउ।
गुरु आयसें मइं किउ गमणु, सूरिपुरि वंदिउ णेमिजिणु।
पुणु दिट्ठउ चन्दवाडु णयरु, णरयणायरु णं मयरहरु।
णं णाय कणयकसवट्टपउ, णं पुहइ रमणि सिरि सेहरउ।
उत्तंगु धवल सिरिकियकलसु, तहिं जिणहरु णं वासहरजसु।
मइंगंपिय लोयउ जिणभवणु, वहु समणालउणं समसरणु।
सिरि अरुहविंवु पुणु वंदियउ, अप्पाणउं गरहिउ णिंदियउ।
हो किंणेहेंसि विणं गयइं, विहडंगइं किंसु हिं सगयइं।
भो भो परमप्पय तुहुं सरणु, महु णासउ जम्मजरामरणु।

घत्ता

पुणु मुणिवरचरणणमंसियइं, अच्छमि जा तहि एक्कखणु।
ता पत्तउ सिरिसंघाहिवइ, दिट्ठउ वासद्धरु सुअणु॥२॥

जायववंस पउणिहिउडुपहु, आसि पुरिसु सुपसिद्धउ जसहरु।
तहो णंदणु गोकणु संजायउ, संभरिराय मंति विक्खायउ।

तहो सुउ सोमएउ सोमाणणु, कुणयगइंदविंदपंचायणु।
तहो पेमसिरिभज्ज विक्खाइय, पियपमसीलगुणेहिं विराइय।
एयहि सत्त पुत्त संजाया, णंजिणगिरए तव्व विक्खाया।
पढमु ताहंदय वल्ली सुरतरू, संघाहिउ णामें वासद्धरू।
जो दिवहाडिय चाउ पसिद्धउ, णट्टमंजु णिवमंतसमिद्धउं।
पुणु वीयउ परवारि सहोयरू, विणयंकिउ हरिराउ मणोहरू।
तइयउ सुउ पल्हाउ सलक्खणु, सजायउ आणंदिय सज्जणु।
पुणु तुरियउ महराउ विसुद्धउ, गुणमंडिय तणु हुव जसलुद्धउ।
पंचमु भामराउ मोहायरू, छट्ठउ तणउ णाम रयणायरू।
सत्तमु सयल वंधुजण वल्लहु, संतणु णाम जाउ अइ दुल्लहु।
एयहिं सत्तहिं सुएहिं पसाहिउ, सोमएउ णं णयहिं जिणाहिउ।
जो पढमउं णंदणु वासाहरू, सयलकलाभउ णं छणससहरू।
पेक्खे विणु सारंग णरिंदे, वाहुवाणकुल कइरवचन्दे।
रज्जधुराधरु णियमणिजाणिवि, मंतिपयम्मिठावउ सम्माणिवि।
अप्पि विदेसु कोसुधणु परियणु, भुंजइ रज्जु सोक्खु णिच्चलमणु।

घत्ता

सो सुअणु गुणायरू वुहविहियायरू, दुत्थियजणणवकप्पतरू।
जिणपयपंकयमहुयरू सिरिवासद्धरू, जा अच्छइ तहिं दुरिय हरू॥ ३॥

ता पेक्खिवि पंडिय धणवालें, विहसि वि भणिउं वुद्धिविसालें।
भो सम्मत्त रयणरयणायर, वासद्धर हरिरायसहोयरू।
विणयगुणालंकिय णिम्मछर, पंडियजणमण रंजणकोछर।
करि वि पइट्ठ भव्वजणु रंजिउ, जें तित्थयरगोत्त आविज्जउ।
धएणउं तुहुं गुरुभत्तिकयायर, मइसुरकित्ति तरंगिणि सायर।
जिणवरपायपउरहमहुयर, सयल जीव रक्खणसुदयायर।
दुस्समकालपहावगुरुक्कउ, जिणवरधम्ममग्गिजणुवंकउ।
दुज्जणपउरुलोउ अकयायरू, विरलउ सज्जणु गुणिविहियायरू।
असहायहो जगिकोविणमएणइं, धम्मपहावें लब्भइ रएणइ।
धम्महीणु जणु जहिं जहिं गच्छइ, तहिं तहिं सम्मुहुं को विण पच्छइ।
ते कज्जें धम्मायरू किज्जइ, धम्महीणु ण कयाविहिज्जइ।
इय धम्महो पहाउ उर-घुट्ठउ, णिसुणिवि वासाधर संतुट्ठउ।

घत्ता

पुणु जंपिवि पियचायए महुरू, तहि गुरुचरणग्गें ठियउ।
वहु विणएसिरि वासद्धरेण, कइ धणवालउ पत्थियउ॥ ४॥

जिणपय पंकय इंदिंदरेण, आगम पुराण सुइमंदिरेण।
सम्मत्तरयणरयणायरेण, कइ पत्थिउ पुणु वासाहरेण।
भो किं अविणोएं गमहि कालु, सुइ तदु थुणहिं जिणुस मिमालु।
करि कव्वु मणोहरसच्छचित्त, जिणचक्किकाम कह अइविचित्त।
जसु णामइं णासइ णिहिलु दुरिउ, बाहुवलि कामएवहो चरिउ।
जइ असणोवरि तं वोलु भव्वु, तह जिण तिलउ वरि सहइ कव्वु।
तुहुं विरयहि भव्व मणाहरासु, पद्धडियावंधेसद्दवासु।
किं विज्जए जाएण होइ सिद्धि, कि पुरि सजेणण लद्ध लद्धि।
किं किवि णएण संचिय धणेण, कि णिएणेहिं पियसंगमेण।
कि णिव्वलेण घणगज्जिएण, किं सुहडें समर भ ज्जएण।
कि अप्पणेण गुणकित्तणेण, कि अविवेएं विउ सत्तणेण।
किं विप्पिएण पुणु रूसएण, कि कव्वें लक्खणदूसिएण।
किं मणुयत्तणि जं जणि अभव्वु, किं बुद्धिए जाणणरइउ कव्वु।
इय वयणसुणि वि संघाहि वासु, धणवालु पयंपइ वियसियासु।
भो कुण मि कव्वु जं कहिउ मज्झु, गुरुपणइं सइ एं कि असज्झु।
हउं करमि कव्वु वुहजणियहासु, तुच्छमइं णपयडइ जसपयासु।
णालोयउ पवयणु पयसुअंगु, णउ लद्धउ मइकइयणहं संगु।

घत्ता

वायरणमहो वहि दुत्तरु, सद्दलहरि विच्छुरणउं।
णाणाभिहाणजल पूरियउ, णउहउ पारुत्तिएणउं॥ ५॥

वाएसरि कीलासरयवास, हुअ अ सि मह कइ भुणिपयास।
सु अपवणुहाविय कुमयरेणु, कइ चक्कवट्टि सिरि धीरसेणु।
महि मंडलि वण्णिउं विवुहवंदि, वायरणकारि सिरि देवणंदि।
जइ णंद णामु जइयदुणलक्खु, किउजेण पसिद्धु सवायलक्खु।
सम्मत्तारू वुसु रायभव्वु, दंसणपमाणु वरुरयउ कव्वु

सिरि वज्जसूरि गणिगुणणिहाणु, विरइउ महछंद सपमाणु।
महसेण महामइ विउसमहिउ, घणणाय सुलोयण चरिउ कहिउ।
रविसेणें पउमचरित्त वुत्तु, जिणसेणें हरिवंसु वि पवित्तु।
मुणि जडिल जडत्तणिवारणत्थु, णवरंग चरिउ खंडणु पयत्थु।
दिणयरसेणें कंदप्पचरिउ, वित्थरिउ महिहिं णवरसहं भरिउ।
जिणपासचरिउ अइसयवसेण, विरइउ मुणि पुंगव पउमसेण।
अमियाराहण विरइय विचित्त, गणि अंबसेण भवदोसचत्त।
चंदप्पह चरिउ मणोहिरामु, मुणि विण्हुसेण किउ धम्मु धामु।
धणयत्तचरिउ चउवग्गसारू, अवरेहिं विहिउ णाणापयारू।
मुणि सीहणंदि सद्दत्थवासु, अणुपेहा कह संपयणासु।
णवयारणेहु णरदेववुत्तु, कइ असगविहिउ वीरहोचरित्तु।
सिरिसिद्धसेण पवयणविणोउ, जिणसेणें विरइउ आरिसेउ।
गोविंदु कइ संसणकुमारू, कह रयण सुमुद्दहो लद्धपारू।
जयधवल सिद्धगुणमुणिउं भेउ, सुयसालिहत्थ कइजीव देउ।
वर पउमचरिउ किउ सुकइ सेढि, इय अवर जाय धरवलय वीढ।

घत्ता

चउमुहुं दोणु सयंभुकइ, पुप्फयंतु पुणु वीरू भणु।
ते णाणदुमणिउज्जोयकर, हउ दीवोवमुहीणु गुणु ॥ ६ ॥

तं णिसुणिवि वीसाहरू जंपइ, किं तुहुं बुहचिंताउलु संपइ।
जइ मयंकु किरणहिं धवलइ भुवि, तो खज्जोउ ण छंडइ णियछवि।
जइ खयराउ गयणे गमु सज्जइ, तो सिहंडि किं णियकमु वज्जइ।
जइ कप्पयरू अमियफलकप्पइ, तो किं तरू लज्जइ णिय संपइ।
जसु जे त्तिउ मइ पसरू पवट्टइ, सो तेत्तिउ धरणिय ले पयट्टइ।
इय णिसुणिवि संथाहिव वुत्तउ, कइणाधणवालेण पउत्तउ।
तुम्ह भत्ति भारेण दायवर, विरयमि कामचरिउ गुणसायर।
पर दुज्जण भइ मणुथिउ कायरु, खलहु ण छुट्टइ गयणिणि सायरू।
कुडिलु गमणु परछिद्द णिहालउ, णयणायणु दुज्जीहु विसालउ।
अह पह गासिउ परदुह दरिसउ, णिट्ठरू पिसुणु भुअंगम सरिसउ।
गयरसु जडवाईव दुरासउ, दोसायरू रक्खसु वपलासउ।

णिवु को वि जइ खीरहिं सिंचइ, तो विसमो कहु वत्तणु मुंचइ।
उच्छु को विजइ सत्थें अखंडइ, तो विणसोमहु रत्तणु छंडइ।
दुज्जण सुअण सहावें तप्परु, सूरु तवइ ससहरु सायरकरु।
अहंतिडुइ दुज्जणु मविहडउ, जे हों तें सज्जणगुण पयडउ।
जह गो सीरू अविरमिल दारें, राविए तुंगए दिणु सुसमउ कतारें।
जह रामउ पहु वत्थु णिरिक्खउ, तह खल सगें सु अणु परिरिक्खउ।
अहसो दोसु लेउ जो पेच्छइ, णिव्वाणितणि महु अरि कहि अच्छइ।

घत्ता

गुरु लहुवण्ण सविरयरिय, सवणदिहियर विमलपह।
वर पयत्थ अत्थगलिय, पुण्ण लच्छिणंसु कइ कह॥ ७॥

अन्तिम पाठ—

चउविहसंघसमुद्धरणु, वयणामयपीणिय विउसु।
पहचन्दु सुकन्वु घणाहिवहा वासद्धरविचरेतु जसु॥

इय सिरिवहुवलिदेवचरिए सुहडपत्र तणय वुहधणवाल विरइए सिरि वासद्धरणामंकिए वाहुवलि-देव णिव्वाण गमणो णाम अट्ठारसमो परिछेउ समत्तो।

दिग्नाथोदारदारस्तुतवितितयशो मंडनस्याभयं।
राज्यं लक्ष्मीनिकाय्यं गुणमणिनिधये रमचन्द्राय दत्वा॥
सारंगश्चोणिपानार्पितमखिवपदश्रीपतेर्न्यासिंघो।
व्याजाद्वासाधरस्यस्थिरमकृतगुरु स्वर्गतेरभ्येत्य पुण्यात॥ १॥
यावत्साग मेखलावसुमती यावत्सुवर्णाचलः,
यवन्नारीकुचसंकुलः खममितं यावच्चतत्वांचितं।
सूर्याचन्द्रमसौ च यावदभितो लोकप्रकाशोद्यतौ,
तावन्नंदतु पुत्रपौत्रसहितो वासाधरः शुद्धधीः॥ २॥

प्रशस्ति—

सिरिणेमिणाहजिणपयजुयलु भत्तिए णविवि जगुत्तमु।
तच्चं सुणभवसिंघाहिवहो भासमि किंपि कुलक्कमु॥

जंबूदीवि भरहम्मि संतरि, गिरिसरिसीमारामणिरंतरि।

अंतरवेइमज्झि धणरिद्धउ, तहिं काविट्ठविसउ सुपसिद्धउ।
वीरखाणिउप्पत्ति पवित्तउ, सूरीदूरू जणपरिपालंतउ।
सूरसेणु णरवइ तहो णंदणु, अंधयविट्ठिराउ रिउमद्दणु।
तहो पइवयपिअपाणपियारी, णाम सुहद्दा देवि भडारी।
दसदसारतहिं णंदणजाया, वीरविसत्तिहु अणविक्खाया।
सायरविजउ पढमुउ विणीयउ, पुणअक्खोहुणाम हुउ वीयउ।
तइयउअमियासउ सिरिवल्लहु, पुणु हिमवंतु तुरिउ जणदुल्लहु।
विजउणामु पंचमु सुह वड्ढणु, छट्ठउ अचलु रिउ संकंदणु।
सत्तमु णाम पसिद्ध उधारणु, पुणु अट्ठमउ तणुब्भउ पूरणु।
सुउ अहिचंदुणवमु पुणु जाणहु, दहमउ सुउ वसुए उपमाणहु।
एयहं लहुअ कोंतिमहीवर, लावण्णें णिज्जिय अमरच्छर,
समुदविजउ सूरी पुरि थप्पिउ, चंदवाडु वसुदेवहो अप्पिउ
तहो सुउ रोहिणेउ अरिगंजणु, देवइणंदणु अणु जणरंजणु।
तहो संताण कोडिकुल लक्खइं, संजाया केवलि पच्चक्खइं।
पुणु संभरि णरिंद महिभुंजिय, जायववं सुब्भव ते रंजिय।
आसचंभु चहुवाणु पुहइपहु, तहु मंतिउ जदुवंणिउ जसरहु।
पहु गणपत्ति हुअउ धरणीयलि, आसाउरि सुरिपय पंकय अलि।
साहुणाम गोकणुमंती तहु, जिणवरचरणंभोरुह महुलिहु।
हुउ संभरि णरिंदु महिवालउ, कण्हदेउ णाम पयपालउ।
सोमदेउ तहो मंति मणोहरू, सयलकला लंकिउ णं ससहरू।

घत्ता

पुणु सारंगु णरिंदु अभयचन्दु तहो णंदणु।
तहोसुउ हुउ जयचंदु रामचंदु णामें पुणु॥ १॥

णिवसारंगरज्जि समयंकिउ, वासाहरूमंतिउ णीसंकिउ।
णियपहुरज्ज भारांदढकंधरु, विवुहविदंतरु पोमणाकंधरु।
एक्कुजि परमप्पउ जो झावइ, वे ववहार सुद्धणयभावइ।
जो तिकाल रयणत्तउ अंचइ, च:णिउयरूइ कहवि ण मुचइ।
जो परमेट्ठि पंच आराहइ, जो पंचगमंतमहि साहइ।

जो मिछत्त पंच अवगण्णइं, छक्कम्महिं जो दिणिदिणिगम्मइं।
जो सत्तंगु रज्जु सुणि हालइ, सत्ततच्च सद्दहइ रसालइ।
दायारहुं गुणसहुंरत्तउ, सत्तवसणे जो कहिवि ण रत्तउ।
अट्ठमूलगुणपालणतप्परु, सद्दंसणअट्ठंगरयणधरु।
अट्ठसिद्धगुणगणसंभरणइं, अट्ठदव्व पुज्जइ जिणवरणइं।
णवविहपुण्णपत्तदाणायरु, णवपयत्थ सुपरिक्खणणायरु।
णवरसचरिउ सुणइं वरकाणइं, दहलक्खणधम्महिं रइ मणइं।
एयारह अंगइं मणि इछइ, एयारह पडिमाउ णियछइ।
वारहसावय वय परिपालइ, तेरहविहिचरित्त सुणिहालइ।
चउदह कुलपक्खमु उवएसइ, चउदहविह पुव्वहि मणु वासइ।
चउदह मंग्गण वित्थरु जोवइ, चउदह पुरि सतण उज्जोवइ।

घत्ता

तहो वंधउ रयणसीहु भणिउं, मज्जायमेरु सुपसिद्धउ।
जिणविंवपइट्ठ रएवि पुणु, जिणवरगोत्तु णिवद्धउ ॥ २ ॥

वासद्धर पियमय वे घरिणिउं, परियण पोसण णं कुरु धरणिउं।
वे पक्खुज्जल पर ण मरालिय, सीलतरुहिं णं वेल्लि रसालिय।
पोमंकिय कुलसरणं पोमिणि, सुयणसिंहडिणि णं जलहर झुणि।
पइवय सोल सलिल मंदाइणि, दुत्थिय जण जण णव सुहदाइणि।
उदयसिरी होमाविणयजुय, चउविह सघहो कप्पणहीइय।
उअरसिप्पि सुयरयण समुब्भव, संजायाकुलहरणं थुब्भव।
पढमपुत्तु जसपालु गुणंगउ, रुवेण पच्चक्ख अणंगउ।
हुउ जयपालु वियक्खणुवीयउ, पुणु रउंपालु पसिद्धउ तीयउ।
तुरियउ चंदपालु सिरिमंदरु, पंचमु सुउ विहराज सुहंयरु।
छट्ठउ पुणपालु पुणायरु, सत्तमु वाहडु णाम गुणायरु।
अट्ठमु रूवएउ रूवट्ठउ, एयहिं अट्ठमु अहिं चिरु वहउ।
भाइय भत्तिउजय संजुत्तउ, णंदउ वासाधरु गुण जुत्तउ।
जं हुउं पत्थिउ पसमियगव्वें, वासाहरसंघाहिवभव्वें।
सिरि वाहुवलि चरिउ जं जाणिउं, लक्खणछंदुतक्कुणवियाणिउं।

घत्ता

लक्खणसत्ता छंदगणाहीणहिउ जं भणिउ मइं।
तं खमउ सयलु अवराहु वाएसरि सिवहंसगई ॥ ३ ॥

विक्कमणरिद अंकिय समए, चउदहसय संवच्छरहं गए।
पंचास वरिस चउअहियगणि, वइसाहहो सियतेरसिसुदिणि।
साईणक्खत्ते परिट्ठियइं, वरसिद्धि जोगणामें ठियइं।
ससिवासरे रासिमयंकतुले, गोलग्गे मुत्ति सुक्केंसबले।
चउवग्गसहिउ णवरसभरिउ, बाहुबलिदेव सिद्धउ चरिउ।
गुज्जरपुर वाडवंसतिलउ, सिरि सुहडु सेठि गुण गणणिलउ।
तहो मणहर छाया गेहिणिया, सुहडाएवी णामें भणिया।
तहो उवरि जाउ बहुविणयजुई, घणवालु विबुसु णामेण हुई।
तहो विण्णि तणुब्भव विउलगुण, संतोसुलहयहारिराउपुण।
थरुअरुह धम्मु जा महिवलए, सायरजलु जा सुरसरिमिलिए।
कणयद्दि जाम वसुहा अचलु, वासर होउतुव तोम कुलु।
जो पठइ पढावइ गुण भरिउ, जो लिहइ लिहावइ वर चरिउ।
संताणसिद्धि वित्थरइतहो, मणवंछिउ पूरइ सयलु सुहो।
बाहुबलि सामिगुरुगण संभरणु, महुणासउ जम्म जरामरणु।

घत्ता

जो देइ लिहाइ वि पत्तहो वायइ सुणइ सुणावइ।
सो रिद्धिविद्धि संपय लहिवि, पछइं सिवपउ पावइ ॥ ४ ॥
श्र मत्प्रभाचंद्रपदप्रसादादवाप्त बुद्धया धनपालदक्षः।
श्रीसाधु वासाधरनामधेयं स्वकाव्यसौधेयकलसीकरोति।

इति बाहुबलि चरित्रं समाप्तं। शुभं भूयात्। संवत १४८६ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने बुधवासरे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नंद्याम्नाये श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचंद्रदेवा।तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा ....। श्री रतनकीर्त्तिशिष्येण ब्रह्मरतनेन लिखापितम्।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २३७. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रारम्भ के १३७. पृष्ठ नहीं है । शेष के पृष्ठ

शुद्ध और सुन्दर है।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५८४ वर्षे अश्विनवदि ६ बुधवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचंन्द्रदेवास्तदाम्नाये ब्याघ्रेरवालान्वये ठोला गोत्रे सा नाथू भार्या सुलखत तत्पुत्राः सा. सहजा सा. रेडा सा. राणा सा. माधो, माधो भार्या तिपुरु तयोः पुत्राः सांगठा ऊदा, वीरसिंह, तेजा, राजा; डीडा भार्या मदना तयोः पुत्राः पारस ऊदा भार्या अमरो वीरसिंह भार्या राजा एतेषां मध्ये सा. माधो इदं पुराणं लिखाप्य ब्र. रत्नाय रत्तदत्तं।

२७. भविष्यदत्तचरित्र।

रचयिता कविवर धनपाल। भाषा अपभ्रंश। पृष्ठ संख्या १६७, साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३। ३७ अक्षर।

प्रारम्भिक पाठ—

जिणसासणसारु, णिद्धुअ[१] पावकलंकमलु।
संमत्त विसेसु णिसुणहु सुय[२]पंचमिय फलु॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

धक्कडवणिवंसे, माए सरहो समुब्भवहो[३]।
धणसिरिदेविसुएण विरइउ सरसइ संभवेण॥ १॥

अहो लोयहो सुयपंचमिविहाणु, इउजंतं चिंतिय सुहणिहाणु॥
दूरयरपणसिय पावरेणु, इह जा सा वुच्चइ कामधेणु॥
फलु देइ जहिछिउ मल्लोइ, चिंतामणि वुचइ तेण लोइ॥
इह जा सा वुच्चइ भुवण संति, अहमोक्खहो सुह सोवाण पंति।
णारणारिहों विग्घइं[४] अवहरेइ, जो जं मग्गइ तहो तंजि देइ।
णिब्भाहइ जोणियसिवि भरेण, सो पुण्णवंतु किं वित्थरेण।
उववास करइ जो सत्त सट्ठि उज्जमणेंतहो सुहि तुट्ठि पुट्ठि।
जइ भज्जइ अंतरि विग्घु होइ तहो सद्दहाणे[५] फलु तंजि तोइ।

घत्ता

अंगो किं बहु वायावित्थरेण एक्कवि चित्त महंतरेण।

१ णिद्धुव २ सुव ३ समुब्भवेण ४ दुक्खइं ५ सद्दहाणि।

अणुमोएं ताहें तिहुं संपण्णगुणंतरेण ॥

अरि उरि अइरावइ दीहरच्छि धणयत्तहो गेहिणि धणयलच्छि ।
उज्जमिय ताए चिरु संजुएणं, भाविय धणमित्तें तहिं सुएण ।
तहिं किंचिसेण णामुज्जयाइं, अणुमोइय वज्जो अरसुआएं ।
३
तहो फलेण ताइं तिण्णिविजणाइं, चउथइ भविसिवलोगहो गयाइं ।
पहिलइ धणयत्तहो धणयदित्ति, इयरइ विण्णिवि धणमित्तु कित्ति ।
दिज्जइ भवि पंकय सिरि सरुव, सुउ भविसयत्तु भविसाणुरुव ।
तियलिंगुहयोवि विण्णिविसुतेय, पहचूल रयण चूलाइं देव ।
तइयएभविसत्तु वि कणय तेउ, हुउ दहमइं तेहें जि वि माणे देउ ।
चोत्थएभवि सुवपंचमि फलेण, णिदट्ठु कम्मु झाणाणलेण ।

घत्ता

णिसुणंत पढंतहं परिचितंतहुं अप्पाहिया ।
धणवालें तेण, पंचमि पंचपयार किया ॥

इय धनपालकृतं पंचमी भविष्यदत्तस्य समाप्नोति ।

लेखक प्रशस्ति —

संवत् १५६५ माघमासे शुक्लपक्षे तिथौ १५ रविवासरे नक्षत्र अश्लेखा राजाधिराज कछवाहा करमचंद मोजाबाद मध्ये लिख्यतं रामदास । श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेव स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये पाटणी गोत्रे सांगानेर वास्तव्ये साह हेमा भार्या केलू पुत्रास्त्रयः प्रथम साह सखण भार्या लाडो तयोः पुत्रा साह डालू भार्या ऊदी तयोः पुत्रौ राणो द्वितीय रामदास । द्वितीय गोविंद भार्या गौरी तृतीय टेहू भार्या टिहुसिरि । द्वितीय साह हीरा भार्या त्तपरू तयोः पुत्राः त्रयः प्रथम डुंग द्वितीय पखत तृतीय गोना डूंगर भार्या धरमा पुत्रौ द्वौ म० सा० चाचा द्वि० घोराज पखत भार्या पूना तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम सोढा द्वि० छाजू । गोना भार्या गंगा तयोः पुत्र माधव । तृतीय सा० तेजा भार्या दामा । हीरा नाम्ना इदं शास्त्रं लिखाप्य ज्ञानपालाय ब्रह्म कोल्हाय दत्तं ।

प्रति नं० २ । पत्र संख्या १४ । साइज १० × ४।। इञ्च । प्रत्येत पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति-पंक्ति में ३६।४० अक्षर । अन्तिम पृष्ठ नहीं होने से प्रशस्ति अधूरी है ।

---

६ तिगिणम ।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५८६ वर्षे मार्गसिरमासे कृष्णपक्षे दोज बृहस्पतिवासरे। अजमेरमह गढवास्तव्ये राव श्री जगमलराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रस्तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये गोधा गोत्रे संघभारधुरंधर सं० पारस तद्भार्या पौसिरि तयो पुत्राः प्र म जिनपूजा पुरंदर सं० फाल्हा द्वि० सा० स धू तृतीय जिनपूजापुरंदर स०-हामा चतुर्थे सं० काल्हा भार्या फल्हासिरि······

प्रति नं० ३. पत्र सख्या १४०. साइज ११×५ इञ्च। प्रति प्राचीन तथा जीर्ण है। लिपि सं० १५८२.

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५८२ वर्षे श्रावणसुदी ११ रविवासरे कुरुजांगलदेशे श्रीपालवशुभस्थाने श्री इविराहिमसाहि-राज्यप्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे उभयभाषाप्रवीणतपोनिधिः श्री माहवसेनदेवास्तत्पट्टे सिद्धांतजलसमुद्रः भट्टारक श्री उद्धरसेनदेवास्तत्पट्टे विवेककलाकमलिनीविकासनैकदिनमणिः भट्टारक श्री देवसेनदेवास्तत्पट्टे कविविद्याप्रधान भट्टारक श्री विमलसेनदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री धर्मसेनदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भावसेनदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सहस्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टालंकार श्री यशःकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टोदयाद्रिचूडामणि भट्टारक श्री मलयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे वादीभकुंभस्थलविदारणैककेसरि भट्टारक श्री गुणभद्रसूरितस्य शिष्य चरित्रचूडामणिमंडलाचार्य मुनिक्षेमकीर्त्तिस्तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गर्गगोत्रे वर्णेईवास्तव्य पंचमीउद्धरणधीरश्रावकाचारदक्ष साधुछाजू तद्भार्या साध्वी तस्य पुत्रास्त्रयः। प्रथमपुत्र साधु घी द्वितीय पुत्र साधु पाल्हा, तृतीय पुत्र साधु लाडमु तद्भार्या साध्वीकल्हो तस्य पुत्र स्त्रयः प्रथमपुत्र साधुगेल्हे तद्भार्या साध्वी धारी तस्य पुत्र चारि प्रमथपुत्र देवगुरुशास्त्रभक्त शास्त्रदानदायक साधु पचाइण। साधु गेल्हे द्वितीय पुत्र साधु रणमलु। तृतीय पुत्र साधु राज। चतुर्थ पुत्र साधु भोजराजु। साधु लाडम दुतिय पुत्र पंडितगुणविराजमान पंडित हरियालु तद्भार्या शीलतोयतरंगिणी विनयवागेश्वरी साध्वासरो। तस्य पुत्राः त्रयः प्रथम पुत्र साधु जीवंदु दुतियपुत्र साधु देई सुदा। तृतीय पुत्र साधु माणिकचदु। साधु लाडम तृतीय पुत्रसाधु सिउराजु। तद्भार्या साध्वी सुनषा। पंचमी उद्धरणधीर साधुगेल्हे सुतु साधु पचाइणु तेन इदं श्रुतपंचमीभविष्यदत्तशास्त्रं लिखापितं। पंचमीउद्धरणधीर श्रावकाचारदक्ष चतुर्विधदानकल्पवृक्ष साधु जगमल उपकारेण।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ११५. साइज ११॥×४॥ इञ्च। प्रति सुन्दर है। लिपि संवत १५४०।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५४० वर्षे आसोज सुदी १२ शनिवासरे धनिष्ठा नक्षत्रे लिखितं इमा। शुभं भवतु। श्री

मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्त्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण गुरूपदेशात् मुनि श्री रत्नकीर्त्ति पठनार्थं खंडेलवालजातीय साह लाला भार्या ललतादे सुत साह वीरम भार्या वील्हणदे भातृ परवत भार्या पुहसिरि तत्पुत्रवलराजेन ज्ञानावरणकर्मक्षयार्थं लेखायित्वा दत्तं ।

२७. भविष्यदत्त चरित्र ।

रचियता पं० श्रीधर । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ६४. साइज ११।।×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा तथा प्रति पंक्ति में ३०×३७ अक्षर । रचना संवत् १२३०

मंगलाचरण—

ससिपहजिणचरणइं सिवसुहकरणइं पणविवि णिम्मलगुणभरिउ ।
आहासमि पविमलु सुअपंचमिफलु भविसयत्तकुमरहो चरिउ ॥

प्रारम्भ में दी हुई प्रशस्ति—

सिरि चन्दवारणयर ट्ठिएण, जिणधम्मकरण उक्कंठिएण ।
माहुरकुल गयण तमीहरेण, विवुहयण सुयण मणधणहरेण ।
णारायण देह समुब्भवेण, मणवयणकायणिंदियभवेण ।
सिरिवासुएव गुरुभायरेण, भवजलणिहि णिवडणकायरेण ।
णीसेसवलक्खगुणालयएण, मइवर सुपट्ट णामालएण ।
विणएण भणिउं जोडेवि पाणी, भत्तिए कइसिरिहरू भव्वप्पाणि ।
इह दुलहु होइ जीवहं णरत्तु, णीसेस सहं संसाहिय परत्तु ।
जइ कहव लहइ दइयहो वसेण, चउगइ भमंतु जिउ सहसरेण ।
ता विलउ जाइ गब्भेवि तेम, वायाहउ णहे सरयब्भु जेम ।
अहलहइ जम्मु ता बहु विहेहिं, रोयहिं पीडिज्जइ दुहणिहेहिं ।

घत्ता

जइ णिदय मायरि अय खामोयरि अवहरेइ णियमणि अणिसु ।
पयपाण विहोणउ जायइ दीणउं ता सो णवि जीवेइ सिसु ॥ २ ॥

हउं आयइ माणइ सहमइएणइं, सइं परिपालिउ मंथरगइए ।
कप्पयरुव नउलासए सयावि, दुल्लहु रयणु व पुण्णेण पावि ।
जइ एवहिं विरयमि णोवयारू, उग्घाडिय सिवसउ हलयवारू ।

ता किं भणु कइ मइ जायएण, जम्मण मह पीडा कारएण।
एउ जाणिवि सुललिय पयहिँ सत्थु, विरयहिँ वुहयण मणहरू पसत्थु।
महु तणिय माय णामेण जुत्तु, पायडिय जिणेसर भाणिय सुत्तु।
वण्णवइ भविस्सयत्तहो चरित्तु, पंचमि उववासहो फलु पवित्तु।
महुपुरउ समक्खहिँ वप्पतेम, पुव्वायरियहिँ भासीयउ जेम।
तं णिसुणेविणु कइणा पउत्तु, भो सुप्पट पईं वज्जरिउ जुत्तु।
जइ मुज्झ समच्छिउ णउ करेमि, हउं अज्जु कहव णिरू पहरेमि।
ता किं आयइ महु बुद्धि याइ, कीरइ विउलाएं समुद्धियाइ।

घत्ता

कि बहुणा पुणु भणिएं लइ सुणु सावहाणु विरएवि मणु।
भो सुप्पट महामइ जाणिय भवगइ ण गणमि हउ मणे पिसुणयणु ॥ ३ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

णरणाह विक्कम इच्चकाले, पवहंतए सुहयारए विसाले।
वारहसय वरिसहिँ परिगएहिं, दुगुणिय पणरह वच्छर जु एहिं।
फग्गुणमासम्मि वलक्खपक्खे, दसमिहि दिणे तिमिरूक्करविवक्खे।
रविवारि समाणिउं एउ सत्थु, जिह मइं परियाणिउं सुप्प सत्थु।
भासिउ भविस्सयत्तहो चरित्तु, पंचमि उववासहो फलु पवित्तु।
इह साहु पुरा सुपसिद्धु आसि, महियलु णामें गुणरयणरासि।
जिणपायपऊरुह ज्झुयदुरेहु, अइ मंथरगइ णिज्जियसुरेहु।
वच्छल्लवयण विरयण छइल्लु, दिढयरकुसगतिक्खणमइल्लु।
ववहारभारपविहएणवंधु, पियवयणहि सम्माणिय सुबंधु।
तहो तणिय घरिणि सियणाम हूअ, विणयाइं गुणामल रयणभूअ।
तहें हाले णाम तणूउ जाउ, सम्मत्त विहूसण कलिय काउ।
णिंदिय असार संसारू साहु, सुहि सुहयरू लोहव घरिणि णाहु।

घत्ता

तहु सुउ संजायउ जगि विक्खायउ साहु देवचन्दुक्खुवाणि।
जिण-धम्मासत्तउ गुरूयणभत्तउ णिम्मलपर गुणरयणखणि ॥ १ ॥

माहुर कुल णहयलछणसमंकु, जिण भासिय धम्मे विमुक्कसंकु।
वुहयणियर दाणविहि करणधुत्तु, णयमागणिरउ वज्जिय अजुत्तु।

तहो माढी णामें घरिणि जाय, णावइ लच्छी सयमेव आय।
कोयल इव सुहयर ललियवाणि, पविरइय कज्ज जाणे वि जाणि।
तहो गब्भे समुप्पण्णउ रवण्णु, साहारणु सुउ णवकणयवण्णु।
पढमउं परियाणिय णाय मग्गु, जिणधम्मकम्मसाहिय सुमग्गु।
वीयउ णारायणु णयणिउत्त, मणे परियाणिय जिणभणिय सुत्त।
णिम्मलयर जसलच्छी णिहणु, माहुरगयणइयलसेय भाणु।
मइवंतु संतु पाविय पसंसु, जिणवर कइ कय कण्णावतंसु।
करुणालउ किरियावंतु साहु, सुद्धासउ मयरहरुव्व अगाहु।
तह रुप्पिणि णामें जाय भज्ज, सिरिहरहो सिरिविण्णाणियसकज्ज।

घत्ता

सज्जणसुहयारिणि पावणिवारिणि पविमलसीलालंकरिया।
वंधवहं पियारी धीयणसारी विणयाइय गुणगणभरिया॥ २॥

तहो पढमु सुउ पटुणामें, हुउ णं अप्पउ दरसिउ कामें।
माणवरूउ लएप्पिणु लोयहो, धम्मपहु वें माणिय भोयहो।
वीयउ वासुएउ संजायउ, वासुएउ जिह तिह विक्खायउ।
तज्जउ पुणु जसएव पवुच्चइ, जो णीसेसहं वंधुहु रूच्चइ।
लोहडु तुरिउ समासहि पियरहिं, आवज्जिय णिम्मलगुण णियरहि।
पंचमु लक्खण कलिउ सलक्खयणु, कमलवयणु कज्जेसु थियक्खणु।
पंचवि णं मणासिय हो सिलीमुह, पंचवि वंधवयण विरइयसुह।
पंचवि मय मयगण पंचाणण, पंचवि पिसुण जणोह भयाणण।
ताहं मज्झे जो सुप्पडु भायरू, वर वच्छल्ला णंदिय णइयरू।
जिणपय पुज्जकरण उच्छुल्लउ, परियाणिय सत्थत्थर सुल्लउ।
जिणवरभासिय धम्मगहिल्लउ, लीलागइ जिय पोढल पिल्लउ।

घत्ता

तेणेहु मणोहरू तिमिरतमीहरू णियजणणी णामंकियउ।
अब्भत्थेवि सिरिहरू कइगुणसिरिहरू पंचमि सत्थुकराविउ॥ ३॥

सुप्पट तणंय जाणणि जासुहमइ, तियरण विणिवारय कुसमयरइ।
धम्मपसत्त हें मज्झखामहो, गुरुयण भत्तहें रुप्पिणि णामहो।
होउ समाहि वोहि रयहारिणी, अट्टम महि लच्छी सुहकारिणी।

सुप्पट साहुहं वसु कम्मखउ, होउ तहय अवरूवि दुक्खक्खउ।
मज्भुएउ णउ अएणु समीहमि, भवजलहिहि णिवडण णिरू वीहमि।
णंदउ संघु चउव्विहु सुंदरू, णियजसंपूरिय गिरिवर कंदरू।
विलउ जंतु घणपहलुव दुज्जण, चिरू णंदंतु महीयले सज्जण।
१५३०
एयहो मत्थहो संख पसाहिय, पंचदहजिसयफुडुतीसाहिय।
जाम जउण अमरसरि सुरालय, कुलगिरि तारा भयणघरायाल।
विजयायल गिरि ता स रसायर, सिसिर किरण दिणणयरय णायर।
ताम मुणिंदहिं एहु पढिज्जउ, भवियणु लोउ सयलु वोहिज्जउ।
सुन्दरयरभायरहं विराइउ, कामकोहमच्छरअवराइउ।
णियजणणीए समाणउं सुन्दरू, पुज्जाविहि विभविय पुरंदरू।

घत्ता

सम्मत्ता लंकिउ धम्मिअसंकिउ दाणविहाण विसत्तउ।
सुप्पटु अहिणंदउ जिणपयवंदउ तवसिरिहर मुणिभत्तउ॥ ४॥

इय सिरिभविसयत्तचरिउ विबुहसिरिसुकइसिरिहर विरइए साहु णारायणभज्जा रूप्पिणिणामंकिए भविसयत्तणिवाएण गमणं भवंतर कित्तणो णाम छट्ठोपरिछेउ सम्मत्तो।

२८, मदनपराजय।

रचयिता पं० हरिदेव। भाषा प्राकृत। पृष्ट संख्या २३, साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येकपृष्ट पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०×३५ अक्षर। प्रारम्भ के आठ पृष्ट नहीं है।

अन्तिम पाठ—

× × × × ×

जिसहसेणु मुणिवरु अच्छेसइ, तं चारित्त नयरु रक्खे सइ।
इय भणेवि गउ मोक्खहो जिणवरु, विसहसेणु पालइ संजमभरु।
अमुणंतहं काइवि साहिउ, मुणिवर तं खमंतु ऊणाहिउ।
जिणवरिंद पयपंकयभंसलिं, नरविज्जाहर गणहरकुसलिं।
मयणपराजए ण विरइय कह, हरएविरंति विवुहयणसह।

घत्ता

गुणदोसपयाउ अक्खिउ भाउ महुछलेण विरइय कह।

अट्ठयणपियारी हरिसिजणेरी नंदउ चउविहसंघहं ॥

इय मयणपराजयचरिए हरिएवकइ विरइए मयणपायपराजयं नामहु इज्जउ परिच्छेउ सम्मत्तो।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५७६ वर्षे कार्त्तिक सुदी १३ श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे नंद्याम्नाये कुदंकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गंगवाल गोत्रे सा डावर तस्य भार्या माल्ही तयोः पुत्रास्त्रयः सा दूदा, सा भोल्हु सा डुंगर। सा दूदा भार्या चाहू तयोः पुत्रौ सा० रणमल द्वितीय सा० चोखा सा रणमल भार्या जिणसो। सा चोखा भार्या ऊदा। सा दूदाख्येन लिखापितं कर्म्मक्षयानिमित्तं।

२६. मृगांकलेखाचरित्र।

रचयिता श्री पंडित भगवतीदास। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ७४. साइज १०॥ × ५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२×३६ अक्षर। प्रति स्पष्ट है। मंगलाचरण करने के पहिले लिपिकार ने भट्टारक माहेन्द्रसेन को नमस्कार किया है। बीच २ हिन्दी भाषा के पद्य भी लिखे हुये हैं। रचना संवत् एवं लिपि संवत् १७००. ग्रन्थ का दूसरा नाम चन्द्रलेखा कथा भी है।

प्रारम्भिक पाठ—

पणविवि जिणवीरं णाणगहीरं तिहुवणवइरिसिगइजई।
णिरुवमविसअत्थं सीलपसत्थं भणमिकहाससिलेहसई॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

दोहा

ससिलेहा णियकंत सम धारइ संजमु सारु।
जम्मणमरण जलंजली दाण सुयणुं भवतार॥१॥
करितणि तंपु सिवपुर गयउ, सोवणि सागर चन्द।
ससिलेहा सुरवरु भई तजि तिय तणु अतिणिंदु॥२॥
लहि णरभउ णिरवाण पद, पावसि सुंदर सोइ।
कवि सु भगौतीदास कहि पुणुं भव भमणु ण होई॥३॥
सील वडा संसार महिं सोलि सरहिं सब काज।
इह भवि परभवि सुह लहइं आसि भणहि मुणिराज॥४॥

कट्ठासंघसु माहुरगच्छए, पुष्करगणि णिम्मल वयसच्छए।
जिणवाणी पुवंग सयाधरू, अवइंणउ णावइ जणिगणहरू।

भवियकमलहिद णाणदिवायरू, रिसि जसकित्ति गुरू तवसायरू।
तासु सीस गुणचंद जसोहियउ, परवाइय मयजूहमि गाहियउ।
चउविहसंघ महाधुर धारणु, दुसहमयण सुणिवारणु।
धम्मंवरिसु समगुणं मसरूवउ, गुणसंसिपट्टि सीसु संभूवउ।
णामि सयल ससि सत्थकालाल उ, जिए हरिसीवइ सहसु मणालउ।
धम्मामिय वरि सणसु पयोहरो, तासु पट्ट नव भार धुराधरो।
वर जस पसर पसाहिय महियलु, णियम महत्थ पराजिय णहयलु।
भट्टारउ महिचंलि जाणिज्जइ, माहिदसेणु तिहाणे गिज्जइ।
तासु सीसि यहु चरिउ पयासिउ, भगवइदासे णाणरू भासइ।
सलि पहाउ अप्पणि जस कित्तणु, ससिलेहा चरित्त सरत्तणु।
लिहइ लिहावइ आइएणइ णरो, सो सुरवरपउ लहइ मणोहरो।
असुणंते णिरू जुत्ति अजुत्तउ, लक्खण छंदु हीणु जं वुत्तउ।
तं खमकरउ मइदेविया, इदं अहिद णरिंद सुसेविया।
सील चरित्त विचित्त पियारउ, पणु वुहसोहि करहुं गुण सार।
हीणु अहिउ किरवएणु वियारए, ठाणि ठविज्जइ परउ वयारए।

घत्ता

सगदहसय संवदतीतदां, विक्कमराए महप्पए।
अगहण सिय पंचमो सोमदिणे, पुएण ठियउ अवियप्पए॥

दोहा

चरिउ मइंक लेहचिरू णंदउ, जाम गयणि रवि ससि हरो।
मंगलयारू हवइ जणि मे इणि, धम्मयसंगहिद करो॥

घत्ता

रइउ कोटि हिसारे, जिणहरि वर वीर वड्ढमाणस्स।
तत्थविउ वयधारो, जोई दासो विवंभयारीउं॥
भागवई महुरीआ वत्तिगवर वित्तिसाहणाविरिएण।
विवुहसु गंगारामो तत्थठिउ जिणहरंसु मइवंतो॥

दोहा

ससिलेहा सुयवधुजे अहिउ कढिणजोआसि।

महुरी भासइ देस करि भणिउ भगौतीदासि ॥
जावनयणि रवि ससि मंह जाव लरह थिरू खित्तु ।
ससिलेहा सुंदर भई णंदउ ताउं चरित्तु ॥

इयसिरिचन्दलेहाकहाए रजियबुचित्तमहाए भट्टारकमहिन्दसेण सीसं बुहभगवइदास विरइए। ससिलेहा भगिमसु इत्थियलिंगच्छेड इंदयगोपभरणं सायरचन्द णिव्वाणगमणं तद्दीखासाहणं णाम चउत्थो संधि परिछेउ समतो। इति श्री भगवतीदास कृतं मृगांकलेखाचरित्रं संपूर्ण।

अथ संवत्सरेस्मिन् श्री नृपति विक्रमादित्य राज्ये सवतु सप्तदसतसंपूर्ण १७०० फाल्गुणमासे शुक्ला पदे सप्तम्यां रविवासरे श्री साहिजहांराजप्रवर्त्तमाने श्री काष्टासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे श्री लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्री मलयकीर्तिदेवास्ततपट्टे भट्टारक श्री गुणचन्द्रदेवास्तत्तत्पट्टे भट्टारक श्री सकलचन्द्रः तत्पट्टे भट्टारक श्री महेन्द्रसेणाम्नाये हिसारिवास्तव्ये अग्रोतकान्वये गर्गगोत्रे सेठो पारस तस्य भार्या सेठाणी परोऊ तस्य पुत्र द्वौ ज्येष्ठ पुत्र सेठो पाशु द्वि० पुत्र सेठो सुखनन्द तस्यभर्या सेठाणी धनो तस्य पुत्र युगम प्रथम पुत्र ताराचन्द द्वि० पुत्र जगरूप सेठो पार्श्व पुत्री शीलतोयतरंगिणी विनयवागेश्वरी साधर्म्मिणी जीवणी अग्र-अग्रोतकान्वये गोयल गोत्रे आसोवाल चौधरी बनू तस्य भार्या सा० जमो तस्य पुत्र अर्जुन तस्य भगिनी शीलतोयतरंगिणी दानगुणे रेवती साधर्म्मिणी दगाई तेन द्वौ० साधर्म्मिणी इदमाखिणी ज्ञान इत्यागनार्थे मृगांकलेखाचरित्रं लिखापितं हिसार नगरे श्री वर्द्धमानचैत्यालये पंचगोष्ठे तत्रस्थित भव्यजीव संबोधिनी बाई माथुरी जोग्य पठापित।

३०. मेघेश्वर चरित्र।

रचयिता श्री पं० रइधू। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १५६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२। ३६ अक्षर। प्रति जीर्ण शीर्ण अवस्था में है। प्रारम्भ के ५ पत्रों का आधा भाग कितनी ही जगह से फटा हुआ है। प्रारम्भ में कवि ने अपना विस्तृत वंश परिचय लिखा है लेकिन अक्षर घिलमिल होने के कारण पढने में नहीं आती।

अन्तिम पाठ—

इय सेणियरायहो कयमणरायहो गोयमेण जसविप्फुरिउ।
मेहेसरचरियउ बहुगुणभरियउ अक्खिउ बुहयण आरंदिरियउ।

प्रशस्ति—

णंदउ आइजिणेसर सासणु, णंदउ सुरयणु[1] धम्मपयासणु।
णंदउ सावयायविहि जुत्ती भारइ देवी जयतसवित्ती।
णंदउ णरवइ णीइवियारउ णंदउ भव्वलोयगुण सारउ।

---

१ पुरयणु

णंदहु वुहयण जे सुयसायर सत्थ अत्थ पवियारण णायर।
णंदउ जो सो लिहइ लिहावइ णंदउ जो सो पढइ पढावइ।
णंदउ सो यारउ सपवीणउ, विज्ञोकव्वरसायणलीणउ।
णंदउ सिरिहरि सिंघु संवाहिउ, देवराज सुउ पवरगुणाहिउ।
जसु संताणि कई सु अमच्छरू, रइधू संजायउ गुण कोच्छरू।
जेण चरिउ मेहेसर केरउ, विरयउ वुहमण सुक्खजणेरउ।

घत्ता

जं मइ हीणाहिउ किं पि विसाहिउ, तं वुह सुय सोहंतु णिरू।
कुपयं फेडेप्पिणु भव्वु ठवेप्पिणु, महिवित्थारहु सत्थचिरू ॥ १ ॥

जयजद्धवंसु, दयारवंसु।
अहुणा भणेमि, पायडु कुणेमि।
इह अइरवालि, अण्णइ गुणालि।
एढिलहि गोत्ति, पयडियसु जुत्ति।
देदाहि दाणु, हुउ चिरूपहाणु।
तहु सुउ णिरुत्तु महिया पवित्तु।
तहु अंगजाउ, जायउ अपाउ।
पइतृं पवित्तु, जिण धम्मतित्तु।
तणुरुहु वितासु कुलहर पयासु।
सइ पुण्णपालु, णामें गुणालु।
चाहडिय पत्ति, तहु सील थत्ति।
तहि गब्भिजाय, सुयविणिणभाय।
चंदक्ककतेय, वड्ढिय विवेय।
छा जागरिट्ठ, वुहयणमणिट्ठ।
तहु सुउ अवाहु, नाथू जि साहु।

घत्ता

णाथू साहहु सुयाविणिणव ललिय भुया, भाभणु वीधा णामहुय।
ते णंदहु भूयलि णिण्णासियकलि, धणकणपुत्त पहत्तजुया ॥ २ ॥

पुण्णपालसाहहु सुउ वीयउ, परउवयार विहाण विणीयउ।

देवसत्थगुरुभत्तिकियायरु, पंचणसोहु णामें णियमायरु ।
वील्हाही पिय यम तहु सारी, सोलाहरण विहूसणधारी ।
ताहि तणुब्भउ बुहमणरंजणु, जाचय जण दालिद्द विहंजणु ।
जिण समयाणु भत्ति अणु रायउ, खेऊसाहु णाम विक्खायउ ।
तहु भज्जा भणसिरि गुणवंती, चन्दहु रोहिणी विपहवंती ।
णंदण चारि ताहि उरि जाया, चरिपाण णं जीव सहाय ।
चारि दाण णं पायड भूयलि, चारि वि दिग्गय णं जस णिम्मलि ।
ताहु पढमु गुणमणिरयणायरु, सहसराजु कुलकमल दिवायरु ।
रतणपाल ही तासु जि भामिणि, णियभत्तारचित्त अणुगामिणि ।
उद्धरणाहि हाणु हुउ णंदणु, परियणजण चित्तह आणंदणु ।
तहु पह जिणि णिजिणिउ मयंको, वीयउ पहराज गय संको ।
सुरतरु णं दुत्थियजणपोसणु, परउवयारसारसुपयासणु ।
मयणपालही तासु जि भज्जा, दाणपूयविहि करणमणोज्जा ।
सोणपालु तहि णंदणु णंदउ, णिच्च जिणिंदसूरपिय वंदउ ।

घत्ता

पुणु सुउ तहु तीयउ अइव विणीयउ जिणसासणरहधुरधरणु ।
रइपतिरंयणोवमु पालियकुलकमु दुत्थिय जणदुहभरहरणु ॥

रइपति भामिणि, कुलगिहसामिणि ।
कोडि णामा, पूरियकामा ।
सुउ खेमंकरु, सुक्खरिद्धंकरु ।
तुरिउ वि पुत्तो, गुणगणजुत्तो ।
साहु हु भासिउ, पवरंजसासिउ ।
विज्जामंदरु, वंसहु चंदिरु ।
बुहं चूडामणि, णिम्मच्छरु गुणि ।
होल्हु पायडु, सयलकलापडु ।
तासु कलत्ता, सररुहवत्ता ।
भणिय सरासइ, विणउं पयासइ ।
ससि व कलालउ, चंदपालु हुउं ।
इंदु परियणं धुउ, ... ।

णंदउ सुक्खें, सयलु पयक्खें ।
जा ससिदिणयरू जा म णराधरू ।
जा दिवि इंदो, जा भाग्रहिंदो ।
ता खेमंक्खो, णंदउ दक्खो ।
मज्झु सहाई, गुण अणुराई ।
जासु णिमित्तें, णेहा सत्तें ।
विरइउ कव्वो। इहु भइ भव्वो ।

घत्ता

तं सुंइरू पईंढेवऊँ एहु महि पाढि जंतउ वुहयणोहिं ।
सिरि मेहेसरं गणहरं चरिउ णिब्भरू पूरिउं वहु गुणहिं ॥

इय मेहेसरचरिए आइपुराणस्स अणुसरिए सिरिपंडियरइधू विरइए सिरि महाभव्व खेमसीहसाहु णामंकिए रिसहेसर णिव्वाणगमण भरहचक्काहिवइ मेहेसरणिव्वाणगमणो वण्णणं अण्णोविसग्गगमणं णामतेरहमोसंधीपरिछेउ सम्मत्तो ।

लेखक प्रशस्ति—

अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यगताब्दः संवत् १६१६ वर्षे माघ वुदि ११ वुधवारे कुरुजांगल-देश. श्री रूहितगगढदुर्गे पातिसाहि इकब्बरराज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे उभयभाषा प्रवीण तपोनिधिः भट्टारक श्री गुणकीत्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जगकीत्तिदेवास्तत्पट्टे सरस्वतीश्रंगारहार तेरहविधिचारित्रचूडामणि गुणभद्रसूरिदेवास्ततःपट्टे अनेकतर्कव्याकरणछंदसाहित्यनाटकलहरीतरंगान् अनेकआगमाध्यात्मरसखतारविराजमानान् परमपूज्य भट्टारक श्री भानकीत्तिसूरयः—।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०३. साईज ६।।×४ इञ्च । प्रारंभ के २१ पत्र नहीं है । शेष पत्र सुन्दर और स्पष्ट है । लिपि संवत् १५६६ ।

अथ संवत्सरेस्मिन् श्री विक्रमादित्यराज्ये संवत १५६६ वर्षे ज्येष्ठ वुदि ५ भौम दिने उत्तराषाढ नक्षत्रे श्री काष्ठा संघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री गुणकीत्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्त्ति देवाः तत्पट्टे श्री मलयकीत्तिदेवास्ततत्पट्टे वादाकुंभविदारणैककेसरी भट्टारक श्री गुणभद्रदेवाः तेषाम्नाये अग्रोत-कान्वये .... ।

३१. यशोधरचरित्र ।

रचयिता महाकवि पुष्पदंत । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ६५. साइज ११।।×४।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६ । ४० अक्षर । प्रति प्राचीन तथा शुद्ध है ।

आरम्भिक पाठ—

तिहुअणसिरिकंतहो अइसयवंतहो अरहंतहो हयवम्महहो।
पणवेवि परमेट्ठिहो पविमलदिट्ठिहो चरणजुअल णयसयमहहो॥

कोंडेलगोत्तणहदिणयरासु, वल्लहणरिंदघरमहयरासु।
णण्णहो मंदिरि णिवसंतु संतु, अहिमाणमेरू कइ पुप्फयंतु।
चिंतइ इहु धणणारीकहए, पज्जुत्तउ कयदुक्कियपहाए।
कह धम्मणिवद्धी का वि कहमि, कहियाइं जाइं सिवसोक्खु लहमि।
पंचसु पंचसु पंचसु महीसु, उप्पज्जइ धम्मु दया सहीसु।
धुउ पंचसु दससु तिणासु जाइ, कप्पंघिवखइ पुणु पुणु वि होइ।
काला विक्खए पढमिल्लु देउ, इय धम्मवाइ सियवसहकेउ।
पुरुदेउ सामिरायाहि राउ, आणंदिय चउ सुरवर णिकाउ।

घत्ता

वत्त गुट्ठ णें जणु धणदाणें, पइं पोसिउ तुहुं खत्तधरू।
तवचरणविहाणें केवलणाणें, तुहु परमप्पउ परमपरू।

अन्तिम पाठ—

किउ उवराहे[1] जस्स कइमइ एउ भवंतर।
तहो भव्वहु णामु पायडमि पयडउ धर॥ २६॥
चिरू पट्टणे छंगे साहु साहु, तहो सुउ खेला गुणवंतु साहु।
तहो तणुरुहु वीसलु णाम लाहु, वीरो साहुणियहि सुलहु णाहु॥
सोयारू सुणाणगुणगणसणाहु, इक्कइय चिंतइ चित्ति लाहु।
हो पंडियठक्कुर कण्हपुत्त, उवयारियवल्लहपरममित्त॥
कइ पुप्फयंति जसहरचरित्तु, किउ सुट्ठु सद्दलक्खणविचित्तु।
पेसहि तंहि राउलु कउलु अज्जु, असहरविवाहु तह जणियचोज्जु॥
सयलहं भवभमणभवंतराइं, महु वंछिउ करहि णिरंतराइं।
ता साहु समीहिउ कियउ सव्वु राउलुविवाहु भवभमण भव्वु॥
वक्खाणिउं पुरउ हवेइ जाम, संतुट्ठउ वीसलु साहु ताम।
जोइणिपुरवरि णिवसंतु सिट्ठु, साहुहि घरे सुत्थियणहु घुट्ठु॥
१३६५
पणसट्ठि सहिय तेरहसयाइं, णिवविक्कम संवछर गयाइं।

१ यह मूल ग्रन्थ कार का पाठ नहीं है। ग्रन्थ रचना के पश्चात् जोड़ा हुआ है।

वइसाहपहिल्लइ पक्खि बीय, रविवारि समाणिउ सिसिरतीय ॥
चिरुवत्थुबंधि कइ कियउ जं जि, पद्धडियबंधि मइं रइउ तं जि ।
गंधव्वें कण्हडणंदणेण, आयइं भवाइं किय थिरमणेण ॥
महु दोसु ण दिज्जइ पुव्वि कइउ, कइ वच्छराइं तं सुत्तु लइउ ।

घत्ता

[१]जो जीवदयावरु णिप्पहरणकरु, बंभयारि हय-जर-मरणु ।
सो माणणिसुंभणु धम्मणिरंजणु, पुप्फयंतु जिणु महु सरणु ॥

पावणि सुंभणि मुद्धवंभणि, उवरूपवर्णे साममलवर्णे ।
कासवगोत्तें केसवपुत्तें, जिणपयभत्तें धम्मासत्तें ।

वयसंजुत्तें, उत्तमसत्तें ।
वियलियसंकि, अहिमाणंकि ।
पहसियतुंडि, कइणा खंडें ।
रंजियवुहसह, कय जसहरकह ।
जो आयण्णइं, अंगइ मण्णइं ।
लिहइ लिहावइ, पढइ पढावइ ।
जो मणि भावइ, सो णरु पावइ ।
विहुणिय घणरय, सासयसंपय ।
जण वयणीरस, दुरीयमलीमस ।
कइणिदायरि, दुसहदुहयरि ।
पडियकवालइं, णरकंकालइं ।
वहुरंकालइं, अइछुक्कालइ ।
पवरागारि, सरसाहारि ।
सुण्हि चेलि, वरतंवोलि ।
महु उवयारिउ, पुणि पेरिउ ।
गुण भत्तिल्लउ, णण्णु महल्लउ ।
होउ चिराउसु, वरिसउ पाउसु ।
तिप्पइ मेइणि, धणकणदाइणि ।

१ यहां से मूलग्रन्थकार की प्रति का पाठ प्रारम्भ होता है।

विलसउ गोमिणि,	एाच्चउ कामिणि ।
घुम्मउं मंदलु,	पसरउ मंगलु ।
संति वियंभउ,	दुक्ख णिसुंभउ ।
धम्मच्छाहें,	सहु एारणाहें ।
सुहु एांदउ पय,	जय परमप्पय ।
जय जय जिणवर,	जय भवभयहर
विमलसु केवलु,	णाणु समुज्जलु ।
महु उप्पज्जउ,	एत्तिउ दिज्जउ ।
मई अमुणांतिं,	कव्वु करंतिं ।
जं हीणाहिउ,	काइं मि साहिउ ।

घत्ता

तं माय महासइ देवि सरासइ, णिहयसयल संदेहदुह ।
महु खमउं भडारी तिहुअणसारी, पुप्फयंत जिणवयणरुह ॥

इय जसहरमहारायचरिए महामहल्लएएणकएणाहरणे महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे चंडमारिदेवय मारिदत्तरायधम्मलाहो अभयविसगागमणं णाम चउत्थो परिच्छेउ सम्मत्तो ।

संवत् १६१२ वर्षे आसोज मासे कृष्णपक्षे द्वादशीदिवसे गुरुवारे अश्लेखानक्षत्रे तक्षकगढमहादुर्गे महाराजाधिराज राउ श्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने श्र आदिनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तत शिष्यमंडलाचार्य श्रीललितकीर्तिदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये छावडा गोत्रे सा सोढा तद् भार्या सुहागदे तत्पुत्राश्चत्वारः प्रथम सा० चाहड द्वि० सा० दूलह, तृतीय सा० देवा, चतुर्थ सा० पूना । प्रथम सा० चाहड भार्या मदना, द्वि० दूलह भार्या दूलहदे तत्पुत्रास्त्रयः । प्रथम सा० पोया द्वि० सा० थेल्हा तृतीय सा० श्रीपाल । प्रथम सा० पोय भार्या पासरि तत्पुत्रौ द्वौ, प्रथम सा० सुरभाण द्वितीय चि० पचाइण । प्र० सा० सुरत्राण भाया सुरत्राणदे । द्वि० सा थेल्हा भार्ये द्वे प्रथम थेल्हश्री द्वितीय कौतिगदे तत्पुत्रास्त्रयः प्र० सा० डूंगरसी द्वि० चि० भेला, तृतीय सा० तोल्हा । प्र० सा० डूंगर भार्या दाड्यौदे । तृ० सा० श्रीपाल भार्ये द्वे प्र० स्वरूपदे द्वि० ल्हौकन तत्पुत्रौ द्वौ प्र० चि० रूपा द्वि० चि० धर्मदास । तृ० सा० देवा भार्ये द्वे प्रथम योसरि द्वितीय स्वरूपदे तत्पुत्रौ द्वौ प्र० सा० सरवण द्वि० सा० ईसर । प्रथम सा० सरवण भार्या सुहागदे, तत्पुत्र चि० हेमराज द्वितीय सा० ईसर भार्या अहंकारदे चतुर्थ सा० पूजा भार्या वाली एतेषा मध्ये सा० पूजा भार्या वाली इदं यशोधरचरित्रं लिखाप्य सोलहकारणव्रतोद्यापनार्थं मंडलाचार्य श्रीललितकीर्तये दत्तं ।

प्रति नं० २ । पत्र संख्या ८६. साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६ । ३२ अक्षर ।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५७५ वर्षे मार्गसिर सुदी ४ शुक्रवारे पुष्यनक्षत्रे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये साह गोत्रे सघभारधुरंधर संघइ वीडा तस्य भार्या सोना तत्पुत्र स० तेजा तस्य भार्या लोचमदे तत्पुत्र दूलह । द्वितीय पुत्र श्रीपाल । साह दूलह तस्य भार्या दूलहदे तत्पुत्र चोखा द्वितीय आखा । चोखा भार्या चादगोद । साह श्रीपाल तस्य भार्या सरसति तत्पुत्र होला द्वितीय लाला तृतीय पुत्र वाला एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं यशोधरचरित्रं बाई पावेती लिखायितं कम्मक्षय नामत्तं श्री प्रभाचन्द्र योग्य दातव्यं ।

प्रति नं० ३ । पृष्ठ संख्या ७३. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ३२ । ३६ अक्षर । प्रति प्राचीन है ।

संवत् १६१० वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे षष्ट्यांतिथौ सोमवारे स्वाति नक्षत्रेतक्षकगढमहादुर्गे श्री आदिनाथचैत्यालये पातिसाह श्रीसलेमसाहराज्यप्रवर्त्तमाने रावश्रीरामचन्द्र प्रतापे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे सा लोहर तद्भार्या शीला तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा० गोइदं द्वितीय सा० दामा तृतीय सा० मोकल । सा० गोइदं भार्या सोठी तत्पुत्राश्चत्वारः प्रथम सा० पासा द्वितीय सा० आसा तृतीय सा० आल्हा चतुर्थ सा० पचाइण । सा० पासा भार्या पाटमदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० नेमा, द्वि० चि० खेमा । सा० आल्हा भार्ये द्वे प्रथमा नौजू द्वितीया सुहागदे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सीहातत् भार्या सफलादे द्वितीय चि० हेमा तृतीय चि० धीनड । सा० पचाइण भार्या गूजरि तत्पुत्रौ द्वौ प्र० वीरदास द्वि चि० गणा । द्वि० सा० दामा तद् भार्या चांदो तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम वोहिथ द्वितीय सा० वाला । सा० वोहिथ भार्या वालादे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० सुरत्राण द्वि० सा० साधू । सा० सुरत्राण भार्ये सुरत्राणदे द्वि० सोभागदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० सारंग द्वि० चि० माधव तृत य सा० मोकल भार्ये द्वे प्रथम भार्या मुक्तादे द्वि० लाडी तत्पुत्र सा० कुंभा तद्भार्या कौतिगदे तत्पुत्रौ द्वौ प्र० सा० त्राणा द्वि० चि० पदमसी एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं श्री ललितकीर्त्तये घटायितं ।

प्रति नं० ४ । पत्र संख्या ६४. साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३० । ३४ अक्षर । प्रति शुद्ध और सुन्दर है ।

संवत् १५८० वर्ष आसोज सुदी १० शनिदिने श्रवण नक्षत्रे श्री सुधानामनगरे तत्पार्श्वे मिकराबाद शुभस्थाने सुलितान साहि इब्राहिमराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे पूर्वाचलदिनमणि षट्तर्कतार्किकचूडामणि वादिमदद्विपसिंह विबुधवादिमददलनवादिकंदकुद्दाल सकलजीव अबुधप्रतिबोधक भट्टारक श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य तर्क व्याकरणछंदोलंकारसाहित्यसिद्धांतज्योतिषवैद्यक सागित शास्त्रपारंगत जिनकथित सूक्ष्म सप्ततत्त्व नवपदार्थ षट्द्रव्यपंचास्तिकाय अध्यात्मग्रंथसमुद्रमध्यमहारत्न-स्यार्नानिर्विचार सीलव्रतसागर संपूर्णदशप्रतिमापरिपालक श्री प्रभाचन्द्र गुरुस्वामि तत्र एतस्मस्तोस इमिल-चित्तर्दद्वावति तिलकोमून ब्रह्म डीडा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये परमश्रावक सा. किता तस्य भार्या सीता तयोः पुत्रास्त्रयः। प्रथम सा० देवू तस्य भार्या राणो। द्वितीय पुत्र सा० नरसिंघु भार्या चांवरिण तृतीय पुत्र सा. घरमसी भार्या राणो देवू पुत्र सा दोदू तस्य भार्या सबीरी तयोःपुत्र चत्वारः प्रथम पुत्र सा.धरमू भार्या देवल। द्वितीय पुत्र सा० दासा तस्य भार्या सूहो। तृतीय साह विमलु चतुर्थ पुत्र गजपालु एतेषां मध्ये साह दोदू इदं यशोधरशास्त्रं लिखाप्य कर्मक्षयनिमित्तं ब्रह्मडीडाय दत्तं।

३२. रत्नकरण्ड शास्त्र।

रचयिता श्री पंडिताचार्य श्रीचंद। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १४५. साइज ११×४।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४० । ४४ अक्षर प्रति पूर्ण होने के साथ २ सुन्दर भी है। अन्तिम पृष्ठ नहीं है। रचना संवत् ११२० लिपि संवत् १६४०।

मंगलाचरण—

सो जयउ जयम्मि जणे, पढमो मडर्म पयासिव जेस।
कुमइसु पढंताणं दिएण कालवसा अम्मो ॥ १ ॥
सो जयउ संतिणाहो, विग्घसहस्साई णाम मित्तेण।
जस्सावहस्सिऊणं, मार्ग्गिज्जइ इहिया सिद्धी ॥ २ ॥
जयउ सिरिवीरइंदो, अकलंको अक्खउ णिरवाणो[१]।
णिम्मलकेवलजोण्हा उज्जोइय सयल भुवण यलो ॥ ३ ॥
सिद्धिविद्धि जयवुद्धि, तुट्ठि पुट्ठि पीयंकर।
सिद्ध सहव जयंतु, चव्वीसवि तित्थंकर ॥ ४ ॥

प्रारम्भ में कवि ने आचार्यों का इस प्रकार स्मरण किया है—

पणवेप्पिणु जिणवयणुग्गयाहँ, विमलई पयाई सुयदेवयाहँ।

१ अणाभरणो।

दंसणकहरयणु करडणासु, आहासमि कव्वु मणोहिरासु।
एक्केक्कपहाणु महामइल्ल, इत्थत्थि अणेयकई छइल्ल।
हरिणंदि मुणिंदु समंतभद्दु, अकलंकुएउ परमयविमद्दु।
मुणिवइ कुलभूसणु पायपुज्ज, तह विज्जाणंदि अणंतविज्जु।
वरसेणु महामइ वीरसेणु, जिणसेणु कुओहि विहंगु सेणु।
गुणभद्दगुणंकुर उच्छमल्लु, सिरिसोमएउ परसमयमल्लु।
चउमुहु चउमुहु वपसिद्धभाइ, कइराय सयंभु सयंभु णाइ।
तह पुप्फयंतु णिम्मुक्कदोसु, वण्णिज्जइ किं सुयएवकोसु।
सिरिहरिसकालिया साइसार, अवर वि को गणइं कइत्तकार।
हीणाहिं मइ संपय आरिसेहिं, कि कीरइ तहि अम्हारि सेहिं।
तह विहु जिणिंद पयभत्तियाएं, लइ कर म किं पि णिय सत्तियाएं।

अन्तिम पाठ--

सम्मत्तसीलसंजमतवेण झिणिणविणारिलिंगु असुइ।
सग्गम्गु गयउ सिरचंदुरवि, लं घत्ति जत्थ महंत सुह॥

इय सिरिचंदमुणिंद[1] कए पयडियकोऊहलसए सोहणभवपवत्तए परिओसियबुहचित्तए। दंसणकह रयणकरंडए मिच्छत्तपओहितरंडए कोहाइ कसायविहंडए सत्थम्मिमहागुणसंडए गयणगइ तुरय कहाणयं वदिदो- दयरायादाणपवत्तणं सग्गगमणं णाम एक्कवीसमो संधि परिछेउ समत्तो।

प्रशस्ति--

परमारद्धतमहंत गुणउण्णइं। कुंदाकुंदाइरियहो अण्णइं[2]॥
देसीगणु पहाणु गुणगणहरु। अवइण्णउं ण्णइ सइं मणहरु।
तत्र पहाव विभाविय वासउ। धम्मज्झाणविणिहय पावासउ॥
भव्वमणो णलिणाणदिणेसरु। सिरिकित्तितिसुविक्खिमुणीसरु॥
तासु सासु पंडिय चूडामणि। सिरिगंगेय पमुहं पउरावणि॥
पोलतमिये सुइ पायसरोरुहु। मुणिउदुलिण मय गयण सुहारुहु॥
वरजस पसर पसाहिय महियलु। णियमहत्तपरिणिज्जियणइयलु॥
चउविहसंघमहाधुरधारणु। दुसहकाम सरघोरणिवारणु॥
धम्मुवरिसि रुवें जसरूवउ। सिरिसुय कित्तिणामुसंभूयउ॥
तासुवि परवाइय मय भंजणु। णाणावुहयणणियर वीरंजणु॥

---

१ सिरिचन्दकए २ अवणइं।

चारु गुणोह रयणरयणायरु। चाउरंग गण वच्छल्लायरु॥
इंदिय चंचल मयहं मयाहिउ। चउकसाय सारंग मिगाहिउ॥
सिरिइंदुज्जल जसु संजायउ। णामें सहमकित्ति विक्खायउ॥

घत्ता

तहो देवकित्ति पुरु सीसु हुउ, बीयउ अहो वासिणि मुणि।
वारिंदु उदयकित्ति वि तहासुहइंदु वि पंचमउं भणि॥

जो चरणकमलआयमपुराणु। णायत्त इं बहु सायमसमाणु॥
आइरिय महागुणगणसमिद्धु। वच्छल्लमहोवहि जय पसिद्धु॥
तहो वीर इंदुमुणि पंचमासु। दूरुज्झिय दुम्मइ गुणणिवासु॥
सउजएण महामाणिक्कखाणि। वयसीलालंकिउ दिव्ववाणि॥
सिरिचंदुणाम सोहण मुणीसु। संजायउ पंडिउ पढम सीसु॥
तेणेउ अणेयछरियधामु। दंसणकह रयणकरंडु णामु॥
किउ कव्वु विहिय रयणोहधामु। ललियक्खरु सुयणमणोहिरामु।
जो पढइ पढावइ एय चित्तु। सई लिहइ लिहावइ जो णिरुत्तु॥
आयण्णई मण्णई जो पसत्थु। परिभावइ अहिणिसु एउ सत्थु॥
जिप्पइ ण कसायहि इंदिएहिं। तो लियइ ण सो पासंडिएहिं॥
तहो दुक्किय कम्मु असेसु जाइ। सो लहइ मोक्ख सुक्खुब्भावइ॥
जिणणाह चरणजुय भत्तएण। अमुणंते कत्थु करंत एण॥
जं काइं वि लक्खण छंदहीणु। मइ वुत्त इत्थ अह अहिउ हीणु॥

घत्ता

तं खमउ सव्वु महु जणणमिय, सुयदेवय अण्णाणमइ।
जगपुज्जणिज्ज सिरिचंदमइ, तहय भडारी विउस सह॥ १॥
एयारहं ते वीसा वाससयाविक्कमस्स णरवइणो।
जइय गयाहु तइया समणियं सुंदरं एयं॥ २॥
कण्णणरिंदहो रज्जिसुहि सिरिसिरिवालपुरम्मि।
बुहसिरि चंदे एउ किउ णंदउ कव्वु जयम्मि॥
जयउ जिणवरु जयउ जिणधम्मु, जिणवयणुवि जयउ जइ।
जयउ साहु संतइ सुहंकर पणवंतहो भव्वयण कुणउ जयहो सासुहपरंपर।

दाणपुज्जदयधम्मरय सच्चसउच्चपवित्त ।
भव्व जयंतु सया सुयण वहु गुण परहियचित्त ॥ ३ ॥
जयउ णरवइ णायणयणेत्त पय पालउ धम्मरउ ।
सयणवधु परिवारसंहियउ णिएणासियविउएणु जणु ॥
जेण णियय णिय कम्मि णिहियउ, पिच्चत्त मेइणिसइंहत्रउ वरिसउ देउ सयावि ।
कित्तिधम्मु णरनइ जयउ जसु खंडणु ण कयावि ॥ ४ ॥
जाम मेइणि जाम महणाइउ, कुलपव्वय जाम तहिं ।
जाम दीवगय सख णरवइ, पायालु आयासलु ।
जाम सग्गु सुरणियरु सुरवइ, जा तारायणु चदुरवि जा जिण धम्मु पसत्थु ।
त म जणउ सुहु भव्वयणि, जयउ एहु जइ सत्थु ॥ ५ ॥
जो सव्वएहु तिलोयवइ सिद्धसाहु वंभंडु ।
ताम जणउ सुहु भव्वयणि दंसण कह रयणकरंडु ॥

इति पंडित श्रीचंदविरचिते रत्नकरंडनाम शास्त्रं समाप्तं ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १५६. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १०-११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०×४४ अक्षर । प्रति पूर्ण है ।

संवत् १५८२ वर्षे शाके १४४७ प्रवर्तमाने द्वितीयायां तिथौ गुरुवारे घटी ५४ पुष्यनक्षत्रे घटी ४६ हर्षणनामजोग घटी ३ : घटियालीपुरात् श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्न ये खडेलवालान्वये साह गोत्रे चतुर्विधदानपूजासमुद्यतान् परोपकार निरतान् प्रशस्तचित्तानुसम्यक्त्वप्रतिपालकान् श्री सर्वज्ञोक्तधर्मान् रंजितचेतसान् कुटुंबसाधारकान् रत्नभूपालंकृतदिविदेहान् आहारशास्त्रदानसमान्वितान् साह अवणा तस्य भार्या सांइसि तस्य पुत्र साह सक्करू तस्य भार्या सुहडादे तस्य पुत्र साह रावण भार्या पवयणी तस्य पुत्र साह बल्लू भार्या लक्ष्मी पुत्र चेला द्वि० साह जालय भार्या जवणादे । तृतीय साह ईसर भार्या ईसरदे चतुर्थ पुत्र साह अर्जुन एतान् बाई भोली इदं शास्त्रं मुनिहेमकीर्त्तिये दत्तं ।

३३. वद्धमान चरित्र ।

रचयिता श्री जयमित्रहल । भाषा अपभ्रंश, पत्र संख्या ५१ । साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६ । ४० अक्षर । लिपि संवत् १६२७ ।

---

१ सवयणु

प्रारम्भिक पाठ—

पणवेवि अणिंदहो चरमजिणिंदहो वीरहो दंसणणाणवहा।
णोणयहो णरिंदहु कुवलयचंदहो, णिसुणहो भवियहो पवरकहा।

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

जयदेवाहिदेव तित्थंकर, वड्ढमाणजिण भव्वसुहंकर।
णिरुवमकणणरसायणु धणणउं, कव्वु रयणु कुंडल भउ पुण्णउ।
सो णंदउ जो णियमणिभावइ[1], वीर चरित्त विमलु आलावइं[2]।
सो णंदउ जो लिहइ लिहावइ, रस रसइ जो पढइ पढावइ।
जो पयत्थु पयडेइ[3] सुभव्वहं, मणिसदहणु करेइ सुकव्वहं।
णंदउ देवरामणदंणुधर, होलिवम्मु कण्णुवउ णयकर।
एहु चरित्तु जेण वित्थारिउ, लेहाविवि गुणियणउवयारिउ।
होउ संति णिसेसहं भव्वहं, जिणपयभत्तहं वियलियगव्वहं।
वरिसउ सयल पुहमि घरवारहं, मेहजालु पावसवसु धारहं।
घरि घरि मंगलु होउ सचणउ, दिणि दिण धणधण्णहं[4] संपुण्णउ।
होउ संति चउविहजिणसंघहं, देस वास णरणाह दुलघहं।
णंदउ सासणु वीर जिणेसहो, णिग्गउ सेणिउ णरयणि वासहो।
मदर सिहरि होउ जं मुच्छउ, घरि घरि दुंदुहि सद्दु अतुच्छउ।
होउ सयल पूरंत मणोरह, परमाणंदु पवड्ढउ इह सह।
अमियविढउ सहएवहं णंदणु, जगि जगमित्त वि दुरियणि कंदणु।
विण्णवेइ सम्मय दय किज्जउ, सासय सुहु णिवासु महुदिज्जउ।
अल्हसाहु साहु सुमहु णदणु, सज्जणजणमणणयणाणंदणु।
होहु चिराउ सणियकुलमडण, मग्गणजणदुक्खरोरविहंडण।
होउ संति सयलहं परिवारहं, भत्तिय वड्ढउ गुरुवय धारहं।
पउमणंदि मुणिणाह गणिंदहु, चरण सरणु गुरू कइ हरि इंदहु।
जं हीणाहिउ कव्वु रसढइं, पउ विरइउ सम्मइं अवियढइं।
तं सुयणाण देवि जगसारी, महु अवराहु खमउ भडारी।

घत्ता

दयधम्मु पवत्तणु विमलु सुकित्तणु णिसुणंतहो जिण इंदहो।

१ सयणइ २ आयण्णइं ३ पयडे ४ धणधण्णइं।

जं होइ सुधएणउ हउमणिभएणउ, तं सुहु जगिहंरि इंदहो ॥

इय सिरी वड्ढमाणकव्वे पयडिय चउवग्गगरसभव्वे सेणियअभयचरित्ते विरइय जयमित्त हल्लसुकइत्तो भवियणजणमणहरणो, संघहि वहोलिकम्मकणहरणे सम्मइजिण णिव्वाण गमणो णाम एयारहमो संधि परिछेउ सम्मत्तो ।

संवत् १६२७ वर्षे अषाढ़ सुदी ५ श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रस्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रस्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रस्तत्शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रस्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिदेवस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये पांड्या गोत्रे साह पीथा तस्य भार्या पिउसिरी तस्य पुत्र साह् चाचा तस्य भार्या चउसिरी तयोः पुत्रास्त्रयः प्रथम पुत्र वाला तस्य भार्या वलालदे तस्य पुत्र सोठा इत्यादि । साह चाचा द्वितीय पुत्र स. माधव तस्य भार्या माणिकदे । तस्य तृतीय पुत्र सा. नेता तस्य भार्या नारंगदे । सा. पीथा तस्य द्वीतीये पुत्र साह धमा तस्य भार्या करणदे इत्यादि । साह् पीथा तस्य तृतीय पुत्र साह रतनपाल तस्य भार्या ·यणादे तस्य त्रयः पुत्राः प्रथम पुत्र साह् गीदा तस्य भार्या कोडमदे तस्य पुत्र ५ प्रथम पुत्र ईसर तस्य भार्या अहं· कारदे तस्य पुत्र भोजराज । साह् गीदा द्वि० पुत्र णोता तस्य भार्या नयणादे । तृतीय पुत्र गठमल चतुर्थ साह कल्याणमल पंचम पुत्र चिर कान्हड । साह् रतनपाल तस्य द्वि० पुत्र साह् धामा तस्य भार्या साध्वी धारादे द्वि० भार्या लाडी तयो पुत्र चि० श्रीपाल द्वि० पुत्र पासा इत्यादि । साह रतनपाल तस्य तृतीय पुत्र सा० तेजा तस्य भार्या तेजलदे द्वि० भार्या त्रिभुवनदे तस्य पुत्र चि० सांगा इत्यादि । साह् पीथा तस्य चतुर्थ पुत्र साह वाजू तस्य भार्या लक्ष्मी तयोः पुत्र चि० नानू द्वि० पुत्र चि० हेमराज इत्यादि । साह् पीथा तस्य पंचम पुत्र साह् वाजू तस्य भार्या बहुरंगदे द्वि० भार्या साध्वी लाछि तस्य पुत्र साह् बीजू तस्य प्रथम भार्या छीतरदे द्वि० भार्या लध्वी साध्वी स्वरूपदे इत्यादि । साह् पीथा तस्य षष्टम पुत्र साह दासा तस्य भार्या दाडिमदे तयोः पुत्राः सप्त प्रथम पुत्र साह् पदारथ तस्य भार्या लाडी तस्य पुत्र महेश तस्य भार्या महिम दे तस्य द्वि० पुत्र साह हीरा तस्य भार्या हरषमदे तस्य पुत्र तोल्ह तस्य भार्या तुल्हासिरि तस्य ······· ······· साह दासा तस्य तृतीय पुत्र साह् आंवा तस्य भार्या अंबसिरि तस्य पुत्र चि० सांगा तस्य भार्या सिंगारदे द्वि० पुत्र कान्हा ······· ········ साह् दासा तस्य चतुर्थ पुत्र साह खीवा तस्य भार्या खिवसिरी, साह दासा पंचम पुत्र साह कुंभा तस्य भार्या कुंभसिरि । साह दासा तस्य षष्टम पुत्र साह टेहू भार्या टिहसिरि तस्य पुत्र ······· ········ । साह दासा तस्य सप्तम पुत्र साह दुरगा तस्य भार्या दुर्गादे इत्यादि एतेषां मध्ये साह् वाजू तस्य भार्या बहुरंगदे तस्य पुत्र निजभुजोपार्जितवित्तेन आहाराभयभैषजशास्त्रदानवितरणतत्परेण साह् लानू तेनेदं श्रेणिकचरित्रं निजज्ञानावरणीय कर्मक्षयनिमित्तं लिखाप्य ब्रह्म सोमाय घटापितं ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ५४. साइज १२×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४२×४६ अक्षर । प्रति पूर्ण तथा प्राचीन है ।

संवत् १५६३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ वृहस्पतिवारे श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेव स्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे साह नाथू तस्य भार्या तोला तत्पुत्र तिहुणा तस्य भार्या चोखी तत्पुत्र धाना पारस। धाना भार्या नेमी तत्पुत्र कचमल, हेमराज, वील्हा, भरथा, श्रीवंत। कचा भार्या गागी, हेम भार्या पूरा, पारस भार्या करमा, द्वि. भार्या गेगी एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं लिखाप्य नेमी आर्यका विनयसिरी जोग्यदत्तं।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ६२. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५×४० अक्षर। प्रति नवीन है तथा पूर्ण है।

संवत् १६३१ वर्षे माह बुदि ११ शुक्रवारे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक पद्मनन्दिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचंद्रस्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचंद्रस्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये रांवका गोत्रे साह देवा भार्या रानादे तस्य पुत्र तृताय साह खेमा तस्य पुत्र घाटमल्ल द्वि० पुत्र साह ठील्हा भार्या लाली तस्य पुत्र साह थेल्हा भार्या तिहणश्री तस्य पुत्र नानग। तृतीय पुत्र साह खेता तस्य भार्ये द्वे० प्रथम महरखु द्वि० माने तस्या पुत्र चत्वारः प्रथम पुत्र नानू द्वि० पुत्र हीरा तृतीय पुत्र बिहरा चतुर्थ पुत्र पाला। हीरा भार्या हीरादे तस्य पुत्र बुधमल्ल। पाला भार्या मतापदे तत्पुत्रौ पुत्र द्वौ प्रथम हेमराज द्वितीय नेमदास। एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं घटापित साह हीरा दशलाक्षणीक व्रतकनिमित्य मुनिश्रीरत्नानि? मालपुरा मध्ये साह धान, चंपा, हेमा, हीरा, के देहुरा (मंदिर) श्री भगवानदास राज्ये।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ५६. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५×४० अक्षर। प्रति सुन्दर और स्पष्ट है।

संवत् १५४५ वर्षे वैशाख सुदी २ रविवारे कृतिका नक्षत्रे लाडणूपुरवरे आदिनाथचैत्यालये पेरोजखांन राज्ये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणचन्द्रदेवास्तत शिष्य मुनि जयनंदि तत् शिष्य ब्रह्म अचलू लिखितं कर्मक्षयार्थं ब्रह्म वीराय दत्तं।

३३. वर्द्धमान कथा।

रचयिता श्री नरसेन। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १७. साइज १०॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ३२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२×३८ अक्षर। लिपि सुन्दर है। प्रति प्राचीन है।

मंगलाचरण—

तवसिरिभत्तारहो णिज्जियमारहो पणविवि अम्मइं जिणवरहो।

वयजिणरत्तिहेफलु अक्खमि णिम्मलु भवसयसंचयदुहहरहो ॥

अन्तिम पाठ—

इय जिणरत्ति विहाणु पयासिउ, जह जिणसासणे गणहर भासिउ ।
जं हीणाहिउ काइमि वुत्तउ, तं बुहयण महु खमहु णिरुत्तउ ।
एहु सत्थु जो लिहइ लिहावइ, पढइ पढावइ कहइ कहावइ ।
जो णरु णारि एहु मणिभावइ, पुण्णंह अहिउ पुण्णफलु पावइ ।

घत्ता

सिरि णरसेणहो सामिउ सिवपुरगामिउ वड्ढमाणुतित्थंकरु ।
जइ मग्गिउदेइ करुणुकरेइ, देउ सुवोहिउ लाहु परमेसरु ।।

इय सिरिवड्ढमाणकहापुराणे सिघादिभवभावत्रणणाणो जिणराइविहाणफलसंपत्ती सिरिणरसेण विरइए सुभव्वयणणिमित्तो णाम पढमो परिछेउ सम्मत्तो ।

३४. षट् कर्मोपदेश रत्नमाला ।

रचयिता श्री महाकवि अमरकीर्त्ति । भाषा अपभ्रंश । पृष्ठ संख्या १०४ साइज १०।।×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर दस पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५×४० अक्षर । अपभ्रंश भाषा का बहुत प्रसिद्ध ग्रन्थ है । कर्म सिद्धांत का सुविस्तृत वर्णन किया गया है । रचना संवत् १२७४ लिपि संवत् १५६६ ।

मंगलाचरण—

परमप्पयभावणु सुहगुणपावणु, णिहणिय जम्मजरामरणु ।
सासयसिरिसुन्दरु पयणपुरंदरु[1], रिसहु णविवि तिहुवणसरणु ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

छक्कम्मिहिं सावउ जाणिज्जइ, छक्कम्मिहिं दिणदुरिउ विलिज्जइ ।
छक्कम्मिहिं सम्मत्तु वि सुज्झइ[2], छक्कम्मिहिं घरकम्मु[3] ण मुज्झइ ॥
छक्कम्मिहिं जिणधम्मु मुणिज्जइ, छक्कम्मिहिं णरजम्मु गणिज्जइ ।
छक्कम्मिहिं उवसग्गु ण ढुक्कइ, छक्कम्मिहिं रिद्धिहिं णवि चुक्कइ ॥
छक्कम्मिहिं दुक्कम्मइ तुट्टहिं, छक्कम्मिहिं पमायअ[4] हट्टहिं ।

१ पणय २ सुद्धइ ३ कम्मु ४ पमाइउपट्टइ ।

छक्कम्मिहिं पसत्ति मणिज्जइ, छक्कम्मिहिं सुरणय रिहि गम्मइ ॥
छक्कम्मिहिं पसिद्धि जणि लब्भइ, छक्कम्मिहिं तिहुयणु खणि खुब्भइ ।
छक्कम्मिहिं वसिजायहिं णरवर, छक्कम्मिहि देवावि आणायर ॥
छक्कम्मिहिं वंछिउ संपज्जइ, छक्कम्मिहि सुरदुंदुहि वज्जइ ।
छक्कम्मिहिं उप्पज्जइ केवलु, छक्कम्मिहिं लब्भइ सुहु अविचलु ॥

घत्ता

छक्कमइ जो णीसल्लमणु, भविउ भवाहि विवज्जिउ पालइ ।
सो जिणणाहें देसियउ [१] मोक्खम्मग्गु थिरदिट्ठि णिहालइं ॥

गाथा

विहियाएं सवुद्धीए एयाइं मए गिहत्थकम्माइं ।
अमुणंतेण सुअत्थं जिणणाहपयासियं सम्मं ॥

ताइं मुणिहि सोहेवि णिरंतरु, हीणाहिउ विरुद्धु णिहियक्खरु ।
फेडिव्वउमसत्तु भावंतिहिं, अम्हहं उप्परि बुद्धिमहंतिहि ॥
छक्कम्मो वएसु एहु भवियहिं, वक्खाणिव्वउ भत्तिए णमयहं ।
अंवपसाएं चच्चिणि पुत्तें, गिहछक्कम्मपवित्तिपवित्तें ॥
गुणवालहो सुएण विरयाविउ, अवरेहिंमि णियमणि सभाविउ ।
[२] [१२७४] वारहसयहिं ससत्तचयालिहिं, विक्कम संवच्छरहो विसालिहि ॥
गयहिमि भद्दवयहो पक्खंतरि, गुरुवारम्मि चउद्दसि वासरि ।
एक्कें मासें एहु समत्थिउ, सइं लिहियउ आलसु अवहत्थिउं ॥
णंदउ परसासण णिण्णासणु, [३] सयलकालजिणणाहहो सासणु ।
णंदउ अणिसु देवि वाएसरि, जिणमुहकमलुब्भवपरमेसरि ॥
णंदउ धम्मु जिणिंदि भासिउं, णंदउ संघु सुसील विहूसिउ ।
णंदउ महिवइ धम्मासत्तउ, पयपरियालण णायमहंतउ ॥
णंदउ भवियणु णिम्मलु दंसणु, धक्कमीहिं पाविय जिण सासणु ।
णंदउ अंव पसाउ वियक्खणु, अमरसूरि लहु वंधु वियक्खणु ॥
णंदउ छवउवि जिण पय भत्तउ, विवुहवग्गु भाविय रयणत्तउ ।

ायु २ वरयाइतहसत्तवयालिहिं ३ कालि ।

घत्ता

णंदउ णिरू ता महि सत्थु इहु, अमरकीत्तिगणि विहिउ पयत्तें।
जा महि महिमारुयमेरुगिरि णहयलु, अंबपसाए णिमित्तें॥

इय छक्कम्मोवएसे महाकइसिरिअमरकीत्तिविरइए महाकव्वे महाभव्व अंबपसाएण मण्णिए तवदाण-फल वण्णणो णाम चउदहमो संधी सम्मत्तो।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ११३ साइज ६×५॥ इञ्च। प्रति की स्थिति अच्छी नहीं है।

लेखक प्रशस्ति—

अथ संवत्सरे नृपविक्रमादित्यराज्ये संवत् १५६२ वर्षे कार्त्तिक सुदी ५ शनिवासरे पातिसाहि हुमायुं राज्यप्रवर्तमाने सिहनंदस्थाने ग० श्री विनयसुन्दर शिष्य मुनि धर्मसुन्दरेण पुस्तकं लिखितं।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ७५ साइज १०×५ इञ्च। ५४ से ६४ तक के पृष्ठ नहीं है। साधारणतः ग्रन्थ की हालत अच्छी है।

लेखक प्रशस्ति—

अथ नृपतिविक्रमादित्य संवत् १५५८ वर्षे चैत्र सुदी १० सोमवासरे अश्लेखा नक्षत्रे गोपाचल-महादुर्गे महाराजाधिराज श्री मानसिंहराज्ये प्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे नंदिगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री सोमकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री विजयसेनदेवास्तत् शिष्य ब्रह्म काला इदं षट्कर्मोपदेशशास्त्रं लिखाप्य आत्मपठनार्थे।

सवत् १५५३ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ५ भौमवारे श्री मूलसंघे श्रीमत्रैविद्यभट्टारक श्री प्रभ चन्द्रदेवास्त-त्पट्टालंकार गुज्जरलाडमालवकलिंगमहाराष्ट्रकर्णाटअंगवंगमगध ··· ··· ।

प्रति नं० ४ पृष्ठ संख्या ६५ साइज ११×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०×४४ अक्षर है। प्रति प्राचीन, शुद्ध तथा सुन्दर है।

प्रशस्ति—

संवत्सरेस्मिन् १४७६ वर्षे अषाढ सुदी ५ बुधदिने श्री गोपाचलदुर्गे राजा श्री वीरम्मदेव राज्य प्रवर्तमाने गढोत्परे श्री नेमिनाथ चैत्यालये श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री भावसेन देवास्तत्पट्टे श्री सहस्त्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे श्री प्रतिष्ठाचार्य श्री गुणकीर्त्तिदेवा तथा श्री विशालकीर्त्तिदेवा राम कीर्त्तिदेवाः खेमचन्द्रदेवाः। श्री गुणकीर्त्तिदेवनां शिष्याः श्री यशःकीर्त्तिदेवा कुमारकीर्त्तिदेवा हरिभूषण देवाः धर्म श्री संजम श्री शील श्री चारित्र श्री धर्ममतिविमल श्री सुमति एतेषामाम्नाये अग्रोतकान्वये चतुर्मुख

ज्ञातव्या साधु चजने भार्या स्वौसिरि पुत्र जौत गूजर। जौत् भार्या सरो पुत्र वाघू तस्य भार्या जोल्हा द्वि० सुहाग श्री पुत्र आढा एतेषां मध्ये साधू जौत् भार्या सरो तया निजज्ञानावरणीयकर्मक्षयनिमित्तं इदं षट् कर्मोपदेशशास्त्रं लिखाप्य बाई जौतसिरि शिष्या बाई विमलसिरि तस्या देवशास्त्रगुरुपूजाविधाने महामहोत्सवेन बाई विमल श्री योग्य सम्मर्पित। लिखित प डत रामचन्द्र। इद शास्त्रं ब्रह्म पेमा तेन पं० इन्द्रविमल दासाय समर्पितं

३५. षट् पाहुड सटीक।

मूलकर्ता श्री कुंदकुंदाचार्य। टीकाकार श्री श्रुतसागर। भाषा प्राकृत संस्कृत। पत्र संख्या १६५ प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४x४८ अक्षर।

प्रशस्ति —

संवत्सरे बाणरसमुनीन्दुमिते १७६५ माघमासे शुक्लपक्षे पंचमीतिथौ पुनर्वसुनक्षत्रे वनोपवन-दीर्घिकासरोनदीप्रसादशोभिते चतुर्विधसंघकृतगीतवाद्यप्रभावन निरंतरप्रवर्द्धितनित्योत्सवे बगरू नगरे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति ······ ······· श्रीमद् जगत्कीर्त्तिजितः शासनकारी निजवचनचातुरी पांडित्यगुणरंजित नगरलोकवृदः पंडित श्री छीतरमल्लः तत् शिष्यः स्वशीलपंडित्यवदान्यलोकरंजकत्व धैर्यगांभीर्यसौंदर्यप्रमुख गुण रत्नरोहणाचलः पंडितचेतोगजायत्तीकरणसृणिः प्रत्यः पंडित श्री हीरानंद तत् शिष्येण चोखचंद्रेण स्वहस्तेनेदं षट् पाहुडशास्त्रं संलिख्य भट्टारक श्री जगत्कीर्त्तिशिष्याय श्री दोदराजाय प्रदत्तम्।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १८६ साइज ११॥x५ इञ्च। लिपि संवत् १५८५।

संवत् १५८५ वर्षे महासुदी ४ श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये बाकलीवालगोत्रे साह चाचा भार्या चौसिरि तत्पुत्र साह नेना भार्या सबीरी द्वि० कोहनेन् तयोः पुत्र साह घोपाल सातू रूपा। साह घोपाल भार्या दूनसिरि। साह सातू भार्या बाई माह रूपा भार्या दूभा एतेषां मध्ये कोहमदे रोहिणी व्रतोद्योतनार्थं इदं शास्त्रं लिखाप्य भक्त्या मुनि श्री धर्मचंद्राय ज्ञानपात्राय दत्तं।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १६ साइज ११॥x५॥ इञ्च।

संवत् १६०२ वर्षे वैशाखसुदी १० तिथौ रविवासरे उत्तराफाल्गुननक्षत्रे राजाधिराज श्री आलम राज्ये नगरचंपावती मध्ये श्री पार्श्वनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणेसरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री

जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये .... ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ४४ साइज ११×४॥ इञ्च ।

संवत १५६४ वर्षे महासुदी २ बुधवारे श्रवणनक्षत्रे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नंद्याम्नाये श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेव स्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेल वालान्वये चंपावतीनगरे राठौडवंशे रायश्रीवीरमदेवराज्ये बाकलीवालगोत्रे सं० तीको भार्या पूनी। प्रथम पुत्र साह चाया भार्या गूजरि तत्पुत्र साह ढोला भार्या हुलसिरि। द्वि० पुत्र सं० ताल्हू भार्या नौलादे। प्रथम पुत्र सं० लाल्हू भार्या ललितादे द्वि० भार्या रूपा। द्वि० पुत्र सं० चाल्हू भार्या बेलसिरि द्वि० भार्या बहुरंगदे पुत्र नथमल इदं शास्त्रं लिखापितं।

३६. श्रावकाचार।

रचयिता श्री लक्ष्मीचन्द्र। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या २० साइज ६×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८×४२ अक्षर। विषय श्रावक धर्म।

मंगलाचरण—

णवकोरप्पिणु पंचगुरु दूरदलियदुहकम्मु।
संखेवें पयडक्खरहिं अक्खमिसावयधम्मु॥

अन्तिम पाठ—

दंसणु णाणु चरित्तु तउरिसि गुरु जिणवरुदेउ।
बोहि समाहिएं सहुं मरणु भवे भवे दिज्जउ एउ॥

संवच्छरेचद्रन्युग्मवसुविद्वमिते फाल्गुणमासे कृष्णपक्षे पंचम्यां तिथौ रविवासरे सवाई जयपुरे महाराजाधिराज श्री सवाई माधवसिंहजी प्रवर्त्तमाने राज्ये ऋषभदेव चैत्यालये साह श्री जोधराजपाटोदी कारापिते श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये श्री नरेंद्रकीर्त्तिस्तत् शिष्य ब्रह्म श्री अमरचन्दतत् शिष्यः पंडितः श्री जयमल्ल तत् शिष्य पंडित श्री मनोहरदास तत् शिष्य पं० श्री छीतरमलस्तत् शिष्यास्त्रयः प्रथम हीरानंदः द्वि० ब्रह्म टेकचन्दस्तृतीयश्चतुर्भुज। हीरानंदस्य शिष्यौ द्वौ० प्रथम चोखचन्द द्वि० ऋषभदास। चोखचन्दस्य त्रयः शिष्याः प्रथम सुखराम द्वि० किसनदासस्तृतीये नानिगदासः। सुखरामस्यचत्वार शिष्यः प्रथम कल्याणदास द्वि० केसरीसिंह तृतीय मोहनदास चतुर्थ नेमिदास एतेषां मध्ये विनयवतः सुशिष्यस्य केसरीसिंहकस्य पठनार्थं लिखतं नैणसागर संवत १८२१ मिती फाल्गुन बुदी .... ।

३७. श्रीपाल चरित्र ।

रचयिता श्री पं० नरसेन। भाषा अपभ्रंश। पृष्ठ संख्या २६ साइज १२×४।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४×४८ अक्षर। प्रति प्राचीन है।

मंगलाचरण—

सिद्धचक्कविहिरिद्धिय गुणहसमिद्धय पणवेप्पिणु सिद्धमुणीसरहो।
पुणु अक्खमि णिम्मलु भवियहमंगलु सिद्धमहापुरसामियहो ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

इय रज्जु करंतउ पुणु वि विरत्तउ देविसयलु णियपुत्त हो।
संसारहो संकिउ पुणु दिखंकिउ मंतिपुरोहियजुत्तहो ॥

पुहवीपालुहु रज्जु समप्पिउ, अप्पउराय महाव्वइ अप्पिउ।
मयणासुंदरिपमुहंते उर, हरडोरवत्तारिय णेउर।
सयल विसंजइ यउ संतायउ, दुविहिं तवयरणेहिं विरायउ।
महासुक्क सुरइंदुह वोप्पिणु, गइय देव तियलिंगुह णेप्पिणु।
अंगरक्खजहिं जहिं वउ भायउ, तहि तहिं देवत्तणुसुहु पाविउ।
सयल वि णरणरवइ समदेप्पिणु, घोरु वीरु तवयरणु चरेप्पिणु।
गउ सिरिपाल परमणिव्वाणहो, सिद्धचक्कफलु भवियहु जाण हो।
अवरु वि नरुनारिज्जु करेसइ, एव माइ सो फलु पावेसइ।
सग्गि सुराहिव सुहु भुंजेसइ, सुक्खएणहं सिहु कील करेसइ।
कत्तिय आसाढहि फग्गुणमासहि, ते णंदीसर दीउ गवेसहि।
वहु भंत्ति हिं जिणपूयकरेंसहि, सिद्ध चक्कफलु सुहु भुंजेसइ।
जिणइ अकित्तिमाइं वंदेसइ, पुणु महियाल चक्कवइ हवेसहिं।
करिं खिरज्ज पुणु मोक्खु लहे सहिं, ... ।

घत्ता

सिद्धचक्कं विहि रइयमइं, णरसेण भणइ णियसंत्तिए।
भवियणजणआणंदयरे, करिवि जिणेसर भत्तिए ॥

इय सिद्धचक्ककहाए महारायसिरिपालमयणासुंदरिदेविचरिए पंडितसिरिणरसेण विरइए इह

लोयफलसुहकहाए सिरिपालमहारायणोम द्वितीय संधि।

संवत् १५१२ वर्षे चैत्र वुदी ११ भौमे रावरपत्तने राजाधिराज श्री डूंगरसिंहदेवराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा खंडेलवालान्वये सरस्वती गोत्रे साह काल्हा तद् भार्या साध्वी राना तयोः पुत्राः साह वींमा माधौलाल एतेषां मध्ये साह माधौ भार्या साध्वी महाश्री सफलादे निजज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थं इदं शास्त्रं श्रीपालचरित्रं स्वहस्तेन लिखाप्य महासिरि दत्तं। ज्योतिषी प्रयागदास स्वपुत्र ज्योति श्री बाल लिखितं।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४८ साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ९ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०×३४ अक्षर। प्रति पूर्ण तथा स्पष्ट है।

संवत् १५७९ वर्षे मार्गसिरमासे द्वितीया दिवसे बुधवारे रोहणी नक्षत्रे सिद्धिनामजोगे टौंकपुरनाम नगरे पार्श्वनाथ चैत्यालये। श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री कुंदाकुंदाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये टौंग्या गोत्रे साह धरमसी तस्य भार्या खातू तयोः पुत्र चत्वारि प्रथम पुत्र साह नीको तस्य भार्या गल्ली तत्पुत्र हामा। द्वि० पुत्र जाल्हा। तृतीय पुत्र नेता। चतुर्थ पुत्र श्रीवंत। साह हामा तस्य भार्या सोना तत्पुत्र तेजसी। साह जाल्हा तस्य भार्या पदमा तत्पुत्र सहसमल्ल। साह नेता तस्य भार्या उंदी तत्पुत्र बुचमल्ल साह श्रीवंत तस्य भार्या वाली तत्पुत्र सीहमल्ल द्वि० पुत्र पद्मसी तृ० पुत्र रणमल सा० लाखा तस्य भार्या रोहिणी तत्पुत्र गुणराज द्वि० झाझू तृतीय पदारथ। साह समदास तस्य भार्या रयणादे तत्पुत्र साह कुंभा तस्य भार्या धरमा तत्पुत्र गोइंद साह वस्त तस्य भार्या नीकू साह डूंगर तस्य भार्या खेत तत्पुत्र चाया तस्य भार्या चादणदे एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं लिखापित श्रीपालचरित्र ब्र ई पदमसिरि जोग्य दातव्यं।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ४३ साइज ११×४॥ इञ्च।

लेखक प्रशस्ति—

अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री विक्रमादित्यराज्ये संवत् १५८४ वर्षे भादौ बुदि ८ रविवासरे मृगसिर नक्षत्रे साके १४४९ गते पंच्याव्दयो मध्ये मन्मथनामसंवत्सरप्रवर्त्तने सुलितानमीर बब्बरराज्यप्रवर्तमाने श्री कालपीराज्यश्रीआजमसाहि प्रवर्त्तमाने दौलतिपुरसुभस्थाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे श्री जिनचन्द्रदेवाः तदम्नाये वर्लवकचुकान्वये जद्वंसमुद्भवजिनचरणकमलचंचरीकान् दानपूजासमुद्यतान् परोपकारनिरतान् प्रशस्तचित्तान् साधु श्री थेघू तद्भार्या धर्मपत्नी सुशीली साध्वी अमा। तस्योदरसमुत्पन्न जिनचरणाराधनतत्परान् सम्यक्त्वप्रतिपालकान्

सर्वज्ञोक्तधर्मरंजितचेतसान् कुटुंबभारधरधुरान साधु श्री नोकमु तद्भार्या शीलतोयतरंगिनी हीरा तयोः पुत्र सर्वगुणालंकृत देवशास्त्रगुरुविनयवंत सर्वजीवदयाप्रतिपालकान् उद्धरणधीरान् दानश्रेयांसावतारान् आभार मेरान परमश्रावक महासघु श्री महे सुतेनेदं श्रीपालनामशास्त्रं कर्मक्षयनिमित्त लिखापितं। लिखितं पं: वीरसिंधु। बाई मानिकी योग्य प्रदानार्थं।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ३७ साइज ११×५ इञ्च।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १६३२ वर्षे वैशाख……… अमावस्यां तिथौ भौमवासरे शावरतपगच्छे पं० न्यास, श्री पं० नयरत्नगणिशिष्य पं० न्यास न्यास विद्यासुन्दरगणि लिख्यतं चाटसूमध्ये।

श्री पार्श्वनाथचैत्यालये चपावत्तीमहादुर्गे महाराजाधिराजरावश्रीभगवानदासराज्ये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तदाम्नाये तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिदेवा तत् शिष्य चन्द्रकीर्त्तिदेवा खंडेलवालान्वये साह गोत्रे साह टेहू भार्या बांहू। तत्पुत्र साह नांनू भार्या नारंगदे। द्वि० भार्या दिवू। नानू पुत्राः पंच प्रथम पुत्र साह कपूरा भार्या नेमी। तत्पुत्र गुणराज। द्वि० पुत्र साह श्रवण भार्या साहिबेद तत्, हारिल …………।

३८. श्रीपाल चरित्र।

रचियता पं० रइधू। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १२८ साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६×३२ अक्षर। प्रति शुद्ध तथा स्पष्ट है।

मंगलाचरण—

सिद्धहं सुपसिद्धहं वसुगुणरिद्धहं, हियइ कमले धारे वि निरु।
अक्खमि पुणु सारउ सुहसयसारउ, सिद्धचक्क माहप्पुवरु॥

अन्तिम पाठ—

इय चरिउ सुहायरू बुहयणमणहरू नंदउ महियलि गुणभरिउ।
भवभमणविणासणु दुरियपणासणु अत्थपसत्थहि विप्फुरिउ॥
सत्यं वदंति व्रतानि कुरुते शास्त्रं पठत्यादरात्।
मोहं मुञ्चति गच्छति स्वसमयं धत्ते निरीहपदं॥
पापु लुंपति पाति जीवनिवहं ध्यानं समालंबते।
सोऽयं नंदतु साधुरेव हरसी पुष्णाति धर्मं सदा॥ १॥

पुणु देवि मेरासइ नविवि समासइ नेमिमित्तिहु वंसु जि भणमि ।
पुणु जासु हि रज्जें दुणयवज्जें हुवउ सत्थ तं पुणु थणमि ॥

गोपालचलु दुग्गु पसिद्धु नामु, धणकंचणरिद्धु जणहि रामु ।
गोउर पाथारंकिउ सचित्तु, परनर अगमु नं सयहि चित्तु ।
तहि आत्थिराय अरिकुलकयंतु, तोमर कुलि पायडु महमहंतु ।
सिरि डूंगरेंदु नामेण सूरू, विप्फुरिय पयावे नाइ सूरू ।
तहु कित्तिपाल नंदणु णरिट्ठु, नं रूविकामु सविहं मणिट्ठ ।
तहु रायर जि समाएणवतु, सिरि अइरवाल वंसहि महंतु ।
सावयवयपालण विगयतंदु, रिसिदाण पहावें जो अमंदु ।
वाहुडु जिसाहु हुउ आसिधणु, नियजसेण जेण दिसि मग्गु छुणु ।
तहु भज्ज जसोवइ कमलवत्त, तहि उवरि उवणाविणि पुत्त ।
गुण गणु भायणु राहू सुजेठु जिणचरणकमल जो भसलसिट्ठ ।

घत्ता

वीयउ नंदणु पुणु भाविय जिणगुणु सकलकलालउ सुद्ध मणु ।
वाटू साहु जिहउ वंदियणहि थउ रंजिय अहनिसु सयणु यणु ॥ १ ॥

तहु तियसील विसुद्ध पउत्ती, असपालहिय नाम साउत्ती ।
नंदण चारि ताहि उर जाया, चारि दाणमनं पायड जाया ।
पढमु साहु नयणसिहु पउत्तउ, नीयमग्गु जि मुणिउ निरुत्तउ ।
विजपालहिय तासु पुणु भामिणी, साहुय सील महाधण सामिणी ।
चाटू साहु हु वीयउ तणुरुह, धणसी णामु सुपरियणु कियसुह ।
वील्हाही पियतम अणुरायउ, पुत्तहु जुयलु ताहि उर जायउ ।
जाटा नामे पढम भणिजे, गायणेहिं जो अहनिसु गिजइ ।
जोल्हाही तहु पिययमउत्ती, सा गोविंद सुवेण सुपत्ती ।
गविंदहु तिय घोल्ही वुच्चइ । तहु नंदणु पुणु चोचा सुच्चइ ।
धणसीहहु सुउ वीयउ माला, तहु तिय लाडो अइसुकुमाला ।

घत्ता

वाटू साहहु सुउ तीयउ पुणु हुउवोहिथ नामेंदीह भुउ ।
गुणगणरयणायर जिणवयणायरुनानिग ही पिय भज जुउ ॥ २ ॥

जो पुणु वाटूसाहु पयासिउ, तहु चउत्थु नंदणु विजयासिउ।
हरसी साहु नाँमु मंहि पायडु, जो जिण भणिय सेळ अत्थहु पडु।
तहु कलत्त परियणहं पहाणी जिह सिरि रामहु सोया जाणी।
देवसत्थ गुरु वयणकलायर, दिवचंदही नामं नेहायर।
वोई भज्जा पुणु मील्हाहीं, नं गोविंदुहु लछिपसाई।
तहु नंदणु पुणु कइयण वणिउ, जो हू गंररायं निरूमणिउ।
नामें करम सीहु सो नंदउ अहनिसु जिणवर चरणइं वंदिउ।
जउ साही तहु तय सुपसिद्धो, विहु कुल सुद्ध रूवगुणरिद्धि।
पुणु हरसीहहु पुत्ति पउत्ती, न मानंतमई गुणजुत्ती।
जाइ अखंडु मीलुवउ पालिउ, कलिमलु असुहु मचित्तहु खालिउ।
पुणु विनंनो तहु लहु सुयसारी, सयलहु परिवारहु सुपियारी।
एहु गोतु नंदनु महि मंडलि, जा रवि सास निवसहिं आहंडलि।
एयह सव्वहं मरिस पहाणउ, सत्थ पुराण भेय वुह जाणउ।
कलिकालें जिरमाणु छुरियउ, चेयणु गुणु अरुडु विप्फुरियउ।
तिणिकालि रयणत्तउ अ चंइ, सुद्धू धम्मु जो अहंनिसु संचइ।
जि वेलहइ पुराण सुहरू, कारा वियंड पयत्तें मणहरू।
सो हरसीह साहु चिरु नंदउ, सज्जण चित्तहु जणिया णंदउ।

घत्ता

पोमावइ पुरवाड वंसिउ वणउ कुलतिलउ।
हरसिघ संघविहु पुत्तु रइधू कइगुण गणनिलउ॥

इति श्रीपालसिद्धचक्रचरित्रं रइधू पंडितकृतं समाप्तं।

संवत् १६३१ वर्षे कातिक वुदी ६ शुक्रवासरे पुष्यनक्षत्रे साधानामयोगे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये षड्त्रिशद् गुणविराजमान व्याकरणछंदोलंकारसाहित्य-तर्कागमादिशास्त्रार्णवपारप्राप्तान् भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री चन्द्रकीत्तिदेवास्तत् भ्राता आचार्य श्री हेमचन्द्र तदाम्नाये खंडेलवालान्वये पुस्तिका लिखापितं नागरचालमध्ये टौंक समीपे सांखिणा नगरे पातसाह श्री अकबरविजयराज्ये सोलंकी महाराय श्री सुरजन पी साह गोत्रे साह कमा भार्या करणादे पुत्र चिरजीव साह उदा भार्या उत्पौदे पुत्र द्वि० चि० साह भीरवा। साह भीरवा भार्या भावलदे पुत्र जैसा द्वि० पुत्र मोटा। साह सीखा भार्या सिंगारदे पुत्र चि० तेजपाल साह माधू भार्या मुक्तादे पुत्र साह छीत

धमा, लाखा, पर्वत, नानग। साह छीत भार्या चतरंगदे पुत्र खीमसी, सांगा माल्हा। साह धर्मा भार्या धारादे पुत्र ताल्हू। साह चांदू भार्या चांदणदे। साह श्री रंग भार्या सुहागदे साह हीरा भार्या हीरादे......।

३६. सकलविधिविधान काव्य।

रचियता श्री नयनन्दि। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ३०४ साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८×४० अक्षर। लिपि संवत् १५८० चैत्र बुदि ४।

मंगलाचरण—

धवलमगलणंदजयवड्ढ मुहलंमिसिद्धत्थणिव।
मंदिरंमि णरलोय हारिसुव संकामिउं सग्गाउ जिणु॥
जयउ पुरिमकल्लाणकलसुव अहणं णिद्धि वड्ढविमल।
मुत्तावलिहिं णिमित्तु सुहसुत्तिए पियकारणिहि सिप्पहिं मुत्तिउविव॥ १॥

अन्तिमपाठ—

घत्ता

आराहिय आराहणाए भव्व च्छसिद्धि सुहु भुंजवि।
लोइ सहिं सिद्धवहूणिलउ णयणंदिय पंडियमुणिरंजवि॥

मुणिवरणयणंदीसण्णिवद्धपसिद्धे सयलविहिणिहाणे एत्थकव्वे सुभव्वे अरिहपमुहसुत्तवुत्त आराहणाए पभाणिउं फुड्ड संधी अट्ठावण समोत्ति। लेखक काइस्थ साधू। अथ प्रशस्तिका। संवत् १५८० वर्षे चैत्र बुदि ४ गुरुवासरे श्री मूलसंघे नद्याम्नाये...... ......।

३६. सन्मति जिन चरित्र।

रचयिता महापंडित रइधू। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १२६ साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०×४२ अक्षर। लिपि संवत् १६२४।

मंगलाचरण—

घत्ता

जयसररूहमाणहुं वड्ढियमाणहुं वढमं णत्थिसेरहु।
परिणविविपयं जमलं णहपहविमलं चरिउ भणमि तहु हयसंगहु॥ १॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

× × × × ×

णंदउ राणउ णीइ वियाणउं, पयपुणु णंदउ पाउणिकंदउ।

सावयवग्गु वि पुण्णसमग्गु वि, घरि घरि वीयराउ अंचिज्जइ।
मिच्छातम भरु भव्वहं खिज्जउ, ... ।
मुणि जसकित्तिहु सिस्स गुणायर, खेमचन्द हरिसेण तवायर।
मुणि तहं पाल्ह बंभुए णंदहु, तिण्णि वि पावहु भरु णिक्कंदहु।
देवराज संघाहिव णंदणु, हरिसिंघु बुहयणकुलआणंदणु।
पोमावइ कुलकमलदिवायरु, सोविसु णंदउ इत्थु जसायरु।
जस्स घरि जि रइधू बहु जायउ, देव सत्थ गुरु पयभत्तु रायउ।
चरिउ एहु णंदउ चिरु भूयलि, पाढ ज रूपवट्टइ इह कालि।

घत्ता

गोणगिरि दुग्गहि खयअरि वग्गहि सुक्खयरे।
गोउर चउ दारहिं तोरणफारहिं बुहयणमनसंतोसयरे॥

धयालिहमेहहिं जिणवरगेहहिं, मणिगणचंदिरि णयणाणंदिरि।
जिणु पुज्जिज्जइ धम्मुसुणिज्जइ, णिच्चजिजत्थहि थक्क अवत्थहिं।
तव ता विज्जइ भवमलु खिप्पज्जइ, पुणु पुणु घरि घरि घण कं वण्ण भरि
मंगलगिज्जहि उच्छवकिज्जहिं, सावय लोयहिं मणहं पमोयहिं।
तिविहं पत्तहं गुणगणजुत्तहं, दाणाइं दिज्जइ पुण्णाइं लिज्जइ।
घरि घरि सदंसणु भाविज्जइ, तसु भावणाइं कम्ममलु खिज्जइ।
आवणि आवणि वरकंचण मणि, विक्कहि वणिवर रूवें जियसर।
करि करदाणें जहिं अपमाणें, पंथइं सित्तइं अलिआसत्तइं।
दह दिह धविय कत्थणमाविय, तहिं पुहइसरु णाइ सुरेसरु।
रूवें णं सरु कंतिए ससिहरु, लच्छहिं आयरु णावइ सायरु।
कर करवालो अरिखयकालो, तोमर वंसहु लद्ध पसंसहु।
उज्जोयणायरु कुलसंतयधरु, णामें डुंगरु अरियण खययरु।
तासु जि रज्जहिं सई णिरवज्जहिं, जिणहरिठंति सुहमइ वंति।
विरयउ कव्वो एहु जि भव्वो, पुव्वाइयरियहं पट्टि गुणायरु।
अणु कमेण संठिउ वयसायरु, ... ।

घत्ता

सिच्छित्त तिमिरहरु णाइसहसयरु आयमत्थ हरु तवणिलउ।

णामेण पयडुजणि देवसेणुगणि सजायउ चिरु वुहतिलउ ॥

तासु पट्टिणि रुवमगुणमंदिरु, णिच्चाभव्वजणणयणामंदिरु।
विमलमई फेडियमलसंगमु, विमलसेणु णामें मुणि पुंगमु।
वत्थसरुवधम्मधुरधारउ, दहविह धम्मु भुवणि वित्थारउ।
वयतवसीलगुणहिं जो सारउ, वज्झब्भंतरसंग णिवारउ।
धम्मसेणु मुणि भवसर तारउ, भावम्गु पुणु भाविय णिय गुणु।
दंसणु णाणु चरणु तहं चेयणु, दोविह तव तेयण ताविय तणु।
धम्मामइ पोसिउ भव्वहं गणु, मूलुत्तर गुणेहिं जो पावणु।
सुद्धप्पासरूउ संभावणु, कम्मकलंकपंकसोसणइणु।
सहसकित्ति उव्वासिय भववणु, तासु पट्टि उदयाइ दिवायरु।
वज्झब्भंर तव कय आयारु, ।
वुहयण सत्थअत्थ चिंतामणि, सिरि गुणकित्ति सूरि पायडु जणि।
तहुं सिंघासणि सिहरि परिट्ठउ, मुत्ति रमणि राएणो क्कठिउ।
सुजसपसर वासियदिवासउ, सिरि जसकित्ति णामदिव्वासउ।
तहुं आसणि गुणगणिमणिसायरु, पवयणअब्भासणसायरु।
दोविह तव तावें तवियंगो, भव्वकमलवणवोहपयंगो।
वज्झब्भतरसगअसंगो, जिं दुज्जउणि जियउ अणंगो।
पुव्वापरियहमग्गपयासणि, सच्चेयणु मउ रंदुव णिरुज्जणि।
णिग्गंथु विअत्थहं संजुत्तउ, सत्थाणविइयरहं परिचत्तउ।
छंदतक्कवायर णहिं वाइय, जिणि जिणि विसि सिक्खादाविय।
उत्तमक्खमवासेण अमंदउ, मलयकित्ति रिसि वरु चिरु णंदउ।

घत्ता

एयहं मुणिविंदहं भवतमचंदहं पयकमलहं जे भत्तहुय।
ताहं जि णामावलि पयडमिभूयलि वंदिगणहं जाणिच्चथुय ॥

णियजसपसर दिसामुहं वासिय, घर हिसार पट्टणहिं णिवासिय।
अयरवाल कुलकमलदिवायर, गोयालगोतिपयडणियमायर।
आसि पुरिसजे अगणिय जाया, ताहं जि किं वण्णमि विक्खाया।
जिणपयपंकयाहं णिरुछप्पउ, परियाणियउं जेण परमप्पउ।
जाल्हे णामु साहु चिरु वुत्तउ, पुत्तु जुयलु तहु हुयउ णिरुत्तउ।

सहजो भवगुणमणिरयणायरु, तिविह पत्त दाणेण कयायरु।
सहजपालु पढमउ नय वल्लहु, तेजू इयरु तिवुह जण दुल्लहु।
णिरुवम रूवसीलवयसज्जा, ·······ही पढमिल्लहु भज्ज।
धुरिभरयणउ पाय णारखाणी, सचित्तजि परहु उवसमवाणी।

घत्ता

तहिं उवरि उवण्णा लक्खणपुण्णा छह णंदण आणंदयर।
णं जिणवर भासियं दव्व सुहासियं णं छहरसजणपोसयर॥

ताहं पढमु वरकीत्तिलयाहरु, दुहिय जणाण दुक्खघणखयसरु।
दाणु णय करुणं सुक्खुरं करु परिवारहु पोसणे सुरभूरहु।
जिणपूयाविहि करणपुरंदरु, णियकुलमंदिर बहु सोहाहरु।
भूरि दव्वु ववसाएँ अज्जिवि, लच्छि सहाउ सवलु पडि वज्जिवि।
जिणणाहहु पइट्ठ काराविवि, मणइ च्छिय दाणवहु दाविवि।
तित्थयरत्तु गोत्तु जि वद्धउ, संघहिउ सहदेउ जसद्धउ।
धामाहिय तहु भासणिभासिय, जिणदासहु सुवरसणोहासिय।
कुमरपालहिय जिणदासहु पिय, वहु उवमिज्जइ तहिं सीलहु सिय।
झाझणु भाइय जिणपय कमला, तिण्णि पुत्त हुयतांह गुणाला।
पढमउ वीयउ तीयउअमला, वछरजुसाभु नामाला।

घत्ता

सहजपाल सुंदउ यउ पुणु हुउ छीतमु गयतमु विमलजसु।
दुहियण दुहखंडणु णियकुलमंडणु, गुणवण्णणि कोई सुत॥

तासु पियखिम गुणसील अतुली, जायण जण आसातरु वल्ली।
खिउं धरहिय अहि हार्णं साहिय, ताहिं गांभहुय पुत्त गुणाहिय।
छह पमाण भूयलि सुपमाणिय, गुरुयण जेहिं णिच्च सम्माणिय।
वणिवर यट्टहं जो मुक्खेसरु, वीयराय पय पकय महुयरु।
वीरदेउ पढमउं गुणमंदिरु, दाणु णाय करु जो तगि सुंदरु
वीयउ हेमाहेमु व दुल्लहु, णियपरियणयणम्मि अइवाल्लहु।
लउदी णामे भासिउ तीयउं, देव सत्थगुरुपाय विणायउं।
रूपा लवें जिय मयः रद्धउ, जि महियलि जसु विमलुलद्धउ।

आत्थिथिरा पंचमु घम्मंगो, णिव्वि हियवुद्दयणजणसंगो।
गिर णयरहु जत्तहं संवाहिउ, चउविह संघभारू णिव्वाहिउ।
छट्टउ जालपु वणिणय जाणगु, परिवारहु भत्तउ कमलाणणु।
सहजुपाल णंदणु पुणु तीयउ, जिणसासणु वि जेण मणिभायउ।
मणवंदिय दायणु चिंतामणि खेमदु णामे विक्खायउ जणा।
भीखू ही तहु पिययमसारी, पुत्त चउक्कहिं सोहाधारी।
पढमु पुत्तु खेता खेमंकरू, बीयउ चाचा चाय सुंदरू।
ठाकुरू णामें तायउ णंदणु, भोजा चउत्थउ जण आणंदणु।

सिरिसहजपालु सुउ तुरिय पुणु हु डाला णामें वीण सुउ।

आमाहिय तहु पिय णं रामहु सिय चारिपुत्त संजायधुउ॥

जिणदेवभत्त दुदणु गरिट्ठु, परिवारभत्तु दरवेसु सिट्ठु।
सेखू णामें तिजउ सपुण्णु, जासा चउत्थु णंदाणिकणु।
पुणु सहजपाल सुउ पंचमिल्लु, थील्हा णामें बहु गुणगरिलु।
केसवइ भासिकलत्तु तहं तिण्णि पुत्त जाया पवित्त॥
पहराजु पसिद्धउ गब्भलोइ, चउविहदाणें जो भव्वजोइ।
हरिराजु जि पंडिय गुणपहाणु, छकम्मर तुगुणगणणिहाणु।
जगसाहु जयम्मि मई पहाणु, णियकुलकमलस्स वियासभाणु।
सिरिं सहजपाल सुउ भणिउं छट्ट, संसार महाणव पडणभट्टु।
सगवसणविरत्तउ धम्मि रत्तु, पालियउ जेण सावयचरित्तु।
गेहंमि वसति अहपवित्ति, धणु अज्जिउ जिं दाणहु णिमित्ति।
तोसउ णामें तोसिय जणोह; आजाही तहु पिय जणिय सोह।
णं कुलहरकमलणिवासलच्छि, सुर सिंधरगामिणि दीहरच्छि।
सुर वल्लिव परियणपोसयारि, जुवईयण सयलहं मज्झसारि।
दाणें पीणिय णिरू तिविहपत्त, महमीलपइव्व यणाहभत्त।
तहि गब्भि समुब्भव पुत्त दुण्णि, णं महिपयक्खउ वउयविण्णि।
जेट्टउ दंसणरयणहुं करंडु, कुलकमलवियसणकिरणचंदु।
विल्हा णामें गुण सेणि संडु, मिच्छत्तसिहरि सिरि वज्जदंडु।
कुरुखेतदेस वासिय पवित्त, सावय वय पालण विमलचित्त।
जिणपूयाइविह छकम्मरत्तु, परिवारहु मंडणु गुणणिउत्तु।
जिणधम्मधुरंधर इत्थलोइ, तंह गुण वण्णणि को सक्कु होइ।

सहजासाहु हिं पमुहहिं वणु, भायर चउक्कजु उपुणु चियणु।
सिरि सेट्ठिवंसि उप्पणु धण्णु, तेजा साहु जि णामें पसण्णु।
तहु पिय जालपहिय वरणारीय, परिवारभत्त सीलेणसीय।
तहिं गाठिभउ वण्णासुयपुरिण, राजसपालु ढाकरू जि तिण्णि।
तुरिया वि पुत्ति जा पुण्णमुत्ति, णिणच्चजि विरइय जिणणाह भत्ति।
खेमी णामा वरसीलजुत्त, कोकइ वण्णइं तहिं गुणहं कित्ति।
सा परिणिय तेण गुणायरेण, वहुकालि जंति सायरेण।
णिय भायर णंदणु गुण णिउत्तु, मग्मेप्पिणु णिविहउ कमलवत्तु।
हेमा णामें परिवारभत्तु, तहु घरहु भारदेप्पिणु विरत्तु।

× × × × ×

जिण वयधारण उक्कंठएण, संसारू असारुउ मुणिमणेण।
जणणी जणु वि परवारलोउ, सयलहं विपमावणु करि विसोउ।
अपुणु वि खमेप्पिणु तक्खणेण, जिणवेसुधरिउ णीसल्लएण।
जसकित्तिमुणिंदहु णवि विपाय, अणुवयधारिय तिं विगयमाय।
तासउ णंदणु दिवराजु अण्णु, सा धाहिय पियणेहिं पसण्णु।
परिवारभत्त गुणसेणिजुत्त, णियवसणयण उज्जोयमित्त।
सच्चावइ भासि सच्चेवलीणु, जिणधम्मकज्जिकारणयत्रीणु।
तहु णंदणजाया दुण्णिवीर, जिणधम्मधुरंधरगुणगहीर।
चंदुव्वकालयरू सिरचन्दु, पढमउ सज्जणहं जणइं अणंदु।
वीयउ पुणु णामें मल्लिदसु, वीसेगूणहुं जिणवरहुं दासु।
तोसउहु पुत्ति पुणु विण्णिजाय, जिणधम्मि कम्मि रयविगम माय।
जोठी णामें जीवों जिउत्त, जिणपयगंधोवयणिच्चसित्त।
वयणियमसीलपालणसमग्ग, जिणसमयहु भरू धरणअभग्ग।
लहुडी णामें सेल्ही पवित्त, विहुं परिवारहं जा णिच्चभत्त।
सेलें सोहग्गे सिय समाण, णिरू पत्तहं चउविह देइ दाण।
तहिं णंदणहू यावि विण्णिसज्ज, झाडा तेजा णामें मणुज्ज।
पंच वि भयरहं जि अण्णसुया, जालही वोरो पमुहाइं हुया।

इहु परियणु वुत्तउ सजसपवित्तउ, जा कणायायलु सूरसंसि।
जावहि महि मंडलु दिवे आहंडल, णंदउ तावहि सजसवमि॥

इय सम्मइजिणचरिए णिरुसंवेयरयणसंभरिए वरचउवग्गपयासे बुहयणविंतस्य जणियवल्लासे सिरिपंडियरइधूविरइए साहु सहजपाल सुय सिरिसंघाहिवसहदेवलहुभायरमहाभव्व साहु तोसउण मणामंकिए कालवकतहेव दायाखंसणि देसवगणों णाम दशमो संधी परिच्छेउ सम्मत्तो।

सव्वत्थे महदो विशुद्ध करणो जो जईणत्तभोरदो। णिसंकादिगुणादली परिविढो सम्मग्ग संगउग। णाट्टो धम्मानलासरिक्खिदयए सवरसुजोहाणिसं। सो जीवउ सिरि तोसडो तह कई रइधू गुणिभोणघि।

संवत् १६२४ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १७ गुरुवासरे श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक अष्टाविंशांति मूलगुणप्रतिपालकान् जिनमदनकरिघटाकुंभविघट्टनकेसरीकिसोरान् श्री श्री श्री हेमकीत्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टरक परमोदासीनगुणविराजमान कुमारसेनदेवाःतत्पट्टे भट्टारक हेमचन्द्रदेवापत्पट्टे भट्टारक अबोधजीवमतिप्रतिबोधकान् परोपकारकरणसमर्थान भव्यांबुजविकासनैकमार्त्तडान भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे आगमाध्यात्मरसरसिकान् परमपनीयसंसोपितगात्रान् परमोदासीनपंचरसत्यागी भट्टारक श्री यशःकीर्त्तिसूरिनामधेयान् तदाम्नाये शिष्यणी शीलतोयतरंगिणी विनयवागेश्वरी पंचअनोवृत व्रतपालकी अर्जिकादेवी श्री ब्रह्म जिनप्रभावनाकारक हीनदीनदुखितसमुद्धरण ब्रह्म पचायणा आर्जिकादेवश्री तत् शिष्यणी सीलतोय तरंगिनी विनयवागेश्वरी बाईजी ब्रह्मपचाइण इदं वर्द्धमानचरित्रं लिखापितं। लिखितं पांडे तिपरदास अलवरगढ-वास्तव्याय।

४०. सुदर्शनचरित्र।

रचयिता श्री नयनन्दि। भाषा अपभ्रंश। पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ३५-४० अक्षर। रचना संवत् ११००. लिपि संवत् १५६७. विषय-सुदर्शन स्वामी का चरित्र अथवा णमोकार मंत्र का प्रभाव।

मंगलाचरण –

इह पंचणमोकारइं लहेवि गोउवि हुवउ सुदंसणु।
गउ मोक्खकहु अक्खरकमि तहो चरिउ वरचउवग्गपयासणु॥

अन्तिम भाग—

आयहो गंथहो वुहजणियतुट्ठि, विरइए अरहंतहिं अत्थसिट्ठि।
पुणु गंथसिद्धि जय मणहरेण, गोयमअहिणामें गणहरेण।
सोहम्में जंबूसामि एण, पुणु विण्हुदत्त दिविगामिएण।
पुणु णंदिमित्त अपरजिएण, गोवद्धणेण सुरपुजिएण।
पुणु भद्दबाहु परमेसरेण, पयडेविणु साहु मुणीसरेण।
पोढिल्लएण[1] पुणु क्खत्तिएण, जय णामें धम्मपवित्तएण[2]।

१ पउढिल्ल २ धम्मयवएण

णामें सिद्धत्थें संजएणं, विदिसेणें तत्रसिरिरंजिएण।
पुणु विजयसेण पुठिल्लएण[1], पुणु गंगएव णामिल्लएण।
पुणु धम्मसेण णक्खत्तएण, जइपालें मुणि जय पत्त एण।
पंडुवु ध्रुवसेणें जियमएण, पुणु कंसायरियं गयभएण।
भद्दें जय भद्दें पुंगमेण, लोहज्जें सिवकोडियकमेण।

घत्ता

गणहरएव मुनिंदहि कुवलयचंदहें एयहि अवरहि अविचलु[2]।
आहासिउं पवयणे जहं मइभवियणितहं[3] पंचणमोकारहो[4] फलु॥

जिणिंदस्स वीरस्स तित्थें वहंते, महाकुंदकुदाणए[5] एंतसंते।
सुसिक्खाहिहाणें[6] तहा पोमणंदी, पुणो विसहुणंदी तउ णंदणंदी।
जिणुदिट्ठ धम्मं धुराणं विसुद्धो, कयाणेय गंधो जयंते पसिद्धो।
भवं वोहि[7] पोउं महीविस्स[8] णंदी, खमाजुत्तसिद्धं तिउं विसहणंदो।
जिणिंदागमाहासणे एयचित्तो, तवायारणिट्ठाइ लद्धाइ जुत्तो।
णरिंदामीरंदाहिवाणंदवंदी, हुउ तस्स सीसो गणीरामणंदी।
असेसाणगंथम्मि पारंमिपत्तो, तवे अगंवी भव्वराईवमित्तो।
गुणायास भूवोसु[9] तिल्लोक्कणंदी, महापंडि अंतस्स माणिक्कणंदी।

घत्ता

पढमसी सुतहो जायउ, जगविक्खायउं मुणिणयणंदि आणिदिउं।
चरिउं सुदंसण णाहहो तेण, अवाह हो विरइउं वुहअहिणंदिउं।
आराम गाम पुरवरणिवेसि, सुपसिद्ध अवंती णाम देसि।
सुरवइ पुरिव्व विवुहयणइट्ठ, तहि अत्थि धारणयरी गरिट्ठ।
रणिदुद्धर अरिवर सेलवज्जु, रिद्धियदेवासुरजणियचोज्जु।
तिहुयणु णारायण सिरिणिकेउ, तहि णरवइ पुंगमु भोयदेउं।
मणिगणपहदूसिय रविगभित्थं, तहि जिणवर बद्ध विहारु अत्थि।

१ पोठिल्लएण २ अवियलु ३ मइभवेयणेतिह ४ पंचणमोकारहं फलु ५ महाकुन्दकुन्दराण ६ सखिरकाहि, सुएहाखारि, ७ ओहि ८ महीविसहं, महाविस्प ९ भूउ।

णिव विक्कमकालहो ववगएसु, एयारह संवछर सएसु।
तहि केवलि चरिउं अमरछरेण[1], णयणंदी विरयउ विछरेण[2]।
जो पढइ सुणइ भावइ लिहेइ, सोसासय सुहु अविरल लहेइ।

घत्ता

णयणंदयहो मुणिंदहो कुवलयचंदहो णरदेवासुरचंदहो।
देउ देइ मइ णिम्मल, भवियहंमंगल वायाजिणवरचंदहो॥

इत्थसुदंसणचरिए पंचणमोकारफलपयासरे माणिक्कणंदितइविज्ज सीसणयणंदिणारइए, णइंदएरविरथरो सुरवरिंदथोत्तं तहा मुणिंदसहमडवं तसु विमोक्ख वासे गमंनणमोपयफलं दोहदमो पुणो-सयलसाहुनामावलीइ माणकयवण्णणो भणिउ संधि दोदहमो।

संवत् १५६७ वर्षे माघ मासे कृष्णपक्षे द्वितीयायां तिथौ बुधवासरे पुष्यनक्षत्रे श्री कुन्दकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचंद्रदेवा।तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवाः तोडागढमहादुर्गात् राजाधिराज सालंकीराउ श्री सूर्यसेन विजइराज्ये तदाम्नाये खंडेलवालान्वये स इ गोत्र साह तेजा भार्या करम इती द्वितीय भार्या लोचमदे। प्रथम भार्या करम इती तत्पुत्र साह दूलह, द्वितीय भार्या लोचमदे तत्पुत्र साह श्रीपाल, साह दूलह भार्या दूलहदे तत्पुत्रौ द्वौ साह आशा द्वितीय पुत्र साह हेमा। आशा भार्या अहंकारदे द्वितीय कनौलादे। साह हेमा भार्या रूपंमदे। साह श्रीपाल भार्या सरस्वति। तत्पुत्रौ साह होला द्वितीय साह लाला। होला भार्या हुलसिरि तत्पुत्र साह सुरत्राण लाला भार्या ललितादे। पुत्र साह रतसी भार्या रयणादे एतेषां मध्ये साह रतनसी इदं पुस्तकं सुदर्शन चरित्रं लिखापितं। पल्यविधान व्रत निमित्तंआचार्य श्री अभयचन्द्रदेवा तत् शिष्य मुनि पद्मकीर्त्ति समर्पितं।

प्रति नं०२ पत्र संख्या ११५. साइज ११॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २५–३० अक्षर। प्रति में दो तीन पुस्तकों के पृष्ठों की मिलावट है।

संवत् १६७७ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां तिथौ श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे, भट्टारक श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री धर्मचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री ललितकीर्त्तिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्तिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिदेवा तदाम्नाये चंपावत्यां वास्तव्ये श्री पार्श्वनाथचैत्यालये खंडेलवालन्वये बोहरा गोत्रे सा० श्री वीरम तद्भार्या

१ भोजराठ ७ विरयरेण।

वीरमदे तत्पुत्र सा० लाला तत्पुत्री द्वौ सा० रामा कर्म्मा तद्भार्या रैणादे तत्पुत्र सा० पर्वत तत्पुत्रास्त्रयः सा० आशा तद्भार्या असलदे द्वितीय सा० कर्म्मा तद्भार्या करणादे तृतीय पुत्र सा० लूणा तद्भार्या ललितादे। तत्पुत्रै द्वौ प्रथम सा० नारायण तद्भार्या नौलादे द्वितीय पुत्र सा० केसोदास तद्भार्या केसरीदे एतेषां मध्ये सा० देवू तद्भार्या दाडौदे तत्पुत्र सुंदरदास श्यामदास इदं शास्त्रं सुदर्शनाभिधानं लिखाप्य षोडशकारण-व्रतोद्यापनार्थे दत्तं कर्मक्षयनिमित्तं श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्त थे।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६५. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति में ३३-३८ अक्षर। लिपि संवत् १५०४.

प्रशस्ति—

संवत् १५०४ वर्षे मार्गसुदी ६ शुक्लपक्षे गुरुवासरे श्री काष्ठा संघे पुष्करगणे भट्टारक श्री गुणकीर्त्ति-वास्तत्पट्टे श्री यशकीर्त्तिदेवाः तस्य शिष्य श्री भवसेनदेवाः तस्य शिष्य भुवनकीर्त्तिदेवा। मं० हुमामनि तस्य भर्ज्ज गुनविराजमान चतुर्विधदानसंयुक्त मनगातास्य डालु भर्ज दौसिरी तस्य लघु भ्राता गुजरु। तस्य भार्या गुनसिरि तस्य पुत्र रत्यनं पदमा तस्य लघु भ्राता नादा तस्य भार्जनरक पुत्र जिनदास तस्य भगिनि वइ धर्नसिरि कर्मक्षयनिमित्त इदं सुदर्शन चरित्रं लिखापितं।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १०६. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर २५-२८ अक्षर।

संवत् १६३२ वर्षे चैत्र मासे शुक्लपक्षे चतुर्दशी दिवसे हस्तनक्षत्रे श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये बला-त्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा-स्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा स्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिदेवा स्तत् शिष्याचार्य श्री········ ···· ····· तदाम्नाये खंडेल-वालवंशे निवाई वास्तव्ये सेठी गोत्रे सा० धाल्हू तद्भार्या राजी तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम ठाकुर द्वि० देवा तृतीय सा० पहराज। सा० ठाकुर भार्या देउ तत्पुत्र साह महणा तद्भार्ये द्वे प्रथम धोखी द्वि० लाडमदे तत्पुत्रास्त्रय प्रथम सा० हीरा भार्या हीरादे द्वितीय रामदास तृ० चि० शेरादेव भार्या देवलदे तत्पुत्रौ द्वौ। प्रथम चि० कोजू। साह पहराज भार्या पाटमदे एतेषां मध्ये साह पहराजेन इदं शास्त्र सुदर्शन चरित्रं लिखाप्य आचार्य हेमचन्द्राय धटापितं।

४१. सुलोचनाचरित्र।

रचयिता महाकवि गणिदेवसेन। भाषा अपभ्रंश। पृष्ठ संख्या २४८. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-४० अक्षर। लिपि संवत् १५६०.

प्रारम्भिक पाठ—

वयपंचतिक्खणहरो पवयणमायासुदीहजीहालो ।
चारित्तकेसरड्ढो जिणवरपंचाणणो जयउ ॥
तिहुयणकमलदिणेसु णिण्णासियघणतिमिरभरू ।
पयडमि चरिउ पसत्थु पणविवि रिसहु जिणेसरू ॥१॥

अन्तिम पाठ—

पुणुलहेवि पयमणुयत्तउं दिक्खिउपालवि संजमु ।
देवसेणगणवंदियउ होइसिद्ध जयउत्तमु ॥

इय सुलोयणाचरिए महाकव्वे महापुराणहिट्ठिए गणिदेवसेणविरइए अट्ठावीसमो परिछेउ संम्मत्तो ।

प्रशस्ति—

णंदउ सुइ रूजिणिदहो सासणु, जयसुहयरु भव्वयणासासणु ।
णंदउ पयजें धम्मपयासिउ, पाढउजेणसत्थु उ.णासिउ ॥

साहुवग्गुरयणत्तयधारउ, णंदउ सावउ वयगुणसारउ ।
दाणु देवि इंदिय वलदमंगहं, वेज्जावच्चु करेउ मुणिपरहं ।
णंदउ णरवइ सहुँ परिवारें, पालिय णीणिये यारें ।
णंदउ पयंपरि मुच्चउवावे, रंगिज्जउ जणधम्मपहावें ।
वीरसेण जिनसेणपरियहं, आयमभावभेयवहुभरियहं ।
तहं संताणि समायउ मुणिपवरू, होट्टलमुत्त णामें वहु गुणधारू ।
रावणुव्वेयहुंसीस परिग्गहुं, संयलायम हुत्तउं अपरिग्गहु ।
गंदें विमुत्त सीसु तहो केरउ, रामभद्दु णामें तवसारउ ।
चालुक्किय वंसहो तिलउछउं, होतउणरवइ चाएं भल्लउ ।
तिणंमिवमुय विरज्जु दिक्खंकिउ, तिरयणरयणाहरणालंकिउं ।
जायउसासुसीसुसंजमधरु, णिवडिदेवणा मुणिहणियसरु ।
तासु सीसु एक्को जिं मंजायउ, णिहणिय पंचेदियं सुहरायउ ।
सीलगुणोह रयणरयणायरु, उवसम खम संजमजलसायरु ।
मोहमहल्लमल्लतरुगयवरु, भवियण कुमुयचंदु च्छलणासहरु ।
तवसिरि रामालिंगियविग्गहु, चारिय पंचायारु परिग्गहु ।
पंच समिदिगुत्तियत्तयरिद्धउ, गणवंदिउ भुवणयलि पसिद्धउ ।
मयरयद्धय सरपसरणिवारउ, दुद्धरं पंचमहव्वय धारउ ।
सिरिमल धारिदेउ पभणिज्जइ, णामें विमलसेणु जाणिज्जइ ।

तासु सीसु णिचि मयणुब्भउ, गुरु उवएसें णिब्बाहियतउ।
कहिय धम्मु परिपालियसंजमु, भवियकमलरविणिण्णासियतमु।
सच्छपरिग्गहु णिहयकुसीलउ, धम्मकहाए पहावणसीलउ।
उवसम णिलउ चरिय रयरयणत्तउ, सोम्मु सुयणु जिणु गुणअणुरत्तउ।
देवसेण णामें मुणि गणहरु, णिरइउ एउ कव्वु तें मणहरु।
अमुणं तेण किंपि हीणाहिउ, सुत्तविरुद्धउं काइं मिसाहिउ।
सयलु विखमउ देवत्राएसरि, तिहुयण जणवंदिय परमेसरि।
फुड वुहयणु मोहेणिणु भल्लतउ, केरंतु पउदेउणवल्लउ।
रक्खस संवत्सरे वुहदिवसए, सुक्क चउद्दसि सावणमासए।
चरिउ सुलोयणाहि णिप्पउं, सद्दअत्थवणयसंपुंणउं।

घत्ता

णवि मइंकम्मि गव्वेणकियउ, अवरुण केणवि लाहें।
किउ जिणधम्मही अणुत्तर गुहमणे कयधसुछहें॥

अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत १५७७ वर्षे पोसमासे कृष्णपक्षे नवम्यां तिथौ सोमवासरे अश्वनो नक्षत्रे श्री योगिनीप्रत्यासने श्री कालिंदीतटे श्री फेरोजाबादद्दुर्गे गुणिजनव्रतिसंलंव्यमान विद्वज्जनविहितनिवासायां भव्यजनाध्यासपवित्रिताखिलनिवासिमनप्रवृत्तत्रासायां जिनधर्मरत्नाकारप्रियायां दुस्थितस्वस्थीकरणक्षमायां प्रतापपरमेश्वर महाराजाधिराज राजश्री इव्राहिमशाहि रक्षमाणायां जैनबौद्ध-चार्वाक सांख्य नैयायिक शैवादि षट् दर्शना द संलंव्यतायां जयवंत श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे वादिकविभंजनभट्टारक श्री ३ गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीमलय-कीर्त्तिदेवास्तत्पट्टोदयाद्रिभास्वद् भट्टारक श्री गुणभद्रसूरिदेवा स्तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गर्गगोत्रे श्री योगिनीपुरेवास्तव्यः सुश्रावक साधुनानिग तस्य भार्या साध्वी महीवरही लखणसी भार्या देवराजही तत्पुत्र वीरदास तस्य भार्या धनराजही तृतीय पुत्र साधु हेमा तस्य भार्या वेगाही एतेषां मध्ये चउधरी लखणसी तस्य भार्या शीलतोय तरंगिणी प्रिया नाम दिउराजही तत्पुत्र वीरदास दिक्षानां पचमहाव्रतधारकः विवेकगुण-संपन्नः विद्वज्जनसभारंजनःभव्यजीवप्रतिबोधकः मुनि श्री ३ विमलकीर्त्तिदेवैरिदं सुलोचना चरित्रं लिखा-पितं निजद्रव्योपार्जित कर्मक्षयनिमित्त्वर्थं सद्भावतत्परेण लिखापितं आत्मपठनार्थं।

४२. सुकुमाल चरित्र।

रचियता मुनि श्री पूर्णभद्र। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ४५ साइज १०॥x५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३१x३३ अक्षर। प्रारम्भ के २ पृष्ठ से ३० पृष्ठ तक पत्र नहीं है।

मंगलाचरण—

पढमु जिणवरू णविवि भविण जडमउड विहुसियउ विसहु मयणारि णासणु।
असुरासुरणरथुअचलुणु सत्ततच्चणवणयपयासणु ॥
लोयालोयपयासयरूजमु उप्पएणउणाणु।
सो पणवेप्पिणु रिसहजिणु अक्खयसोक्खणिहाणु ॥

प्रशस्ति—

भरह खेत्ते संपएणवेसु, विउगुज्जरत्त णामेण देसु।
तासु वि मज्झहि ठिउ सुप्पसिद्धु, णायरमंडल धणकणसमिद्धु।
तहिं णायरु णामे संठियउ ठाणु, सुपसिद्धु जगत्तय सियपहाणु।
सिरि वीर सूरि तहिं पवरभासि, विणयालंकिउ गुणरयणरासि।
मुणिभद्दसीसु तसु जाउ संतु, सोहारि विणासणु णिम्ममंत्तु।
तासु वि सुकुमाउइ इयाउ, सिरि कुसुमभद्द मुणि सीस जाउ।
तासु वि भवियायण आसपूरि, संजाउ सीसु गुणभद्द सूरि।
हउ तासु सीसु मुणि पुएणभद्दु, गुणसील विहूसिउ गुणसमुद्दु।
मइ बुद्धि विहूणइ एहु कव्वु, विरयउ भवियण णिसुणंत सव्वु।

जमजय सायरु तवइ दिवायरू जाम मेरु महि-तलइ थिरू।
जो वाइ पहंजणु जणमणरंजणु ताइउ सत्थु जइ होइ चिरू ॥

इय सिरिसुकुमालसामिचरिए भव्वयणाणंदयरे सिरिगुणभद्दसीसु मुणिपुरणभद्दविरइए सुकुमालसामिसव्वत्थसिद्धि गमणाए छट्ठो परिच्छेउ समत्तो।

४३. सुकुमाल चरित्र।

रचयिता श्री पं० श्रीधर। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ४५ साइज १०॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०×४४ अक्षर। रचना संवत् १२०८ लिपि संवत् १५४६ लिपि संवत् बाद में लिखा गया है।

मंगलाचरण—

सिरिपंचगुरुहुं पयपंकयइ पणविवि रंजियसयणहं।
सुकुमालसामिकुमरहो चरिउ आहासमि अकवयणहं ॥

प्रशस्ति—

आसि पुरा परमेट्ठिहि भत्तउ, चउविह चारुदाण अणुरत्तउ।
सिरि पुरवाड वंस मंडण धउ, णियगुणणियरांणंदिय बंधउ।

गुरुभत्तिय परिणामिय मुणीसर, णामें साहु रजाणु वणीसर।
तहो गल्हु णामेण पियारी, गेहिणि णामणाईदिय सुहयारी।
पविमलसीलाहरण विहूसिय, सुहि सज्जण बुहयणहपसंसिय।
ताह तणूरूह पीथे जायउ, जणसुहयरू महियलि विक्खायउ।
अवरू महेंदो वुच्चइ बीयउ, बुहयणु मणहरू तिक्कउ तइयउ।
जाल्हणु णामें भणिय चउत्थउ, वुणु विसलक्खणु दाणमहत्थउ।
छट्ठउ सुवसं पुण्णहु यउ जह, समुदपालु सत्तमउ भयउतह।
अट्ठमु सुवणाइ पालु समासिउ, विणया इय गुणहिं परिभूसिउ।
पढमहु पियणामेण सलक्खण, लक्खणकलिय सरीर वियक्खण।
तहिं कुमारू णामेण तणुरुहु, जायउ पंकय जेम सरोरूहु।
णिणयविहूसण भूसिय कायउ, महियलिमय मिच्छत्त परिचत्तउ।

घत्ता

णाणू अवरू बीयउ पवरूकुमरहो हुय वरगेहिणि।
पउमा भणियासुयणहिं गणिय जिणमय रयवहु सोहणि॥

तहिं पाल्ह णामेण पहूयउ, पठमु पुत्तु णं मयण सरूवउ।
बीयउ साल्हणु जो जिणु पुज्जई, जसु रूवेण णामणसिउपुज्जइ।
तइ यउ वलि जाणिव जणिज्जइ, बंधव सयणह सम्माणिज्जइ।
तुरियउ जायउ सूपट्ट णामें, णावइ णियसवुदर सियकामें।
एयहणीसेसह कम्मक्खउ, जिणमयरयहो दोउ दुक्खक्खउ।
सज्झु वि एउ जि कज्जण अण्णें, संसारिय सुहयेसुरवण्णें।
चउविहु संघु महीयलि णंदउ, जिणवरपयपंकयए वंदउ।
खयहु जाउ पिसुणु खलु दुज्जणु, दुट्ठुरासउ णिंदिय सज्जणु।
एउ सत्थु मुणिवरह पढिज्जउ, भत्तियभवियणेहि णिसुणिज्जउ।
जामणहंगणि चंददिवायर, कुलगिरिमेरू महीयलसायर।
पीथे वंसु तास अहिणंदउ, सज्जणसुहिसणाइआणंदउ।
बारहसयइ गयइ कय हरिसइ, अट्ठोत्तरइ महीयलि वरिसइ।
कसणपक्ख आगहणो जायए, तिज्ज दिवसि ससि वासरि मायइ।

घत्ता

वाहर-सइय गंथं कहइ पद्धदिएहिर वण्णउ।

जणमणहरणु सुहवित्थरणु एउ अत्थु संपुण्णउं ॥

इय सिरिसुकुमालसामिमणोहरचरिए सुंदरयरगुणरयणणियरभरिए विबुहसिरिसुकइसिरिहरविरइए साहु पीथे पुत्र कुमारणामंकिए सुकुमालसामिसव्वत्थसिद्धि गमणो णाम छट्टो परिच्छेउ सम्मत्तो। इति सुकुमालस्वामि चरित्र पंडित श्रीधर विरचितं।

संवत् १५४६ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ६ बुधवासरे पुष्पनक्षत्रे चांपावतीनगर्यां सुरत्राणगयासुद्दीनराज्ये श्री श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री नंदिसंघे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा·········।

४४. हरिवंश पुराण।

रचयिता आचार्य श्रुतकीर्त्ति, भाषा अपभ्रंश। पत्रसंख्या ४१७, साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५। ४० अक्षर प्रति प्राचीन है। रचना संवत १६०७।

मंगलाचरण—

सिरिइणवोमंसइं तं हरिवंसइं पावतिमिरहर विमलवरि।
गुणगणजसभूसिय सुरय अदूसिय सुव्वयणेमियहासियहरि।

अन्तिम पाठ—

वीरजिणिंद चलणपठावेपिणु जिणसासणमहंतहो।
दिसतु सम्माहि संति भव्वयणहं धम्मणु रायरत्तउ॥

इय हरिवंसपुराणे मणहरसरायपुरिसगुणालंकारकल्लाणे तिहुयणकित्ति सिरस अप्पसुदकित्तिणा महाकव्वु विरयंतो णाम चवालीसमो संधि परिछेउ समत्तो।

णिवणियरदेसुरट्टो, जयसिरि धम्माणु राउमणिहिट्टो।
णंदउ जणवउपवरो, सुह संपइ दाणकप्पयरो॥ १॥
चउविह मुणिगणसहिउ, णंदउ सिरिणंदसंघुसुरहिउ।
णंदउ जयसिरिजुत्तो, सावयगणुधम्मअणुरत्तो॥ २॥
हरिवंसगयणचंदो जहदंसण सयल भुवणआणंदो।
तयलोयसुजसपवरो णेमिजिणो भवियदुरि पहरो॥ ३॥

प्रशस्ति—

इय हरिवंसपुराणु, अइगरिट्ठु कइणा विहिउ।
पयडमितहोअविहाणु, जे लेहाविउ पुणु लिहिउ।
भूभरह पसिद्धउसुह समिद्धु, कुरु भूमियदह विहिरिद्धि रिद्धु।

सुरसरिजवणाणंई अंतरालि, तरुसोमखेत्तधणकणविसालि।
तहिं णयरु अजयपुरि महिरवण्णु, सुरणाहु ववहु विबुहहिमण्णुण्णु।
इंदरवारसंगोरस कल्लणाई, तरुहेलइ रसालइ वणवणाइं।
पहियण पोसिय पयसालजत्थ, समविसमछुहातिसणीखिनत्थ।
चउवण्णसमिद्धउ वसइ लोउ, सुरसत्थुवमण्णइ विविह भोउ।
जहिं पूरिउ वहु मयणाह वासु, मणइं छय मण्णहिरइ विलासु।
णरणारिमणोहरगेहगेह, णावइ सुरसछर अइसणेह।
धम्माणु रत्त जण वसइ जत्थ, चउ दाणय हरइवपसत्थ।

घत्ता

चेयालयवेवि अइउत्तंग विसाल तहिं।
धवलियसिहरग्गमंडिय कंचण कलसजहिं ॥ १ ॥

णंदणवणु वसवणवहुमंडिय, धम्मणिलय पावारि त्रिहंडिय।
धयतोरण उल्लोवयसोहिय, पिछिमहुछउ सुरणरमोहिय।
कित्तिमपडिमअ कित्तिमजेहिय, जिम कइलासहु दीसहितेहिय।
मंगलगीय महुछउ किज्जइ, दुंदुहि सरुवहु थुइ रज्जइ।
एक्कु कट्ठसघह चेईहरु, धम्मसंचुणिण्णासिय भवडरु।
सत्थपुराण पूय जिणणाहउ, विमवण्णमिसिवलछिसणाहहु।

घत्ता

सावय पुरवाड णिवसहिया गेहधम्मभरु।
वयचाइं समत्थ तिविह पत्तउण्णंतकरु ॥ २ ॥

तहिं वीयउ पसिद्धु जिणमंदिरु, भवियण जण मण णयणा णंदिरु।
मूलसंघजिणसासणधारउ, रविविंबुवतमणियरणिवारउ।
गुज्जरगोट्ठि धम्मभरु खंधउ, णियधणुपुण्णणिमित्तं संचिउ।
सोहइ सहचउ संघसमिद्धउ, मुणितवतेउ वरिद्धिहरिद्धउ।
चिरु सामिउ सिरिगोयमुगणहरु, तहु संतइ अणेयणिज्जियसरु।
कुंदकुंदआयरियगरिट्ठउ, अंगपुव्वधरु आयमसिट्ठउ।
तासु पट्टि अणुकमेण कुरुक्कउ, धम्मकित्ति मुणिवरु मलमुक्कउ।
तासु सिक्खसिक्खिणियअणेयवि, महवयअणुवय बुह बहु भेववि।

तहिं चेयालइ विवससिरोमणि, भवियण कमल पवोहण दिणमणि।
पोमावइ पुरवारु गुरुक्कउ, वसुमय विसणपमायपमुक्कउ।
सीखमविवसणंदु महपंडिउ, णिम्मल विज्ज चारिदइमंडिउ।
आयमवेयपुराण पहाणउं, जोइसअत्थ सत्थ गुण जाणउं।

घत्ता

चायह सुपहाणु चाइमल्लु सरसइ णिलउं।
पणवासरुणाई सोहइ वुहयण कुल तिलउ॥ ३॥

गुज्जर गोठि गुट्ठि सुपहाणवि, संयं सुवपयडेवउदाणवि।
धम्मुजुत्त संम्मत्तालंकिय, पुंण्णपवित्तणामचंदंकिय।
रज्जकज्जसज्जणसुहदाइय, विद्धविलछि चेईहरिलाइय।
पूयपतिठ्ठइट्ठसुणिमित्तें, णिवडणाय हरमुक्कलचित्तें।
मंगलगायसद्दणाडयरस, णिच्चमहुच्छव पुण्णहु सरहस।
जिण कल्लाण मिलिवि णारोणर, तणसिंगारसार मोहधर।
हावभावविब्भम अइकुछर, चउणिकाय सुरणावइ सछर।

घत्ता

कि वण्णमिताहं गुज्जरगुट्ठिसमत्थजहि।
जिमधम्मपहाण पयडु पहावणधम्मु तहिं॥ ४॥

जेणलिहाविउ गंथ गरिट्ठउ, पयडमितासु वंसु सुविसिट्ठउ।
गुज्जर गुट्ठि आसि पयडियजस, पीणिय भव्वलोय चाएं रस।
हेरुकिया वंसह सुयहाणवि, पीणिय भव्वलोय चउदाणवि।
हरसीसाहु णामु सुगरिट्ठउ, लहुराइसोविवसमणइट्ठउ।
हरसीभज्जलछिकमलछिय, गिहधम्महु पडिपाललणदंछिय।
तासु उवरि णंदणु उप्पणउं, ढधू णामु जसरासि मणुण्णउं।
तासु सरो तेहिंणिगयगामिणि, धम्मलीण परिवारहु सामिणि।
तासु पुत्र चंदू चंदाणणु, सुकियविहिलछीइलमाणणु।
वीयउ मदूमणोहर गारउ, परम धम्मरहवरधुरधारउ।
चदूं भज्ज सयलगुणसारी, णाम णायण सिरि णायणपियारी।

घत्ता

तहु गेहिउवएण वेविपुत्त णं चंदरवि।
सिउ गणु पढमिल्लु अयसमही हरणाइंपवि ।। ५ ।।

लहु भीषमु पुण्णालये खंभुअ, धम्मधर।रुहसिचणअभुअ।
खिउगणतिय रुपारुवहरइ, दाणपुंएणचेलणियमहासइ ।।
भीखमभज्जपटोगुणजुत्तिय, सीलणिकेयजणाय णं पुत्तिय।
सिउगुणतणाय वेविकुलमंडण, मीणुवीउ भाउं अहखंडण।
माणभज्ज पाथुल मणमोहण, मुह ससिहर ससिकिरण णिरोहण।
चंदू वंधु मंदु चिरु भासिउ, जासु सुजसु वुहयण सुपयासिउ।
तासु भज्ज पदमागुणसारी, रुवरासि वल्लहसुपियारी।
वीई मुद्ध कुवरि णामंकिय, जा सोहग्ग रुवरइ संकिय।
सीलाहरणविहूसियदेहिय, मुणिवर विणयदाणसुसणेहिय।
कुवरिउयरसुव तिण्णिउ वण्णई, सुजसपुंज कव्वह वएणेकइ।
णंदयणत्तय धम्मह कारण, कप्पतरुवजण दुक्खणिवारण।
दादू साहु पढमसुउ भासिउ, जें सुय णाणु दाणु सुपयासिउ।
जसहरु वीउ भुवणि जस सायरु, णयण सीहु तहु लहु वउभायरु।
दादू णारिउ हयसु मणोहरि, णंदइ पीइ वेवि कामहु घरि।
पढम भज्ज रुइ सासुय खणु। लाछि पयंकिख अगंसुह लक्खण।
खिउ सिरिणाम अवर सुपहाणी, ससिमुह जिम इंदहु इंदाणी।
दाणमाण सम्मत्त सुरेवइ, रइ सोहग्ग सुजस णंदेवइ।
अतिहि दाणु अणु दिणु वहु दिज्जइ, चउविह संघ विणउ विरइज्जइ।
तासु सरीर पुत्तु उप्पण्णउं, माणससरिह सुवसु मणुण्णउं।
आसकरणु णामेण मणोहरु, चिरु णंदउ जें मं।डउ णिवघरु।
गेहणितासु रुवगुणसारी, णाम राइ सिरिपइसुपियारी।
परियणु अवरु जई वण्णिज्जइ, तउ वीयउ पुराणु विरइज्जइ।
एयह मज्झि गरुउ पुरिसत्तणु, वणिउ जासु सुयण गुण कित्तणु।
दादू साहु जिणेमरि भत्तउ, पुरिससीहु वय सीलपवित्तउ।
अभयाहारसत्थ पुणु ओसहु, तिविह पत्तपीणियसंतोसहु।

घत्ता

लेहाविउ एहु गुणणिहाणु कल्लोलणिहि।

णिसुणंत कहंत भवियण जणमण होइ दिहे ॥ ५ ॥

संवच्छरु सोलह सइ उत्तउ, उवरि सत्तवरि सह संजुत्तउ।
मग्गसिरह सियपंचमि णिम्मल, गुरुवासरु गरिट्ठु पयडउइल।
जोगु महुत्त लग्गुणरकत्तुवि, सुहदायउससिहरुव सु जुत्तु वि।
चंदवार गढ दुग्ग दुग्गिज्झह, संघाहिव चेयाले मज्झह।
रामपुत्त पंगारवलिहियउ, जिम सुइ विति कईसें विहियउ।
सुद्धुकरि वि जो भवियण भासइ, बोहि लाहु तहु देउ सरसइ।
णंदउ भवियणु धम्म गुरुक्कउ, णंदउ जइण संघु मलमुक्कउ।
णंदउ पुहइ चंदुवुहु गुणणिहिं, दाणु पूयसुपयासिय बहुविहि।
णंदउ कमू चउद्धर माणउं, णंदउ दीपु भुवणि सुपहाणउं।
णंदउ-रुहरीवगरिट्ठउ, णंदउ चूहरु चंदु जणिट्ठउ।
णंदउ साहु सधारणु सुदंरु, णंदउ राम गरुवगिरिमंदरु।
णंदउ पदमसीहु जें साहिउ, बारसंगुसयलु वि अवगाहिउ।
एयह पमुह संघु णंदउ चिरु, सुहु संपय समूहुणवणिहि थिरु।
णंदउ पढइ सुणइ वर काणइ, णंदउ भाव सुद्धु मणिमाणइं।

घत्ता

णंदउ गुज्जरगुट्ठि परियणपुत्तकलत्तजुउ।
जव लगि कह हरिवंस जाम ससि रवि अटल धुउ ॥

४५. हरिषेण चरित्र ।

रचयिता अज्ञात। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या २४. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३२ अक्षर। प्रति पूर्ण है। विषय-चक्रवर्त्ति हरिषेण का जीवन चरित्र।

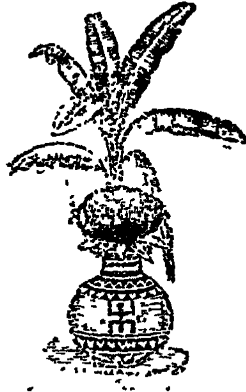
मंगलाचरण—

भावें पणविवि मुणिसव्वयहो, चरणकमलभवतावमहा।
निसुणहु भवियहु वहु रसभरियहु, हरसेणहु पयडेमिकहा ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

बुहयणाह णवपरियण्णहो, गुरु उवए सिजाणियउ।
काविजीयइ जिणपणवोप्पिणु, तें हरिसेण सम्माणिउ ॥ १ ॥

संवत् १५८३ वर्षे आसोजमासे शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ शनिवारे उत्तराषाढनक्षत्रे अतिगंजनामजोगे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रः तदाम्नाये पोरवाडगोत्रे साह कुंभा भार्या पुरी तत्पुत्र हे तस्य भार्या हिर्वसिरी, द्वितीय पुत्र रातु तस्य भार्या बाई चोखी, तृतीय पुत्र दीता तस्य भार्या सहजू, चतुर्थ दासा तस्य भार्या दौडादे तस्य पुत्र पदार्थ द्वितीय साह वोथु तस्य भार्या राता तस्यः पुत्र पाथ्यू तस्य भार्या लाडो तस्य पुत्र चोखा इदं शास्त्रं लिखापितं। बाई पदमसिरि जोग।



हिन्दी भाषा के ग्रन्थों की प्रशस्तियां



१. अनित्य पंचाशत।

रचियता श्री त्रिभुवनचंद। भाषा हिन्दी (पद्य) पद्य संख्या ५५, छन्दों में अधिकतर छप्पय तथा सवैया हैं।

प्रथम पद्य—

मुद्ध स्वरूप अनूपम मूरति जासु गिरा करुनामय सोहै।
संजमवंत महामुनि जोध जिन्हों घट धीरज चाप धरो है।
मारन कौ रिपु मोह तिन्है वह तीछन साइक पंकति हो है।
सो भगवंत सदा जयवंत नमों जग में परमातम जो हैं ॥१॥

अन्तिम पद्य—

पद्मनंदि मुनिराज तासु आनन जलधारी,
ता तहिं भई प्रसूति सकल जन मन सुखकारी।
धन वनिता पुत्रादि सोक दावानल हारी,
भय दलनी सद्बोध अन्न उपजावन हारी॥
उन्नत मतिधारी नरनिकों अमृत वृष्टि संसय हरनि।
जय यह अनित्य पंचासिका त्रिजग चंद मंगल करनि ॥१॥

॥ दोहा ॥

मूल संस्कृत ग्रंथ तैं, भाषा त्रिभुवनचंद।
कीनी कारन पाइ कै, पढत वढत आनंद॥

२. अनेकार्थध्वनिमंझरी।

रचयिता श्री नन्ददास। भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या ६, साइज १२×५ इञ्च। रचना संवत् १८२५.

मंगलाचरण—

यो प्रभु ज्योतिमय जगत मय, कारन करत अभेव।



विघन हरन सब शुभ करन, नमो नमो भा देव ॥

अन्तिम पाठ—

भाहू पुत्र अवतंस कहि, कुल अवतंस सुजानि।
सोम्ह वणिक हूँ सु जो, अभिनव कर्द बखानि ॥

मार्गसीर्ष दशमी रवौ	असित पक्ष सुभ जानि।
अब्द अठारसैं वरसि	ऊपरि चोवीस मानि।
पढन काज लिख प्रेम कर	नंद किसोर द्विवेद।
ग्यानी लेहु सुधारि करि	अक्षर ही को भेद।

३. अष्टाह्निका कथा।

रचयिता श्री जीवणराम गोधा। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ६ साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर। रचना संवत् १८७१.

मंगलाचरण—

प्रथम देवगुरु सारदा नमिहुं मन वच काय।
वरत अठाई की कथा करुं ग्रंथ अनुसारि ॥

प्रशस्ति—

शुभचंद्रादि मुनीश्वर जेम.	कथा करी हिरदै धरि प्रेम।
गोधो जीवणराम सुजान,	वरत करै विधि सुं अभिराम।
ताके कर्या कथा या कही,	या कुं बुधजन सोधो सही।
रेणी नगर कसबो सुभ ठाम,	वनवाडी वापी अभिराम।
पार्श्व जिनालय सोभै सदा,	पूरन करी कथा इम यदा।

॥ दोहा ॥

अठारह सै इकोतर्यां भादव उजली तीज।
वार वहस्पतिवार नैं सतगुरु कथा कहीज ॥

४. अष्टाह्निका कथा।

रचयिता श्री खुशालचन्द। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ५. पद्य संख्या ११७, रचना संवत् १७७४.

मंगलाचरण—

आदि जिनेसुर वंद फिरि,	वर्धमान जिनराय।
कहुं अठाई की कथा,	सुण ज्यौ भवि मन लाय।

सतरासैरचहौतरै, कातिग मास बखानि ।
सुदि आठैं वरनन ३ रु, विसपतिवार सुजान ।

अन्तिम पाठ—

कीयो कथान दिल्ली के मांहि, जैस्यंघपुरै मनोहर गांव ।

दोहा— सतरासै चौहेतरे, मास असाढ बखानि,
कहै खुशाल सुध भांयतैं, सुकल तीज मनि आनि ।

लिखतं पांडे दयाराम । जाति सोनी ।

५. आदिनाथस्तुति ।

रचयिता श्री मुनि कमलकीर्त्ति । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) । पृष्ठ संख्या ५. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३७–४० अक्षर ।

मगलाचरण—

श्री जिनवर शुभ सारदा नमंते गणधर पाय ।
कर जोडी कहुं वीनती अवधारु जिनराय ॥

प्रशस्ति—

आदि दिगंबर रुवडोए, रुवाडा रुवाडा श्रीमूल संघ कि ।
सरसति गछ सोहामणाए, ए गछपति गछपति गिरुआसार कि ॥
गच्छ पतीय गिरुवा सुमति कीरति सकल भूषण सूरी सरु ।
तास पाय प्रणमी मधुरी वाणी कहि कमलकीरति मुनिवरु ॥
नर नारि-अति घणु भाव आणी गीत जिनागम गावए ।
सुर नर किन्नर पद लही निमी पछि सिव पुरि पामए ॥

६. आदि पुराण ।

रचयिता ब्रह्म जिनदास । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) संख्या २१५. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८×३० अक्षर ।

मंगलाचरण—

आदि जिनेश्वर आदि जिनेश्वर आदणमेसुं ।
सरस्वती सामी ने वलीस्तवु,
बुध सारहू मागउं निरमल श्री सकलकीर्त्ति पाय प्रणमीन ॥

मुनी भुवनकीर्त्ति गुरु वंदसोहजला रासकरीसोहूरू वडो।
तव परसादे सार,
श्री आदि जीणंद गुण वणवु' चारित्र जोडू भवतार॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति —

रास कीयो मे नीर्मलोए, भाव सहित वीसालतो।
आदपुराण जोई करीए, सुगम कीयो मे गुणमाल तो।
पढे गुणे जे साभलए, तेह ने पुन्य अपारतो।
मनवांछीत फल ते लहए, मुगति रमणी वसी होय तो।
लखे लखावे ह वडोए, करे ज्ञान उधार तो।
तेह ने नवनीध संपजेए, मुगति रमणी होय हार तो।
जे भवियण विस्तार करए, तेह ने पुन्य अपार तो।
जिनवर गणधर मुनीवर, गुण गुथ्यां मे सार तो।
तीर्थंकर श्री वृषभ जीन ए, कीयो पर उपगार तो।
जुगल्या धर्मनी वरो यो उ, लोक कियो जयवंत तो।
षट् कर्म स्वामी थापी पाए, धर्माधर्म वीचार तो।
मुगति रमणी प्रगट कीयो ए, त्रिभुवन जय २ कारतो।
तेह गुण मे जांणी या ए, सद गुरु तणो पसावतो।
भवि २ स्वांमी सेवसु' ए, लागु सद गुरु पाय तो।
आदि जिनेसर २ तणो मेरा ए, कीयो सार सोहागणो।
एक चित भाव आणीए, पढे गुणे जे सांभले।
जिनसासण गुण अणंत जाणीए, श्री सकल कीत्ति गुरु प्रणमीने।
मुनी भुवनकीरति भवतार, ब्रह्म जिनदास कहे निर्मलो।
रास कीयो मे सार।

दोहा

वखाणे जे रु बडा सभा मांहि गुणवंत।
रुचि सहित जे सांभले ने ह ने पुन्य महंत।
समकीत गुण उपजे वरत नीमवली सार।
तत्व पदारथ जाणीये ज्ञान उपजे भवतार॥

संवत् १८५६ मंगसीर सुदी ३ गांव श्री मैतवाल मध्ये पार्श्वनाथ उपासरे लिखापितं श्रीमत् भट्टारक जी श्री रत्नचन्द्रजी। सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे आचार्य श्री कुन्दकुन्दाम्नाये सकलकीर्तिजी आचार्याम्नाये तत्पट्टे भट्टारकजी श्री १०८ देवचन्द्रजी तत्पट्टे भट्टारक श्री धर्मचन्द्रजी तत्पट्टे भट्टारक जी श्री १०८ महीचन्द्रजी तत् शिष्ये आज्ञाकारी ब्रह्म प्रेमचन्द ने लिख्यो है।

७. आदित्यवार की कथा।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र १८. साइज ८×४॥ इञ्च। पद्य संख्या १५७. लिपि संवत् १७२०. विषय—दीतवार व्रत की कहानी।

मंगलाचरण—

रिसहनाह प्रणमुं जिणंद, जा प्रसाद चित होइ आनंद।
प्रणमौं अजित पणासै पाप, दुख दालिद्र हरे संताप ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

अजर अमर निर्मल रह्यौ, सो जिणदेव सुभा कौ जयौ।
दीन्ही ठौर रच्यौ पुराण, हीण बुद्धि कौ कियौ बखाण ॥
हीण अधिक अक्षर जो होइ, बहुरि सवारै गुणीयर लोय ॥
अग्रवालीयैं कीयो बखान, कुवंरि जननी तिहु नमौ थान।
गरग गोत मल्ह कौ पूत, भयौ कविजन- भगति संजूत ॥
करण कथा कुं मो मति भई, तौ यह धम कथा अरठई।
मन धरि भाव सुणै जो कोइ, सो नर सुरग देवता होइ ॥

८. आदीश्वर फाग।

रचयिता भट्टारक ज्ञानभूषण। भाषा संस्कृत हिन्दी। पत्र संख्या ३१. साइज १०॥×५ इञ्च। पद्य संख्या ५६१. कवि ने पहिले संस्कृत पद्य लिखे हैं और उन्हीं का हिन्दी पद्य में भाव दिया है। विषय—भगवान आदिनाथ के जीवन की एक घटना का वर्णन।

मंगलाचरण—

आहे प्रणमीय भगवति सुरसति जगति विबोधनमाय।
गाइस्यूं आदि जिणंद सुरंदवि वंदित पाय ॥

अन्तिम —

आहे उपनउ पंचकल्याणक ऊपरिमानमिराग।
ज्ञानभूषण गुरिइं कीधउ तेह भणी एह फाग ॥

आहे नारीय नर जे भाव धरी नित गाइसिइ एह।
इन्द्रादिक पद पामीय शिवपुर जासिइं तेह।
आहे एकाणउ अधिका शत पंच सलोक प्रमाण।
सूणउं भणिसिइं लिखसिइं ते नर अतिहिं सुजाण।

इति भट्टारक श्री ज्ञानभूषणविरचित श्री आदीश्वर फाग समाप्त। संवत् १६३४ वर्षे पौष बुदी १० बुधवार लिखितमिदं शास्त्रं। मालपुरा मध्ये पांडे श्री डूंगा लिखावितं।

९. आराधना प्रतिबोध।

रचयिता श्री भट्टारक सकलकीर्त्ति भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ४. पद्य संख्या ५५-३६ नम्बर के गुटके में ४६ से ५२ पृष्ठ तक हैं। विषय-आराधना। अराधनासार का संक्षिप्त भाव दिया हुआ है।

मंगलाचरण—

श्री जिनवरवांणी नमेवि गुरु निर्ग्रन्थ पाय प्रणमेवि।
कहुं आराधना सुविचार संक्षेप सारोद्धार।

अन्तिम—

जे भणई सुणइं नरनारि, ते जाई भवि नेइ पारि।
श्री सकलकीर्त्ति कह्यु विचार आराधना प्रतिबोधसार॥

१०. ऋषभविवाहलो।

रचयिता श्री कुमुदचन्द्र। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ८. साइज ६×५॥ इञ्च। गुटका ५३. नं० गुटके के २२७ से २३४ पृष्ठ तक हैं।

मंगलाचरण—

समर वीसरसतीयोमउ शुभमती करों वरवाणी पसाउ लोए।
प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर षरणावु' तास विवाहलीए॥ १॥

अन्तिम पाठ—

संवत् सोल अठोतरे ए मास आसाढे घनसार सु।
ऊजलो बीज रलो आंगरलीए.................।
लक्ष्मीचंद्र पाटे निरमलो ए, अभयचन्द्र मुनिराय।
तस पट्टे अभय .....रतन कीरति शुभकाय।
कुमदुचन्द्रे मन ऊजलोए,.........................

११. कर्णातमृतपुराण।

रचयिता भट्टारक श्री विजयकीर्त्ति। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ८२. साइज ६×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर। रचना संवत् १८२६. अन्तिम पृष्ठ एक दूसरे से चिपके हुये हैं। प्रशस्ति दी हुई है। लेकिन पत्रों के चिपक जाने से नहीं दी जासकी।

मंगलाचरण—

॥ दोहा ॥

वानी जांनी भारती उपनी जिन मुख जैन।
सो सब कौं मंगल करौ, हरौ दरिद्र दुख मैंन ॥ १ ॥
विमल बुद्धि वह सारदा, श्री गौतम गणधार।
वंदौ वंदित देवकौं, देय भवोदधि पार ॥ २ ॥

प्रशस्ति का एक अंश—

संवत् अठारह सौ छबीस, ग्रन्थ रचित····· बीस।
कार्त्तिक वदि वारस गुरुवार, रूप नगर में रच्यौ सुसार ॥१॥

११. कल्याणमन्दिर स्तोत्रभाषा।

रचयिता महाकवि बनारसीदास। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ७. पद्य संख्या ४४.

मंगलाचरण—

परमज्योति परमात्मा, परमज्ञाणि परवीन।
वंदौ परमानंद में, घटि घटि अंतर लीन ॥ १ ॥
निरभै करन परम परधान, भाव समुद्र जल तारन जानि।
सिवमंदिर अघहरन अनंद, वंदौ पारस चरन जिनंद ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

इह विधि श्री भगवंत, सुजस जे भविजन भासै।
ते निज पुंनि भंडार संचिर पाप पनासै।
रोमराय वलसंति अगं प्रभु के गुन गावै।
सुरग संपदा भुजि, वेग पंचमि गति पावै।
इह किलाण मन्दिर कियौ कुमचन्द्र की बुधि।
भाषा कहत बनारसी, कारण समकति सिधि ॥१॥

१३. कथा कोश संग्रह ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ६७. साइज ६×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में १६-२० अक्षर । कथा कोश में दश लक्षण व्रत कथा, निर्दोष सप्तमी व्रत कथा, चांदण षष्ठि व्रत कथा, आकश पंचमी व्रत कथा, मोक्ष सप्तमी व्रत कथा, पंच परमेष्ठी गुण वर्णन का संग्रह है । गुटका नवीन है । मंगला चरण तथा अन्तिम पाठ प्रत्येक का अलग २ है । दश लक्षण व्रत कथा का मंगलाचरण इस प्रकार है—

मंगलाचरण—

श्री वीर जिणवर पाय, पाय प्रणामवि सरस्वती ।
स्वामिणीं वलीस्तवु, बुद्धि सार हूं वेगि मांगउ ॥ १ ॥
वलि गणधर स्वामी नमस्करू, श्री सकलकीरति पाय वंदतु ।
रास करीस्यूं हूं निरमलो, ब्रह्म जिणदास भणें सार ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—(पंच परमेष्ठी गुण वर्णन)

श्री सकल कीरति पाय प्रणमीने, श्री भुवन कीरति भवतार ।
ब्रह्म जिणदास गुण वरणया, पंच परम गुण सार ॥ १ ॥
पढे गुणे जे सांभले, मनि धरी निरमल भाउ ।
मन वंछित फलरुवणा, पावें शिवपुर ठाउ ॥ २ ॥
इति श्री पंच परमेष्ठी गुणवर्णनरास समाप्त ।

१४. चतुर्दशी चौपई ।

रचयिता श्री टीकम । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या २० साइज १२×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२-३४ अक्षर । रचना संवत् १७१२. लिपि संवत् १७६३. विषय-अनन्त चतुर्दशी व्रत की कथा ।

मंगलाचरण—

प्रथम वंदि पार्श्व जिनदेव, तीनि जगत जाकी करे सेव ।
रिद्धि सिद्धि वर सुख दातार, बालपणें जीत्यो जिहि मार ॥

प्रशस्ति—

सतरह से बारहत्तरै फागुण तेरसि जांणि ।
वौ छौ अधिकौ शुद्ध करि, पंडित कहै वखांणि ॥ १ ॥
बुद्धि सारु टीकम कहै, काल पर्मा हैं वास ।

पंडित होइ छोटो बडौ हु' सबही को दास ॥ २ ॥
भोजराज को राज है दादौ भयौ खंगार ।
घणौं भार दे थापियौ, सुखमल साह हुजदार ॥ ३ ॥
चौइसो के देहुरें, बैठें श्रावक श्राय ।
राति दिवस चरचा करै, बंदै जिनवर पाय ॥ ४ ॥

संवत् १७६३ का मिति वैशाख वुदी १२ दिल्ला का जैसिंहपुरा में पांडे दयाराम ने लिखा । जाति सोनी ॥

१५. चरचासमाधान ।

रचयिता श्री भूधरदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १४१. साइज १०×५ इञ्च । रचना संवत् १८०६. प्रति पूर्ण है । विषय—धार्मिक चर्चाओं का वर्णन ।

जयो वीर जिन चंद्रमा उदै अपूरव जासु ।
कलिजुग काले पापमय कीनौ तिमिर विनाशु ॥
वंदौ वांणी भगवती विमल जौन्हि जग माहि ।
भरमातप जासो मिटै भवि सरोज विगसाहि ॥
गौतम गुरु के पद कमल हृदय सरोवर आनि ।
नमो नमो नित भाव सों करि अष्टांग विधान ॥

प्रशस्ति—

ठारहसें पटहोतरें माघ मासे अवसान ।
सुकल पक्ष तिथि पंचमी ग्रंथ समापति ठान ॥
भूधर विनवै विनय करि सुनिये सज्जन लोग ।
गुण के गाहक बहु जिवौ यह विनती तुम योग ॥

१६. चन्द्रनृपरास ।

रचयिता पं० लब्धरुचि । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ८०. साइज ६।।×४।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४३ अक्षर । रचना संवत् १७१३. लिपि संवत् १७६४. विषय—चन्द्रप्रभु भगवान का जीवन चरित्र ।

मंगलाचरण —

श्री जिननायक सद्यरीय ऋषभदेव अरिहंत ।
वंछित पूरण सुरगुरु, भय भंजण भगवंत ॥

शिव सुखदायक सेवीयें, शांतिनाथ जिणचंद ।
यादववंश नभो मणी, नमोइं नेमि जिणंद ॥

प्रशस्ति—

जुगप्रधान श्री हरिविजै गुरु सोह रंमसम अंवतोरे ।
पातसाह अकब्बर प्रतिबोधक जिणसासण सिणगार रे ॥१॥
तस पटोधर सूरि सवाई श्री विजैसेन सुरीसरे ।
साध परुपणह परम गुरु गुण निधि गच्छाधीशरे ॥ २ ॥
पट प्रभावक गछ धुरंधर श्री विजैदेव गणदेवरे ।
नाम जपंता नवनिधि लहीये उपसम रस भंडारीरे ॥ ३ ॥
तास पटोधर वंछित सुहकर उदयो अविचल जायरे ।
श्री विजैप्रभ सूरी पुरंदर सुंदर गुणमनि खानि रे ॥ ४ ॥
तस गच्छ पंडित बड वैरागी संवेगी गुण भरीयोरे ।
श्री गुरु सहज कुसल सुखदायक उपसमरसनो दरीयोरे ॥ ५ ॥
साखी पांच तिहां प्रगटी कुसलचंद रुचि सार रे ।
वर्धन धर्म धर्मना धोरी सहजं गुणी सिरदार रे ॥ ६ ॥
प्रथम ऋषि श्री सहज कुसलना सकलचंद उजवीयारे ।
बीजा श्री लक्ष्मी रुचि पंडित नामैं नवनिधि पायरे ॥ ७ ॥
तास सीस सुध संयमधारी श्री विजै कुसल बुध ईसरे ।
क्रियावंत पंडित कुलदीपक जै कारी सु जगीसरे ॥ ८ ॥
तस पदपंकज भ्रमर वीरजी श्री उदै रुचि कविराय जी ।
कुमत मतंगज कुंभ विदारण कंठीरव कहि वायरे ॥ ९ ॥
तास सीस संवेग महोदधि श्री हर्ष रुचि विबुध कहीईरे ।
उपगारी मुज गुर मिलीयो दरसण सुख लहीयेरे ॥ १० ॥
विबुध सिरोमणि मुकट नगीनो, श्री विद्यारुचि तस सीसरे ।
गुण मणि मंडत पूरो पंडित सुखदायक सुजगीसोरे ॥ ११ ॥
तस लघु बंधु विबुध लब्ध रुचि रच्यो चंद नृप रास रे ।
उं छो अधिको जे कहियो ऊं वैमि वामिहू कड तीसरे ॥ १२ ॥
मुनिसुव्रत जिन चारित्र थकीयै सरस संबंध वखाणुरे ।
चारित्र प्रभावक मांहि पणिए प्रगट प्रणमै जाणयो रे ॥ १३ ॥
संवत् सतरहसोतेरह कात्तिक मास उदार ।
सुदी तेरस दिन निरमलो बलवंत गुरुवार ॥ १४ ॥

संवत् १७६४ वर्षे वैशाख सुदी १४ दिने लिखितं सकलपंडित पंडितोत्तमपंडित श्री पं० विनयसागर जी तत शिष्य पं० विनोदसागर जी तत शिष्य गणी वृद्धिसागर लिपि कृत।

१७. चिद्विलास।

रचयिता श्री दीपचन्द कासलीवाल। भाषा हिन्दी (गद्य)। पत्र संख्या ६६. साइज ६×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर २२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में १६-२० अक्षर। रचना संवत् १७७६.

मंगलाचरण—

अविचल ज्ञान प्रकाशमय गुण अनंत की खान।
ध्यान धरत शिव पाइये परमसिद्ध भगवान॥ १॥

अन्तिम पाठ—

इस ग्रंथ में प्रथम परमात्मा का वर्णन किया। पीछे उपाय परमात्मा पायवे का दिखाया। जे परमातमा को अनभौ कियो चाहै ते या ग्रन्थ को बारबार विचारो। यह ग्रन्थ दीपचद साधर्मी कीयो है वास सांगानेर। आमेर में आये तब यह ग्रन्थ कियो संवत १७७६ मिती फागुण वुदी पंचमी को यह ग्रन्थ पूर्ण कियो।

देव परम मंगल करो परम महासुखदाय।
सेवत शिवसुख पाइये हैं त्रिभुवन के राय॥ १॥

१८. चेतनकर्म चरित्र।

रचयिता भैया भगवतीदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १७. साइज ११॥×५॥ इञ्च। पद्य संख्या १६८. रचना सवत् १७३२.

मगलाचर—

श्रीजिनचरण प्रणाम करि भाव भक्ति उर आंनि।
चेतन और कछु कर्म्म कौ कहुं चरित्रबखांनि॥ १॥

प्रशस्ति—

चेतन अरु यह कर्म कौ कह्यौ चरित्र प्रकास।
सुतन पर सुख पाईये, कहई भगोतीदास॥
संवत् सत्रवत्तीसकै, ज्येष्ठ सप्तमी आदि।
श्री गुरुवार सुहावनो, रचना कीनी अनादि॥

इति श्री चेतनकर्म चरित्रं सम्पूर्णं।

संवत् १८४३ वर्षे क्वांरमासे कृष्णपक्षे मिती क्वार बुदी १४ शुक्रवारे भट्टारक श्री रत्नकीर्त्ति जी तत् शिष्य पंडित गणेशरामेन चेतनकर्म चरित्र लिखायी शेरगढमध्ये श्री पार्श्वनाथचैत्यालये।

१६. चौदह गुणस्थान चर्चा।

रचयिता श्री अखयराज श्रीमाल। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ६६. साइज ६॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत १८०३.

अन्तिम पाठ—

यह चौदह गुणस्थान का स्वरूप संक्षेप मात्र कह्या। जिनवाणी अनुसारि कथन करि पूरन किया। जौ कहीं भूल चूक भइ होइ तौ जो पंडित जिनवानी में प्रवीन होइ सो सुधारि पढियो।

॥ दोहा ॥

चौदह गुणस्थान कू कथन भाषा सुनि सुख होई।
अखैराज श्रीमाल ने करो जथा मति जोइ॥

इति श्री गुणस्थान की चर्चा संपूर्ण। ग्रथ कर्ता साह अखैराज श्रीमाल शुभ भवतु। लिपि कर्त्ता साह संकरदास स्वामी चाटसू का। संवत १८०३ मिती वैशाख सुदी ७ बुधवार संपूर्ण भयौ।

२०. छंदशिरोमणि।

रचयिता कवि शिरोमणि श्री शोभानाथ। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ३०. साइज ६×५ इञ्च। ग्रंथ संख्या २००. रचना संवत् १८२५. लिपि संवत् १८२६.

प्रशस्ति—

श्री गुरु रसिक किसोर की, कृपा पाहि अभिराम।
सोभनाथ पंडित कियो, छंद शिरोमणि नाम॥ १॥

× × × × ×

संवत् अठारह सतक ता पर बरष पचीस।
जेष्ठ मास सुदि सुदिन लहि, भयो ग्रंथ यह गीस॥ २॥
सूरजि कुल आमेर पति, नृप जन कौ सरताज।
इक छित राज छत्र धरि, पृथ्वीस्यंघ महाराज॥ ३॥
ताके तीछन तेज ते, गारति होत गनीम।
पीथल नृप माधव तनैं, ह्वै है बल की भीम॥ ४॥
ताकौं चारयो चक्क के, नृपति नवावैं सीस।

सूरजि कुल मंडन मही पृथ्वी सिंह अवनीस ॥ ५ ॥
माधव साहि नरेस नै, मनि में करिकै हरष।
सोभनाथ पै कृपा करि, राख्यौ कै गुन परख ॥ ६ ॥
पृथ्वीसिंघ के सुजस कौ, आलंबन अभिराम।
ग्रंथ कियो इक अवर यह, छंद सिरोमणि नाम ॥ ७ ॥
× × × × × ×
आरम्भ्यो जय नगर में पृथ्वीसिंघ जह भूप।
पंडित बहुत प्रकार के जित बडे कविन के भूप ॥ ८ ॥

इति श्री महाराज गुरुदेव सरसि रसिककिसोरमणि सेवक कवि सोभनाथ कृते छंद शिरोमणि चरण वृत्ति संपूर्ण।

संवत् १८२६ तिथौ फागुण सुदी १० शनिवासरे लिखतं जोसी स्योजीराम स्थान देवपुरीमध्ये। लिखापितं पांडे देवकरणजी।

२१. जम्बूस्वामी चारित्र।

रचयिता पांडे श्री जिनदास। भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या ३५. साइज ६॥×४॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या ५०३. रचना संवत् १६४२. लिपि संवत् १८४३.

प्रारम्भिक मंगलाचरण—

प्रथम पंच परमेष्ठी नवउं दूजौ सारद को बीनवउं।
गणधर गुरुचरणन अनुसरों होय सिध कवित उचरुं ॥१॥

अन्तिम पाठ प्रशस्ति—

संवत सोलैसे जे भये बयालीस ता ऊपर गये।
भादौ बदि पंचमो गुरुवार, ता दिन कथा कीयो उचार ॥ १ ॥
अकबर पातसाह कै राज, कीनों कथा धर्म के काज।
भूल्यो बिछुरो अछर जहां, पंडित गुनी सवारो तहां ॥ २ ॥
करै धर्म्म सो ढीया साह, टोडर सुत आगरै सनाहु।
ताकी नांम कथा यह करो, मथुरा में जिन निस ही करी ॥ ३ ॥
रिखवदास अरु मोहनदास, रूपचंद अरु लछमनदास।
धर्म्म बुधि तुम रहियो चित, राजकरहु परिवार संजुत ॥ ४ ॥
ब्रह्मचर्य भये संतोदास, ताको सिष पांडे जिनदास।

तिन यह कथा करी मनलाय, पुन्य हेत उपचार कराय ॥
पढै सुनैं मन लावै कोय, मनवांछित फल पावै सोय ।
जब लग मेरु सुर सांस रहै, तब लग खीर समुद जल वहै ।
जब लग तारा गन अरु चंद, जब लग सूर उद्योत करंत ।
जब लग जैन धर्म अवलोई, स्वामी कथा पढो सब कोई ।

सवैया

संवत् सत्रैहसै इक्यावन फागुन द्वैज बुधि वदि आइ,
अंतिम केवली केरी कथा रचिकैं जिनदास विचित्र बनाई ।
सो यह लाल विनोदी लिखी अपने हित वाचन कौमनु भाई,
तथापि भव्यन कौ उपदेशन हेतु करैहु महासुखदाई ॥

॥ दोहा ॥

अन्तिम केवली की कथा, वरनी परम पवित्र ।
और ले आपुन तरे, पावन परम विचित्र ॥

इति श्रीजंवूस्वामीचरित्रे भाषा पांडे जिनदासविरचिते कथा संपूर्ण। संवत् १८४३ पौषमासे शुक्ले पक्षे गुरुवासरे शेरगढ़मध्ये अष्टमी जादू लिखितं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३४. साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १७६३.

संवत् १७६३ का वर्षे सावणमासे शुक्लपक्षे तीज बृहस्पतिवारे जिहांनावादजैसिंहपुरामध्ये श्री वर्द्धमान चैत्यालये श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री १०८ देवेन्द्रकीत्ति जी तत्पट्टोदयाद्रिदिनमणिप्रख्यः भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्तिजी तदाज्ञानुवर्णी पं० दयारामेन जंवूस्वामी ग्रंथ भाषा चौपई स्वहस्तेन लिपि कृपा ।

२२. जैनशतक ।

रचयिता पं० भूधरदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १४. साइज ६×४॥ इञ्च। पद्य संख्या १०७. रचना संवत् १७८१.

मंगलाचरण—

ग्यान जिहाज वैठि गणपति से गुणपयोधि जिस नांहि तरे हैं।
अमर समूह आंन अवनी सौं घसि घसि सीस प्रणाम करे हैं ॥
किधौं भाल कुकरम की रेखा दूरि करण की बुधि धरै हैं ।

ऐसे आदिनाथ के अहि निसि हाथ जोर हम पाय परै हैं ॥

प्रशस्ति—

आगरे में बाल बुधि भूधर खण्डेलवाल ।
बालक के ख्याल से कवित कार जाने हैं ॥
ऐसे ही करत भयो जैस्यंघ सवाई सूबा ।
हाकिम गुलाब चंद आये तिए थाने हैं ॥
हरीस्यंघ साहू के सुवंस धर्मरागी नर ।
तिनके कहे सौं जोर कीनी एक ठाने हैं ॥
फिरि फिरि परे रे मेरे अलास को अंत भयो ।
उनकौ सहाय इह मेरे मन मानें हैं ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सत्राहसैं इक्यासि पोष मास तमलीन ।
तिथि तेरस रविवार कौ सतक संपूरन कीन ॥ २ ॥

२३. तत्वार्थ सूत्र भाषा ।

भाषाकार मुनि प्रभाचन्द । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र सख्या १४२. साइज ८॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३२ अक्षर । लिपि संवत १८०३. सूत्रों का विस्तृत अर्थ दिया हुआ है।

प्रथम अध्याय की समाप्ति—

इति तत्वार्थाधिगम मोक्षशास्त्रे प्रथमोध्यायः । इति तत्वार्थसूत्रप्रभावग्रन्थे मुनि धर्मचन्द्रशिष्य मुनि प्रभाचन्द्र विरचिते।

अन्तिम पाठ—

केईक जीव कर्म भूमि विना सिद्ध होइ है। केईक जीव दीपस्यौं सिद्ध होइ है। केईक जीव उदधिस्यौं सिद्ध है। केईक जीव थल सिद्ध हैं। केईक जीव रिधि प्राप्त सिद्ध हैं। केईक जीव रिद्धि विना सिद्ध है। केईक जीव चारणी रिधि करि सिद्ध हैं। केईक जीव चारणी विना सिद्ध है। केईक जीव घोर तप करि सिद्ध है। केईक जीव उर्द्ध सिध है। केईक जीव मधि सिद्ध है। केईक जीव अधो सिद्ध है। कई भांति करि घणा ही भेद स्यौं सिद्ध हुवा है। सो सिद्धान्त थे समझि लीज्यौ।

इति तत्वार्थाधिगम मोक्षशास्त्रे दसमो ध्यायः

संवत् १८०३. वर्षे असाढ बुदी १ शनिवारे लिपि कृतौ जोसी कुस्यालराम टौंकनगरमध्ये वास्तव्य लिखापितं पांडे श्री कुंभाकरण जी स्वयं पठनार्थं।

प्रति नं २. पत्र संख्या १५५. साइज ११॥×४ इञ्च।

संवत् १७८२ का। भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति जी का सिष्य दयाराम लिखितं। मिति वैशाख सुदी ३ वीतवार कैं दिन संपुरण करो।

२४. त्रिभुवननो विनती।

रचयिता श्री गंगादास। भाषा हिन्दी गुजराती। (पद्य)। पत्र संख्या २७. पद्य संख्या ६३. ६ पंक्तियों का एक पद्य माना गया है।

मंगलाचरण—

गंभीरार्णव, विंदुना नभ तारा संख्या।
गहन मही मे वृक्ष जे तृण ते पण लेख्या॥
दारिद्र भंजण अकलदेव मिल ज्ञान पेख्या।
सत्यवचन जिन स्वामिना, गणधर गुण भाख्या।
करयां कविता वण ए, ते मिइ किंपि न थाय।
हितवर दिउ मुझ सारदा, थोडि वहु वोलाय॥ १॥

प्रशस्ति—

महापुराण समुद्र थी, मइ काढ्या मोती।
खरा करी निकंठ करी, मणि माला मोती।
सूरत नगर सोहामणउं, वणिकोत्तम वास।
नरसिंहपुरा न्यातिमा, जिन धर्म अभ्यास।
परवत सुत कविता कहइ, गंगादास गुणवंत।
भणइ भणावए पय करी, तेहन पुण्य महंत॥ २॥

२५. त्रिलोक दर्पण।

रचयिता कविवर श्री खड्गसेन। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १५७. साइज १०×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३१-३३ अक्षर। रचना संवत् १७१३.

मंगलाचरण—

ॐ नम सिद्ध नमूं जिनराय, हुवा और होसी कर भाय।
साधु सकल जे सम्यक् सार, सरस्वति आदि नमुं सिरधार॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

यही लाभपुर नगर मैं, श्रावग परम सुजांण।
सब मिलि करि चरचा करै, जाकौ जो उनमांन॥

खड्गसन तिनमैं रहै, सबकी सेवा लीन।
जिनवाणी हिरदै बसै, ग्यान मगन रस चीन॥
ताकूं यह इच्छा भई, काल लब्धि परभाव।
अकृत्तम जे जिन भवन हैं, ते सुमरुं चितलाय॥
एकदिवस रजनी समै, पढी एक जयमाल।
नाम पंच परमेष्ठी, तामैं अकृत्तममाल॥
हृदये परम आनंद भयौ, लखी लोक विधिसार।
प्रति अधिक चित में भई, सुलझ्यो बोध विचार॥
अधो मध्य ऊरध जिते, है जिनवर के धाम।
ते प्रतिभासे सहज ही, सुमरत गुरु मुख ग्यान॥
ता दिन तैं आनंद बढ्यो, भयो परम रस पोप।
अब यह किस विधि धारिये, सो कीजे निरदोप॥
तब विचार असी भई, रचिये कथा अनूप।
जब चाहै तब देखिये, यह त्रिलोक सरुप॥
करि विवेक जीव में तबैं, किस विधि सीझै काम
ग्रन्थ चारि में देखि लैं, तब पायौ विश्राम॥
काल पांचमौ अति विपय, अलप पुनी ए जीव।
ए संजोग तिन ही मिलै, निकट भवी सु अतीव॥
छपणैं. समझन कारणै, यह गूंथो गुणमाल।
दूपण कोउ लेहु मति, भूपण दीज्यो घाल॥
या कथ तैं सुख अति लह्यौ, मुख करि कह्यो न जाय।
अंतर सब सांचो लखो, अरौन कछु सुहाय॥
घट. मद. लाकी ताल मैं, उठै तरंग अपार।
ऊपरि है बदरंग सा, अंतर बदरंग असार॥
जो कछु या. में सार है, ताहि गहौ बुधिवंत।
दोप भरै सब जगत जीव, तीन्यौं काल अनंत॥

चौपाई

जिनवर चैत्य लाभपुर मांही, महा मनोहर उत्तिम ठांहि।
तहां आय बैठे सब लोक, गुण गावै पढिये बहु थोक॥

तहां बौठि यह कियौ विनोद, तीन लोक का है यह मोद।
पूरण करि पूरब विधि धरी, रची माल ते बहु विधि सरी॥
जो यह कथा पढै धरि कंठ, मुक्ति श्री लावै तसु कंठ।
उघडै पलक तिमर मिटि जाय, दूजै वेद तणौ परभाय॥
पंडित राय नरिंद समान, मिसर गिरधर जगत प्रमाण।
सभा मध्य वडा गुणवंत, ग्रन्थ वखाणै सुरित्तवंत॥
सभा सिंगार हार मुख सार, सुणत सबै रजै चित्त धार।
वांणी सुणत तृपति नहिं होय, अमृत वचन पीवै सहु कोय॥
सुर ता पढै अति गुणवंत, अपणी बुधि अनुसार लहंत।
तिन का नाम सुणौ तुम जोय, भूर पुण्य उपजै तहां सोय॥
पंडित हीरानंद प्रवीण, चौदह विद्या में लय लीन।
संघवी जग जीवन गुण खांण, सकल शास्त्र मय अरथ सुजांण॥
रतनपाल ग्याता बुधिवंत, हिरदै ग्यान कला गुणवंत।
अनूपराय अनूपम रूप, बाल पणौं जिम सोहै भूप॥
दामोदर दंसण गुण लीन, माधोदास मधुर प्रवीण।
हीरानंद हिरदै परगास, तिलोकचंद तहां ग्यान विलास॥
विषनदास बुधि तीपण सरी, प्रतापमल्ल पूरण मति धरी।
मोहनदास महा गुण लीन, हंसराज जि हिरदै प्रवीन॥
कुंदन कनक नारायणदास, ग्यान कला आगम परवास।
पांडे हिरदै पूजा करै, हिरदै हरष सेव चित्त धरै॥
हृदय राम भो जग हितकार, सेवा करै सुजिन गुणधार।
ए सब ग्याता अति गुणवंत, जिनगुण सुणै महा विकसंत॥
सब श्रावक अति ही गुणवन्त, सुणै ग्रन्थ पावै विरतंत।

× × × × × ×

साहि जहां सुलितान महान, फेरी चहुं चक्क में आन।
छत्रपति सेवै तसु पाय, चकत्ता चकवै सुभीहान॥
संवतसर विक्रमत्तैं आदि, सतरह सैं तेरहै सुखस्वाद।
चैत्रशुक्ल पंचमी प्रमाण, यह त्रिलोक दरपण सुपुराण॥

× × × × × ×

बागड देश महा विसतार, नारनोल तहां नगर निवास।

तहां पौण छत्तीसौं वसैं, अपणे करम तणा रस लसै ॥
श्रावक वसै परमगुणवन्त, नाम पापडीवाल वसंत।
सव भाई मैं परमित लियैं, मानू साह परमगण कियै ॥
तिसके दोय पुत्र गुणंश्रास, लूणराज ठाकुरसीदास।
ठाकुरसी कै सुत है तीन, तिनकौ जाणौं परम प्रवीन।
वडो पुत्र धनपाल प्रमाण, सोहिलदास महा सुख जांण।
करमचंद अति भये प्रधान, माने श्री जिनवर की आन ॥
लूणराज के सुत दोय भये, पुन्यवंत सुन्दर बहु कहै।
धरमदास सबमैं गुणरास, मूरति धर्मवंत प्रतिभास ॥
खडगसैन दूजौ बुधिवंत, ताकैं हृदय ग्यान विलसंत।
गुरु प्रसाद कीयो अति घणौ, द्रव्यरूप लिख्यौ बहु गुणौं ॥
चतुरभुज वैरागी जांण, नगर आगरै मांहि प्रमाण।
तिन वहुतौ कीयो उपगार, द्रव्य सरूप दीये भंडार।
तबतैं बुधि बढी अतिसार, सोलहसै पिच्यासीया धार ॥
पायौ मरम हृदय भयौ चैन, अगणित जिन गुण लागौ लैण।
बहुत वार आये लाहौर, कछु न उपजी मन मैं और ॥

× × × × × ×

संवत् १७६८ का वैशाख मासे शुक्ल पक्षे दुतिया दिने सोमवारवारे भगवतगढ नाम नगरे श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये भट्टारकजी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्ति जी तत् शिष्य पं० दयाराम जाति सोनी नरायण का वासी इदं पुस्तकं लिखितम्।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०८. साइज १२×५॥ इञ्च।

संवत् १७६८ वर्षे मितिमासोत्तममासे पोस शुक्लपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ गुरुवासरे श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिजी तत्पट्टे भट्टारक श्री महेंद्रकीर्त्ति जी आचार्यजी श्री ज्ञानकीर्त्ति जी तस्य पट्टे आचार्य श्री सकलकीर्त्ति जी तस्य शिष्य पंडित खेतसी लिखापितं श्री उदयपुर नगरमध्ये राणाजी श्री जगतसिंहजी राजकरे श्री मैडांकूं देहुरै लिख्यो।

२६. त्रेपनक्रिया।

रचयिता श्री ब्रह्मगुलाल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ४. स इज ६×५ इञ्च। रचना संवत् १६६५.

मंगलाचरण—

प्रथम परम मंगल जिन चच्चंनु, दुरित तुरित तजि भाजै हो।
कोटि विघन नासन अरिनंदन, लोक सिखरि सुख राजै हो।
सुमिरि सरस्वति श्री जिनउद्भव, सिद्ध कवित सुभ वानी हो।
गन गधर्व जत्थ मुनि इंद्रनि, तीनि भुवन जन मानो हो।

अंतिम पाठ—

ए त्रेपन विधि करहु क्रिया भवि पाप समूहनि चूरे हो।
सोरह से पैसठि संमच्छर कातिग तीज अंधियारी हो।
भट्टारक जग भूषन चेला ब्रह्म गुलाल विचारी हो।
ब्रह्म गुलाल विचारि बनाई गढ गोपाचल थानै।
छत्रपती चहु चक्र विराजें साहि सलेम मुगलाने ॥ १ ॥

२७. त्रेपनक्रियाकोष।

रचयिता श्री किशनसिंह। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ७५. साइज १०×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर। रचना संवत् १७८४. लिपि संवत् १८२६.

मंगलाचरण—

समवसरण लछमी सहित, वर्धमान जिनराय।
नमो विवुध वंदित चरण, भविजन कूं सुखदाय॥

प्रशस्ति—

खंडेलीवालं वंसविसालं नागरचालं देसथियं।
रामापुरवासं देवनिवासं धर्म प्रकासं प्रगटकियं॥
संगही कल्याणं सवगुणजाणं गोत्र पाटणी सुजसलियं।
पूजाजिनरायं श्रुतगुरुपायं नमै सकति निज दानदियं॥ १॥
तसु सुत दुय एवं गुरुसुखदेवं लहुरो आणंदसिंघसुणो।
सुखदेव सुनंदन जिनपदवंदन थान मान किसनेस सुणो॥
किसन इह कीनी कथा नवीनी निजहित बीनी सुरपद की।
सुखदायक्रियाभनि यह मनवचननि सुद्धपलैं दुरगति पदकी॥ २॥
माथुरराय वंसंत कौ जानैं सकल जिहांन।
तसु प्रधान सुत कौ तनुज किसनसिंघ मतिमान॥ ३॥

अडिल्लछंद

चेत्रविपाकी कर्म उदै जब आईया, निजपुर तजि कैं सांगानेरि वसाईया।

तह जिनधर्मप्रसादि गमैं दिन सुख लही, साधर्मीजन सज्जनमानैं दे हित गही ॥

॥ दोहा ॥

इह विचार मनि आइयौ क्रिया कथन विधिसार।
होई चौपई बंध तौ सब जन कौ उपगार॥

× × × × ×

अठिल्लछन्द

किसनसिंह इह अरज करें सब जन सुनौ, करि मिथ्यात कौ नास निजातम पद मुनौ।
क्रिया सहित व्रतपाल करणवसिकीजिये, अनुक्रमलहि सिवथान सास्वता लीजिये ॥

सवैया

सत्रहस संवत चौरासिया सु भादौमास वर्षारितिश्वेत तिथि पुन्यौ रविवार है।
सतिविपारिपिध्रतिनाम जौग कुंभ सासस्यंघ कौ दिन समूहरत अति सार है।
ढूंढारह देश जांन वसै सांगानेरि थांन, जैसिंहसवाई महाराज नितिधार हैं।
ताकै राजसमै परिपूरण की इह कथा, भव्यन कै हिरदै हुलास दैनहार है ॥

× × × × × ×

श्री सकल पंडितोत्मपंडित श्री ३ श्री नायक विजयगणि तत् शिष्य सेवक पं० मुक्तिविजयेन लिपिकृतं श्री पद्मावानगरमध्ये साह स्वरूपचन्दजी शास्त्र लिखायौ। संवत् १८२६ का मिति. मंगसिर मासे शुक्लपक्षे तिथौ सप्तमी भगुवासरे।

२८. त्रेयनक्रिया विनती।

रचयिता श्री कुमुदचन्द्र। भाषा हिन्दी (पद्य)। पद्य संख्या १३.

मंगलाचरण—

वीर जिनेश्वर मनि धरुं, प्रणमुं गुरु पाय।
त्रेयन किरिया नो विचार, कहि सुं सुखदाय॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

ए त्रेयन उपवास, सर्व कहि लक्ष्मीचन्द्र।
अभयचन्द्र गुरु अभयनन्दि गत माया तन्द्र ॥ १ ॥
रत्नकीर्ति वाणी विशाल गुणवंत मुनींद्र।
ललित वाणी कहि कुमुदचन्द्र पद नामत नरेंद्र ॥ २ ॥

जे नर नारी गावसे ए वीनती सुचंग।
ते मन वंछित पावसे नित्य नित्य मंगल वरंग ॥ ३ ॥

२९. दशलक्षणव्रतकथा।

रचयिता ब्रह्म ज्ञानसागर। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ४. साइज १०×४॥ इञ्च। पद्य संख्या ५५. लिपि संवत् १८३८.

मंगलाचरण—

प्रथम नमन जिन वरनै करूं सारदा गणधर पद अनुसरुं।
दश लक्षण व्रत कथा विचार, भाखुं जिन अगम अनुसार॥

प्रशस्ति—

भट्टारक श्री भूषणवीर सकल शास्त्र पूरण गंभीर।
तसु पद प्रणमो वोले सार, ब्रह्म ज्ञानसागर सुविचार॥ १ ॥

संवत् १८३८. श्रावणमासे शुक्लपक्षे सप्तम्यां पट्टणनगरे भट्टारक सुरेंद्रकीर्त्तिना लिखितं।

३०. दिलारामविलास औरआत्मद्वादशी।

रचयिता श्री दिलाराम। भाषा हिन्दी पद्य। साइज ६×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २७-३० अक्षर। प्रति पूर्ण है।

मंगलाचरण—

परम पुरुष परमात्मा परम जोति परधान।
परमेसुर परब्रह्म प्रभु पूजौ परम पुरान॥ १ ॥
सबै काल के सिध सहु नमौं सदा पद तास।
जा प्रसाद जग विस्तरै यह दिलाराम विलास॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

राजवंशावलिवर्णन—

ससि वंश चौहाण हाडा कहाये कीयो राज बूंदी मवासेदहाये,
भये भोज नामी वडे राव वंसी तनैं रत्न सांचे भये रतन अंसी।
भये नाथ गौपी न टीकै विराजे भये छत्रसालै तिन्है राज साजे,
लखै रावधानी सबै शत्रु कंपै चहूं चक के चक्कवै सास जंपै।
भये तास के देवता राव भाऊ सबै देस मैं दक्ष नीभौ पुजाऊ,
लह्यो भाग तैं पाट अनुरुद्ध ताको वढ्यो देश में राज आतंक ताको।

भये बुद्ध ताके तिन्है राज साजा क्रिया छत्रधारी कीयो रावराजा,
सबै तास के राज मैं राजधानी लहै भोग देवा पुरी सुभिमांनो।

बूंदी नगर वर्णन—

वन उपवन चहुं नंदन से मधि गिर मेर नंदी गंग सम सोभंह् वढवती।
अतुल विलास में वसत सबै घनपति धन भौन भौन रंभातिय गावती।
महल विमान सभा सुर मधि राजै राव बुद्ध ईंद जिम ताके किति लछि अवती।
ग्रंथनि मै सुनियत नैंनंनि को अभिलाप पूजत लखैं तें अंसी बूंदी अमरावती।

कवि वंश वर्णन—

वसि विपुल आदर सहित ल्याए रतन नगेश।
सो कविकुल वंसावली वर्णन करत सुदेस॥
प्रथम खंडेले तैं, प्रगट जाति धर्म जिनराज।
पुर पट्टन तैं पाटनी जाको विपुल समाज॥
सो वर्णन संक्षेप सौं दस पीढी मध्य चारि।
टोडै प्रथम विचार पुनि षट् बूंदी मध्य धारि॥

सरवन कीरति सुनी जो साह सरवन दूलहै कविकुल के सुदूलहै गुनदाए हैं।
गुनदत गेगराज भामै जग भामै साह,
धनपाल घनकरि सुजस अघाए हैं।
चत्रभुज बाहुवली तनय दौलतिराम,
भजनेरो दो वलकरि संगही कहाए हैं।
ताही के प्रसाद हिदै रांमकुलमंडनभो,
तनुज साहिवराम बंस वरगाए हैं॥

॥ दोहा ॥

सतरासै अठसठि समै दसमी विजैकुमार।
लगन महुरत वार सुभ भयो ग्रंथ तत सार॥ १॥
अैसो रस या ग्रंथ मैं जो थापै घट मांहि।
सो नर कर्म निवार करि भवदधि आवै नांहि॥ २॥
सहसकृत प्राकृत नहीं नहीं छदं अलंकार।
बाल ख्याल रचना रची सुकीवसु लेहु सुधारि॥

संहसकृत समजिन परै	पराकित गम नांहि।
भाषा कछु एक कवि कला	रची ग्रंथ या मांहि॥
मवै काल के सिंधि महु	नमौं जोरि पद तास।
जा प्रसाद जग विस्तरौ	यह दिलाराम विलास॥
धनि सम यो धनि वा वडो	धनि वा वार मिलाय।
अनुभव करण सुर पूजिये	गोगि सधर्मी पाय॥
बहुत गये मिथ्यात मों	अजहू नांहि अघाय।
थांनां सु दल बोनती	मेरो वेगि बलाई॥

३१. धनपालरास।

रचयिता ब्रह्म जिनदास। भाषा हिन्दी। पत्र ६. साइज ११।।×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८–४२ अक्षर।

मंगलाचरण—

वीर जिनवर २ नमुं ते सार, तीर्थंकर चोबीस मो।
वंछित फल बहु दान दातार, सारद सामिण वीनवुं॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्री सकलकीरति गुरु प्रणमीनें, श्रीभवन कीरति भवतार।
दानतणा फल वरणव्या, ब्रह्म जिणदास कहें सार॥ १॥
पढें गुणें जो सांभलें, मनधरी निरमल भाऊ।
मनवंछित फलरु वडां, लाभें शिवपुर ठाउ॥ २॥

इति श्री दानफलमंहात्म्ये ब्रह्म जिणदासविरचिते प्राकृतबंधे धनपालधनमतीरास संपूर्ण। संवत् १८२८ वर्षे श्रावण सुदी १ प्रतिपत्तिथौ रविवासरे पांडे रूपचन्दजी तस्य वाचनार्थे।

३२. धर्मपरीक्षा।

रचयिता श्री मनोहरदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १२४. साइज १२×५।। इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या ३०००.

मंगलाचरण—

प्रणमुं अरिहंतदेव गुरु निरग्रन्थ दया धरम।
भवदधि तारन एव अवर सकल मिथ्यात भणि॥

प्रशस्ति—

धर्मपरीक्षा पूरी भई बुधिसारु मनोहर निरमई।
मुझैं दोस मति लावौ कोई जैसी मति तैसी गति होई॥

॥ सोरठा ॥

गुरुमुनि अमितगति जान सहसकीर्त्ति पूर्व कह्यो।
यामैं बुधि प्रमान भाषा कीनी जोरि कै॥

॥ दोहा ॥

विक्रम राजा कौ भयौ सात अधिकुसहजार।
वरप तवै यह सहसकृति. भई कथा सुभ सार॥
देश दादरो परवति भली, तहां घामपुर सोभा भली।
चहूं दिशि शोभित बाडी बाग, करै कोकला पंचम राग॥
कूपं बाउरो शुभ पोषरी, दीसैंई निर्मल पांणी भरी।
मधि कमलनी करै विगास, मधुकर आइ लेहि तिस वास॥
तहां बसै धनपति सब लोगु पांन फूल के कीजे भोगु।
तहां सराउग नीकै सुखी, कर्म उदै कोई होइ है दुखी॥
वितसारू सब दांन करहि, जुग्म वार जिन थांनक जांहि।
तिन मधि आसू जेठ साह, खरचें द्रव्य लेह धन लाह॥
दुरजन कोई धीरन धरै, करण मतै सोही विधि करै।
घणी बात को करै बढाइ नगर सेठ है मन वचकाय॥

॥ दोहा ॥

जेठमल सुत त्रिधोचदं दाता दीन दयाल।
सज्जन भगतां गुण उदधि दुर्जन छाती साल॥
कुल धन जोवन रूप मद, अवर काणि मद ताहि।
एते मदन विमद करै बडौ तमासौ आहि॥
सब ही भाई हैं भले, अपणे अपने काजि।
मति कोउ मानौ बुरौ सत्त कहत हौ राजि॥

॥ सवैया ॥

वाणारसी सेठ प्रतिसागर पृथ्वी प्रसिद्ध कौटिक कौ धनी ताकै पाप उदै आयो थो।

सदन सौ निसि अजोध्या कौ गमन कीनौं अजोध्या के सेठ उह उद्दिम करावें थो ॥
अपनी बराबरि को करि नाना भांति सेती देकर बडाई निज थांन कौ पठायौ थो ।
ऐसे हम आसू साह राखे निज बांह देके कहै मनोहर हम पुनि जोग्य पायौ थौ ॥

॥ दोहा ॥

सातौ पहुँचे शुभग गति बारो सुभग बजाई ।
त्रिधी चदं सुख भोगवै धर्म ध्यान चित्त लाई ॥
हीरामणि उपदेश तैं भयौ शास्त्र शुभ सार ।
दुष्ट लोग को प्रति हंसै हरदै घरी विकार ॥

॥ सवैया ॥

रउति सालिवांहण आगरे को बुधिवंत हिरदै सरल तिन ज्ञान रस पीयो है ।
जगदत्त मिश्र गौड हिसारको वासी शुभ विद्यावलि जगत में सरजस लीयौ है ॥
गेगुराज वांभण पंडित है नगर माहि जौतिया को पाठी सरस्वती वर दीयो है ।
इतने साई भये दोही जिनराज जू की तब मैं विचार करि भाषा बुधि कीयो है ॥

॥ दोहा ॥

दया समं प्रह्लादालीया भयौ दूसरौ नाव ।
निरलोभी मन को सरल दया धर्म शुभ गाव ॥
सो भी हम प्रेरक भयौ दिन में वारंवार ।
तब हम यह भाषा करी लघु बुधि छांरि विकार ॥

॥ छप्पय ॥

नगर धांमपुर मांहि करी भाषा बुधि सारु
धम परीक्षा मित्र अर्थि विजन धरि वारु ॥
ना कछू कीर्त्तिहेति न कुछ धरति धनु वंछन
जथा शुक्त मंडली रचो पद २ रस चंदन ॥
पढै सुणै उपजै सुबुधि ह्वै कल्याण शुभ सुख धरण ।
मनरसि मनोहर इम कहै सकल संघ मंगल करण ॥

संवत् १८०२ वर्षे श्रावणमासे शुकलपक्षे तिथौ पूर्णिमा बार बृहस्पतिवार श्री सवाई जैपुरमध्ये ईश्वरीसिंह राज्ये श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये भट्टारकजी महेन्द्रकीर्त्ति जी प्रवर्तमानेतत् समीपे पं० दयारामेण

१।७७ ।

३३. धर्म स्वरूप।

रचयिता ब्रह्म श्री गुलाल। भाषा हिन्दी (पद्य)। पद्य संख्या ६२. रचना संवत् १७२०. लिपि संवत् १७३२.

मंगलाचरण—

प्रथम सुमरौ सारदा, गणपति लागू पाय।
गुण गाऊं श्री जिण तणा, सुनो भव्य मन लाय ॥

प्रशस्ति—

संवत सतरासें बतीसा, भादवा मास सुकल पख तीज।
सोमवार सुभ वेला घटी, तब यह कथा बंचे कस्यौ करी ॥ १
जैसी विधि श्री गुर कही, तैसी ही सगला सर रही।
सुभचन्द्र भट्टारक भलो, बराड देस मही छै निलो ॥ २ ॥
सभा मांहि घणा वैण साह, खरचै द्रव्य पुनि कौ लाह।
वीरजी संगही विद्यावंत, धनजी लालचद गुणवंत ॥ ३ ॥
सब ही मिलि यौ कारिज कियो, भामा श्रावग ने पोरिस दियो।
कीजै वाणी श्री जिणवर सार, संसार संग उतरैं पार ॥ ४ ॥
खानदेश में सोहे सलो, ब्रह्मानपुर नग्र है भलो।
छतीसपुरा विधि बाजार, साहिदरो सोहे अति सार ॥ ५ ॥
श्रावक गोठि संजम आचार, व्रत विधान निश्चै व्योहार।
मंदिर वेदी दीरघ होइ, जीणवर धरम जपै सो होइ ॥ ६ ॥

३४. धर्मरासो।

रचयिता श्री अचलकीर्त्ति। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या २४. साइज ८×४॥ इञ्च। पद्य संख्या ७१. रचना संवत् १७२३. लिपि संवत् १७२६.

मंगलाचरण—

प्रथम जोतीस्वर लागौ जी पाइ, सिद्धि सतगुरु नमौ।
सरस्वति स्वामिणी दे मति माइ, राज भणौ जिण तणौ ॥

प्रशस्ति—

सत्रह सै जु तेईस मै, पौष सकल पक्ष सुभ दिन जोग।
दोज सोमवार सुहं वरयौ, उत्तम नक्षत्र तहां उत्राषाढ ॥

सहर नगर सुभ थांन में, कुण भट्टारिक आमनाय ॥ १ ॥
श्री काष्ठाये संघनायक गच्छराय, भट्टारिक भवि जण रंजण ।
श्री कुंवरसेण कुल केवल दिणंद, विद्या वचन, गुण वारिधि ।
रतन कीरति तस सीष सुजाण, दिली मंडलाचार्य दीपता ।
आज्ञा कारी तस आचार्य जांणि, अचलकीर्ति अवगाहि कै ।
धरम रासौ कीयौ धरि सुभ ध्यान, आत्मा पर उपगाहु ॥
पढत सुणत सुख संपदा होइ, सुरग मुकति सुख सास्वतां ॥ २ ॥

३५. धर्मोपदेश श्रावकाचार।

रचयिता श्री धर्मदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ४६. साइज ६×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३० अक्षर। रचना संवत् १५७८. प्रथम पृष्ठ नहीं है। विषय-आचार धर्म

दूसरे पत्र का प्रारम्भिक पाठ—

पणवहु भविजन शीतलनाहुं, शीतलगुन निज अधिक अगाहुं।
दह भेय जिन भास्यौ सव्व, वंदहु ताहि सयल तजि गव्व ॥

प्रशस्ति—

पंद्रहसै अट्ठहत्तरि वरिसु, संवच्छरु कुसलह कन सरसु।
निर्मल वैसाखो अषतीज, बुधवार गुनियहु जानीज ॥

ता दिन पूरो कियौ यहु ग्रंथ, निर्मल धर्म भनौ जो पंथ।
मंगल करु अरु विघनि हरतु, परम सुख भवियन कहुं करणु।
अच्छासवदछंद करि हीन, किंचितु मात्र मैं जुयहु कीन।
सो मो मंद बुधि जानेहु, तातैं बहु जन षिमा करेहु।
सुध असुध मात्र करि हीन, इहु प्रमाद ज्ञान में कीन।
सो सब खमहुं देवि सरसुती, जान ही मोहि बालक समती
बारहसैंनी उत्तम जाति, मूल संघ श्रावग विख्यात।
जिनवर पय भत्तउ होरिल साहु, सो जु दान पूज को पवाहु।
तासु मनू सत्य जस गेहू, धर्म शीलवंतु जानेहू।
तासु पुत्र जेठो करमसी, जिनमति सुमति जासु मन वसी।
दया आदि दे धर्म हि लीन, परमविवेकी पाप विहीन।
पदम नाम ताकै भो पूत, कवियनु वैदरु कला संजूतु।
अवरु बहुत गुन गहिर समान, महा सुमति अति चतुर सुजानु।

अरु सो सज्जनता गुण लीन, पर उपगारी विधना कीन।
बहु मित्रो तस मन त्रि कोइ, सलहहो देस देस के लोइ।
राम सिरी तसु तनिय कलत्त, परम सील वे पथ्य पवित्त।
तासु उदर सुत उपनौ वेवि, जिनु तिजि अवरुन पार्वहिं तेवि।
जें कौ धमु विबुह सिरमनी, जिहि पराग्र अंवागनी।
दया लीन जिनवर पय धुनी, पर पायो धनु धूलिसम गिनी।
पंचींदर न मिथ्या जेवि, अरु निशि झूठे मानै जेवि।
जैन धर्म सेवै नित्त, अरु दह लखण भाव पवित्त।
नित निग्रंथ मुनि मानंउ, जिन आगम कहु पठंतु सुवंउ।
निः केवल अरहंत थुनै, और देवि मिथ्या करि गिनै।
तिहि यहु कियौ धर्म उपदेशु, धर्म सुष्य जो करै असेसु।
विघनकलंक पाप कहू हरै, मंगल सर्व सुजन कहुं करै।
पठतन हुं मति हरइ चित्त, उपजइ निर्मल बुधि पवित्त।
जे जिन सासन लीन निरुत्त, ––– कहु उपजै सुख बहुत।
धन कन दूध पूत परिवार, मंगल सुजसु अपार।
मेदिनी उपजहु अनंत अनंत, [मा]स भरि जल बरसंत।
मंगल बाजहुं घर घर वार, [का]नी गावहि मंगल चारु।
घरि घरि सीत उपजहु सुख्य, रोग आपदा दुख।
घरि घरि दान पूज अनिवार, [स]ा चलहु आप आचार।
नंदउ जिन सासन संसार, दयादिक चलौ अपार।
नंदहु जिन पडिमा जिन गेह, नंदहु गुर निर्ग्रंथ अमोह।
नंदउ धर्म धुरंधरु साहु, दान पूज जे करहिं अगाहु।
जिनि केवल जति व्रत पालंत, धर्म कथहि कर्मनि जालत।
ए मत निविमांगे जिनदेव, भव भव करौ तुम्हारी सेव।
भवि भवि श्रावगकुलि अवतारु, जिनकै धमु अधमु विचार।
जन्मि जन्मि उपसम चित हेउ, जन्म जन्म जिन सासन भेउ।
भवि भवि गुर निर्ग्रंथह संग, जातैं होइ पाप कइ भंग।
भवि भवि दया उपजौ चित्त, क्षमादि ···· भाउ पवित्त।
भवि भवि जैन धर्म की लीव, पावहिं मुक्ति जासु तें जीव।
कहै धर्म कवि सुनहु संत, नर भव पायो बहुत भमंत।

जिन सासन दुर्लभ जानेहु, पायौ तो दूर करि मानेहु।
जिन पूजहु जिनवर थुनहु, गुरु निग्रंथ सत्ये करि सुनहु।
जिन सिद्धांत जु कह्यो विचार, सो पालहु त्रिभुवन मांहि सार।
कहै धर्म कवि वेकर जोडि, पंडित जन मन लावहु खोडि।
मति सारु हम कीनौ एहु, कपटु मुनि विमनि दया करेहु।
जह अट्ठ तह सुद्ध करहु, अपनी सज्जनत विस्तरहु।
साधु नित नो भाउ वह नित्त, पर उपगारु धरहि ते चित्त।

इति धर्मोपदेशश्रावकाचार पं० धर्मदास विरचित समाप्त मिति मार्गशीर्ष शुक्लसप्तम्यां तिथौ शनिवासरे समाप्तोऽयं ग्रंथो। पं० शत्योदयेन मुनिना लिखितमिति।

३६. नयचक्र भाषा

भाषाकार श्री हेमराज। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या २४, साइज ६×४ इञ्च। रचना संवत् १७२६ विषय—नैगमादि सात नयों का वर्णन।

मंगलाचरण—

वंदौ श्री जिनके वचन, स्यादवाद नय मूल।
ताहि सुनत अनुभव तहीं, ह्वै मिथ्यात निरमूल॥
ता कारन नयचक्र की, सरल वचनिका कीन।
अधिक हीन अवलोकि कैं, करहु सुद्ध परवीन॥

अन्तिम पाठ प्रशस्ति—

सिरीमाल गच्छ खरतरैं, जिनप्रभु सूरि सतानि।
लवधो रंग उवझाय मुनी, तिनके शिष्य सुजान॥
विवुध नारायण दास नैं, यह अरज हम कीन।
जो नयचक्र सटीक हैं, पढे सवे परवीन।
तिनैं प्रसन्न ह्वै कै सही, भली भली यह बात।
तव हमहुं उद्यम कियो, रची वचनिका मात्र।
हेमराज की वीनती, सुनियो सुकवि सुजान।
यहु भाषा नय चक्रकी, रची सुबुधि उनमान।
सत्रहसैंर छवीस कौं, संवत् फागुण मास।
उज्जल तिथ दसमी जहां, कीनो वचन विलास।

इति श्री पं० नारायनदासोपदेसेन साह हेमराज कृत नयचक्र की सामान्य वचनिका समाप्तं।

३७. नेमीश्वर गीत ।

रचयिता श्री चतुरुमल । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १५. साइज ६×४॥ इञ्च । पद्य संख्या ४४. रचना संवत् १५७१. लिपि संवत् १८२०.

मंगलाचरण—

प्रथम चलन जिन स्वामि जुहारु, ज्यों भव सायरू पावहि पारु ।
लहइ मुकति दुति दुति गिरै, पंच परम गुरु त्रिभुवन साहु ॥ १ ॥
सुमरित उपजै बुद्धि अपारु, सारद मनाविउं तोहि ।
गुरु गोतमु मो देउं पसीउ, जौ गुन गांउ जादुराइ ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

श्रावग सिरीमल अरु जसवंत, निह्चै जिय धर्म धरंत ।
चरु चलन भवि वंदतौ, पुत्र एक ताकें घर भयौ ।
जनमत नाउ चतुरु तिन लियौ, जैन धर्म्म दिठु जीयह धरौ ।
नेमि चरित ताकै मन रहै, सुनि पुरान उर गानो कहै ।
नेमि..... देसु सुख सयल निधान, गढ गोपाचलु उत्तिम ठान ।
एक सोवन का लंका जिसि, तौ वरु राउ सबल वरवीर ।
भुव वल आयु जु साहस धीर, मानसिंह जग जानिये ।
ताके राज सुखी सब लोगु, राज समान करहि दिन भोगु ।
जैन धर्म वहु विधि चलै, श्रावग दिन जु करै पट धर्म ।
निहचै चितु लावैहि जिन धर्म, नेमि कुवर नेमि जिन वंदि हैं ।

(२)

संवतु पंद्रहसें दो गनें, गुन गनुहुं तरि ताउपरि भने ।
भादौ वदि तिथि पंचमीवार, सोम नषितु रेवती ।
लगुन भलो सुभ उपजामती, चंद्र जन्म वलु पाइयौ ॥
चतुरु भनै भावी सयलनि दासु, गुनिय सुनत जिय करहिनदासु ।
लब्धि उपसमै बुधि हीन, मैं स्वामी को कियो बखानु ।
पढत सुनत जी उपज्यै ग्यान, मन निहचल करि जिय धरहु ।
राजमती जिन संजमु लियौ, नेमी कुंवर नेमी सयल भवी नयौ ।
नेमि कुंवर नेमिजिन वंदि है ॥

संवत् १८२... वर्षे माह सुदी १४ लिखितं गुरू देवेन्द्रकीर्त्ति आचार्य ।

३८. नेमीश्वर चंद्रायण—

रचयिता श्री भट्टारक नरेन्द्रकीर्त्ति। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ८. साइज ६ × ४ इञ्च। पद्य संख्या १०४। लिपि संवत् १६६०। विषय—नेमिनाथ का जीवन।

मंगलाचरण—

परम चिदानंद मन्यधरी अनि प्रणमी श्री गुरु पाय।
हरष अणिदि सु स्तवु श्री नेमीश्वर जिनराय॥ १॥

प्रशस्ति—

महीयल महिमिमात्रत वखांणो, श्री मूलसंघ गछपति जांणो।
विजय कीरति सुरि नमित नरेन्द्र, तत्पट्ट दायक श्री शुभचन्द्र॥
तत्पट्ट पंकज सुर समान, सुमति कीरति सुरी गुणहं निधान।
ते चरण चित्त धरी रे विशाल, नरेंद्रकीर्त्ति कहि रे रसाल॥
नरेंद्रकीरति पाठक कहि अनि नेमिचंद्रायणसार।
भाव सहित भणि सांभलि, ते पावे भव पार॥

संवत् १६६० वर्षे भादवा सुदी ६ रवौ श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री वादिभूषणदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री रामकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनन्दि गुरुपदेशात् तत् गुरु भ्राता मुनि श्री देवकीर्त्ति तत् शिष्य मुनि श्री कल्याणकीर्त्ति तत् शिष्य ब्रह्मसिहजी लिखित।

३९. नेमीश्वर रास—

रचयिता श्री ब्रह्मरायमल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या २२. साइज ७ × ६ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १२६. उक्त रचना गुटके में है। गुटके के ११६ से १६० तक के पृष्ठों में है। रचना संवत् १६१८. लिपि संवत् १६८६.

मंगलाचरण—

स्वामी हो नेमीसर जिननाथ, चरणां वंदैं धरि मस्तक हाथ।
मन अरु वचन काया शुणी, सोभा जी सांवला वर्ण सरीर॥ २॥

अन्तिम पाठ—

अहो मूल संगि मुनि सरस्वति गच्छ,छोडि हो चार कषायनि निभछि।
अनंतकीर्त्ति गुरु वंदितैं अहो रास तणौ सखी कीयो वखाण।
राइमल ब्रह्म सो जाणिज्यो, स्वामी हो पारसनाथ के थानि॥ १॥

अहो सोलहसै पन्द्रह रच्यौ रास, सांवालि तेरसि सावण मास।
वार तेजी बुधवासर भलै, जैसि जी बुद्धि दिन्हौ अवकास ॥
पंडित कोइ जी मत हंसौ, अहौ तौसि जि बुधि कियो परमास।
अहो वाग वाडी घणा, नीकौ हो ठाणि।
वसै हो महाजन नगर भौणि पौणि छत्तीस लीला करें।

४०. पद्मनंदिपंचविंशिका—

चयिता श्री जगतराय। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या १३२. साइज १०॥ × ६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २७। ३० अक्षर। रचना संवत १७२२. लिपि सम्वत १८१८

मगलाचरण—

अमल कमल दल विपुल नयन भल—
सकल अचल बल उपसमधरि है।
अखिल अवनितल अटल प्रबल जस
सुरपति नरपति स्तुति वहुकरि है।
धृति मति पंति धर सब जन सुखकर
कनक वरण तन सिद्धि वधु वरि है।
वृषभ लछिन धर प्रगट तनय भर
अघ तिम रवि कर भव जल तरि है ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

पदमनंदि पचवीसी सार, जगतराय भाखी सुविचार।
उठो अधिको जे कछु होइ, सो अपराध खमहु कवि सोइ ॥
पांनी पंथ सुदेस सहर गुहानो जांनिये।
कबहीं न दुखको ले सुख वरतैं जहां सवदा ॥

दोहा

अग्रवाल है उमग्यानि, सिघल गोत्र वसुधा विख्यात।
माई दास श्रावक परसिद्ध, उत्तम करणी कर जस लिद्ध।
नंदन दोइ भये तसु धीर, रामचंद नंदलाल सुवीर।
सालिभद्र कलियुग में एह, भाग्यवंत सब गुण को गेह।
उपगार आंनी मन मांहि जगतराय श्रावक उछांहि।
पदमनन्दि पचवीसी किद्ध, भाषा बंध भई परसिद्ध।

पद्मनंदि की बांनि गंभीर, ताको अर्थ लहै कोइ धीर।
भाषा पढतैं न ह्वै खेद, मूरख जन पुनि जानै भेद।
सहर आगरो है सुख थांन, परतपि दीसै स्वर्ग विमा।
धारौ वरन रहै सुख पाइ, तहां यहु शास्त्र रच्यौ सुखदाइ।
संवत् सतरासें बावीस, फागुण मासि सुदिपक्ष जगीस।
तिथि दशमी पुष्य मंगलवार, ग्रन्थ समाप्त भयौ जयकार।
नवखंड में है जाकी आंन, तेजवंत दीपें जिन भांन।
राज करै श्री अवरंग साहि, जाके नहीं किसी परवाहि।
न भई भीति कछु ताके राज, धर्मी भविजन पढन के काजि।
निजमति के अनुसारे यह, भाषा कीनी मन धरि के नेह।

॥ छप्पय ॥

पाठक अतिहि प्रवीन पुण्य हर्ष गणि दीपै।
आगम युगति अनेक भेद करि वादी जीप्पै।
कीनी भाषा एह जगतराय जिहि विधि भाषी।
पंडित महामति मंत वीरदास जु है साषी।
वाढे बहुविधि सकल पाप संताप हर।
इहुं ग्रंथ संतनि कै सुनहु करौ वीनति जोरि कर॥

चौपई— सुजान सिघ नंदलाल सुनंद, जगराय सुत है टेकचंद।
जौ लों सागर ससि दिनकार तो लौं अविचल ए परिवार॥

सोरठा— अभय कुंसल आनंद पद्मनंदि पंचवीसि की।
भाषा भई निरदंद सुनियो भविजन सर्वदा॥

इति श्री जगतराय विरचितायां पद्मनंदिपंचविंशिकायां भाषा समाप्ता संवत् १८११ वर्षे मिति…।

४१ पंचेन्द्रिय बोल

रचयिता कवि घेल्ह। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ७. साइज ७×७ इञ्च। पद्य संख्या ६. रचना संवत् १५८५. लिपि संवत् १६८८. पांच इन्द्रियों की बात चीत।

प्रशस्ति—

कवि घेल्ह सुजंन गुण ठावो, जगि प्रगट ठकुरसी नावो।
तौ वेलि सरस गुण गाया, चित चतुर मुरिख समझया।

मूरिख मनि संकउ पाइ, . तहि तणौ न चिति सुहाइ।
नहुजपौ घणौ पसारो, यौ एक वचन मै सारौ।
संवत पंद्रासैर पिच्यास्यो, तेरसि सुदि कातिग मासे।
इ पांच इंद्री वसि राखै, सो हरत परत सुख चाखै।

४२ पंचास्तिकाय भाषा,

भाषाकर्ता पांडे हेमराज। पत्र संख्या १४८. प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर। रचना संवत् १७३६. लिपि संवत् १७३६. विषय-सिद्धान्त।

संवत् १७३६ वर्षे आषाढ सितपक्षस्य द्वादशीतिथौ गुरुवारे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री चंद्रकीर्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री ५ जगत्कीर्ति जी तदाम्नाये अगरवालान्वये गोइल गोत्रे सा.।धानू तस्य भार्या धनादे तयोः पुत्र सा. श्री रूपचंदजी तस्य भार्या तारादे तयोः पुत्र सा० श्री तेजन तस्य भार्या मथुरा ननू तयोः पुत्र सा० श्री रूपचंदजी तस्य भार्या माणकदे तयोः पुत्रो द्वौ प्रथमपुत्र सा० श्री चूहडमलजी तस्य भार्या गंगा तयोः पुत्राश्चत्वार प्रथम पुत्र चि० रणधीर द्वितीय पुत्र चि० मानसिंह तृतीय पुत्र चि० चतुर्भुज चतुर्थ पुत्र चि० जोधसिंह। द्वितीय पुत्र सा० श्री बनारसीदासजी तस्य भार्या कपूरां तयो पुत्र चि० सिवदासजी एतेषां मध्ये सा० श्री बणारसीदासेनेमं पंचास्तिकायाभिधं ग्रंथं लिखाप्य आचार्य श्री दयाभूषणजी तत् शिष्य पंडित हीरानंदाय दत्तं ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं। कामानगरमध्ये।

४३ परमार्थ दोहा।

रचयिता कवि रूपचंद। भषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ४. पद्य संख्या १००. सुन्दर २ पद्यों का संकलन है।

मंगलाचरण—

अलखरुपचिद्रूप जोतिमय ज्ञान प्रकार
अचल अबाधित अखय परम आतम सुभाउ धर।
निराकार अवगाह मैनगन मून गगन वत
अमल अनाकुल परम तेज घन सुद्ध सरवगत।
सुखधाम अनादि अनंत अज जगत सिरोमनि सिद्ध गन।
मनधरि सरूप अनुभवनि पुन करहि वंदना भव्य जन॥

अन्तिम पाठ—

रूपचंद सद्गुरनि की जन वलिहारी जाइ।

आपुल जे सिवपुर गये, भव्यनि पंथ दिखाइ ॥

४४. प्रद्युम्न प्रबंध।

रचयिता भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ३७, साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर। रचना संवत् १७२२, विषय—जीवन चरित्र।

मंगलाचरण—

सकल भव्य सुख नेमि जिनेश्वर पाय।
यदुकुल कमल दिवसपति प्रणमुं तेह ना पाय ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

श्री मूलसंघ मुकुटमणि श्री सकल कीर्त्ति गुरु पायरे।
भुवनकीर्त्ति तेह निपाटि, वहु भूपति पूजित पायरे ॥ १ ॥
तास पटांवर दिनमणीह वा ज्ञान भूषण भवतार रे।
विजयकीर्त्ति तस पटधारी, प्रगट्या पूरण सुखकार रे ॥ २ ॥
तेह यह कुमुद पूरण ससी, शुभचन्द्र भवतार रे।
न्याय प्रमाण प्रचंड थी गुरुवादी जल दशमीर रे ॥ ३ ॥
तस पट्टोधर प्रगटीया श्री सुमतिकीर्त्ति जयकार रे।
तस पट्ट धारक भट्टारक, गुणकीर्त्ति गुणगण धार रे ॥ ४ ॥
तेह तणि पाटि प्रसिद्ध धणी श्रीयवादि भूषण सूरी संत रे।
रामकीर्त्ति तेहनि पाटि, प्रगट्यो गुरु विद्यावंत रे ॥५ ॥
तस पट धारी पूरण मतो श्री पद्मनंदी सूरीस रे।
विद्यावाद विनोदथी जेहिं नामि नरवर शीस रे ॥ ६ ॥
तस पट कमल कमल बंधु, श्री देवेंद्रकीर्त्ति गच्छ ईशरे।
प्रद्युमन प्रबंध रच्यो तिणि भवियण भणयो निश दिश रे ॥ ७ ॥
संवत् सत्तर वावोसि सुदि चैत्र तोज वुधवार रे।
महेश्वर मांहि रचना रचि, रहि चंद्रनाथ गृहद्वार रे ॥ ८ ॥
सूरत वासी संघपती खेमजि सूरजि दातार रे।
तेह आग्रह थी प्रद्युमन नो ए प्रबंध रच्यो मनोहार रे ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

मनोहार प्रबंध ए गुंथ्यो करि विवेक।
प्रद्युमन गुण सूत्रिकरी, सव वन कुसूम अनेक ॥ १० ॥

भवीयण गुणि कंठि करो, एह अपूरव हार
घरि मंगललक्ष्मीघणी, पुण्यतणो नहिं पार ॥
भणि भणावि सांभलि, लिखि लिखावइ एह ।
देवेंद्रकीत्ति गच्छपतीकहि, स्वर्गमुक्ति लहि तेह ॥

इति श्री प्रद्युम्नप्रबन्ध संपूर्णः ।

४५. प्रवचनसार भाषा —

भाषाकार श्री जोधराज गोदीका। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ७२. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३-३६ अक्षर। प्रति नवीन है। विषय-सिद्धान्त। लिपि संवत् १८४६। रचना संवत १७२६।

प्रारम्भिक मंगलाचरण—

परम ज्योति परमातमा नमौं सुद्ध परधान ।
एक अनूपम जोध कहि सिव दायक सुखथान ॥

प्रशस्ति—

कुंदकुंद मुनिराज वृत, पूरन भयौ वखांन ।
अब कवि कौ व्यवरन कहौ, सुनहु भविक धरि कांन ॥
मूल ग्रंथ करता भये, कुंदकुंद मुनिराय ।
तिन प्राकृत गाथा करी, प्रथम महा सुख पाय ॥
तिन ऊपर टीका करी, अमृतचन्द्र सुख रूप ।
सहसकृत अति ही सुगम, पंडित पूज्य अनूप ॥
ता टीका कौं देखि कैं, हेमराज सुखधाम ।
करी वचनिका अति सुगम, तत्त्व दीपिका नाम ॥
देख वचनिका हरषियौ, जोधराज कविनाम ।
तब मन में इह धारिकैं, कीये कवित सुखधाम ॥
सत्रह सें छवीस सुभ, विक्रम साक प्रमान ।
अरु भादों सुदि पंचमी, पूरन ग्रंथ वखान ॥
सुनय धरम हि सुख करन, सब भूपनिसिर भूप ।
मान वंस जयस्यंघ सुव, रामस्यंघ सुख रूप ॥
ताकैं राज सु चैंन सौं, कीयो ग्रंथ यह जोध ।
संगानेरि सुथान में, हिरदै धारि सुवोध ।

जौ कहूँ मेरी चूक ह्वै; लीज्यौ संत सुधारि।
वरण छंद कौं देखि कैं, गुण औगुण सुविचारि॥
यहां मिश्र हरिनाभजी, रहौ सदा सुखरूप।
ताकी संगति जो करी, पायो काव्य सरूप॥

सवैय्या—

कोई देवी खेतपाल बीचासनिमांनत है,
केई सती पित्र सीतलां सौं कहै मेरा है।
कोई कहै सावलौ कवीर पद कोई गावै,
केई दादू पंथी होय परे मोह घेरा है।
कोई ख्वाजै परमान कोई पथी नानिग के,
केई कहै महाबाहु महारुद्र चेरा है।
यांही बारा पंथ में भरमि रह्यौ सबै लोक,
कहै जोध अहो जिन तेरापंथी तेरा है।

× × × × × ×

इति श्री प्रवचनसार सिद्धांन्ते जोधराज गोदीका विरचिते कवि वर्णन नाम द्वादश प्रभाव। संवत् १८४६ का कार्तिक सुदी १२ शुक्रवार सवाई जयपुर में लिख्यौ अमल महाराजाधिराज श्री सवै प्रतापसिंहजी का में पुस्तक जोधराज गोदीका की है संवत् १७२६ कौ लिख्यौ तीसु लिखो पुस्तक जीवण-राम गोधा रैणी का को। लिखतं कन्होराम बाकलीवाल संपतरामगोधा।

४६. प्रवचनसार।

भाषा प्राकृत संस्कृत-हिन्दी (गद्य)। पत्र संख्या ४४. साइज १२×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर। लिपि संवत् १७२७. प्रस्तुत ग्रंथ में प्राकृत और संस्कृत मूल ही दिया हुआ है। हिन्दी में प्रत्येक गाथा में वर्णित विषय का संकेत दिया गया है। इसके अतिरिक्त हिन्दी में फुटकर टीका भी दी हुई है। भाषा परिमार्जित है।

भाषा का प्रारम्भ—

आगै श्री कुन्दकुन्दाचार्य प्रथम ही आरंभ विषै मंगलाचरण निमित्त नमस्कार करै है।……… ……। आगै आत्मा के शुभ अशुभ शुद्ध असे तीन भावनि की ठीकता करै है।

फुटकर टीका की भाषा—

स्निग्ध रुक्ष गुणविषै अनन्त अंश भेद है। एक परमाणु दूजे परमाणु सौं तब बंधै जब दोइ अंश अधिक स्निग्ध अथवा रुक्ष गुण का परिणाम होइ ………………,

संवत १७२७ वर्षे अषाढ मासे शुक्लपक्षे नवम्यां गुरुवासरे रामपुरे श्री जिनचैत्यालये लिखापितं प० बिहारीदास आत्मपठनार्थे । लिखतं ब्राह्मण दीननाथेन ।

४७. प्रद्युम्नरासो ।

रचयिता श्री ब्रह्म रायमल्ल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १८ साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५×३८ अक्षर । रचना संवत् १६२८ लिपि संवत् १८२०.

मंगलाचरण—

हो तीर्थंकर वंदू जगनाथ ।
तोह सुमरण मनि होइ उछाह तो हुवा छै अरु होयसी जी सी ॥
तिह कारण रदै घट पूरि गुण छीयालीस सोभै भला जी ।
दोष अठारह किया दूरतो रास भणो परद्युमन को जी ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

हो मूलसंघ मुनि प्रगटे लोय, अनंतकीर्त्ति जाणै सहु कोय ।
तास तणो सिष्य जाणज्योजी, हो रायमल ब्रह्म मुनि कियो बखान ॥
बुधि थोडी जाणूं नहीं जी, तिहि दीठो हरिवंशपुराण तो ॥ १ ॥
हो सोलासै अठवीस विचारो, भादवा सुदी दुतिय बुधवारो ।
गढ हरसोर महा भलो जी, तिह में भला जिनेसुर थांन ।
श्रावक लोक बसै भला जी, देव शास्त्र गुरु राखे मान तो ॥ २ ॥

४८. पार्श्वनाथ चौपई ।

रचयिता श्री आचार्य महेन्द्रकीर्त्ति । भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या १७. साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर । पद्य संख्या २६८. रचना संवत् १७३४. लिपि संवत् १७६३.

मंगलाचरण—

प्रथम वंदि पार्श्वजिनदेव, तीनि जगत जाकी करै सेव ।
रिद्धि सिद्धि वर सुखदातार, बाल पण्यौ जीत्यो जिहि मार ॥

प्रशस्ति—

संवत् सत्तरासै चौतीस, कार्त्तिक शुक्ल पक्ष शुभ दीस ।
नौरंग तपै दिली सुलतान, सबै नृप अति वहै सिरि आण ॥
नागर चाल देस शुभ ठाम, नगर वणहटो उत्तम धाम ।

सब श्रावक पूजें जिनधर्म, करें भक्ति पावै बहु शर्म्म ॥
कर्मक्षय कारणशुभहेत पार्श्वनाथ चौपई समेत ।
पढित लाखो लाख समान सेवौ धर्म लहौ सुख थान ॥

भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिजी का शिष्य पांडे दयाराम नरायणा का वासी जाति सोनी । भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति का राजपट विषै दिल्ली का जैसिंहपुरा का देहुरा में पार्श्वनाथ चौपई लिखी ।

४६. पार्श्वनाथपुराण ।

रचयिता श्री भूधरदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ६१. साइज १०॥×४॥ इञ्च । रचना संवत् १७८६. रचना प्रकाशित हो चुकी है ।

मंगलाचरण—

मोह महातम दलिनदिन तपलक्ष्मी भरतार ।
ते पारस परमेस मुझ होहु सुमति दातार ॥

अन्तिम पाठ—

प्रभु चरित्र मिस किमपि यह कीनो जिन गुन गांन ।
श्री पारस परमेस को पूरन भयौ पुरान ॥
पूरब चरित विलोकि कै भूधर बुधि समांन ।
भाषा बंध प्रबंध यह कियौ आगरै थांन ॥

× × × × ×

दोहा—

संवत सत्रैसै समै और निवासी लीन ।
सुदि असाढ तिथ पंचमी, ग्रंथ समापित कीन ॥

इति पार्श्वनाथपुराण की भाषा संपूर्ण । लिखावितं साहजी श्री चैनरामजी ठोल्या सवाई माधोपुर मध्ये । महाराजाधिराज श्री सवाई जगतसिंहजी विजयराज्ये लिपीकृत जती अमरचन्द्रेण वासी कोटा का ।

५०. पोसहरास ।

रचयिता भट्टारक श्री ज्ञानभूषण । भाषा हिन्दी (पद्य) पद्य संख्या ११५.

मंगलाचरण—

सरसति चरण युगल प्रणमी सहि गुरु आणू ।
वार वरत महि साह वरत पोसहवरे काणू ॥ १ ॥
आठमि चउदसि नीम सहित नित पोस लीजे ।
उत्तम मध्यम अधम भेदि त्रिहुं विधि जाणी जे ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

चारि रमांणय मुगति जनम अनुप सुख अनुभवइ ।
भवमकारि पुनरपि न आवइ. इहक फल जस गमइ ॥
ते नर पोसह कांन भावइ, एणि परि पोसह धरइ ।
जे नर नारि सुजण गुरु रम भणइ ते करउ वखाण ॥ २ ॥

५१. बनारसी विलास ।

रचयिता महाकवि बनारसीदास । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ६६. साइज ११।।×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३७–४० अक्षर । रचना संवत १७७१. लिपि संवत् १८२१.

मंगलाचरण—

परमदेव परनाम करि गुरुकों करूं प्रणाम ।
बुद्धि बल बरनों ब्रह्म के सहस अठोतर नाम ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

गुरु उपदेस सहज उदयागत मोह विलकलता छूटै ।
कहत बनारसि होइ करुना मय अचल अपैनिधि लूटै ॥

नगर आगरे में अगरवाल आगरो
गरगगोत आगरे में नागर नवलसा ।
संघ ही प्रसिध अभिराज राज मांननीक
पंचवाल नलना में भयो है कवलसा ।
ताके प्रसिद्ध लघु मोहनदेसघइनि,
जाके जिनमारग विराजित धवलसा ।
ताहि को सपूत जगजीव सुदिढ जैन,
बनारसी बैन जाके हिए में सबलसा ॥ १ ॥
समें जोग पाइ जग जीवन विख्यात भयो,
ज्ञान की मंडली में जिसको विकास है ।
तिन तैं विचार कीनां नाटक बनारसी का
आपछे निहारवे को आरसी प्रकास है ।
और काविधनी खरी करी है बनारसी नैं
सो भी एक क्रम सेती कीजैं ज्ञान भास है ।

ऐसी जांनि एक ठौर कीनी सब भाषा जोरि
ताको नांम धर्यो यो बनारसी विलास है।

॥ दोहा ॥

सत्रहसैं एकोत्तरे समैं चैत सित पाख।
दुआसौं पूरन भई इह वनरसी भाष ॥ १ ॥

संवत् १८२१ मिति फागुण सुदी ५ आदित्यवार लिखापितं पंडित जोधराज जी वृंदावती मध्ये। साह शम्भूराम वाकलीवाल आंवांका लिपि कृतं।

५२. बांशिठिया बोलरो स्तवन।

रचयिता मुनि श्री कान्तिसार। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १५. साइज ८x३॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६-३० अक्षर। रचना संवत् १७८३. विषय-सिद्धान्त

मंगलाचरण—

श्री गुरुवचनलही करी आगम नैं अणुसार।
बोल बांशिठिया मार्गनो, द्वार तणो सुविचार॥
बासठि बोल कह्या जिनैं, घन ते जिन चौवीश।
ते मांहैं बाशिठिया बोलत वन पमणीश॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

संवत् सतरैं त्रयाशिया वरसैं, नगर उदैयपुर मांहि रे।
नर नारि समझावण हेतैं एह त वन कर्यो उछांहि रे।
तपगच्छ मांहि सुर शिरोमणि श्री विजयक्षमा सुहरायो रे।
गुणवंता जयवंता वर तो जस अनैतेज जस वायो रे।
कान्तिसागर पंडित सुपसाया जसवंत सागरराय रे।
इम थुण्यो जिनवर सयल सुखकर तीर्थंकर चोवीस ए।
बासिठ बोलैं अमिय तोलैं जे कह्या जगदीस ए।
जसवंत सागर सुजस आगर, जिनेंद्रसागर शिष्य ए।
नवनिधि होम्यैं संघ नैं घर दिएं इम आसिश ए॥

इति श्री बांशिठिया बोलरो स्तवनं संपूर्णं। मुनि मोहनविजय वाचनार्थं।

५३. भरतबाहुबलि छंद।

रचयिता श्री कुमुदचन्द्र। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ६. गुटके नं० ५३ के ४० वें पृष्ठ से ४८ तक। प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २५–२८ अक्षर। रचना संवत १६०७.

मंगलाचरण—

पणविवि पद आदीश्वर केरा, जेह नामें छूटें भव फेरा।
ब्रह्म सुता समरू मति दाता, गुण गण मंडित जग विख्याता॥
वंदवि गुरु विद्यानंद सूरि, जेह नी कीर्त्ति रही भर पूरी।
तस पट्ट कमल दिवाकर जाणु, मल्लि भूषण गुरुगण बखाणु॥ २॥
तस पट्टे पट्टोधर पंडित, लक्ष्मीचन्द्र महाजश मंडित
अभय चंद्र गुरु शीतल दायक, सेहेर वंश मंडन सुख दायक॥ ३॥
अभयनंदि समुरु मनमांहि, भव भूला बल गाडे बांहि।
तेह तणि पट्टे गुणभूषण, वंदोंव रत्नकीरति गत दूषण।
भरत महीपति कुल मही रयण, बाहुबलि बलवंत विचक्षण॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

संवत् सोलसमें सत सहें, ज्येष्ठ शुक्ल पक्षं तिथि छहें।
कविवर वारें घोघानयरें, अति उत्तंग मनोहर सुघरें॥
अष्टम जिनवर ने प्रासादे, आंभलीये जिन गान सुसादें।
रत्नकीरति पदवी गुण पूरे, रचियो छंद कुमुद शशि सूरे॥

॥ कलश ॥

उत्कट विकट कठोर रोरगिरि भंजन सपवि,
विहत कोह संदोह मोह तम उपहरण रवि।
विजित रूप रति भूप चारु गुण कूप वसुत कवि,
धनुप पांच से पंचवीश वर उच्च तनु छवि॥
संसार सरित्पति पार गत बिबुध वंद वंदित चरण।
कहे कुमुद चन्द्र भुज बली, जयो सकल संघ मंगल करण॥ १॥

५४ भविष्यदत्त कथा।

रचयिता कविवर ब्रह्म रायमल्ल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ६७. साइज ७×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में १८–२१ अक्षर। रचना संवत् १६३३. लिपि संवत् १६६०.

मंगलाचरण—

स्वामी चन्द्रप्रभ जिणनाथ, नमौं चरणधरि मस्तकि हाथ।
लंछिन चण्यौ चंद्र माता सु, काया उज्जल अधिक उजासु॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

मूल संघ शारद शुभ गछि, छोडी चार कषाय निरमछि।
अनंत कीर्त्ति मुनि गुणह निधान, ता सुत नै सिख कीयो बखाण॥

ब्रह्म रायमल थोडि बुधि, अखिरपद की न लहै सुधि।
जैसी मति दीनै औकास, व्रत पचमी को कीयौ परकाश॥
केवल पाइ तहिने फुरै।
जो इह कथा सुणे दे कान, काल लहिविपहुचै निरवान।
सोलह सै तेतीसा सार, कातिग सुदी चौदसि सनिवार।
स्वाति नक्षत्र सिद्धि शुभजोग, पं डा ख न व्यापै रोग।
देस ढूंढाहड सोभा घणी, पुजै तहां आ ल मण तणी।
निमल तले नदी बहु फिरै, सुख स बसै बहु सांगानेर।
चहुं दिशि बाण्या भला बजार, भरे पटोला मोती हार।
भवन उत्तुंग जिनेश्वर तणा, सोभै चंदवा तोरण घणा।
राजा राजै भगवतदास, राजकंवर सेवहि बहु तास।
परजा लोग सुखी सुख बसें, दुखी दलिद्री पुरवै आस।
श्रावक लोग बसै धनवंत, पुजा करहि जयहि अरहंत।
उपराउ परी बैरन कास, जिहि अहिमिंद सुगे सुख वास॥
मगल श्री अरहंत जिणि, मंगल अनंतकीर्त्ति मुणिंद।
मंगल पढइ करई बखाण, मंगल ब्रह्म राइमल सुजाण॥

दूसरी प्रति का भिन्न पाठ—

अक्षिर मात जु भूलौ होय, पंडित जन सहु खमिज्यो माहि।
अति अयाण मति थोडी भई, कथा पंचमी व्रत की कही॥
बारबार नवि भणै पसार, जामै जीव दया व्रतसार।
जो नर जीव दया को पाल, रोग सोग न व्यापै काल॥

संवत १६६० वर्षे भादवा बुदी १ शुक्रवारे पोथी लिखी सा० जंता पाटणी दानुकाकी लिखी आगरा मध्ये साहिभीजहां की हवेलां श्री जलाखांकोरची की मध्ये वास जैता पाटणी।

५५. भक्तामरस्तोत्र भाषा ।

रचयिता श्री नथमल बिलाला और श्री लालचन्द । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ७१. साइज १०×४।। इञ्च । रचना संवत् १८२६. लिपि संवत् १८५३.

मंगलाचरण—

करम सघन वन दहन अगिनि कन तपत कनक तन दुति रवि करसी,
परम धरम मग परमत तम खग नमत सकल जग लखि सिव दरसी ।
प्रवल मदन अरि निज बल वसि करि वसु मद हरि करि सिव तिय परसी,
समवसरन थल सहित अतुल बल रिषभ सुजिन नम मन वच सिरसी ।।

प्रशस्ति—

यह भाषा रचना करो नथमल निज पर हेत ।
पढैं सुनैं जे नर सदा ताहि अखै सुखदेत ।। १ ।।
हूंवड वसं मझार वनिक पृथिवी सुनामधर,
सीलवती गुनग्राम तास चंपासु नारिधर ।
जिनचरणांवुज भवर तुल्य ताके सुत सोहै,
रायमल्ल गुनगेह व्रती देखत मन मोहै ।। १ ।।
श्री वादिचन्द्र मुनिराज के प्रनमि चरन जुग जोरि कर ;
कीनी कथा इसतवन की पढत सुनत सुख होय ।। २ ।।
संवत् सोलहसैं परधान तापै सरसठ वरष प्रमांन ।
मास असाढ स्वेत पख सार, तिथ पांचै जानौं बुधवार ।। ३ ।।
सिधु नदी के तट विषैं ग्रीवापुर अभिराम ।
तुंग कोट जुत तहं लसै ससि प्रभ जिनकौ धाम ।। ४ ।।
ब्रह्म कमंसी वचन तैं रायमल्ल ब्रह्मचार ।
भगतामर की कथा वर वरनी मति अनुसार ।। ५ ।।
जिहि विधि भाषा रचना भई, सो अब कथन सुनौं चित दई ।
कारन विन कारज नहिं होय, सो अब कथन सुनौं बुध लोय ।।
नगर आगरे मांहि वसै जैसिहं पूननीकौ,
तहां जेठमल साह भगत सोभै जिनजी कौ ।
तासु तनुज गुणवंत संत जुग कुल सुख दायक,
जेठो सोभाचदं चंद गोकुल लघु लायक ।।

खंडेलवाल वर वंस मैं गोत बिलाला जग विदित।
अन्नोदक कारन पायकैं बसै भरतपुर में सुखित ॥
नंदन सोभाचन्द को नथमल निपट अयान।
छंद कोस पिंगल तनौं ग्यान अंस नहिं जान ॥
अन्नोदक के जोग तैं सो हीरापुर आय।
सुख सौं तहं निवसत भयौ कछु इक काल गमाय ॥
तहां मिल्यो कारन भलो पुन्य तनैं परभाय।
नगर करौली सौं जहां पंडित लाल सु आय ॥
सकल कला में निपुन अति कविता करत असेस।
नथमल के ऊपर सदा करत सनेह विशेष ॥
भगतामर जी की कथा तिन जिन भवन मझार।
बांची तब सुनि के भयो सो मन हरष अपार ॥
सुनि नथमल वचन कौं उर में कियो विचार।
मूल ग्रंथ अति कठिन है पंडित करै उचार ॥
लालचन्द सौं तब कही नथमल हर्षित होय।
जौ याकी भाषा बनै तो समझै सब कोय ॥
जौ लग रचिये छंद कौं अर्थ सरल सुभसार।
जो लौहैं सुभ ध्यांन की प्रापति सुख दातार ॥
निज पर हेत विचार कैं नथमल लाल विशेष।
दोऊ मिलि भाषा रची रायमल्ल कृत देख ॥
संवत अष्टादश सत जांन तापैं पुनि उनतीस प्रवान।
जेठ सुकल दशमी बुधवार पूरन कथा करी सुखकार ॥
परमदेव इस जगत मैं आदि रिषभ अवतार।
जैवंतो वरतौ सदा भवजल तारनहार ॥
भवजलतारनहार कर्मभूविधि दरसाई।
दयासिंधु जग तार सकल जीवन सुखदाई ॥
सुखदाई संसार में कथित एक जिन को धरम।
नथमल लाल सुत मात है देहु भगति अपनी परम ॥

इति श्री भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र काव्यछंद कथा संपूर्ण। मिति माह सुदी १४ शुकवार संवत् ..३ का पूरी लिखी करोलीदास।

५६. मृगावती चरित्र।

रचयिता श्री समयसुन्दर गणि। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ३०. साइज ६॥×४॥ इञ्च। रचना संवत् १६६८. लिपि संवत १६८७. प्रति जीर्ण हो चुकी है। जगह २ उसके अक्षर मिट गये हैं।

प्रशस्ति—

श्री खरतरगच्छ कमलदिणंदा युगप्रधान जिनचंदा वे।
प्रथम शिष्य श्री पूज्याकरी, सकलचन्द्र गुरु मेरा वे।
तसु प्रसाद किया ग्रंथ पूरा, प्रगट्या सुजसपडू राखे।
सोलइसइ अठसठा वर्षइ, हुई चउपई घणे हरणइ वे।
मृगावती चरित्र कह्यो तिहुं खंडे, घणे आणंद घामंडइवे।
मोहण वेल चउपई सुणतां, भणतां नइ वलि गुणतांवे।
समयसुंदर घइ संघ आसीस, रिद्धि वृद्धि सुजगीसावे।

संवत् १६८७ कार्त्तिक सुदी ५ शनिदिने श्री मालपुरा मध्ये श्री खरतरगच्छे वा० श्री गुणरंगगणि शिष्य पं० श्री रत्ननंदिगणि शिष्य मुख्य पं० सुमतिसेन गणिना लिखितं।

५७. माधवानल चौपई।

रचयिता श्री कुसललाभ गणि। भाषा—हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ४१. साइज ७×७ इञ्च। पद्य संख्या ५५१. रचना संवत् १६१६ लिपि संवत् १६६०. लिपि कर्त्ता श्री जीता पाटणी।

मंगलाचरण—

देवी सरसति देवी सरसति, कासमीर कमलावती।
ब्रह्मपुत्र कर वीणा सोलहइ, मोहन तरु वर मंजरी॥

प्रशस्ति—

संवत सोल सोलोतरइ, जेसलमेर मंझारि।
फागुण सुदि तेरसि दिवसि, विरचि आदित्यवार॥
गाहा दूहा चउपई, कवित कथा संबंध।
काम कंदला कामिनी, माधवानल संबंध।
कुसल लाभ वाचक कहइ, सरस चरित्र सुपसिध।
जे वाचइ जे सांभलइ, तीया मिलइ नवनिधि।
गाथा साढी पांचसइ, ए चउपइ प्रमाण।
तेह सुणंता सुख दीयइ, जे हुई चतुर सुजाण।

रावल मालि सुपाट धरि, कुंवर श्री हरिराज।
विरचिएह सिणगाररसि, तास कतुहल काज।

५८. मिथ्या दुकड।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास। भाषा हिन्दी। पद्य संख्या २३. लिपि संवत् १७६२.

मंगलाचरण—

आदि जिणेसर भुवि परमेसर सयल दुख विणासणो।
भुवि कमल दिणेसर मोह तिमर हर तत्त्व पदारथ भासणो॥ १॥
हूँ विनती करुं हवें आपणीय।
तूं त्रिभूवन स्वामी सुणि धणीय॥
जे पाप करचा ते कहूँ अनुभ्क।
ते मिथ्या दुकड होउ नमम्क॥ २॥

अन्तिम पाठ—

जिनवर स्वामी मुगति हिं गामी सिद्धि नयर मंडणो।
भव बंधण खीणो समर सलीणो, ब्रह्म जिनदास पाय वंदणो॥ १॥

५६. यशोधरचरित्र।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास। भाषागुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या २५. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर। लिपि संवत् १८२६. पंडित रूपचंदजी के पढने के लिये ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गयी।

मंगलाचरण—

मुनिसुव्रत जिन मुनिसुव्रत जी नतवुं ते सार।
तीथकर जे वीसमुं वांछित बहु दान दातार॥
सारदा स्वामिणि वलीस्तवुं, जिमिबुद्धि सार हुं वेगी मागुं।
गणधर स्वामिनमस्करूं, वली सकलकीरति गुरु भवतार॥
तास चरण प्रणमीनें, करें सुरासुर सार॥

अन्तिम पाठ—

राय यसोधर २ तणुं जे रास जीवदयानुं पीहर।
पाप मिथ्यात निकंदसार, रागमोह विहंडणुं॥
गुणहतणुं भंडार सुणिइं, जेनर अनुदिन भणें
हिय मैं धरी बहुभाव, ब्रह्म जिणदास इम परिभणें
तेहनें शिवपुरे ठाम॥

इति श्री ब्रह्म जिनदास विरचिते श्री यशोधरस्वामीरास संपूर्णः। संवत् १८२६ वर्षे आषाढमासे कृष्णपक्षे नवम्यां तिथौ रविवासरे पंडित रूपचन्दजी तस्य वाचनार्थे उदयपुरवरे।

६०. यशोधरचरित्र।

रचयिता श्री लक्ष्मीदास। भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या ४६. साइज ११×५ इञ्च। रचना संवत् १७८१. लिपि संवत् १८०१.

प्रारम्भिक मंगलाचरण—

आदि जिनंद नमूं सदा त्रिजगत गुरु जिनराय।
सोभै महिमा अनंत जुत धर्म राज पति थाय॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

राव यसोधर की कथा अैसी विधि भाषी।
भवि सुणज्यौ इसकूं सदा सब थिर चित राखो॥
जीव दया कै कारणै चरित्र सु कीन्हूं।
मेरी बुधि माफिक इहां, अखियर सुभ लीन्हूं॥
जे सुणसी इसकू सदा मन वच सुध काई।
ते जग कै सुख पायकै पीछे शिव जाई॥
अक्खर जो चूक्यौ जु हौं बुध सुध करि लीज्ये।
श्रुत की विधि जाणू नहीं, फोर रोस न कीज्यो॥
राजा जयहिं राजई, चिरतसिंघ कौ नंदौ।
तेज प्रताप घणूं यथा मध्यांन दिनंदौ॥
सांगेनेरि सुथान में मूलनाईक थांनौ।
भट्टारक देवेन्द्र कीरति, की जहिं आनो॥
पंडित लिखिमीदासजी तिन करि कीन्हू।
रहिस्य सकलकीरति महा मुनिवर कौ लीन्हूं॥
पद्मनाभ काईच्छ कौ कछु इक अनुसारो।
लीन्हू है इस ग्रन्थ मैं भवियण सुखकारो॥
पूरण कीन्हौ भाव सों, तामैं सुभ वेरा धारो।
लागत है सदा, भवि जीवनि केरां॥
दया कारणै चावसों निति सुणि जे भाई।
राव यशोधर ता विना नांना गति पाई॥

दिल्ली सहर विषै भलो जैसिंहपुर जानुं ।
धर्म संथान समांनयां अनि थांनन मानूं ॥
सुन्दर नंद खुस्यालए रचना ठहरानी ।
भव्य धरो निज चित्त मैं, भगवन की बांनी ॥
संवत संतरासै भले अरु और इक्यासी ।
जे पढिसी सुणिसी सदा, ते ही सुख पासी ॥
कातिक षष्टी भावती, ससि कै उजियारै ।
भव्य जीव सुणि जे पढ़ें, वें ही विसतारै ॥
जैन धर्म परभाव सौ सबही सुख होई ।
तातैं धम सुधारिहैं तौ ता सम कोई ॥

अथ शुभ संवत्सरेस्मिन् श्रीमन्नृपति विक्रमादित्यराज्यात् संवत् १८०१ का वर्षे शाके १६६४ प्रवर्त्तमाने कार्त्तिक मासे कृष्णपक्षे नवम्यां बृहस्पतिवासरे असलेखा नक्षत्रे जिहांनाबादस्थ जैसिंहपुरामध्ये श्री महावीर चैत्यालये पातिसाह श्री महम्मदसाह विजयछत्रे महाराजाधिराज श्री सवाई ईसरीसिंहजी राज्ये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक जी श्री १०८ श्री देवेन्द्रकीर्त्तिजी तत्पट्टे भट्टारक श्री १०८ श्री महेंद्रकीर्त्तिजी तदाम्नाये आचार्यजी श्री नेमीचन्द्र तत् शिष्य पंडित श्री रूपचंदजी तत् शिष्य पंडित दयारामेण इदं पुस्तकं हस्तेन लिखितं ।

६१. यशोधर चौपई बंध कथा ।

मूलकर्त्ता कायस्थ श्री पद्मनाभ । भाषाकर्त्ता साह लोहट । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १३३, साइज ६×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २३-२६ अक्षर । रचना संवत् १७२१ लिपि संवत् १८०३.

मंगलाचरण—

तीर्थंकर जिन बीसमौ मन मुनिसुव्रत वंदि ।
ता समया की या कथा हिरदै धरि आनंद ॥

प्रशस्ति—

बाव नंधर खैराड महंत, हाडोती वर देस कहंत ।
तामै गढ बूंदी सुभ थांन, इंद्रपुरी सम सोभैं आंन ॥
महाराज राजा सिरताज, पतिसाही थांभनदधिपाज ।
राव रतन गुन रतन समान, ... सुरभांन ।

दया सील सागर ध्रु ममेर, अरि धरि जिंत कांयौ जुग जेर।
तिनकी महिमा कही न जाय, चहुवान मुकट मनिराय।
तिन सुत त्रिलोक समान, गोपीनाथ वड़े भ्रम ग्यांन।
जिनकै दस सुत भु'डिगयाल, सत्र सकल धो धरि अरिकाल।
निवलेराम ध्रपण समरथ, सवल उथ्थ पणहार सुहथ।
पतिसाही पतिभखणहार, हींदुव भ्रम आगल भुज भार।
राजनीति निति पालनहार, विक्रम भोजराज अवतार।
चौदा विद्या जांन प्रवांन, सुरवीर दातां गुर कीन।
जिन लखि वैरी धीरन धरै, दसूं दिसा नृप सेवा करै।
तास तखत वर वखत विलंद, भावस्यंघ प्रतपै जिमचंद।

॥ कवित्त ॥

मेर अचल ध्रुव अचल अचल सूजैतिराज घर,
तेज पुंज रवि ते मन पहुवी हमो प्रसिध पर।
गुण गंभीर वरवीर धीर सागर रत्तनागर,
रतन वंस अवतंस अंस सत्र सल सुत नागर॥
श्री भावस्यंघ हिंदवानपति छत्र तिलक सुभ सिरधर्यौ।
संभरि नरेस रानैं तखत वखत दसुं दिसंड धर्यो॥ ८॥
मही अडोल मेर सम राव, दिन दिन वधौ चौगनो आव।
चदं सूर धर सेष महेस, तौ लग राज भोगवो देस॥ ९॥
घर घर वृधि वधाहोई, कांन पड्यौ नंविसुन जे कोई।
तिनकै राज सुखी सब लोग, जानैं पांन फूल रस भोग॥ १०॥
वाग वावड़ी महल अपार, मैडी छाजा जाली सार।
च्चार तलावै चहुं दिसि कुंड द्वै दुरग विचि वसै सहूंस॥ ११॥
कौ लग सोभा कहुं श्रगार, गली गली सौभे वाजार।
अन धन कपडौ चीर कपुर, भरि वेचै ले मौलि जरूर॥ १२॥
सिखर वंध देवल धुज सीस, हौलि वुलावै लखि सुर ईस।
इन्द्र पुरी तैं अधिक अपार, वूंदी गढ देखौ स्वर सार॥ १३॥

॥ सवैया ॥

वूंदी इंद्रपुरी जखिपुरी किकुवेर पुरी,
रिद्धि सिद्धि भरी द्वारिका सी धरी धर मैं।

धौलहर धाम घर घर में विचित्र वांम,
नर कांमदेव केसे सेवै सुखसर मैं ॥
वापी बाग वारुण बजार वीथी, विद्या वेद विबुध विनोद ।
वानी बोलैं मुखि नरमैं, तहां करै राज राव भावस्यंघ महाराज ॥
हिंदु धर्म लाज पाति सही आज कर मैं ॥ १३ ॥

॥ चौपई ॥

श्रावक लोग वसै धर्म वतं पुजाकरै जपै अरिहंत ।
तिनकौ सवक लोहट साह, करी चौपई धरी सुभ लाह ।
वसं वघेर वाल भोवाल, दुगैरचा वरगो भवि साल ।
धरम धुरंधर धरसौं धीर, ता सुत तीन महा वरवीर ।
हीरौ सुन्दर वड़े सुजान, लघु लोहट वुधि कौनिधान ।
श्री जिनदेव सगुरकौ दास, कीनौ भाषा ग्रन्थ प्रकास ।
लघु दीरघ गण अगण विचार मात छंद विस्तार ।
सब्द शास्त्र कौ लह्यौ न भेद, तातै वुधि मति करौ न खेद ।

× × × × × ×

वरषा रिति आगम सुभ सार, मास असाढ तीज गुरवार ।
पाख उजांल पुरी भई सरल, अरथ भाषा निरमई ॥
सवंत सत्रासै इकईस करी चौपई फली जगीस ।
मन अभिलाष संपूरन भए, जिन गुरु चरन सीस धरि लए ॥

इति श्री राव जसोधर की चउपई वंध कथा संपूर्ण । ग्रन्थ कर्त्ता श्री पद्मनाभ दृतनुसारेण साह लोहट दुगरचौ गोत्रे धर्मा सुत वघेरवाल वासिगढ वूंदी राजराव श्री भावसिंहजी विजयराज्ये ।

६२. योगीरासो ।

रचयिता पांडे श्री जिनदास । भाषा (पद्य) । पत्र संख्या २. साइज ५।।×४।। इञ्च । पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४६–५० अक्षर ।

मंगलाचरण—

आदि पुरुष जो आदि जु गोतम आदि जती आदिनाथौ ।
तास परंपरहुवा मुनिवर दिगंवर सहतांणी कुंदकुंदाचारिजगुरुमेरा ॥१॥

अन्तिम पाठ—

हूं बलिहारी चेतनकेरी सोइक चित्तमनि ध्यावै।
छोडि अचेतन क्युं पडा रे भाई आपण सिवपुर जावै ॥ १ ॥
जोगीरासौ सीखौ रे भाई श्रावग दोष न कोइ दीज्यौ।
जो जिणदास त्रिविधि त्रिविधिकरि सद्धिह सुमिरण कीज्यौ ॥ २ ॥

६३. रत्नपालरासो।

रचयिता श्री सुरचंद। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ६३. साइज १०×३॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर। रचना संवत् १७३२. लिपी संवत् १८२३. प्रति पूर्ण है लिखावट सुन्दर है।

प्रारम्भिक मंगलाचरण—

श्री वृषभादिक जिन नमु', वर्त्तमान चोवीस।
श्रीमधर प्रमुखां नमु', विहरमानवली वीस ॥ १ ॥
वृषभसेन गौतम नमु', गणधर थया गुणवतं।
चउदेसिं ग्रावन नमु', मोटा महिमावतं ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

गछ दिगंबर गीरुया गौतम, इद्र भूषण सूरी रायरे।
तास सीष्य श्री पतिब्रह्मचार, जिनवर भक्ति सुदायरे ॥ १ ॥
कथा कोस ग्रंथ जो ईनें, रच्यो रास सीरदार रे।
सुरचंद भैया नें आदर, एह प्रबंध उदार रे ॥ २ ॥
अल्पबुधि श्रावक अवतार, पंडित सुर ए नाम रे।
गुरुपसायें बुधि प्रकासी, सज्जन सुणि सुखगांमेंरे ॥ ३ ॥
संवत सत्तरह बत्रिसा वर्षे, शुभ मूरत शुभ वाररे।
आसोज सुदि ईग्यारस रविदिन, वर्द्धनपुर मझार रे ॥ ४ ॥
रत्नपाल मूंनीना गुण गाथा, मन नाम मनोरथ फलीयारे।
अनेक देश देसनी देशी, रास उत्तम में किधोरे ॥ ५ ॥
कवियण कहें में पुरो किधो, त्रिजोखंड रसाल रे।
विनति करुहुं बुधि जन साथैं, शुद्ध करो सुविसालरे ॥
भणतां गुणतां नें सांभलता, सुणतां हर्ष अपार रे।
गुण गातां वली गुणवर्त केरा, वरत्यौजयजयकाररे ॥ ६ ॥

इति रत्नपाल श्रेष्टिनो रास संपूर्णम्। संवत् १८२३ वर्षे पोष वुदि १३ सोमवारे श्री मूलसंघे सरस्वति गच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्विये श्री सुरतबंदिरे आदीश्वरचैत्यालये भट्टारक श्री विद्यानंदजी तत्पट्टे भट्टारक जी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्ति जी लिखापितं।

६४. राजुल पच्चीसी।

रचयिता लालचन्द विनोदीलाल। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ४. साइज ६×४ इञ्च। पद्य संख्या २५.

मंगलाचरण—

प्रथमहि सुमरुं जादौराय, पुनि सारद हि मनांवस्यौं जीव वे।
वंदौं अपने गुरु के पाय, राजमती गुण गायस्यो जीव वे॥ १॥

अन्तिम पाठ—

इह लालचन्द विनोद गावे, सुनत सब जन गह वरौ।
राजुल पति श्री नेमि जिन सबै संघ कौ मंगल करौ॥

६५. रात्रिभोजनकथा।

रचयिता ब्रह्म श्री वीर। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ७. पद्य संख्या ८२.

मंगलाचरण—

श्री गुरुभक्ति करो मन लाय, वचन सुणी मन उलटो थाय।
रात्रि भोजन कहुं निहाल, सांभल ज्यो सहु बाल गोपाल॥

अन्तिम पाठ—

भोला कांई भ्रमें पडो जीव्यो जू ए महार।
रात्री भोजन परहरो जेम पावो भवपार॥ १॥
मूल संघ मंडल मणी सरस्वती गच्छे राय।
भट्टारक शुभचन्द्र शिष्य ब्रह्म वीरजी गुणगाय॥ २॥

६६. रात्रिभोजनकथा।

रचयिता श्री किशनसिंह। भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या २६. साइज ६×४ इञ्च। पद्य संख्या ४१५.

मंगलाचरण—

समोसरण सोभा सहित जगतपूज्य जिनराज।
नमौं त्रिविध भवदधिनकौ तरण विरुद जिहाज॥ १॥

जिन मुख अंबुज खरी, स्याद्वाद मय सोय।
ता स्वरसुति कौं भावधरि, नमौं सकल मद खोय ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

माथुर वसंतराय बोहरा को परधान।
संगही कल्याणदास पाटणी बखानिये।
रामपुर वास आकौं सुत सुखदेव सुधी,
ताकौं सुत किस्नसिंह कविनाम जानिये ॥
तिहिं निसिभोजन त्यजन व्रत कथा सुनी,
तांकी कीनी चौपई सुआगमप्रमाणिये।
भूलि चूकि अच्छरघर जौं वाकौं बुधजन,
सोधि पढि वीनती हमारी मनि आंनिये ॥ १ ॥

६७. वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा।

भाषा श्री पं० दौलतराम भाषा हिन्दी (गद्य)। पत्र संख्या १३४, साइज ६×४॥ इञ्च। गाथाओं के ऊपर ही भाषा में अर्थ लिखा हुआ है।

मंगलाचरण—

दोहा

इंद्र मुकट के रतन की जोती हुई जलधार;
ता करि सिंचे पद कमल जिनके भव तप हार ॥ १ ॥
केवल बोध प्रबोध करि परकासे सहु तत्व।
सुकल सु ध्यान विधान करि, टारे सकल अतत्व ॥ २ ॥
श्रावक अरु जति धर्मकौ, दीयो जिह उपदेस।
सुरनर मुनीवर गणधरा, ध्यावैं जाहि असेस ॥ ३ ॥
ताहि प्रणमि श्रावक धरम, भासौं मति अनुसार।
श्रेणिक प्रति जो प्रगट, भाख्यौ जौं गणधार ॥ ४ ॥

अन्तिम पाठ—

अब तुम सुनहु भव्य इक वैन, जा विधिटिवा भयौ सुख दैन।
उदयापुर में कीयो बखान; दौलतिराम अनन्द सुत जांन ॥
वाच्यौ श्रावक व्रत विचार, वसुनन्दी गाथा अविकार।
बोले सेठ वेलजी नाम, सुनि नृप मंत्री दौलतिराम।
टबा होय जौं गाथा तनौं, पुन्य उपजै जियकौं घनौं।

मुनि के दौलति वेल सु वैन, मन धरि गायो मारग जैन।
नंदौ विरधौ जिन मतसार, सुखपावो चउ संघ अपार।
दौलति वेल लहो निज बोध, होहु होहु सब को प्रतिबोध।

संवत् १८०८ कार्तिक मासे शुक्लपक्षे तिथौ १४ भौमवासरे उदयपुर मध्ये सेवकालुवालालजी सुख जी की बहु बाई मीठी तथा राजबाई ने लिखा।

६८. व्रतकथाकोष।

रचयिता श्री खुशालचन्द काला। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ११४. साइज १२×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर। रचना संवत् १७८७. लिपि संवत् १८२०.

मंगलाचरण—

आदिनाथ वंदू जिनराय, कर्मकलंक रहित सुकथाय ॥ १ ॥
धनुष पंचसै जाकी काय, वृष लक्षण सोभै अधिकाम।
वर्द्धमान वंदो जिनदेव, प्रियकारिणी मात सुत एव ॥ २ ॥
सप्त हस्त तन हेम समान, सिद्धारथ नृप को सुत जान ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

॥ दोहा ॥

दक्षिण दिसि की कूंट में जो सु कह्यौ आवास।
तिस मंदिर मांही रहै पंडित लिखमीदास ॥ १ ॥

॥ सवैया ॥

देव इन्द्र कीरति भयेजु मूलस्यंघ भट्टारक कौ पदअ जाकौ सोहितु है।
पूजारु प्रतिष्ठा करवाई अतिसर्मकार मोहनी सुमूरति लखेतैं मोहितु है॥
जाही के सुगच्छ मांहि पंडितश्रीय जु दास बांनी कामधेनु तैं सुग्यान दोहि इतु है।
खिमावान ग्यानवान पंडित विवेकवान राति घोस आगम विचार टोहि इतु है ॥२॥

× × × × ×

असे लिखमीदास ढिग मैं कुछ पढ्यो सुग्यान।
पठन कीयो मो बुध्य लौं वै तो ग्यांन निधांन ॥
तिनिहीं के उपदेस तैं भाषा सार बनाम।
श्रुत सागर ब्रह्मचार कौ सुभ अनुसार सुनाय ॥

॥ चौपई ॥

सांगानेर थकी इकबार, मैं आयौ दिल्ली सुमझारि।
श्री जिनराज तणीं बरसेव, करिहूँ सुखदा मनवच एव ॥

× × × × ×

और सुणौं आगै मन लाय, मैं सुन्दर कौ नदं सुभाय।
सिह तिया अभिधा मम माय, ताहि कूंखि मैं उपजू आय।
चदं खुशाल कहै सब लोक, भाषा कीनी सुणत असोक।

॥ दोहा ॥

एकसात अठसात लखि संवत सुख दातार।
फाग अरिष्ट विषैं जु थिति चारित नाम विचार॥
सतरासैं रु सित्यासिये फागुण तेरसि सार।
कृष्ण पक्ष मांहि लखो उत्तम मंगलवार॥

मिती जेठ शुक्ल १३ संवत् १८२० लिखापितं पंडित जोधराजजी भूरामल लिपिकृतं बूंदी ार मध्ये।

६. वैद्यमनोत्सव।

रचयिता श्री केशवदास नयनसुख। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ३६. साइज १२×५ इञ्च। प्रत्येक पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २२–२५ अक्षर। रचना संवत् १६४६. लिपि संवत् १७७४.

वैद्य मनोत्सव ग्रंथ यह कह्यौ सकल लिज आनि।
दुखकंदन पुनि सुख करन आनंद परम निधान॥ १॥
कंसराज सुत नयनसुख कह्यौ ग्रंथ अभिकंद।
सुभग सहज सीहजंद मैं अकबर राजनरेंद्र॥
अंक वदे रस मेदनी शुक्ल पक्ष शुभ मास।
तिथि दुतिया भृगुवार पुनि पुख्यचन्द्र सुप्रकास॥

संवत् १७७४ जेठ सुदी ११ को श्री दयारामसोनी ने ग्रन्थ की प्रतिलिपी बनायी।

०. समयसारकलशा भाषा।

मूलकर्त्ता आचार्य अमृतचन्द्र। भाषाकार श्री राजमल्ल। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ५३. इज ११×४॥ इञ्च। केवल दसवें अध्याय की प्रति लिपि है। प्रति की हालत विशेष अच्छी नहीं है। लिपि वत् १६५३, लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १६५३ फागुण वुदी १४ शनिवासरे गढरणस्थंभ मध्ये चन्द्रप्रभचैत्यालये श्री मूलसंघे

वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्ति आम्नाये खण्डेलवालान्वये शेरपुरा को श्राविका लिखाइत मुक्तावली व्रतोद्यापनार्थं उपदेश बाई धनाई। लिखतं पांडे कैसोसाह मान्या सुत संगही पूरा संगुणदत्त को देहुरा को पांडे लिखी।

७१. समयसार नाटक।

रचयिता महाकवि बनारसीदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ११८. साइज १०×५६ इञ्च। रचना संवत् १६६३.

प्रशस्ति—

अब यह बात कही है जैसे, नाटक भाषा भयौ सु अैसें।
कुदंकुदं मुनिमूल उधरता, अमृतचन्द्र टीका के करता।
समैसार नाटक सुखदानी, टीका सहित संसकृत बानी।
पंडित पढै मूढमति बूझै, अलपमती कौं अरथन सूझै।
पांडे राजमल्लजिनधर्मी, समैसार नाटक के मर्मी।
तिही गरंथ की टीका कीनी, बालाबोध सुगमकरिदीनी।
इहि विधि बोध वचनिका फैली, समै पाइ अध्यातम सैली।
प्रगटी जगत मांहि जिनवानी, घर घर नाटक कथा वखानी।
नगर आगरे मांहि विख्याता, कारन पाइ भये वहु ज्ञाता।
पंच पुरुष अति निपुन प्रवीने, निसिदिन ग्यांन कथा रस भीने।

॥ दोहा ॥

रूपचंद पंडित प्रथम, दुतीय चतुर्भुज जांन।
तृतीय भगौतीदास नर, कौरपाल गुणधाम॥
धरमदास ए पंच जन, मिलि बैठहि इक ठौर।
परमारथ चरचा करै, इन्हीं के कथन ने और॥
कवहों नाटक रस सुनहि, कवहों और सिधंत।
कवहों बिग बनाई कै, कहैं बोध वितंत॥
बास हमारा टोडो जांनि, सांगनेरि बसे पुनि आंनि।
फेर जिहांनाबाद मझारि, आप रहै जैस्यंध पुरिसार॥
महावीर को मन्दिर जहां, सकल पंच जन आवै तहां।
चित कौं रागरु धरम धरु, सुमति भगौती पास।
चतुर भाव थिरता भए, रूपचंद परगास॥

इहि विधि ज्ञान प्रगट भयौ, नगर आगरे मांहि।
देस देस महिं विस्तर्यौ, मृषा देस महिं नांहि॥

॥ चौपई ॥

जहां जहां जिनवानी फैली, लखै न सो जाकी मति मैली
जाकै सहज बोध उतपास, सो ततकाल लखै यह बात॥

॥ दोहा ॥

घट घट अन्तर जिन बसैं, घट घट अंतर जैन।
मत मदिरा के पान सौं, मतवाला समुझै न॥

॥ चौपई ॥

बहुत बढाइ कहां लौं कीजैं, कारज रूप बात कहि लीजै।
नगर आगरे मांहि विख्याता, बनारसी नाम लघु ग्याता।
तामैं कवित कला चतुराई, कृपा करिहिं ए पांचौ भाई।
पंच प्रपंच रहित हिय खोलि, ते बनारसी सौं हंसि बोलै।
नाटक समैसार हित जी का, सुगमरूप राजमल टीका।
कवित बद्ध रचना जौ होइ, भाषा ग्रंथ पढे सब कोइ।
सोरहसैं तिरानवे बीते, असू मास सित पक्ष वितीते।
तिथि तेरसि रविवार प्रवीना, ता दिन ग्रन्थ समापत कीना।

॥ दोहा ॥

सुख निधान सक बंध नर, साहिब साकिरान।
सह समाहि सिर मुकुट सम, साहिजहां सुलतान॥
जाके राज सुचैन सौं, कीनौ आगमसार।
ईति भीति व्यापी नहीं, यहु उनकौ उपगार॥

॥ सवैया ॥

तीनिसे दसोत्तर सोरठ दोहा छंद दोऊ जुगल सै पैंतालीस इकतीसा आनि है।
छियासी सु चौपैए सैंतिस तेईस सवैए बीस छप्पए अठारह कवित बखानें है॥
सात फुनिहां अडिल्ल च्यार कुंडलिए, मिलै सकल सातसैं सताईस ठीक ठानें है।
बत्तीस अछर के सिलोक कीने ताके, लखै छंद संख्या सतरहसैं सात अधिकाने हैं।

॥ दोहा ॥

समैसार आतम दरव, नाटक भाव अनंत।
सोह आगम नाम मैं, परमारथ विरतंत ॥

इति परमागम समयसारनाटक नाम सिद्धांत पूर्णम्।

७२. समयसारनाटक भाषा।

भाषाकार श्री रूपचंद। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या १३७. साइज १२॥×५॥ इञ्च। पद्य संख्या ७२४. महाकवि बनारसीदास द्वारा रचित समयसार नाटक के पद्यों का गद्य में अर्थ लिखा गया है। रचना संवत् १७००.

मंगलाचरण—

श्री जिन वचन समुद्र कौ, को लग होय बखान।
रूपचन्द तौहुं लखै, अपनी मति अनुमान ॥

प्रशस्ति—

पृथ्वीपति विक्रम के राज मरजाद लीन्है,
सत्रहसै बीते परिठांनु आव रस मैं।
आसू मास आदि धौंसु संपूरन ग्रन्थकर्न्हौ,
वारतिक करिकै उदारससिमै।
जौ पै यहु भाषा ग्रन्थ सबद सुबोध या कौ,
ठौहू बितु संप्रदाय नावैं तत्व बस मैं।
यातें ग्यान लाभ जांति संबनि कौ बैन मानि,
बात रूप ग्रन्थ लिख्ये महा शांत रस मैं ॥ १ ॥

खरतर गच्छनाथ विद्यमान भट्टारक,
जिनभक्ति सूरि जू के धर्मराज धुर मैं।
खमसाखमांडि जिनहर्ष जू वैसगी,
कवि शिष्य सुखवर्द्ध शिरोमनि सधम मैं।
ताके शिष्य दयासिंध गणी गुणवंत,
मेरे धरम आचारिज विख्यात श्रुत धर मैं।
ताकौ परसाद पाइ रूपचंद आनंद सौं,
पुस्तक बनायो यहु सोणगिरि पुर मैं ॥ २ ॥

बाचत पढत अब आनंद सदा एकसौं,
संगि ताराचंद अरु रूपचंद बाल के ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

देसी भाषा कौ कहै अरथ विपर्यय कौन।
ताकौ मिछा इक्क में सिद्ध सखी हम कीन ॥ ४ ॥

७३. सम्यक्त्व कौमुदी कथा ।

भाषाकार श्री जोधराज गोदीका। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ६१. साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३२ अक्षर। रचना संवत् १७२४. लिपि संवत् १७६३.

मंगलाचरण—

परम पुरुष आनंदमय चेतनरूप सुजान।
नमूं शुद्ध परमात्मा जग परकासक भान॥
परम जोति आनंदमय, सुमिति होइ आनंद।
नाभिराज सुत आदि जिन, वंदौ पूरण चंद॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

मूलग्रन्थ मैं ज्यों सुनी कथा कहै कवि जोध।
सोई ए भाषा सही दायक दरसन बोध।

॥ चौपई ॥

मिश्र एक हरि नाभ सुनी पढ्यौ छंद व्याकरण प्रमांनि।
ज्यौतिष ग्रन्थ पढ्यौ बहु भाय, मित्र जोध कहै सुखदाय॥

॥ दोहा ॥

तिनहि पढायो जोध को मूलग्रन्थ परवांन।
ता पर भाषा गुन कीयौ जोधराज सुख थांन॥
पंडित चतुर सुजान है इह जोध हरनाभ।
ताकी संगति जोध को भयौ सासतर लाभ॥
परम प्रजा पालै सदा सब भूपनि सिरमौर।
रामसिंह राजा प्रगट ता सम नांही और।
ताकै राज सुचैन स्यौं कियो ग्रंथ इह जोध।
नाम समकिति कौमुदी, दायक केवल बोध।

सांगानेर सुथान में देश ढुढांहडि सार।
ता सम नहि को और पुर, देखे सहर हजार॥
अमर पूत जिनवर भगत, जोधराज कवि नाम।
वासी सांगानेर को करी कथा सुखधाम॥
धर्मदास को पूत लघु जाति लुहाड्यौ जोय।
नाम कल्याण सु जानिये कवि कौ मामौ सोय॥
ताके पढिवें कारनै, कियो ग्रन्थ यह जोध।
नाम समकित कौमुदी, दायक केवल बोध॥
इहै समकित कौमुदी, जो नर पढै सुभाय।
सो सुर नर सुख पाय कै अनोकरमि सिव जाय॥

॥ चौपई ॥

संवत सत्रासै चौबीस फागुन बुदि तेरस शुभ दीस।
सुकरवार सो पूरन भई इहै कथा समकित गुन ठई॥

॥ दोहा ॥

ग्यारासै अठहत्तरि इहै छंद चौपई जान।
कह्यौ कौमुदी ग्रंथ कौ जोध सुमति अनुमान॥

महाराम के हेतो सौं राखे अपने पास।
काम खजानां कौ दयौ नथमल कौं सुखरास॥

पुनि भाषा रचना विषै धार्‌यो मैं उपयोग।
पै सहाय विन होय नहीं, तवहि मिल्यौ इक जोग॥

कारन बिन शुभकाज की सिद्धि न होय लगार।
तातैं सो कारन सुनौं, बुध जन सुख करतार॥

॥ चौपई ॥

श्री सुखराम सकल गुन खांन, बोजामत सु गछ नभ भांन।
बसवा नाम नगर सुखधाम, मूलवास जानौ अभिराम॥
अमोदक के जोग बसाय, बसुवा तजैं भरतपुर आय।
जिनमन्दिर में कियो निवास, मूलवास जानौं अभिराम॥

जो कहूं मेरी चूक है	लीज्यौ संत सुधारि।
वरण मातरा देखि कै	गण औगण सुविचार॥
वंदौ सिव अवगाहना	अर वंदौ सिव पंथ।
असह देव वंदौ विमल	वंदौ गुरु निरगंथ॥
जिनवाणी पूजौ सही	तातै सब सुख होय।
कविता दुखन नहीं लगौ	सुख से पूरण होय॥
चंद सूर पानी अवनि	पवन अरु आकास।
मेरादिक जब लग अटल	तब लग जैन प्रकास॥

इति श्री सम्यक्त्वकौमुदीकथायां साह जोधराज गोदीका विरचितायां उदितोदय भूप अरहदास सेठादिक सुरग गमनो नाम एकादसम परिच्छेदः।

संवत्सरे १७६३ ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे चतुर्दशी तिथौ बुधवारे जिहानाबाद जैसिहपुरा मध्ये श्री वर्द्धमान चैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुंदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक शिरोमणि भट्टारक श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्तिजी तत्पट्टोदयाद्रिदिनमणिप्रख्यः भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्तिजी तदाज्ञानुवर्त्ती पं० दयारामेन इदं सम्क्त्वकौमुदी भाषा चौपई ग्रन्थ स्वहस्तेन लिपि कृता।

७४. सम्यक्त्वरास।

रचयिता ब्रह्म जिनदास। भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी। पत्र संख्या २६. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर। प्रथम पत्र नहीं है।

दूसरे पत्र का प्रारम्भ पाठ—

त्रोटक

जयवंत जय जगि सार सुंदर रामचंद्र वखानिये।
लक्ष्मीधर अरु भरत शत्रुघ्न च्यारि पुत्र घरि जाणीइये॥
कुलकमल दिनकर सकल शास्त्र सुज्ञानवंत महामती।
देव धर्म्मह गुरु परीक्षण रामचन्द्र नृतिपती॥ १॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

समकित रासो निरमलाए मिथ्यातमोडएकंदाता।
गावो भवीयण रुवडो ए जिमि सुख होइ अनंदाता॥ १॥
श्री सकल कीरति गुरु प्रणमीनए, श्री भवन कीरति भवतार तो।
ब्रह्म जिणदास भणो ध्याइए गाइए सरस अपारतो॥ २॥

७५. सिद्धान्तसारदीपक।

रचयिता श्री नथमल बिलाला। भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या १६६. साइज १२×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर। भट्टारक सकलकीर्ति की सिद्धान्तसार नामक रचना के आधार पर भाषा लिखी गयी है।

सर्वदरशी सर्वज्ञ महंत सकल अर्थ दीपक श्रीमंत।
गनधर पद वंदित जगनाथ, वंदौं चरण जोरि जुग हाथ ॥१॥

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

जिहिं विधि भाषा ग्रंथ यह, भयो परम हितकार।
सो वरनन सुवचन सुनो, करि निज चित्त इक ठार ॥ १ ॥

॥ चोपई ॥

नगर आगरो परमपुनीत, साधर्मीजन बसैं विनीत।
जहां जेठमल साह सुजांन, गुन गन मंडित परम निधान ॥
ताके तनुज दोय गुनवान, निजकुल कमल प्रकाशन भान।
जेठो सोभा चंद उदार, लघु सुत गोकुलचंद विचार ॥
वंस खण्डेवाल अवदात, गोत बिलाला जग विख्यात।
अलौकिक को कारण पाय, बसे भरतपुर मांहीं आय।

॥ दोहा ॥

नंदन सोभाचंद कौ, नथमल निपट अयान।
छंद कोस पिंगल तनौं, ज्ञान अंस नहीं जान ॥

॥ चौपई ॥

संगही चांदूसाह प्रसिद्धि, केसोदास धरन बहु रिद्धि।
मयाराम ताकौ सुत सही, पोतदार जानै सब मही।
जोदी⋯⋯महाराज जाकौं सनमान दीहनो,
फतेचंद पृथ्वीराज पुत्र धनमाल के।
फतेचंद जूके पुत्र नुसलप जगनाथ,
गौतिमानवर में वसैयासुमनाल के।
तामैं जगनाथ जू के सुनिवेके हेतु,
हम व्यौरी कैं सुगम कीन्हे वचन दयाल के।

नथमल नैं सुखरास सौं, कही प्रीति दरसाय।
मूलग्रन्थ कौ अर्थ तुम मोकूं देय बताय॥
मूल ग्रन्थ अति कठिन है पढै जू पंडित होय।
भाषा रचना होय तो पढै सुधी सब लोय॥
अर्थ समझि सुखराम तैं मध्य लोक को सार।
नथमल नै भाषा रची निजमति के अनुसार॥
महावीर जिन जात्रा हित नथमल आये संघ समेत।
पांडे लालचंद सौं कही पूरन ग्रंथ करो तुम सही।

॥ दोहा ॥

नथमल वच उर आंनि के, अरु निज हेत विचार।
श्री सिद्धान्त सार की, भाषा कीनी सार॥
आधो लोक की कथन अरु उरध लोक विचार।
भाषा पांडेलाल नैं कीनी मति अनुसार॥

॥ छप्पय ॥

भट्टारक विख्यात सकलकीर्ति विसालमति,
कियो सहंसकृत पाठ ताहि समझे न तुच्छ मति।
ताही के अनुसार अरथ मन में आयो,
निजमति के अनुसार किमपि भाषा करि गयो॥
जो छंद अर्थ अनमिल कहूं वरन्यौ होय सुजांनि कै,
लीज्यौ संवारि बुधजन सकल यह विनती उर आनिकै॥
नमौ देव अरिहंत मुक्ति मारग परकासी,
नमौं सिद्ध चिद्रूप लोक के अग्र निवासी।
नमौं साधु निरग्रन्थ सकल परिगह परिहारी,
सहत परीषह घोर सकल जन के हितकारी।
वंदौ जिन धर्मवर देव सकल सुख संपदा,
यह उत्तम तिहुं लोक में करौ छेम मंगल सदा॥

॥ चौपई ॥

संवत् अष्टादश शत जांन ऊपर पुनि चौतीस प्रवांन।
माह शुक्ल पांचैं रविवार ग्रन्थ समापत कीनौ सार॥

संवत् १८६० आसोजमासे कृष्णपक्षे तिथौ १३ मंगलवासरे लिख्यतं महात्मा गुमानीराम नासरोदा मध्ये।

७६. सिन्दूर प्रकरण।

रचयिता कौरपाल बनारसीदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १२. साइज ६×४ इञ्च। पद्य संख्या १०४. रचना संवत १६६१.

मंगलाचरण—

सोभित तप गजराज सीस सिन्दूर पूर छवि,
विविध दिवस आरम्भकरन कारन उद्योत रवि
मंगल तरु पल्लव कषाय कंभार हुतासन
बहुगुन रत्ननिधान मुक्ति कमला कमलासन
इहि विधि उपमा सहित अरुन वरन संताप हर।
जिनराय पाय नषजोतिभर नमत बनारसी जोरिकर॥

प्रशस्ति—

कौरपाल बनारसी मित्र युगल इक चित्त।
तिन गरंथ भाषा कियौ बहुविध छंद कवित्त॥
नाम सुक्ति मुक्तावली द्वाविंशति अधिकार।
शत शिलोक परवान सब, इति गरंथ विस्तार॥
सोलासै इक्यानवै रितु ग्रीषम वैशाख।
सोमवार एकादशी कर नक्षत्र मित पाख॥

७७. सीताचरित्र।

रचयिता कविवर रायचंद। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १४४. साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३३ अक्षर। रचना संवत् १७१३. लिपि संवत् १८०८. प्रति पूर्ण है।

मंगलाचरण—

प्रणमौं परम पुनीत नर वर्द्धमान जिनदेव।
लोकालोक प्रकास तस करै समकिती सेव॥ १॥

प्रशस्ति—

कियो ग्रन्थ रविषेण नैं रघु पुराण जिय जांन।
वहै अरथ ईण मैं कह्यौ रायचंद उर आंण॥

× × × ×

संवत सतरेंतेरोंत्तरे मंगसिर ग्रन्थ समापति करे।
सुकल पक्ष तिथि है पंचमी, आपो जाणि कुमति जिणवमी ॥

संवच्छरे १८७८ वर्षे वैसाखमासे शुक्लपक्षे अक्षयतीजतिथौ बुधवारे श्री सवाई जयपुर नगरे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक शिरोमणि भट्टारकजी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्तिजी तत्पट्टोदयाद्रि दिनमणिप्रत्यक्ष भट्टारकजी श्री १०८ महेन्द्रकीर्तिजी श्री १०८ श्री माधोसिंह राजपाटविराजिते साह श्री डाडूरामजी का देहुरा मध्ये पंडित श्री ईसरदास सोभाराम रूपचंदविराजिते संगही श्री नौंकरामजी की पुस्तक सौं तदाज्ञानुवर्ती पं० दयारामेण सीताचरित्र चौपई भाषा ग्रंथ स्वहस्तेन लिपि कृता।

७८. सीता हरण।

रचयिता श्री जयसार। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ११४; साइज ६॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २४–२८ अक्षर। रचना संवत् १७३२. लिपि संवत् १६१५. प्रति पूर्ण है तथा साधारणतः अच्छी है।

प्रारम्भिक मंगलाचरण—

सकल जिनेश्वर पद नमूं सारदा सुमरु माय।
गणधर गुरु गौतम नमूं त्रिभुवन वंदि पाय ॥ १ ॥
सहि गुरु पद नमी रामचन्द्र घर नार।
सीता हरण जहूं कहूं सांभल जो नरनार ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

मूलसंघ सरसती वर गच्छे बलात्कारगण सार जी।
वीद्यानन्दि गुरु गोयम सरषो प्रणमूं वीरो वार जी ॥
गंधार नगरे प्रत्यक्ष अतीसय, कलीयुगे छे मनोहार जी।
तेह तणो पाटे मलीभूषण वीद्या नो नहीं पार जी ॥
लक्ष्मीचंद्र तें अनुक्रमे जाणो लक्षण मंडीत काय जी।
वीरचन्द्र भट्टारक वांणी सांभली तां सुपसायजी ॥
ज्ञानभूप तस पटे सोहे ज्ञानतणो भंडार जी।
लाडजं वंसे उद्योतज कीयो भव्यतणो आधार जी ॥
प्रभाचन्द्र गुरु तेहने पटे, वांणी अमी रसाल जी।

वादीचन्द्र वाद बहु जीत्या घट सरतां गुणमाल जी ।।
महीचन्द्र मुनि जन मन मोहन, वांणी जेह वीस्तारे जी ।
परवादी नामां नमूं काठ्या गर्व न करो भगार जी ।।
मेरुचन्द्र तस पट्टे सोहे, मोहे भवीयण मन्न जी ।
व्याख्याय वांणी असीयसमांणी, सांभलोए के मन्न जी ।।
गोर महीचन्द्र सीष जयसागर, रच्यो सीता हरण नो रास जी ।
नरनारि जे भण छे सूंण छे, तस घरे जय जय कार जी ।।
हूंबड वंसी रामां संतोषी, रामादे तेह नो नार जी ।।
तेह तणो पूत्र से तस घरे जय जय कार जी ।।
तेह तणे आदे सासी हरखे, कींधु मन उलास जो ।
सांभल भांगां तां सूख हो सी, सीता सील विलास जी ।।
संवत सतरबत्रीसानरसे वैसाख सुदी बीज सार जी ।
बूधवारे परिपूर्ण ज चरयुं, सूर तनय रयमार जी ।।
आदी जिणेसर तणे प्रसादी पद्मावती पसाय जी ।
सांभलतां गातां ए सहूनें, मन मां आनंद थाये जी ।।
महापुराण तणे अणुसारी, कीधूं से मनोहार जी ।
कवि जिन दोष में देसो कोई, सोधजो तमे सूखकार जी ।।
मुझ आलसूने उजय चढयुं, सारदा ए मती दाघ जी ।
तेह प्रसादे ग्रन्थ ए कीधो, श्यामदासे जसलीद्व जी ।।
सीता सील तणो ए महीनां, गांउ सहू नरनार जी ।
भावधार जे गाए महीनां, तस घर मंगल च्यार जी ।।

॥ दोहा ॥

भावधार जे भणे सूंणे सीता सीलविलास ।
जयसागर रई उचरे यह चेतस मन नी आस ।।

इति भट्टारक महीचन्द्र शिष्य ब्रह्म जयसागर विरचिते सीता हरणाख्याने श्री रामचन्द्र मुक्तिगमन-वर्णनं नाम षष्ठमोऽधिकार समाप्तः ।

संवत १९२५ वर्षे पोषबुदी २ शुक्रवासरे गांम श्री देवदनगरे पद्मप्रभचैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री रत्नचन्दजी तत्पट्टे भट्टारक श्री देवचन्द्रजी तत्पट्टे भट्टारक श्री धर्मचन्द्रजी तत् शिष्य ब्रह्म गोकलजी तल्लघु भ्राता ब्रह्ममेघजी लिखितं स्वहस्तं ।

७६. सुदर्शन रासो।

रचयिता ब्रह्म श्री रायमल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ११. साइज ११॥ × ५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४२. ४५ अक्षर। रचना संवत् १६२६।

मंगलाचरण—

प्रथम प्रणमौं आदि जिणंद, नाभि राजा कुलि उदयाजी चंद।
नगर अजोध्या उपने स्वामी पूरब लाख, चौरासी सौ जी आंइ,
मरुदे जी मात हैं उर धरिउं॥

प्रशस्ति—

अहो श्री मूल संघ मुनि प्रगटौ जी लोइ,
अनंत कीर्त्ति जाणै सहु कोइ तास तणौ सिष जाणज्यौ॥
अहो रायमल ब्रह्म मनि भयो जी उछाह, बुधि करि हीण जाणै नहीं।
अहो वर्णयो रास सुदरशन साह॥ १॥
अहो सोलहसै गुणनीसइ जी वर्ष वैसाख सातैं जी ऊजलो पाख।
साहि अकबर राजई, अहो भोगवै राज अति इंद्र समान।
और चर्चाउर राखै नहीं अहो छह दरसण को राखैजी मान॥ २॥

०. श्रावकाचार रासो।

रचयिता श्री जिनसेवक। भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या ११२. साइज ११×५इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर। रचना संवत् १६०३. लिपि संवत् १८२०. रासो के कर्त्ता ने अन्य भी ग्रन्थ रचना की है प्रशस्ति ठीक तरह से लिखी हुई नहीं है—

प्रारम्भ—

सकल जिनेश्वर २ चरण कमल ते नमुं
गुण छंइतालीसधारक, वारक मोहतिमिरनिभर, पंच कल्याणक नायक
पायक सिवसुख सार मनोहर, सारदा सामनिमनिधरु
अणुसरु गुरुनिर्ग्रंथपाय, श्रावकाचार विधि वरणवुं जो तम्हो करो पसाय॥

प्रशस्ति—

श्री मूलसंघ सरस्वती गच्छ   बलात्कार गुण विशालतो।
कुंदकुंदाचार्य हुवा   अनुक्रमि गुरु गुणमालतो॥
श्री जिनसेन गुणभद्रसूरी   अकलंक अमृतचंद्रतो,
ज्ञानी ध्यानी दिगंबर जती   परंपरा सूरी प्रभचंद्रतो॥

श्री पद्मनन्दि पाट हुंवा सकलकीर्त्ति भव तारतो,
भुवनकीर्त्ति तपमूर्त्ति श्री ज्ञानभूषण ज्ञान धारतो।
श्री विनय कीर्त्ति पाटि उपन्या भट्टारक श्री शुभचंद्रतो॥
भव्य कुमुदचंद्रजसो, कुवादी गजमृगेंद्रतो।
आम्नाय गुरु श्री शुभचंद्रती आगम गुरु मुनिचंद्र तो।
अध्यात्म गुरुकमेसी ब्रह्म, शिष्य गुरु हीर ब्रंह्मिद्रतो॥
अवर शास्त्र कवित गुरु, ब्रह्मचारी श्री जिणदास तो।
जेंण धर्म उपदेश दियो शास्त्र श्लोक पट भापना॥
ते सहु गुरु हुवा मुझनणां, कर जोडि करू प्रणाम तो।
गुरु गुण नविलोपिये, गुरु लोपी पापी नाम तो॥
मुझ हृदय पदम मांहि, गुरु भानु वाणी किरण तो।
मोह तिमर दूरे हरी, ते गुरु तारण तरण तो॥
सामंतभद्रसूरी कृत, वसुनन्दि श्रावकाचारतो।
आसाधर पंडित कृत, सकल कीरति कृत सारतो॥

× × × × ×

वानवार देश सोहांमणि, शाकपुर नयर मझारि तो।
हाट हार मंदिर मालीया, प्रजा वासि वर्ण च्यारतो॥
श्री आदिनाथ तीरथ तणों, सोहै जिन प्रासाद तो
समोसरण कल्याण त्रय आदि, जिनविंब, करि आह्लादतो॥

× × × × ×

त्रेपनक्रिया रास जेणे कीयो, जेणें कीयो ध्यानामृत रासतो।
श्री महावीर रास कीयो, तेणि कीयो एह भासतो॥
कर जोडि पद मों कहैं, श्रावका चार कीयो रासतो।
निज बुद्धि नैं अनुसारै, साह्यकारी मित्र जिणदास तो॥

× × × × × ×

संवत संख्या जिन भावना, संवच्छर संख्या प्रमाद तो।
मास मांहि मुझमणों, भादवा सुदि मर्याद तो॥
तिथ संख्या चारित्र भेदी, रस संख्या शुभ वारतो।
शुभ नक्षत्र शुभ योगि, कीयो मैं श्रावकाचार तो॥

× × × × ×

श्रावकाचार तणो श्रावकाचार तणो रास कियो मैं एणी—

परिभव जन मन रंजन, भंजन कर्म कठोर निर्भर।
पंच परमेष्ठिनि धरी समरी शारदा गुरु निरग्रंथ मनोहर।
अनुदिन जे धर्म पालजी टाली सर्व अतीचार।
जिनसेवक पद मो कहि ते पांमसें भवपार॥

संवत १८२० भट्टारकोत्तम भट्टारक जी श्री देवेन्द्रकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक जिह्वी महेंद्रकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक जिह्वी १०८ क्षेमेन्द्रकीर्त्ति जी तत्पंडित पठनार्थं हेमराज जाति बघेरवाल गोत्र वगडा वास मउ लिपि कृतं सहास्यं भूरामल वाकलीवाल।

८१. श्रीपालचरित्र।

रचयिता कविता श्री परिमल्ल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १२५. साइज १०×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पृष्ठ तथा प्रति पंक्ति में २६-३३ अक्षर। प्रति सुन्दर है। लिपि संवत् १७६४.

प्रारम्भिक मंगलाचरण—

सिद्ध चक्र विधि केवल रिद्धि गुण अनंत फल जाके सिद्धि।
प्रणमुं परमसिद्धि गुरु सोइ भविक वंध ज्यौं मंगल होइ॥

प्रशस्ति—

उग्रं गोपगिरिं च दुर्गमगढं रत्नवरं भूपितं,
जधीरं कृतमंवरं मदगलं पाषाण ऐरावतं।
तन्मध्ये श्रीमांनसाहिविपते भूलोकवरविद्यतं,
तत्राज्यं सुरनाथ तुल्य गदितं तत् केन स वर्णितं॥ १॥
.... जातु कूसुलौ नामेन चंद्रे तयं,
तत्पुत्रं सुरु रामदासविपुलं भुक्तं न भोग्यं सदा।
तत् सूनुः कुलदीपकात्कप्रगटं नामं स कर्णे शुभं,
तत्पुत्रं परिमल्ल धम्मंसदनं ग्रंथरिदं क्रियते॥ २॥

॥ चौपई॥

गोत्रि गौरी ठाढौ उत्तिम थान, सूरवीर यह रामान।
ता आगैं चंदन चौधरी कीरति सब जगमें विस्तरी॥
जाति विरहिया गुणहगंभीर, अति प्रताप कुल रंजन धीर।
ता सुत रामदास परवांन, ता सुत अस्ति महा सुर ग्यांन।
तसु कुल मंडल है परिमल्ल, सबैं आगरा मैं अरिसल्ल॥

तासु महित बुद्धि नहि आन, कीयौ चौपई बध प्रवांन।
होय अशुद्ध जहाँ पदहीन, फेरि संवारौ गुणियन वीन ॥
वार वार जंपौं करि जोर, बुधिजन मोहि देहु मति-खोरि।
वंदौ जिन सासन कौ धम्म, जापसाय नासै अघ कर्म्म।
वंदौ गुरु जे गुण के मूर, जिनके होय ग्यांन कौ पूर।
वदौं माता सीह वाहिनी, जातैं सुमति होय अतिघनी।
वंदौ मुनियन जे गुन धम्म, नवरस महिमा इदतिन कर्न्नं।
वंदौ सज्जन कुल सुख धाम, वदौ धर्म्म बुद्धि वर नांम।
महिमा सागर महा सुजांन, ...।
जाके हृदै दया कौ वास, जीवन कबहू देयन त्रास।
ताकै एक अपूरव रीति, सुरही सौं अति राखै प्रीति।
सुख में जल पीवै तृणा खाय, अपणैं मारग आवै जाय।
तिनकी संक सीह मनि-धरैं, अकबर कै आयस तैं डरै।
मारसबद मुख थैं नहि चवैं, एक छत्र महि मंडल तवैं।
नवौ रिद्धि पूरण भंडार, हय गय वाहण अगणे अपार।
नृप अनेक सेवैं दरबार, दुःखी दीदन कौं आधार।
सुखी भये जिनसए पाय, विमुख भये दुख लहै अवाय ॥
परनारी परधन अति आहि, तिन तन कोउ सकयन चाहि।
सतराज महि मंडल तेज, सुरपति हू थै अधिकमतेज।

इति श्री श्रीपालजी को चरित्र चौपई बंध परिमल्ल कृतं संपूर्णं। संवत् १७६४ वर्षे पोष सुदी १० भोमवासरे तत्दिने इदं पुस्तकं लिखी जोसीजी पाटन मध्ये वास्तव्यं। तत्दिने इदं पुस्तक लिखायतं बाई तुलसा पठनार्थं।

८२. श्रीपालरास।

रचयिता ब्रह्म श्री रायमल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ४०. साइज ७x६ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या २९७. रचना संवत् १६३०. लिपि संवत् १६८६.

मंगलाचरण—

हो स्वामी प्रणमो आदि जिणंद, वंदौ अजित होई आनंद।
संभौ वंदौ जुगति स्यौ, हो अभिनंदन का प्रणमो पांइ ॥

अन्तिम पाठ—

हो मूलसंघ मुनि प्रगटे जांनि, कीरतिअनंत सील की खांनि।
ता तस तनों सिपि जानिजे, हों ब्रह्म राइमल्ल दृढ करि चित्ते॥
भाव भेद जानें नहीं होत, हि दीठे श्रीपाल चरित्र॥
हो सोलासै तीसौं सुभ वर्ष, तिथि तेरस सित सोभितां।
हो अनुराधा नषित्र सुभ सार, वरनै जोग दीसौं भल।
हों भनें वार सनोंसरवार॥ १॥
हो रणथंभमर सोभौं कविलास, भरियां नीरताल चहु पास।
बाग विहर बावडी घणीं हो धने कन संपत्ति तणौं निधानें।
साहि अकबर राजई, हों सौभों घणो जिसौ सुर थानें॥ २॥
हो श्रावक लोग बसौ धनवंत, पूंजा करे जपे अरहंत।
बहुविध यात्रा दान दे हो नम लोग धर्म संजोग।
सामाइक यौसौं करें हों ·········· ·········तनें नोंड़ीं फिरौं॥ ३॥
हो दोसौ अधिक छांनवें छंद, कवियन भनौं तसु मति मंद।
यद अक्षर कोई घटै, हीं पंडित मति को करौं प्रगास।
जेसी मति मोहि उपनी, हो तौसी मति मौ बने रास।
रास भनौ सिरिपाल कौ॥ ४॥

संवत् १६८६ वर्षे आसोज बुदी ५ दिने सुक्रवार आगरा मध्ये साहिजहां·········लिखतं जैता पाटणी दानु पुत्र।

८३. श्रेणिकचरित्र।

रचयिता लक्ष्मीचन्द चांदवाड। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १२४, साइज १०×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८–३१ अक्षर। रचना संवत् १७४६, लिपि संवत् १८०८,

मंगलाचरण—

गणपति श्री अरहंत पद महावीर भगवांनि।
घाति करम मिथ्यान तम हरि उदयाचल भांन॥
समवसरण लक्ष्मी दिपे महिमा अगम्य अपार।
इंद्र आदि चरणां नतैं नमैं भूमि सिर धार॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

श्री सरस्वती गछ गण बलात्कारान्वय कुंदकुंद महान ।
नद्यंम्नाय भव्यांचित कमलसु पद्मनन्दि जिम भान ॥ १ ॥
तिनके पटि श्री सकलकीर्त्ति मुनि भवि जीव समोद दिवाइ ।
सुकवि सरल वानी करि महीयल बुधजन मन रजवाइ ॥ २ ॥
तिनके पटि श्री भुवनकीर्त्ति तसकीर्त्ति भवनपसरान ।
ज्ञातातत्त्वपूरान काव्य करता जिन बिंब प्रतिष्ठा विधान ॥ ४ ॥
तिह पर श्री ज्ञान भूषण विराजैं परकासन सुभ ग्यान ।
निज वचनैं दिन कर सम उदयै अचुत मनास भव्यान ॥ ५ ॥
तिन पट विजय कीर्त्ति जैवंत गुरु अन्यमती परवत समान ।
स्याद्वाद वर्जे करि फौडत तिन सिष्य शुभचन्द्र जान ॥ ६ ॥
जिन पुंनी पुरुष पुरान पवित्र सुभ कहियौ सुभग वखान ।
ना कवि मद थें न कीर्त्ति अहंकार निज मत प्रमोद लहान ॥ ७ ॥
निज अघहरण कारन ग्रंथ संस्कृत ता मुनि संशेप आनि ।
भापा करी ढाल चौवन में लिखमीदास ठान ॥ ८ ॥
सुनौ भवी भावीक जिन गुण गान ॥

॥ दोहा ॥

श्री शुभचंद्राचार्य तिन्ह, कह्यौ सहसकृतसार ।
ते मुनि, लक्ष्मीदास भनि, भापा ढाल पियार ॥ ९ ॥
ना मैं देख्या ग्रंथ कौऊ, व्याकरण छंद न जानि ।
तुच्छ मति रह भापा रची, बुधजन मसोह सवांन ॥ १० ॥
आगम चूक पनीसकति, उदीर कैं धन जूत कृपनतनूर ।
तासा मिनापन अधिक, प्रति पर सपरस मान ।
कूसलसीच करनी उचित, ताकी सम नहीं आंनी ॥ ११ ॥
पंडित जसरथ सुत सुभग, सदानंद तस नाम ।
ता उपदेस भापा रचो, भविजन कौ विसराम ॥ १२ ॥
संवत सत्तरासैं उपरि तेतीस जेठ सु पाख ।
पंचमी ता दिन पूर्ण लहि मंगल कारी भाप ।
फेरि लिखी गुनचास मैं लक्ष्मीदास निज वोध ।
भूलौ चूकौ सवद कौउ बुधजन लीज्यौ सोधि ।

इति श्रीश्रेणिकमहाराजचरित्र भाषा लक्ष्मीदासचांदवाडकृत संपूर्ण। सम्वत् १८०८ कार्त्तिक सुदी ६ गुरौ।

८४. श्रेणिकरास।

रचयिता श्री ब्रह्मजिनदास। भाषा गुजरातीमिश्रित हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ५२, साइज ९॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर २६-३२ अक्षर।

मंगलाचरण—

वीर जिणेश्वर पाय प्रणमेश, तीर्थकर स्तुवीसमे।
वांछित फल बहु दान दाता, सारदा स्वामीनि वलिस्तुवुह विबुधि सार॥

अन्तिम पाठ—

श्रेणिकराजा श्रेणिकराजा तणो ए रास, पढे गुणे जे सांभलिए।
कमनें धरि भाव बहुजन, तेह घरें न बहुनीछंन।
संपजे सरग मुगती फलसार निर्मल, श्री सकलकीर्ति गुरुप्रणमिति॥
मुनि भुवनकीर्त्ति भवतार, ब्रह्म श्री जिणदासभणो निरमलो सुणाता पुण्य अपार॥१॥

८५. हनुमतं कथा।

रचयिता ब्रह्म श्री रायमल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ६२, साइज ६×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २३-२४ अक्षर। रचना संवत् १६१६, लिपि संवत १७१६.

मंगलाचरण—

स्वामी सुव्रतनाथ जिनंद, सुमिरत होइ सिद्धि आणदं।
नमौ सीस जोड कर दोय, नासैं पाप भलो मति होइ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

मूलसंघ भवतारण हार, सारद गछ गरवौ संसार।
रत्नकीर्त्ति मुनि अधिक सुजांण, तास पढि मुनि गणहनिधान।
अनंतकीर्त्ति मुनि प्रगट्यै नाम, कीर्त्ति अनंत विस्तरी नाम।
मेव बूदं जे जाइन गिनी, तास मुनिगुण जाइन भणी।
तास सीष्य जिण चरणां लीन, ब्रह्म रायमल मति कौ हीन।
हणू कथा कौ कियो प्रकास, उत्तम क्रिया मुणीश्वर दास।
भणी कथा मन में धरि हर्ष, सौलासै सोला शुभ वर्ष।

रितु बसंत मास वैशाख, नौमि सनीसर कृष्णहिं पक्ष ।

× × × : × × ×

स्वामी सुव्रत नाथ जिनंद, सुमरत होइ सिद्धि आणंद ।
नासै पाप भली मति होइ, नमौ सीस जौडे कर दोय ॥

८६. हरिवंशपुराण भाषा ।

रचयिता श्री खुशालचन्द । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या २४६. साइज १२×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४२ अक्षर । रचना संवत् १७८०. लिपि संवत् १८६०. लिपि सुन्दर है ।

मंगलाचरण—

महावीर वंदौ जिनदेव, इंद्रादिक करि हैं तिन सेव ।
तीन लोक में मंगल रूप, ते वंदौ जिनराज अनूप ॥ १ ॥
नेमिसुर वंदौ चित लाय, तिहुं जग हरि पद अघाय ।
पाप विनाशन है जिन नाम, सब जिन नाम वंदौ गुणधाम ॥

अन्तिम पाठ—

नेमनाथ जिनके वचन, सब जीवन सुखदाय ।
तहां ब्रह्म जिनदास जू, करि लीही अधिकाय ॥ १ ॥
ताहीं श्री जिनदासजी, ग्रन्थ रच्यौ इह सार ।
सो अनुसार खुस्याल ले, कह्यो भविक सुखकार ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

॥ दोहा ॥

मेरी बात सुनो अबै, भव्य जीव मन लाय ।
काली जाति खुस्याल जु, सुन्दर सुत जिनपाय ॥

॥ चौपई ॥

देश ढुंढाहर जांणौ सार, तामैं धरम तणुं अधिकार ।
विसनसिंघ सुत जैसिंहराय, राज करै सबकुं सुखदाय ॥
देशतनी महिमा अति घनी जिन गेहा करि अति ही बनी ।
जिन मंदिर भवि पूजा करै, केइक व्रत ले केइक धरै ।
जिन मंदिर करवावै घना, सुरग विमल तनी वर छवा ।
रथ जात्रादि होत बहु जहां, पुन्य उपावन भवियन तहां ।

इत्यादिक महिमा जुत देश, कहि न सकौं मैं और असेस।
जा मैं पुर सांगावति जांनि, परम उपावन कौ वर थांन ॥ ५ ॥
जाकी सोभा है अधिकार, कबलौं भाखूं भवि विस्तार।
जा मधि श्री मूलनायक थांनि, सोभै भवि जीवां सुख दांनि ॥ ६ ॥

* सवैया *

संघ मूलसंघ जानि गछ सारदा वखांनि,
गणजु बलातकार जांनौ मन लायकैं।
कुंदकुंद मुनि की सु आमनाय मांहि,
भये देवइन्द्रकीर्त्ति पठ्ठयतर पायकै॥
जिन सु भये तहां नाम लिखमीदास,
चतुर विवेकी श्रत ज्ञांन कूं उपाय कैं।
तिहनें पास मैं भं। कछु अल्प सौं प्रकाश भयो,
फेरि मैं वायो जिहांनाबाद मध्य आयकैं ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

सहर जिहानाबाद मैं जैसिघ पुरो सुथांन।
मैं वसिहूं सुखतैं सदा जिनेशऊं चित्त आनि ॥ ८ ॥

* छप्पय *

महमहसाह पातिसाह राजकरै सुविकछौ,
नीतवंत बलवंत न्याय बिन लेन अरथौ।
ताके अमल सुमांहि ग्रन्थ आरंभरु कीन्हौ,
पंर कौ भय दुख सोक कभूह हम कौयन लीन्हौ।
इह विचार राजा तनौ इतनो ही उपगार है,
कौऊ दंडन सकै जिनमत को विसतार है ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

सहर मध्य इक वणिक वर, साह सुखानंद जांनि।
ताके गेह विषै रहै, गोकुलचंद सुजांनि ॥ १० ॥
तिन ढिग मैं जाऊं सदा, पढुं शास्त्र सुभाय।
तिनकौ वर उपदेश लै, मैं भाषा बनवाय ॥ ११ ॥

ग्रन्थ तनी भाषा रची, जिन सेवक अनुसार ।
असको कारिज ना करयो, करयो भविक उपगार ॥ १२ ॥

॥ चौपई ॥

ऐसी जानि भविक सुखदाय, पढिजे सुनिजै मनवचकाय ।
काला जाति खुस्याल सुनाम, भाषा रची परम सुख धाम ॥ १३ ॥
संवत् सतरासै अरु असी, सुदी वैशाख तीज बेर लसी ।
सुकरवार अति ही वर जोग, सार नख्यतर को संजोग ॥ १४ ॥
पहर डोढ दिन वाकी रह्यौ, भाषा पूरण करि सुख लह्यौ ।
कसर देखि पंडित जन कोय, सुन कर लीज्यौ अक्षर सोय ॥ १५ ।
मैं तो ग्रन्थ पढे कछु नांहि, सार विचार नहीं मुझ मांहि ।
यातैं दोष न दीजौ कोय, अलप घणौ गुण लीज्यौ जोय ॥ १६ ॥
जिनवर चरित सुवर्णतैं, उपजै पुन्य अपार ।
जे भवि सुमरैं भाव सौं, ते पावै शिवसार ॥ १७ ॥
हरिवशं महत्शास्त्रं तस्य भाषा विनिर्मितं ।
नाम्ना खुस्यालचंद्रेण भव्यानां खलु शर्मदा ॥ १८ ॥

संवत् १८६० का भादवमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ ८ लिखते वैष्णव चेतनदासे नासरोदा नगर मध्ये शुभं भवतु ।

८७, हरिवशंपुराण ।

रचयिता श्री नेमीचन्द । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ७७. साइज १२×५ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या १३०५. रचना संवत १७६६. लिपि संवत् १७६३. प्रति पूर्ण है । इसका दूसरा नाम नेमीश्वर रास भी है ।

मंगलाचरण—

श्री भगवान जी बीनउं, अरहंत देव निरदोष अंठारतौ ।
छीयालीस गुण शोभता, शोभै हो चौतीस अतिशय सारतौ ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

देस डुंढाहड सोभितौ नाना विधि वृच्छ भला सुसार तौ ।
कलपवृछिकी वोपमा जसी मन वांछित फल का दत्तारतौ ॥ १ ॥
चहुं दिसि सरवर वापिका नदी कुवा अर कुंड अपार तौ ।
निरमल पांणी स्यौं भरया, मल उपरि भ्रम करै गुंजार तौ ॥ २ ॥

अंबावती गढ सोभिता, गिर बिचि बसै अपार।
कोट बुरजि अर कांगुरा, दरवाजा बहु सार ॥ ३ ॥
बाजार सोहै चौपड तणां, विविध २ की वस्त अपारतौ।
पाटंबर भरिया सबै, मणि माणिक मोती परवारतौ ॥ ४ ॥
कौलग सोभा वरणइं, गली २ सोभी बाजारतौ।
अंन धन कपडा स्यौं भर्‍या, भरिबेचै लो मौल आरतो ॥ ५ ॥
महिलां की पंकति सोभिति सप्तभूमि उपरि विसतार तौ।
मैडो चौबारा अति घणा, नरनारी सब देव कुमार तौ ॥ ६ ॥
चन्द्रवदन सी कामिणी, वस्त्राभूषण पहिर्‍यां सार तौ।
गोखा झांकी झांकती, चन्द्र सूर्य लीजै तिहि बारतौ ॥ ७ ॥
घरि घरि तोरण वांद जे घरि घरि मंगल होयविवाह तौ।
घरि १ गावै कांमिणी घरि २ जानै पुत्र उछाह तौं ॥ ८ ॥

* सोरठा *

अवावंती सुभ थान सवाइ जैसिंघ महाराजई।
पातिसाह राखै मान राजकरै परिवार स्युं ॥

दया सील पालै सदा, बैरी जीति कीया सब जेर तौ
तिन की महिमा अतिघणी, हिंदु की पत्ति राखण मेरतौ ॥ १० ॥
श्रावक लोक सबै सुखी. नवनिधि स्यौं भरिय भंडार तौ।
मन वांछित सुख भौगवै, दुख न जांणै कोई लगार तौ ॥ ११ ॥
रथयात्रा निकसे सदा, अष्टविधि पूजा कौ अधिकाय तौ।
पोसो सांमायिक करै, गुरु कौ विनंकरै भव्य रायतौ ॥ १२ ॥
जिनवर थांनिक सोभिता, धवला गिर परवत कै अंग तौ।
सोवन कलस सिखरां परे, घंटा बाजे धुजा उतंग तौ ॥ १३ ॥
श्रावक लोग सबै मिलै, पूजा करि जपै अरिहंततौ।
निहचौ देव गुरु शास्त्र को, चारयौं दान करै दयावंत तौ ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

श्रावक कौ वरणन करयो, जिनधर्म वंत महंत।
अब जो गुरु उपदेश दे, तो कहुं महिमेवंत ॥ १५ ॥
मूलसंघ महिमा घणी, बलात्कार गण सार।

सरसत्ति गछ महा सोभिता, कुंदकुंदा अवतार ॥ १६ ॥
कुंदकुंद भट्टारक भर्णौं, जिहि नै विदेह ले गया देवतै ।
सूत्र सिधांत ल्याया तबै, प्रगट बात जाणैं सब एव तौ ॥ १७ ॥
ता पाछै क्रमि क्रमि भया, भट्टारक गुणधाम ।
पंच महाव्रत पालवैं, आचारैं अभिराम ॥ १८ ॥
भट्टारक सब उपरै, जग कीरति जग जोति अपारतौ ।
कीरति चहुं दिसि विस्तरी, पांच आचार पालै सुभसारतौ ॥ १९ ॥
प्रमत्त मैं जीतैं नहीं, चहुं दिसि मै सब ताकी आणतौ ।
खिमा खडग स्यौं जीतिया, चौरांणवै पट नायक भांणतौ ॥ २० ॥
ताकौ सिष नेमचंद जी, लघु भ्राता तसु झगडु जाणितौ ।
सेठी गोत पद्मावत्या, खंडेलवाल तसु बै सब खांणितौ ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

नेमचंद के सिख भला, डूंगरसी रुपचंद ।
पंडित चतुर विवेक सब, सील तणा सब कंद ॥ २२ ॥
लिखमीदास दोदराज जी, पंडित सब मनकं सिर मौरतौ ।
ज्यां दीयो उपदेस नै, रासौ रच्यौं विविध स्यौं दोरतौ ॥ २३ ॥
देव गुरु शास्त्रप्रसाद थी, सरसति माता तणौ पसावतौ ।
रच्यौ रास श्री नेम कौ, नेमिचंद मनि धरकरि भावतौ ॥ २४ ॥
आचार्य ब्रह्म बाई सबै, पंडित सबयन स्यौं मनहारितौ ।
नेमचंद बिनती करै, कवियन सबही लेहु सुधारितौ ॥ २५ ॥
सतरासै गुणहत्तरै, सुदि आसोज दसैं रवि जांणतौ ।
रास रच्यौ श्री नेमि कौ, बुधि सारु मैं कीयौ वर्खांणतौ ॥ २६ ॥
दोय सवैया दीपता, सोरठा कहियै तहां पचीस तौ ।
दोइ सै साठि दोहा कह्या, एकादास कड खैर जगीसतौ ॥ २७ ॥
एकहजार दस ढाल की, गाथा कही सबै शुभ शुद्ध तौ ।
वार्त्ता ठांम पैंतीस मैं, कहे अधिकार छत्तीस प्रसिद्ध तौ ॥
गाथा दोहा सोरठा, सबमिलि कह्या तेरासैं आठतौ ।
वार्त्ता उपरि जांणि ज्यौं, सब ग्रंथ इकईस सैंवाल आठसौ ॥ २९ ॥

जा लगि भाषा विस्तरौ, चन्द्रसूर गिर मेर सुदीसतौ।
सकल संघ आनंद रहौ, नेमचंद इम देय असीसतौ ॥ ३० ॥
रास भणौं श्री नेम कौ ॥ टेर ॥

ई कथन में श्रेणिक ने गणधर कह्यो। पाछैं कवि अरज देस नाम वर्णन, राजा कौ वर्णन, देवस्थल को, गुरु को वर्णन, कवि को वंस वर्णन। इति श्री नेमिचन्द्र कृत हरिवंश भाषायां देशगुरुवर्णन ग्रन्थ कर्त्ता कथन वर्णनो नामाधिकार षट्त्रिंशत्तमः।

इति श्री भट्टारक श्री जगत्कीर्ति शिष्य नेमिचन्द कृत नेमरासौ संपूर्ण। भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति का शिष्य पांडे दयाराम जाति सोनी नरायणा का वासी दिल्ली का जैसिंहपुरा मध्ये लिखी मिती चैत सुदी १३ रविवार संवत् १७६३ का। भट्टारक जी श्री महेन्द्रकीर्त्ति जी का पट समय लिखी।

८८. होली की कथा।

रचयिता श्री छीतर ठोलिया। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ६. साइज ११।।×५।। इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १०१. रचना संवत् १६६०. लिपि संवत् १८१०.

मंगलाचरण—

वंदौ आदिनाथ जुगिसार जा प्रसाद पावुं भव पार।
वरधमान की सेवा करै जौं संसार बहुरि नहिं फिरै ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

सौलासे साठे शुभ वर्ष, फालगुण शुक्ल पूर्णिमा हर्ष।
सोहै मोजाबाद निवास, पूजै मन की सगली आस ॥
सोहै राजा मान कौ राज, जिहि बांधी पूरब लंग पाज।
सुखी सर्व नगर में लोग, दान पुण्य जानै सहु भोग।
ईह विधि कलयुगमैं दिनरात, जाणै नहीं दुःख की जाति।
छीतर ठोल्यो बीनती करै, हिवया मांहि जिन वाणी धरै।
पंडित आगै जोडै हाथ, भूलो हूं तौ खिमि ज्यौं नाथ।
बार बार या विनती जाण, भूलो अक्षर आंणौ ठाण।
पंडित हासौं को मति करौ, क्षमा भाव मुझ उपरि धरो।

परिशिष्ट

१. पउमचरिय ।

रचयिता महाकवि स्वयंभु त्रिभुवनस्वयंभु। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ३७५. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर। लिपि संवत् १५४१ वैशाख सुदी १५।

प्रारम्भिक अंश—

(१)

णमह णवकमल-कोमल-मणहर — वर-वहल-कंति-सोहिल्लं ।
उसहस्स पायकमलं — ससुरासुरवंदियं सिरसा ॥ १ ॥
चउमुहमुहम्मि सद्दो — छंती सह च मणहरो अत्थो ।
तिण्णि वि सयंभुकव्वे — किं कीरइ कइयणो सेसो ॥ २ ॥
चउमुहएवस्स सद्दो — सयंभुएवस्स मणहरा जीहा ।
भद्दस्स य गोग्गहणं — अज्जवि कइणो ण पावंति ॥ ३ ॥
जलकीलाए सयंभु — चउमुहएव च गोग्गहकहाए ।
भद्दं च मच्छवेहे — अज्जवि कइणो ण पावंति ॥ ४ ॥
तावच्चिय सच्छंदो — भमइ अवब्भंस-मच्च मायंगो ।
जाव ण सयंभु-वायरण- — अंकुसो पडइ ॥ ५ ॥
सच्छंद-वियड-दाढो — छंदालंकार-णहर-दुप्पिच्छो ।
वायरण-केसरड्ढो — सयंभु पंचाणणो जयउ ॥ ६ ॥
दीहर-समास-णालं — सद्ददलं अत्थकेसरग्घविया ।
बुह-महुयर-पीयरसं — सयंभु-कव्वुप्पलं जयउ ॥ ७ ॥

(२)

वड्ढमाण-मुह-कुहर विणिग्गय, — रामकहाणए एह कमागय ।
अक्खरवास-जलोहमणोहर, — सुयलंकार-छंदमच्छोहर ।
दीह-समास पवाहावंकिय, — सक्कय-पायय पुलिणालंकिय ।
देसीभासा-उभय-तडुज्जल, — कविदुक्करघणसद्दसिलायल ।
अत्थबहल—कल्लोलाणिट्ठय, — आसासय-सम तूहपरिट्ठिय ।

एह रामकह-सिरि सोहंती, गणहरदेवहिं दिट्ठ वहंती।
पच्छइं इंदभूइ-आयरिएं, पुणु धम्मेण गुणालंकरिएं।
पुणु एवहि संसाराराएं, कित्तिहरेण अणुत्तरवाएं।
पुणु रविसेणायरिय-पासाएं, बुद्धिए अवगाहिय कइराएं।
पउमिणि-जणणि-गब्भसंभूएं, मारुयएव-रूव-अणुराएं।
अइतणुएण पईहरगत्तें, छिव्वरणासें पविरल-दंते।

घत्ता

णिम्मलपुण्णपवित्तकह कित्तणु आढप्पइ।
जेण समाणिज्जंतएण थिरकित्ति विढप्पइ ॥ २ ॥

बुहयण सयंभु पइ विण्णवइ, मइं सरिसउ अण्णु णात्थि कुकइ।
वायरणु कयावि ण जाणियउ, णउ वित्ति-सुत्तु वक्खाणियउ।
णउ पच्चाहारहो तत्ति किय, णउ संधिहे उवरि बुद्धि ठिय।
णउ णिसुणिउ सत्तविहत्तियाउ, छव्विहउ समास-पउत्तियाउ।
छक्कारय दस लयार ण सुय, वीसो वसग्ग पच्चय पहुय।
ण बलाबल-धाउ-णिवाय-गणु, णउ लिंगु उणाइ वक्कु वयणु।
णउ बुज्झिउ पिंगल पत्थारु, णउ भम्मह दंडियलंकारु।
ववसाउ तोवि णउ परिहरमि, वरि रयडा वुत्तु कव्वु करमि।

ग्रंथ समाप्ति—

इय पोमचरियसेसे सयंभुएवस्सकइविउव्वरिए,
तिहुयणयंसपुरइए। रावणहवणिव्वाणपव्वणपव्वमिणं ॥ १ ॥
वंदइ आसिय तिहुयणसयंभुपरिवीरइ यम्मिमहकव्वे।
पोमचरियस्स सेस सपुण्णो णवइमोसग्गो ॥
संधि ६० ॥ पोमचरियं सम्मत्तं ॥

प्रशस्ति—

सिरिविज्जाहरकंडे संधीओ होंति वीसपरिमाणं।
उज्झाकंडम्मि तहा बावीस मुणेह गणणाए ॥
चउदहसुन्दरकंडे एकाहिय बीस जुज्झकंडे य।
उत्तरकंडे तेरह संधीओ णवइ सव्वाउ ॥

तिहुयणसयंभु णवरं एक्को कइरायचक्किणुप्पणो।
पउमचरियस्स चूडामणि व्व सेसं कयं जेण ॥
कइरायस्स विजयसेसियस्स वित्थारिओ जसो भुवणे।
तिहुयणसयंभुणा पोमचरियसेसेण णिस्सेसो ॥
तिहुयणसयंभुधवलस्स को गुणो वण्णिउं जए तरइ।
बालेण वि जेण सयंभुकव्वभारो समुव्वूढो ॥
वायरणदढक्खंधो आगमअंगोपमाणवियडपओ।
तिहुयणसयंभुधवलो जिणतित्थे वहउ कव्वभरं।
चउमुहसयंभुवाएण वण्णियत्थं अचक्खमाणेण।
तिहुयणसयंभुरइयं पंचमिचरियं महच्छरियं ॥
सव्वे वि सुयापंजर सुयव्व पढअक्खराइं सिक्खंति।
कइरायस्स सुओ पुणसुयव्व सुइगब्भसंभूओ ॥
तिहुअणसयंभु जइ णहो हंतुणंदणो सिरिसयंभुदेवस्स।
कव्वं कुलं कवित्तं तो पच्छको समुद्धरइ ॥
जइ ण हु उ च्छंदचूडामणिस्स तिहुयणसयंभुलहुतणउ।
तो पद्धडियाकव्वं सिरिपंचमि को समारेउ ॥
सव्वो वि जणो गिण्हइ णियताय विढत्तदव्वसत्ताणं
तिहुयणसयंभुणा पुणुगहियं वंसु कइत्तदव्वसंताणं॥
तिहुयणसयंभुमेक्कं मोत्तूणं सयंभुकव्वमयरहरो।
को तरइ गंतुमंतं मज्झेणिस्सेससीसाण ॥
इय चारुपोमचरियं सयंभुएवेण रइयं समत्तं।
तिहुयणसयंभुणा तं समाणियं परिसमत्तमिणं ॥
चेष्टितमयणं चरितं करणं चारित्रमित्ययमीयशब्दापेदया।
या रामायणमित्युक्तं तेन चेष्टितं रामस्य वोधपति ॥
श्रृणोति जन्त तस्यायुर्वृद्धि मीयते पुण्यं वा।
श्रीकृष्णखड्गहस्तारिपुरपि ण करोति वैरमुपसमेति॥
मो वरसुयसिहिभूवइ रायतणयकयपोमचरिय अवसेसं।
संपुण्णं वंदइवलहु उसंपुण्णं गोइंदमयणसुयणंतविरइयं ॥
वंदइ पढमतणयस्स वच्छल्ल दाए तिहुयणसयंभुणारइयं
महयायं वंदइयणागसिरिपालपहइ भव्वयणसमूहस्स।

आरोगतमसिद्धी सांत सुहं होउ सव्वस्स ॥
सत्तमहामगंगीतिरयणमूसासुरामहरणा।
तिहुयण सयभुअ'तयापरिणइ वंदइ यमणतण ॥

संवत १५४१ वर्षे वैशाख सुदी १५ सामवासे संख्या १२७२५ मरे अनुराधा नक्षत्रे घटिका ६० सुरिताण बहलोल राज्ये—

सकलविधिविधान (नयनन्दि) पृष्ठ १८१ नं० ३६ के मंगलाचरण के आगे का भाग।

दरमियसुवरण गुणगणसलग्घु, मुत्तालंकरिउ महामहग्घु।
णं वसुहविलासिणि हियग्रहारु, अत्थीहावंनी चिसर सारु।
पडिवक्खपक्ख पयडिय णाहु, सिंगारविलासविसमोहु।
तहिं मुणइ कहाइवाचित्तहार, णयरी व उवगण धरणधार।
तहिं सरसइ कठाहरणु देउ, रणरंगमल्लु आलीसमेउ।
तिहुयण णारायणु भुवणभाणु, परमेसरु अत्थी नराणिहाणु।
पम्मावंवगयणेक्कचंदु, जय सरिणिवास भूवइणांदु।
तहो णेमिणामु ठक्करु गरिट्ठु, स एणुपुएणपुं नवजाणट्ठु।
ते लोकर्णतिकामि णहे ध मु सुपसिद्धउ चहुविहारु णामु।
महिमा णाणिहे मउडुवमाणिट्ठ, कार विउ कित्तणु तें गरिट्ठु।

घत्ता

तांह अत्थसूरहरिसिणुमुणि, जिणसासणु पुत्त रणु।
वर्णसि तरंगिणि मयरहरु, तवसिर वहु मण च रणु ॥ २ ॥
मणोविणिवट्ठु णयनन्दी तेण, मुण णयणार पसण्णमणेण।
पउत्तु पऊरिय चित्तहिंभासु, सुकोमल णिम्मल वाणिविलासु।
तुमकुरु किंपि कवित्तु मणिट्ठु, णयामिणजंकइ णाइहदिट्ठु।
तिणा भणियं ण कइत्तु मुणेमि, णया'मण जं कइ णाइहदिट्ठु।
तिणा भणियं ण कइत्तु मुणेमि, अयाणमणो अणु काइं करेमि।
परं महु अट्ठगुणाहुय जेवि, णलद्ध पसिद्धहिं सिद्धहिं तेवि।
ण देवहिं दाणय विंदहि पत्त, असेस गुणायर अच्छउ वत्त।
गुणेक्कु विकत्थवि पाविउ जेण, पयंवइ सो णयणंदिय तेण।
मए पुणु अंगुलि उज्झिय तासु, पणामउ मे गुणलेसु विणासु।

घत्ता

परिणिद्दारिणद्दलेसलंढणु, सढवढरत्ता'णट्ठिय ।
कलिकंदल अट्ठवि गुणगुरुव, मइं मुण्वि कसुसंठय ॥३॥
परिणिंदयमुहगुणाजडरावत्त, महुनोविकित्तिणउ किंवरत्त ।
मा चारु चायसुहडत्तणेण, अह हवइ सरस सुइदुमणेण :
नंभेण भुवणु काओ ण भव्वु, गयकणमलेदिणउं दियहंसव्वु ।
हुसेण परुपरामेहयाम्त, खत्तियहणेवि दिणयहरित्ति ।
गणेण कणयकोडिहिं कयत्थ, कर्यंतिपत्तचित्त विप्पाण सत्थ ।
णएणविदुरित्थिय करविरामु, हरिचंदु चंदसाणहिंयणामु ।
तक्खयरक्खणे गरुडहो अभंगु, जीमूयवाहणेणवि अंगु ।
दिण्णउं सिवेण सप्पहोपसंसु, दह क्खणमसरीरमंसु ।
जेणहु दवीइणा अट्ठिदिण्ण, को पावइ तिहुयणे तहो पइण्ण ।

घत्ता

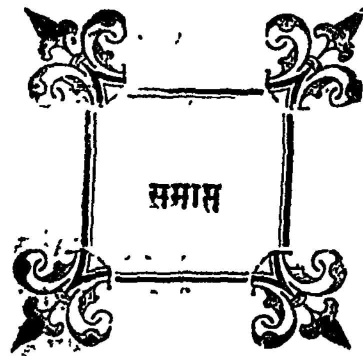
तहो चारुचायं चलणहचलिय, किन्तिरमणिविभयकरि ।
अलवि जणजणियाणंदभरे, भणइ भुवणे भवणंतरे ॥ ४ ॥
णिक्कलंककित्तियाए जुत्तवीरवित्तियाए, देवदाणवाहमल्लु रावणो जगेक्कमल्लु ।
कुंभुकुंभयण्णसुंभु सारणो सुभोणिसुंभु, इंदई महिंददक्खु अक्खओ गवक्खु वक्खु ।
जुंवुजं ववंभुतारु णीलुमारुईकुमारु, लक्खणो विवक्खतासु रामचंदु सप्पयासु ।
दोणु भीसमो असंगु दुद्धरो कलिगुतुंगु, सा'ईहो विसल्लु सल्लु भीमसेणु भोममल्लु ।
अज्जुणो णियारजूरु आसथामु आसपूरु, कोयहु कसि कंसणासु दुट्ठरिट्ठकालपासु ।
आहवे अदिण्णपिट्ठि कालसेणु पंचहुट्ठि, तप्पओ तलप्पहारि खुरणाखणरोपहारि ।
कावली तहेव मुच्चु सूरवीकणिप्पवंचु, वंकिवीरिउम्भियंकु संकुकेसरी णियंकु ।
कुंदु चंदु डिंडएव खंडयण्णु खंदएव, ग्गमएव मोरएउ केउघोसुसावलेव ।
साहमीउ साहसिल्लु भीमएवं भाइमल्लु, इट्ठु संखलादु गुल्लु देवईव देवतुल्लु ।
मिघलो महामहग्घु घुंघु सोसलंघु वग्घु, रोमसोसरोमजंघु रिच्छकहिताडिजंघु ।
मिवइ ववग्घईव वज्जसत्तिविवएव, चंडइट्ठ इट्ठसंमु मुट्ठिउं मणिट्ठु रंमु ।
आरुणीव ओरुणत्थु पट्टहोइ ओविहत्थु, वोसलोविसालवत्थु हत्थिवच्छु सुहवत्थु ।
सुदउंसु वीरराउ कंकसोमु अंगराउ, सोलिवाहणो रसिल्लु कुंवली सुकुंतलिल्लु ।

घत्ता

इय अवर वि रे विवपयावजुय, सुहीडमण्णित्तए असरिस ।
ससिकासकुसुमसंकासजस, पसरपूरपूरियदिस ॥ ५ ॥
मणु जण्णवक्कु वम्मीउ वासु, वररुइ वामणु कवि कालियासु ।
कोऊहलु वाणु मऊरसूरु, जिणसेणु जिणागम कमलसूरु ।
वारायणु वरणाउ वियद्दु, सिरिहरिसु राय सेहरु गुणद्दु ।
जसइंधु जएजय रायणामु, जयदेउ जणमणाणंदकामु ।
पालित्तउ पाणिणि पवरसेणु, पायंजलि पिंगलु वीरसेणु ।
सिरि सिंहणंदि गुणसिंहभद्दु, गुणभद्दु गुणिल्लु समंतभद्दु ।
अकलंकु विसमवाइय विहंडि, कामद्दरुद्दु गोविंदु दंडि ।
भम्मुह भारहि भरहु वि महंतु, चउमुहु सयंभु कइ पुप्फयंतु ।

घत्ता

सिरिचंदु पहाचंदु वि विबुह, गुणगणणंदि मणोहरु ।
कइ सिरि कुमारु सरसइ कुमरु, कित्ति विलासिणि सेहरु ॥ ६ ॥


समाप्त

शताब्दी के अनुसार ग्रन्थों की प्रतिलिपियों की सूची

१४ वीं शताब्दी

अपभ्रंश

	नाम	लेखनकाल	रचनाकाल
१.	उत्तरपुराण [पुष्पदंत]	१३६१ ज्येष्ठ सुदी ६ गुरुवार	
२.	क्रियाकलाप [अज्ञात]	१३६६ फाल्गुन सुदी ५ शुक्रवार	

१५ वीं शताब्दी

अपभ्रंश

	नाम	लेखनकाल	रचनाकाल
३.	आदिपुराण [पुष्पदंत]	१४६१ भादवा सुदी ६ बुधवार	
४.	पार्श्वनाथचरित्र [पद्मकीर्त्ति]	१४६४ भादवा सुदी २ शनिवार	११८६
५.	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला [अमरकीर्त्ति]	१४७६ अषाढ सुदी ५ बुधवार	१२७४

१६ वीं शताब्दी

संस्कृत

	नाम	लेखनकाल	रचनाकाल
६.	आदिपुराण [जिनसेनाचार्य]	१५८७ मंगसिर सुदी २ सोमवार	
७.	उत्तरपुराण सटीक [प्रभाचन्द्राचार्य]	१५७७ आषाढ सुदी २ रविवार	१०८०
८.	धन्यकुमारचरित्र [सकलकीर्त्ति]	१५३३ पोष सुदी ३ गुरुवार	
९.	धर्मपरीक्षा [अमितिगति]	१५६६ पोषसुदी ६ शुक्रवार	१०७०
१०.	धर्मसंग्रहश्रावकाचार [मेधावी]	१५४२ कातिक सुदी ५ गुरु.	१५४१
११.	प्रतिष्ठापाठ [आशाधर]	१५६० वैशाख सुदी १५ शनि.	१२८५
१२.	प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति [ब्र० रत्नदेव]	१५७७ अषाढ सुदी ३	
१३.	"	१५४३ भादवा सुदी ६	
१४.	राजवार्त्तिक [भट्टाकलंकदेव]	१५८२ अषाढ सुदी १३	
१५.	श्रावकाचारसार [पद्मनन्दि मुनि]	१५६४ वैशाख सुदी ७ सोमवार	
	सम्यक्त्व कौमुदी [अज्ञात]	१५८[illegible] फागुण सुदी १४	

१७.	”		१५६०	माघ वुदी १३ रविवार	
१८.	हरिवंशपुराण	[ब्रह्म जिनदास]	१५५५	मंगसिर वुदी १२ रविवार	

प्राकृत—अपभ्रंश

१९.	अमरसेनचरित्र	[माणिक्कराज]	१५७७	कार्त्तिक वुदी ४ रविवार	१५७६
२०.	आत्मसंबोध काव्य	[रइधू]	१५३४	श्रावण सुदी ५ मंगलवार	
२१.	आदिपुराण	[पुष्पदंत]	१५६४	श्रावण सुदी ३ मंगलवार	
२२.	करकंडुचरित्र	[कनकामर]	१५८१	चैत्र वुदी ६ शुक्रवार	
२३.	कर्मप्रकृति	[नेमिचन्द्र]	१५७७	अषाढ सुदी ३	
२४.	क्रियाकलापस्तुति	[समंतभद्र]	१५७७	वैशाख सुदी ४ शुक्रवार	
२५.	चन्द्रप्रभचरित्र	[यशःकीर्त्ति]	१५८३	आषाढ सुदी ३ बुधवार	
२६.	जम्बूस्वामीचरित्र	[महाकवि वीर]	१५१६	मांगसिर सुदी ११	१०७६
२७	नागकुमार चरित्र	[माणिक्कराज]	१५६२	पोष वुदी ५ मंगलवार	१५७९
२८.	पउमचरिय	[त्रिभुवन स्वयंभु]	१५४१	वैशाख सुदी १५ मंगलवार	
२९.	पद्मपुराण	[रइधू]	१५५१	फाल्गुन सुदी ९ मंगलवार	
३०.	पार्श्वनाथचरित्र	[श्रीधर]	१५७७	आषाढ सुदी ३	११८९
३१.	प्रद्युम्नचरित्र	[श्री सिंह]	१५८७	माघ वुदी ५ रविवार	
३२.	”		१५९५	भादवा सुदी १३	
३३.	”		१५१८	ज्येष्ठ सुदी ९ शुक्रवार	
३४.	बाहुबलिचरित्र	[धनपाल]	१५८६	वैशाख सुदी ७ बुधवार	१४५४
३५.	”		१५८४	आसोज वुदी ९ बुधवार	
३६.	भविष्यदत्त चरित्र	[धनपाल]	१५९५	माघ सुदी १५ रविवार	
३७.	”		१५८९	मंगसिर वुदी २ बृहस्पतिवार	
३८.	”		१५९२	श्रावण सुदी ११ रविवार	
३९.	”		१५४०	आसोज सुदी १२ शनिवार	
४०.	मदनपराजय	[हरिदेव]	१५७६	कार्त्तिक सुदी १३	
४१.	मेघेश्वरचरित्र	[रइधू]	१५६६	ज्येष्ठ वुदी ५ मंगलवार	
४२.	यशोधरचरित्र	[पुष्पदंत]	१५७५	मंगसिर सुदी ४ शुक्रवार	
४३.	”	”	१५८०	आसोज सुदी १० शनिवार	

४४.	रत्नकरंडशास्त्र	[श्रीचन्द]	१५८२	शाक १४४७	११५
४५.	वर्द्धमान चरित्र	[जयमित्रहल]	१५६३	ज्येष्ठ सुदी ५ बृहस्पतिवार	
४६.	,,	,,	१५४५	वैशाख सुदी २ रविवार	
४७.	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	[अमरकीर्त्ति]	१५६२	कार्तिक सुदी ५ शनिवार	
४८.	,,	,,	१५५८	चैत्र सुदी १० सोमवार	
४९.	,,	,,	१५५३	ज्येष्ठ सुदी ५ मंगलवार	
५०.	षट्पाहुड सटीक	[कुन्दकुन्दाचार्य]	१५८५	माघ सुदी ४	
५१.	,,	,,	१५६४	माघ सुदी २ बुधवार	
५२.	श्रीपालचरित्र	[नरसेन]	१५१२	चैत्र सुदी १२ मंगलवार	
५३.	,,	,,	१५८४	शाक १४४९ भादवा सुदी ८ रविवार	
५४.	,,	,,	१५७६	मंगसिर सुदी २ बुधवार	
५५.	सकलविधिविधानकाव्य	[नयनन्दि]	१५८०	चैत्र सुदी ४ गुरुवार	
५६.	सुदर्शनचरित्र	[नयनन्दि]	१५६७	माघ सुदी २ बुधवार	११००
५७.	,,	,,	१५०४	मंगसिर सुदी ६ गुरुवार	
५८.	सुलोचनाचरित्र	[गणिदेवसेन]	१५७७	पौष सुदी ६ सोमवार	
५९.	सुकुमाल चरित्र	[श्रीधर]	१५४६	ज्येष्ठ सुदी ६ बुधवार	१२०८
६०.	हरिषेण चरित्र	[अज्ञात]	१५८३	आसोज सुदी १० शनिवार	

१७ वीं शताब्दी

संस्कृत

६१.	जम्बूस्वामीचरित्र	[ब्रह्म जिनदास]	१६६३		
६२.	जयकुमारपुराण	[ब्रह्म कामराज]	१६६१	भादवा सुदी ३ शुक्रवार	
६३.	जीवंधरचरित्र	[शुभचन्द्र]	१६३६	अषाढ सुदी १३ सोमवार	१५९६
६४.	दुर्गपदप्रबोध	[श्री वल्लभगणि]	१६८१	कार्त्तिक सुदी ७	
६५.	धर्मपरीक्षा	[अमितगति]	१६६६	कार्त्तिक सुदी ३ शुक्रवार	
६६.	नेमिनाथपुराण	[ब्र० नेमिदत्त]	१६४३	शाक १५०८ फाल्गुन सुदी ८ सोमवार	
६७.	,,	,,	१६७४	फाल्गुन सुदी ५ शुक्रवार	
६८.	पद्मपुराण	[धर्मकीर्त्ति]	१६७०		
६९.	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	[गुणसुंदर]	१६५४	कार्तिक सुदी १४	

७०.	भक्तामर स्तोत्र वृत्ति	[ब्रह्म रायमल्ल]	१६६८	कार्तिक सुदी १३ शनिवार
७१.	,,	[अमरप्रभसूरि]	१६३६	माघ सुदी २ सोमवार
७२.	,,	,,	१६६५	पौष सुदी ११ बृहस्पतिवार
७३.	यशोधर चरित्र	[ज्ञानकीर्त्ति]	१६६१	श्रावण सुदी २ बृहस्पतिवार
७४.	,,	[सकलकीर्त्ति]	१६३०	आषाढ सुदी २ सोमवार
७५.	वरांगचरित्र	[वर्द्धमानदेव]	१६६०	ज्येष्ठ सुदी १४ शुक्रवार
७६.	सम्यक्त्वकौमुदी	[अज्ञात]	१६२५	शाके १४६० मंगसिर शुक्ला ८
७७.	,,	[गुणाकरसूरि]	१६११	भादवा सुदी ४
७८.	हनुमच्चरित्र	[ब्रह्मजित]	१६८०	मंगसिर सुदी ५ रविवार
७९.	हरिवंशपुराण	[ब्र० जिनदास]	१६६१	ज्येष्ठ सुदी ४
८०.	,,	,,	१६४५	कार्तिक सुद ५ सोमवार
८१.	हरिवंशपुराण	[जिनसेन]	१६६२	पौष सुदी ५
८२.	,,	,,	१६१६	आसोज सुदी १ शुक्रवार

प्राकृत -अपभ्रंश

८३.	आचारांग सटीक	[शीलांकाचार्य]	१६०४	मंगसिर सुदी ३
४८.	आत्मसंबोधकाव्य	[पं० रइधू]	१६०७	अषाढ़ सुदी ८ शनिवार
८५	आदिपुराण	[पुष्पदंत]	१६६२	१६६३ श्रावण सुदी ५ मंगलवार
८६.	,,	,,	१६६४	कार्तिक सुदी ६ शुक्रवार
८७.	उपासकाध्ययन	[वसुनन्दि]	१६२३	पोष सुदी २ शुक्रवार
८८.	,,	,,	१६१२	भादवा सुदी ८
८९.	कर्मकांडसटीक	[सुमतिकीर्त्ति]	१६२२	भादवा सुदी १५
९०.	चन्द्रप्रभचरित्र	[यशःकीर्त्ति]	१६०३	शाके १४६८ श्रावण सुदी १० शनिवार
९१.	जिनदत्तचरित्र	[पं लाखू]	१६११	चैत्र सुदी ११ सोमवार
९२.	धनकुमारचरित्र	[पं० रइधू]	१६३६	फाल्गुन सुदी ७ रविवार
९३	नागकुमारचरित्र	[पुष्पदंत]	१६१२	ज्येष्ठ सुदी १२ शनिवार
९४.	पद्मपुराण	[रइधू]	१६५६	मंगसिर सुदी १३ सोमवार
९५.	पाण्डवपुराण	[यशःकीर्त्ति]	१६३६	भादवा सुदी १ रविवार
९६.	,,	,,	१६१६	भादवा सुदी १४ बुधवार

९७.	पाण्डवपुराण	[यशः कीर्त्ति]	१६०२	माघ सुदी १५	
९८.	पार्श्वनाथ चरित्र	[पद्मकीर्त्ति]	१६११	आषाढ सुदी ६ शुक्रवार	
९९.	पंचास्तिकायप्राभृत	[टी. अमृतचन्द्र]	१६३७	आषाढ सुदी १५ शनिवार	
१००.	मृगांकचरित्र	[भगवतीदास]	१७००	फागुण सुदी ७ रविवार	
१०१.	मेघेश्वरचरित्र	[रइधू]	१६१६	माघ सुदी ११ बुधवार	
१०२.	यशोधरचरित्र	[पुष्पदंत]	१६१२	आसोज सुदी १२ गुरुवार	
१०३.	,,	,,	१६१०	भादवा सुदी ६ सोमवार	
१०४.	वर्द्धमानचरित्र	[जयमित्रहल]	१६२८	अषाढ सुदी ६ ५	
१०५.	,,	,,	१६३१	माह सुदी ११ शुक्रवार	
१०६.	षट्पाहुड सटीक	[कुन्दकुन्द]	१६०२	वैशाख सुदी २ २ ववार	
१०७.	श्रीपाल चरित्र	[नरसेन]	१६३२	वैशाख सुदी १५ संगलवार	
१०८.	श्रीपाल चरित्र	[पं॰ रइधू]	१६३१	कार्तिक सुदी ६ शुक्रवार	
१०९.	सन्मतिजिनचरित्र.	,,	१६२४	ज्येष्ठ सुदी १५ गुरुवार	
११०.	सुदर्शन चरित्र	[नयनन्दि]	१६७८	माघ सुदी १२	
१११.	,,	,,	१६३२	चैत्र सुदी १४	

हिन्दी

११२.	आदीश्वरफाग	[भ. ज्ञानभूषण]	१६३४	पौष सुदी १० धवार	
११३.	नेमीश्वरचन्द्रायण	[भ. नरेन्द्रकीर्त्ति]	१६९०	भादवा सुदी ६ रविवार	
११४.	पंचेन्द्रिय बोल	[बेल्ह]	१६८८		
११५.	भविष्यदत्त कथा	[ब्र. रायमल्ल]	१६९०	भादवा सुदी १ शुक्रवार	१६१५
११६.	मृगावती चरित्र	[समयसुन्दरगणि]	१६८७	कार्त्तिक सुदी ५ शनिवार	
११७.	माधवानलचौपई	[कुशललाभगणि]	१६९०		
११८.	समयसारकलश भाषा	[राजमल्ल]	१६५३	फागुण सुदी १४ शनिवार	
११९.	श्रीपाल रास	[ब्रह्मरायमल्ल]	१६८६		१६३०

१८ वीं शताब्दी

संस्कृत

१२०.	आदिनाथपुराण	[सकलकीर्त्ति]	१७५५	आसोज सुदी ५ बुधवार
१२१.	उपदेशरत्नमाला	[सकलभूषण]	१७४५	माघ सुदी १४ गुरुवार

१२२.	कर्मकाण्ड सटीक	[ज्ञानभूषण]	१७७७	आषाढ सुदी ६ मंगलवार
१२३.	जयकुमार पुराण	[ब्रह्म कामराज]	१७३०	
१२४.	"	"	१७१६	
१२५.	धर्मपरीक्षा	[अमितिगति]	१७३३	कार्त्तिक सुदी ६ मंगलवार
१२६.	पद्मपुराण	[सोमसेन]	१७५१	शाके १६१६ भादवा सुदी १४ वृहस्पतिवार
१२७.	प्रतिष्ठापाठ	[आशाधर]	१७९२	भादवा बुदी १ गुरुवार
१२८.	प्रद्युम्नचरित्र	[सोमकीर्त्ति]	१७२४	कार्त्तिक बुदी १३
१२९.	मेघदूतावचूरि	[टी. सुमतिविजय]	१७५१	
१३०.	"	[मेघराज]	१७८५	बैशाख सुदी ६
१३१.	यशोधरचरित्र	[कायस्थ पद्मनाभ]	१७६६	
१३२.	श्रीपालचरित्र	[ब्र० नेमिदत्त]	१७१४	श्रावण सुदी २ मंगलवार
१३३.	श्रेणिकचरित्र	[शुभचन्द्र]	१७६६	कार्त्तिक सुदी १ सोमवार
१३४.	"	"	१७३०	माघ सुदी ४ वृहस्पतिवार
१३५.	सारस्वतचन्द्रिका सटीक	[टी. चन्द्रकीर्त्ति]	१७४६	
१३६.	स्वामीकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा	[टी. शुभचन्द्र]	१७२१	
१३७.	सम्यक्त्व कौमुदी	[खेता]	१७९३	कार्त्तिक सुदी ८ शनिवार
१३८.	हरिवंशपुराण	[जिनसेन [	१७८५	पौष सुदी ४ सोमवार
१३९.	षटपाहुड सटीक	[कुन्दकुन्द]	१७६५	माघ सुदी ५

हिन्दी

१४०.	चतुर्दशी चौपई	[टीकम]	१७९३	बैशाख सुदी १२	१७१२
१४१.	चन्द्रनृपरास	[लब्धरुचि]	१७६४	बैशाख सुदी १४	१७१३
१४२.	चिद्विलास	[दीपचन्द कासलीवाल]	१७७६	फागुण बुदी ५	१७७९
१४३.	जम्बूस्वामीचरित्र	[ब्रह्म जिनदास]	१७९३	श्रावण सुदी ३ वृहस्पतिवार	
१४४.	त्रिलोकदर्पण	[खड्गसेन]	१७९८	बैशाख सुदी २ सोमवार	१७१३
१४५.	"	"	१७९८	पौष सुदी १३ गुरुवार	
१४६.	धर्मरासो	[अचलकीर्त्ति]	१७२६		१७२६
१४७.	पंचास्तिकाय भाषा	[पांडे हेमराज]	१७३६	आषाढ सुदी १२ सोमवार	
१४८.	प्रवचनसार भाषा	[अज्ञात]	१७२७	आषाढ सुदी ९ वृहस्पतिवार	
१४९.	वैद्यमनोत्सव	[केशवदास नयनसुख]	१७७४	ज्येष्ठ सुदी ११	१६४९

१५०. सम्यक्त्वकौमुदी कथा [जोधराज गोदीका] १७६३ ज्येष्ठ शु० १४ बुधवार १७२५
१५१. श्रीपालचरित्र [परिमल्ल] १७६४ पौष सुदी १० मंगलवार
१५२. हरिवंशपुराण [नेमीचन्द] १७६३ १७६६

१९ वीं शताब्दी

संस्कृत

१५३ आदिपुराण [जिनसेनाचार्य] १८०३ माघ सुदी १५ बृहस्पतिवार
१५४. आदिनाथपुराण [सकलकीर्त्ति] १८३३ भादवा शुक्लपक्ष
१५५. उपदेशरत्नमाला [सकलभूषण] १८२६ मंगसिर सुदी २ बृहस्पतिवार
१५६. करकण्डुचरित्र [शुभचन्द्र] १८९१
१५७. ज्ञानसूर्योदय नाटक [वादिचन्द्र] १८३५ अषाढ सुदी १३ सोमवार
१५८. दुर्गपदप्रबोध [वल्लभगणि] १८१२ पौष सुदी १० रविवार
१५९. पांडवपुराण [शुभचन्द्र] १८३१ वैशाख सुदी-६ रविवार
१६०. पुराणसार संग्रह [सकलकीर्त्ति] १८२२ कार्त्तिक सुदी ८ सोमवार
१६१. „ „ १८२४ मंगसिर सुदी ८ शनिवार
१६२. भोजप्रबन्ध [रत्नमन्दिरगणि] १८०५ चैत सुदी ११
१६३. महीपालचरित्र [चारित्रसुन्दरगणि] १८२५ ज्येष्ठ कृष्णा
१६४. मुनिसुव्रतपुराण [रायकृष्णदास] १८५० पौष सुदी ५ सोमवार
१६५. वरांगचरित्र [वर्धमानदेव] १८७२ आसोज सुदी ५ बुधवार
१६६. वर्द्धमानपुराण [सकलकीर्त्ति] १८०४ माघ सुदी १४ बृहस्पतिवार
१६७. सिद्धान्तसारसंग्रह [नरेन्द्रसेन] १८०३
१६८. सिन्दूरप्रकरण [सोमप्रभसूरि] १८८६ भादवा सुदी २ बृहस्पतिवार
१६९. हरिवंशपुराण [ब्र० जिनदास] १८२७ ज्येष्ठ सुदी ५ सोमवार
१७०. श्रावकाचार [लक्ष्मीचन्द्र] १८२१ फागुण सुदी ५ रविवार

हिन्दी

१७१. आदिपुराण [ब्रह्म जिनदास] १८५६ मंगसिर सुदी ३
१७२. छंदशिरोमणि [शोभानाथ] १८२९ फागुण सुदी १० शनिवार
१७३. जम्बूस्वामीचरित्र [पांडे जिनदास] १८४३ पौष शुक्ला बृहस्पतिवार १६४२

१७४.	तत्त्वार्थसूत्रभाषा	[प्रभाचन्द्र]	१८०३	आषाढ सुदी १ शनिवार	
१७५.	त्रेपनक्रियाकोष	[किशनसिंह]	१८२६	मंगसिर सुदी ७ शुक्रवार	१७८४
१७६.	दशलक्षणव्रतकथा	[ज्ञानसागर]	१८३८	श्रावण सुदी ७	
१७७.	धनपालरास	[ब्र० जिनदास]	१८२८	श्रावण सुदी १ रविवार	
१७८.	धर्मपरीक्षा	[मनोहरलाल]	१८०२	श्रावण सुदी १५ बृहस्पतिवार	
१७९.	नेमीश्वरगीत	[चतुरुमल]	१८१	माघ सुदी १४	१५७१
१८०.	पद्मनन्दिपंचविंशिका	[जगतराय]	१८११		१७२२
१८१.	प्रवचनसार	[जोधराजगोदीका]	१८४६	कार्त्तिक सुदी १२ शुक्रवार	१७२६
१८२.	बनारसीविलास	[बनारसीदास]	१८२१	फागुण सुदी ५ रविवार	१७७१
१८३.	भक्तामरस्तोत्र भाषा	[नथमलविलाला लालाचन्द]	१८५३	माघ सुदी १४ शुक्रवार	१८२६
१८४.	यशोधर चरित्र	[ब्रह्मजिनदास]	१८६६	आषाढ सुदी ६ रविवार	
१८५.	यशोधर चरित्र	[लक्ष्मीदास]	१८०१	कार्त्तिक सुदी ६ बृहस्पतिवार	१७८१
१८६.	यशोधर चौपई वर्धकथा	[साह लोहट]	१८०३		१७२१
१८७.	रत्नपालरासो	[सुरचंद]	१८२३	पौष सुदी १३ सोमवार	१७३२
१८८.	वसुनन्दिश्रावकाचार भाषा	[दौलतराम]	१८०८	कार्त्तिक सुदी १४ मंगलवार	×
१८९.	व्रतकथाकोष	[खुशालचन्द काला]	१८२०	ज्येष्ठ शुक्ला १३	१७८६
१९०.	सिद्धान्तसारदीपक	[नथमलविलाला]	१८६०	आसोज सुदी १३ मंगलवार	१८२४
१९१.	सीताचरित्र	[रायचंद]	१८०८	वैशाख सुदी ३ बुधवार	१७१३
१९२.	श्रावकाचाररासो	[जिनसेवक]	१८२०		१६०३
१९३.	हरिवंशपुराण	[खुशालचंद]	१८६०	भादवा सुदी ८	१७८०

ग्राम नगर व शासकों की समयानुसार सूची

ग्राम व नगर का नाम	शासक का नाम	समय	पृष्ठ तथा पंक्ति	विशेष
अदेहद्वारपल्लीनगर	×	संवत् १५६०	३४×१२	
अजमेर	राव श्री जगमल	,, १५८६	१४६×१	
,,	×	१५६५	१३८×१	
अकबरनगर [बंगाल]	महाराजा मानसिंह	१६६२	५०×१५	महाराजा मानसिंह बंगाल के राज्यपाल थे
आगरा	अकबर	१६२२	६७×७	
,,	,,	१६४२	२१३×१२	
,,	×	१७८१	२१५×५	
,,	औरंगजेब [अवरंगसाह]	१७२२	२३४×८	
,,	×	१७७१	२४१×१५	
,,	×	१६६०	२४४×२६	
,,	×	१७६३	२५६×१२	
आमेर [अंबावती]	सवाई जयसिंह	१७७७	७×७	
,,	राजाधिराज भारमल	१६१६	७७×२	
,,	,,	१६११	१०४×२१	दूसरा नाम आम्रगढ है
,,	,,	१६१६	१२६×१५	
,,	,, पृथ्वीसिंह	१८२५	२१२×२३	
आल्हणपुर	×	१६११	१२८×१६	
उदयपुर	महाराणा जगतसिंह	१७६८	२१६×२१	
,,	×	×	२५५×२७	
,,	×	१८०८	२५५×४	
करौली	×	१८२६	२४६×८	
कालख	×	१७१२	२०८×२८	
कुंभमेरु [कुंभलमेर]	×	१६०४	८५×१०	
कृष्णगढ़	बहादुरसिंह	१८८१	३५×१६	

वृहुरदुर्ग [बूंदी]	कंवर नरवद	१५६०	६३×२४	इनके पिता का नाम अखयराज था
श्रीवापुर	×	१६६९	२४५×२०	सिंधु नदी के किनारे पर स्थित
गोपाचल [ग्वालियर]	महाराजा मानसिंह	१५५८	१७३×१४	
,,	राजा श्री वीरम्मदेव	१४७६	१७३×२४	
,,	डूंगरेन्द्र	×	१७६×६	
,,	सलीम [जहांगार]	१६६५	२२०×७	
,,	महाराजा मानसिंह	१५७१	२३१×१४	
गोपगिरि [ग्वालियर]	,,	×	२७१×१४	
गोव्वगिरि [,,]	डूंगरेन्द्र	×	११७×३	
घट्यालीनगर	राव श्रीरामचन्द्र	१५८१	६६×८	
घटियालीपुर	×	१५८२	१६७×१७	
चंपावती [चाटसू]	महाराजाधिराज भारमल	१६२३	६४×२	
,,	संग्रामसिंह	१५८३	६६×२०	राव श्रीरामचन्द्र नगर प्रधान थे।
,,	शाह आलम	१६०२	१७४×२५	
,,	महाराजा भगवानदास	१६३२	१७८×६	
जयपुर	×	१८३३	२×११	बालचन्दजी छाबडा इस समय दीवान थे।
,,	×	१८२६	४×१६	
,,	×	१८५०	४८×११	
,,	महाराजा प्रतापसिंह	१८०४	५६×२७	
,,	×	१८०३	६६×३	
,,	×	१८२७	७२×१७	
,,	महाराजा माधवसिंह	१८२१	१७५×२०	
,,	महाराजा ईश्वरीसिंह	१८०२	२२६×२६	
,,	महाराजा प्रतापसिंह	१८४६	२३८×१६	
,,	×	१७०७	२६७×३	
जावादपुर	×	१६११	६×१४	
जसलमेर	कुंवर हरिराज	१६१६	२४७×२०	

जिहांनाबाद [आगरा]	×	१७६३	२१४×१५	जैसिंहपुरा का नामोल्लेख भी हुआ है।
जयसिंहपुरा [दिल्ली]	×	१७७४	२०३×४	
,, ,,	×	१७६३	२०६×५	
,, [आगरा]	मुहम्मदसाह	१८०१	२५०×१२	महाराजा ईश्वरीसिंह का शासन भी लिखा है
जैसिंहपुरा [देहली]	×	१७८१	२५०×१	
झिलाय	महाराजा कुशलसिंह	१७८५	७७×१२	
टोंक	×	१८२५	४७×५	
,,	×	१५७६	१७७×१०	
,,	×	१८०३	२१५×२७	
ढाका	×	१७५७	२×८	
तक्षकगढ[टोडारायसिंह]	महाराजा जगन्नाथ	१६६४	८६×२४	यह गढ जयपुर प्रांत में स्थित है।
,,	राजाधिराज रांव श्रीरामचन्द्र	१६१२	११३×४	
,,	,,	,,	१६८×१६	
,,	सलीम [जहांगीर]	१६१०	१६३×१३	
देवपुरी	×	१८२६	२१३×१०	
देहली	×	११८९	१२६×१३	कवि ने 'ढिल्ली' नाम से सम्बोधित किया है।
,,	औरंगजेब	१७३४	२३६×२६	
दौलतपुर	बाबर	१५८४	१७७×२४	
धामपुर	×	,,	२२५×६	
नयनपुर	गयासुद्दीन	१५३३	१६×१७	
नरसिंहपुरा	×	×	२१९×१८	सूरत प्रांत में स्थित है
नागपुर	फिरोजखां	१५४१	२३×५	
,,	महाराजा विजयसिंह	१८२४	४१×२७	
,,	×	१५७७	६६×२६	
,,	×	१५६७	१३२×२	
नारनोल	×	१६८५	२१८×२८	
नैणवाहपत्तन	आलाउद्दीन	१५१८	१३८×१२	

पडावा	×	१८२६	२२१×२४	
फरुक्खाबाद	×	×	६६×१६	
फिरोजाबाद	इब्राहीम	१५७७	१६२×१५	
बगरु [जयपुर]	×	१७६५	१७४×१०	
बणाहटा [जयपुर]	×	१७३४	३३६×२७	
बीजवाडा	जहांगीर	१६७४	२८×१	
बूंदी	रावराजा भावसिंह	१७६८	२२२×२७	
"	"	१७२१	२५०×२७	
"	×	१८२०	२५७×६	
भगवतगढ	×	१७६८	२१६×२१	
मधूक नगर	×	१६५८	१६×१२	
मह्न	×	१८२०	२७१×६	
महीसार	×	१६०१	६८×१८	
मान्यखेट	×	×	११०×२०	
मालपुरा	महाराजा मानसिंह	१६४५	७३×७	
"	भगवानदास	१६४१	१७०×१६	
"	×	१३४	२०६×६	
"	×	१६८७	२४७×१२	
" मेडता	×	१६११	६४×१२	
मेदनीपुर [मारवाड]	अकबर	१६३६	१०८×२	मुहम्मदखां वहां का राज्यपाल था
मोजमाबाद	करमचंद	१५६५	१४८×१६	
मैतनाल	×	१८५६	२०५×१	
योगिनीपुर	मुहम्मद तुगलक	१३६१	६२×२१	देहली का नाम पहिले यही था।
"	"	१३६६	६७×१६	
"	×	१३६५	१६०×२७	
रणस्थंभ [रणथम्भोर]	×	१६५३	२५७×२६	
राजमहल	महाराजा मानसिंह	१६६१	५५×१४	
"	"	"	७७×२२	

रामपुर	×	१७८४	२२०×१६	
"	×	१७२७	२३६×१	
"	×	×	२२५×६	
राणापुर	हेमकरण	१५६४	८८×२२	
रावरवत्तन	राजाधिराजडूंगरसिंह	१५१२	१०६×२	
रेणी	×	१८७१	२०२×१६	
रोहतक	अकबर	१६१६	१५६×१५	
"	सिकन्दर लोदी	१५७६	८०×१६	
"	अकबर	१६५६	११६×२४	
लवाण		१७५१	२६×१६	पचवारा प्रान्त में स्थित है
लाभपुर	×	१७१३	२१६×२८	
लालकोट	महाराजा प्रतापसिंह	१८११	८×११	
वहादुरपुर	हुमायूं	१५६४	५६×१५	मेवात में स्थित है।
वारावती	गयासुद्दीन	१५४६	१६५×५	
बुरहानपुर	×	१७३२	२२७×१६	खानदेश में स्थित है
वैराट	×	×	२६×३	
वृंदावन	रावराजा विष्णुसिंह	१८३५	१६×१६	
"	सूर्यमल	१६०३	६६× ६	चौहान वंशजों का राज्य था।
"	×	१८२१	२४२×६	
शेरगढ	×	१८४३	२१२×२	
शेरपुर	महाराजा जगन्नाथ	१६६५	४०×३	
"	×	१८५३	२५८×१	
श्रीपालक	इब्राहीम	१५८२	१४६×१०	
श्रीवालपुर	कर्णनरेन्द्र	११२०	१६६×२५	
सराजपुरी	×	१६६६	३२×२७	
सहारनपुर	बाबर	१५८७	१३७×२	
संग्रामपुर	महाराजा मानसिंह	१६६२	७६×२१	
सागपत्तन	×	१६६८	५७×१५	वागड देश में स्थित है
साखूंण	राय श्री सुरजन	१६३६	१५×४	

,,	राव श्री मालदे	१५६५	५५×४	रा.त श्री खेतमो प्रधान शासक था
सांगानेर	×	१७८४	२२०×२८	
,,	महाराजा जयसिंह	,,	२२१×११	
,,	राजा भगवानदास	१६३३	२४४×१४	
,,	महाराजा रामसिंह	×	२४६×१८	
,,	×	१७८७	२५६×२७	
,,	महाराजा रामसिंह	१७२४	२६१×२६	
साहदरा	मुलकगीर	१७३३	२०×१६	
सांरुडानगर	×	१६५४	४२×१	
सिकन्दराबाद	इब्राहीम लोदी	१५८०	१६४×१	
सिरिउजपुर	×	११४४	१०६×६	मेवाड में स्थित
सिहनद	हुमायु	१५६२	१७३×८	
सूरत	×	१६६१	१३×२	
,,	×	१७२२	२३६×२५	
सुल्तानपुर	×	१७२४	३५×१३	मालवा प्रांत में स्थित
सुवर्णपथ	×	१५७७	८५×१	
हरसोरगढ	×	१६२८	२३६×१५	
हिसार	बहलोलसाह	१५४२	२६×१५	
,,	×	१७००	१५५×२०	

आचार्य-मुनि-भट्टारक-लेखकों की सूची

8४०)

कुल-वंश-जाति आदि की सूची

'आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर, की 'ग्रन्थ सूची' के सम्बन्ध में कुछ

पत्र पत्रिकाओं एवं विद्वानों के विचार

लोकवाणी (साप्ताहिक जयपुर)—इस सूची के प्रकाशन से देश के पुरातत्वान्वेषी विद्वानों और साहित्यकारों का ध्यान इस 'भण्डार' की ओर आकर्षित होगा। ...... उस श्रम के लिये जो सम्पादक ने इस सूची को प्रस्तुत करने में उठाया है, हिन्दी जगत् उनका सम्मान ही करेगा ...... हम आशा करते हैं कि विद्वान् इस शास्त्र भण्डार की ओर आकर्षित होंगे और उनके अन्वेषण कार्य के परिणाम स्वरूप भारतीय संस्कृति के कुछ अमूल्य रत्न दुनियां के सामने प्रगट होंगे। ऐसे प्रयत्न में सहयोग लेने के लिये ही इस ग्रन्थ सूची का उपयोग है। आमेर शास्त्र भण्डार के साथ ही इसमें श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी शास्त्र भंडार चान्दनगांव (जयपुर) की पूरी सूची दी गयी है जो इस पुस्तक की उपयोगिता को द्विगुणित बना लेती है।

वीरवाणी (जयपुर) सूची को प्रकाशित कर क्षेत्र के मन्त्री महोदय ने एक अनुकरणीय कार्य किया है .. इसके प्रकाशन के लिये हम क्षेत्र की प्रबन्धक समिति के मन्त्री महोदय को धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकते कि ऐसे साहित्योद्धार के कार्यों की ओर उनकी अभिरुचि और प्रवृत्ति हुई है।

ज्ञानोदय (बनारस)—..... प्रस्तुत सूची शोध विषयक कार्य करने वाले विद्वानों के लिये बहुत ही उपयोगी है। अति प्रसन्नता की बात है कि आमेर ग्रन्थ भंडार के ग्रन्थों की प्रशस्ति भी निकट भविष्य में प्रकाशित होगी। ...... सूची संग्रहणीय है।

जैन संदेश (आगरा)—...... पुस्तक साहित्य सेवियों और अनुसंधान कर्त्ताओं के बड़े काम की है। इस उपयोगी प्रकाशन के लिये श्री महावीर क्षेत्र कमेटी को साधुवाद है। विद्वान सम्पादक ने इसमें जो परिश्रम किया है उसकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है।

खण्डेलवाल जैन हितेच्छु (इन्दौर)— ...... यह बहुत बडा और सच्चा सेवा कार्य है जिसे महावीर क्षेत्र कमेटी ने अपने हाथ में लिया है।

जैन जगत् (वर्धा)— ... इस प्रशस्त कार्य के लिये क्षेत्र के कार्यकर्त्ता और सम्पादक विद्वान् धन्यवादार्ह हैं।

जैन-मित्र (सूरत)—...... इनकी सूची बनने की आवश्यकता थी अतः यह कार्य श्री खिन्दूकाजी ने महावीर क्षेत्र कमेटी की ओर से उठा लिया है ...... मंदिर के शास्त्र भण्डारों के लिये अवश्य मंगाइये। साहित्य खोजी विद्वानों को तो अवश्य मंगाना चाहिये।

अनेकान्त (देहली)—...... महावीर क्षेत्र कमेटी की ओर से साहित्य प्रकाशन का यह कार्य अभिनन्दनीय है ...... पुस्तक अन्वेषक विद्वानों के बड़े काम की है।

९. वीर—(देहली)—…… सूची के सम्पादक …… का प्रयत्न सराहनीय है जिन्होंने प्रयत्न और परिश्रम से प्राचीन ग्रन्थों को जनता के सामने उपस्थित किया। …… आशा है शास्त्रों की प्राचीन प्रतियों से साहित्य एवं इतिहास प्रेमी विद्वानों को अनुसंधान में काफी सहायता मिलेगी। विद्वानों को ऐसी पुस्तकों की सूची अवश्य देखना चाहिये।

१०. जैन गजट (अंग्रेजी लखनऊ)—The Mahavir Kshetra Committee Jaipur. deserves congratulations on publication a catalogue of the ancient manuscripts as old as 1334.

संवत् १३३४ तक के प्राचीन प्रतिलिपि वाले ग्रन्थों की सूची प्रकाशन के लिये श्री महावीर क्षेत्र कमेटी धन्यवाद की पात्र है।

११. डाक्टर ए. अन उपाध्याय कोल्हापुर, लिखते हैं—By bringing to light the valuable contents of the Amer Bhandar you have highly obliged the students of Indian literature and those of Jain literature in particular It is a highly useful catalogue …… It is necessary that wide publicity should be given to the contents of the Amer Bhandar and I shall do my best in that direction.

आमेर शास्त्र भण्डार के बहुमूल्य ग्रन्थों को प्रकाश में लाकर आपने भारतीय साहित्यिकों तथा विशेषतः जैन साहित्यसेवियों के लिये बडा उपकार किया है। ग्रन्थ सूची बहुत उपयोगी है। आमेर शास्त्र भण्डार के ग्रन्थों पर विस्तृत प्रकाश डालना आवश्यक है और मैं भी इस दिशा में सभी प्रयत्न करने के लिये तैय्यार रहूंगा।

१२. प्रो० रामसिंह तोमर, इलाहबाद विश्वविद्यालय, लिखते है—भण्डारों में बहुत ही महत्त्वपूर्ण सामग्री है। इस सामग्री से आपने इस ग्रन्थ द्वारा प्राच्यविद्या अनुसन्धान में रुचि रखने वाले जगत् का परिचय कराया है। इसके लिये आप वधाई पात्र हैं। आपने वडा महत्त्वपूर्ण कार्य किया है और इसके लिये आपकी जितनी भी प्रशंसा की जाय कम ही होगी।

१३. श्री दलसुख मालवणिया जैन कलचरल रिसर्च सोसाइटी (बनारस)—आपने संशोधन विभाग की स्थापना करके अत्युत्तम कार्य किया है …… ऐसी सूचियां ही आगे जाकर साहित्य के इतिहास को लिखने में वहुत काम की सिद्ध होती हैं। इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए आपको धन्यवाद देता हूं।

१४ श्री अगरचन्दजी नाहटा (बीकानेर)—आपने इस उपयोगी एवं महत्वपूर्ण काम को हाथ में लेकर दि० समाज में अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है। प्रशस्ति संग्रह छप रही हैं यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई। आप अनुसंधान विभाग को जारी रख जयपुर के समस्त भण्डारों का निरीक्षण करवा कर सूची पत्र प्रकाशित कीजिए एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन करवाइयें।

१५ श्रीयुत प्रकाशचन्द्रजी जैन व्यवस्थापक पन्नालाल सरस्वती भवन (ब्यावर) आपका इस दिशा में यह महान् प्रयत्न स्तुत्य है। इस सूची से साहित्य प्रसार में खासी सहायता प्राप्त होगी।

